

वशाणाञ्चराजामिकाधिना

क्र्याय.म् वैयाश.चर.भिता

न्गार :ळवा

| श्चेर'ग्वि | . 1 |
|--|------|
| भूतशन्दरमें। वेर् कुशन्दर वहेत्य नदे चाह्या | . 5 |
| न्दःस् वर्नःग्रेःननःक्ष्र्नःस्वान्यदेःस्क्रिंशःसर्नेरःनभूवःम | . 5 |
| गहेशम। शुस्रम्याशस्याबुद्याहेशहे र्वेद्रस्येयाशुद् | |
| धेव्यायसूव्या | . 19 |
| बुर'सकत्। | . 23 |
| শ্লবশ্যবাদ্ধশ্য। র্ম্ব-শ্রে-শ্লেব্রাল্র | . 24 |
| र्ट्स वर्भेट्स केट्स क्रिक्स केट्स क्रिक्स क्र | . 26 |
| यिष्टेश्या तीताः स्रेट्रिक्री क्षेत्राचेट्र स्थास्य स्थान्य । | . 32 |
| तुर'सकत्। | . 36 |
| भूतराम्बुयाय। धीयोदि:इयाम्बिमानकृत्या | . 37 |
| ८८.सू लु.मुड.सक्र. १८८.सू | . 38 |
| गहिरामा धिमोन्दरम्याः श्रुरम् चीत्रवेषायायन्त्रम् | . 42 |
| गशुस्रामा नेंद्रग्री खेर नेदेर इस दशुर न नद्रमा | . 45 |

न्गरःळग

| नविना में न्थेगानी ने शर्भ सहस्य स्यामें मन् प्रमेय द्वारी |
|--|
| रैस'म'न्नप्र'म् |
| য়ৢয় |
| इयाना वेर्ग्णे धेरमेदेर् हे व व वर्ग 57 |
| วรุฐะฆาพิสารจุราชา |
| রন্মন্মন্ত্রিদ্র্যাতি নিশ্বন্দ্রা |
| नत्त्राचा धीःमो त्रह्मा पदि मात्र स्व मात्र स् |
| বক্সির্না বৃদ্ধের্বাশ্রেরান্বপর্না |
| রুম:শক্তব্য |
| भूतश्यतिया भेरामे (इस्यानविया प्रमूत्या |
| ८८ हो स्ट्रिंग स्ट्रिंग प्रम् |
| १र्ने ५ मे ५ त्यायदान हैं ५ प्रते सुवाया ग्री से दिया के वा |
| ইনার্লেই হ্রামানা |
| द्रभेट-५८:भेट-७४:ग्री-१२वेथ-५-ग्रुच-र्कुषा |

न्गामःळग

| गहिरामा भेरामी निम्माराई वानभिर्मा |
|---|
| १९२५-শ্রুঅ-শ্রীশ-সদ্বাশ-শা 111 |
| বইশ্সুন'শ্রীশ'নদ্শাশ'শা |
| ३मव्दः भूरः र्रेरः चव्याः येथः चत्रम्थः । |
| < মু'দ্বম্য'ন্দ্র ম'শ্রীম'নদ্বাম'ন। |
| নাপ্তমানা শ্রমান্ত্রিকানপ্রা |
| १ श्री - प्री - |
| १ श्री दिन्ति दिन्ति । |
| শ্বর্মন্দ্রী-ট্রিন্প্র্যান্ট্রিনা |
| বল্লীবা শ্রহানীবার ক্রেমান প্রদা |
| १ क्षेट क्षेत्रे ते नुव कुष व निष्ठ प्रायम देव की नुव कुष व निष्ठ । 161 |
| १ बीट ही ते न्युन रहेयान निर्धायका ह्यूते न्युन रहेयान निर्धा . 166 |
| ঽয়ৼয়ৢ৾য়য়ৢয়ড়ড়য়য়৽ঀৼয় |
| মূ'বা মীন'দী'বেদ্বিঅ'ক্ত্'অ'বপ্ব'বা |

न्गार क्या

| १ श्रेट:श्रु दे:दसेय:ळुंय:न.१८:म | 197 |
|---|-----|
| १. गुःनःनिह्न्यदेश्वेदःवीःववेषःकुषःग्रेःन्नगःहःन्नन्यः। २ | 200 |
| त्र्याःमा भेरःयो नमूनःर्देनः नभ्रा | 210 |
| १ श्रे र निष्ठ्र र प | 210 |
| १श्चेर्न्न निष्ठ्र निष्ठ्र निष्ठ्र निष्ठ्र । | 213 |
| ३गाव्यःभ्रान्यः ग्रीः नश्रवः देवा | 215 |
| नर्त्राचा श्रेरामी मेर् मेर् त्युर कुषान नर्गा | 224 |
| १ श्रे र नमून पा | 224 |
| १ विन्नावि नहेंन् मदेश्येन में | 226 |
| ३ठु:नःनिह्नंभिदेशेटाने हिंदे त्वार्ट्य | 232 |
| < वित्र कें अपमें त्राप्त प्रमुम् अपने विषय स्थित से दिसी कें प्रमुक्त स्थित से दिसी कें प्रमुक्त से दिसी कें कि से क | 239 |
| রুম'মজন্য | 243 |
| শ্বব্যক্ত,বা | 245 |
| क्षेत्राची द्वरा नव्या नश्रूद ना | 245 |

न्गार :ळवा

| इरसें। बेरमे केंग्रायम्बरमा |
|--|
| १ भेर में र्कें ग्रम्भ मंदे सक्द हिर् म्यू म्यू |
| १ शेर में रहें गुरु परि र हो र ज वि र या |
| भेर में केंग्र म केंद्र महार म |
| भेट्राची र्स्ट्रिया श्राप्त प्रमाश्रीया श्राप्त या वि |
| श्रेट्राची र्स्क्रिया श्राचित्र स्थित विश्वाचा व्यवस्था विश्वाचा विश्वाच विश्वाचा विश्वाच विश्वाचा विश |
| महिरामा वेंद्रस्य रवर्षा ग्री केंगा मी वहें मा ख्रारा वारा प्रमुद्रामा 27 |
| वाश्रुयाचा क्रिवाची अळव हिट्टाच प्रा |
| বল্লীবা স্ক্রমান্ত্রীবেরপ্রধা |
| १क्टेना'ल'र्न् हो न'यहोर्'र्न्ने अ'या |
| १क्षेत्राची रही राष्ट्री र वहार वहार वहार वहार वहार वहार वहार वह |
| ३ळेग'ण'गुन'र्सूर'गे'र्सू'व्य'र्ने'या |
| <क्षेत्राख्यत्र्र्ह्त्र्त्व्यक्ष्यत्र्यत्र्यः अविष्याच्यात्र्यः च्यात्र्यः च्यात्र्यः च्यात्र्यः च्यात्र्यः च्यात्र्यः च्यात्र्यः च्यात्र्यः च्यात्र्यः च्या |
| यू न केंग में भूग न ने न न न न न न न न न न न न न न न न न |

न्गार क्या

| १क्टियामी श्रीयामिल प्राप्तिमामिल स्वर् प्राप्तिमामिल स्वर् । 303 |
|---|
| १क्टेंनानो क्वेन नविदे क्या ग्राम्य रेश के राजन्तर निष्ण 308 |
| ঽয়ৢঀ৾৻ঀয়ৢ৵৻য়ৢ৾ঀ৾৻য়ৢঀ৾ঽ৻ড়ৄ৵৻ঀ৾ঀঀ৾৻৸ |
| व्याःचा क्षेत्राः सुद्राचन्त्रदा |
| १र्ने ५ अ५ के ना सु ५ की प्रमुद्दा सुद्द अप्यान् सु ५ जो |
| १द्येटमी न्यू रहेष न १८ म |
| द्रभेट में र्स्टिंग या सदि न यु स्तु त्या न १९७५ । |
| <क्षेत्रामी'त्रशुःक्षय'त्रत्वर्गः। |
| नत्त्रामा कैंगामी नमून दें ताम निरामा |
| গ্রন্থার ট্রির শ্রী শ্রের শ্রম শ্রের গ্রন্থা |
| १ बीट सृ दी दे ते दिसाय द्वाद या |
| ३वर्हेर्देशभी । 341 |
| ≈इस'न्डे'न्न'ळेग'झन'ग्रे'क्रेक'य'न्डन्'या |
| ধ্বাদ্ৰ ক্টিবাশ শ্ৰী ক্ত শে ব্ৰহ্ম শ্ৰা |

न्गार क्या

| ৫য়ৢয় |
|--|
| वक्तर्या क्षेत्रायो वावस्य विद्युर विद्यु के स्वत्य विद्य क्षेत्र विद्यु के स्वत्य विद्यु क |
| १र्देव'सर्इंदर्य'ग्रव्याद्युर्द्र'न्यत्र्र'म् |
| १र्देन'दशुर'ग्नक्थ'दशुर'र्न्निर'ग्। |
| <u>রু</u> ম'মাক্তব্য |
| শ্বন্য-রূলানা প্রনাশ্বন্য-মানশ্বন্য |
| ८८.स्र्रा क्र्याः स्याकाः साम्राक्षः साम्राकष्ठः साम्राक्षः साम्राक्षः साम्राक्षः साम्राकषः साम्राकष्ठः साम्राकषः साम्राक |
| यद्विमाया क्रिया श्रुया माया स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्थ |
| গমন্বমান্ত্রীনান্ত্রনান্তনান্ত |
| রবার্ষ্ট রেঅ স্ক্রবাশ শ্রী বৃত্তী বা |
| भ्रम्य वर्षा के वा स्वर् के स्वर्गान्य वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा स्वर्ग स्वर्ग वर्षा वरवर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्या वर्षा वर्या वर्षा वर्षा वर्षा |
| र्ट्स् क्ष्मास्र ग्री जुट वसेय नन् । |
| মান্ট্ৰশ্যা প্ৰদাশ্ৰদ্যশুন্ত্ৰিদ্যনু শ্ৰন্থা |
| १भे८:५८:क्रेग्'मी'अक्ष्रशः श्रुराग् |

न्गरःळग

| १श्चर्त्र मी ज्ञारा प्रायायया यह । |
|--|
| ३६४ मा में १६५ अळ अथ हो म |
| শৃষ্ট্যান্য ক্রিনাশ্বর্শীন্ত্রিনেনপ্রশা |
| १र्श्वे र खुष श्रुदे श्रें त्रा थे । |
| বদ্দ্ৰান্তান্ত্ৰান্ত্ৰান্ত্ৰা |
| ২ক্ত্রের্মানুরস্কুমান্ত্রীস্থ্রিস্থান্ত্রী |
| বল্লীবা স্ক্রমান্ত্র মান্ত্র মান্ত মান্ত্র মান্ত্র মান্ত্র মান্ত্র মান্ত্র মান্ত মান্ত মান্ত্র মান্ত্র মান্ত্র মান্ত মান |
| १इस-५ वेदे के वा स्र र शे क्वें र ख्या व वर या |
| यर्ने वर्षे क्यान् वे पर्वे अर्ने वर्तन्य वर्षा प्राप्त वर्ता 407 |
| श्रुते श्रु र ख्या |
| र्नेन्श्चेर्स्क्या |
| वःश्वेतेःवह्याःक्षयःयाववा |
| यः श्रुदे प्रह्मा रहेषः मान्या |
| (१) भे थ्व नी क्या नी वर्षे अ देव प्राप्त विश्व । 415 |

न्गामःळग

| श्रुत् श्रु र क्या | 416 |
|--|-----|
| र्नेव:ग्री:श्रेन:ख्या | 417 |
| जशःश्रुतेःवह्याःकृषा | 424 |
| १इस-५वे.स.लुप्ति-सद्र-क्ष्मा-स्ट-क्ष्म-स्ट्र-स्ट | 425 |
| র্মু-পূর্যা ক্রিম্মু-র্ম্বর্ম্বর্ম্বর্ম্বর্ম্বর্ম্বর্ম্বর্ম্ | 426 |
| ক্রব্যস্থা | 429 |
| श्रुत् श्रु र क्या | |
| र्नेव श्री श्री र खुला | 430 |
| শ্বুনা'নত্ব্য'শ্ৰী'শ্ৰহ'নপ্ৰহ'শ্ব | 433 |
| श्रुत्रश्रुं मःक्या | 433 |
| १.र्नेन्'ग्रें र्'कुष् | |
| নামার্ম্যনামান্ত্রী:শ্রদ্বানপদ্বা | 436 |
| श्रुत् श्रु र क्या | 437 |
| १.र्नेन्'ग्रें कुला | 437 |

न्गरःळग

| र्वे क्षु न १८ न । | 9 |
|--|----|
| <u> </u> | -1 |
| श्चे अ न न न न न न न न न न न न न न न न न न | .4 |
| ব্ৰাবা শ্ৰু বেই ম বিৰ ব্ৰং বহু ম ম বৰ্ণ বা | .7 |
| र्श्वे र खुष दिर्भा न १८ । | .7 |
| दर्शेशः र्ने व मावव प्रत्र प्रा | 0 |
| বব্দাস্থ্র'বর্ধ্রম'র্দ্রব্দ্রেষ্ঠম'র'বন্ধ্র' | 1 |
| र्श्वे र खुं य दिर्भ न १ न १ न १ न १ न १ न १ न १ न १ न १ न | 1 |
| दर्शेशः र्देवः याववः ययप्रः या | 3 |
| ষ্টিদ:শ্রীবাশ্যনপূদ্যা | 5 |
| श्चेते श्चे र ख्या | 5 |
| र्देब्रिक्किं स्टब्स्या | 6 |
| (99) रे ञ्च त्रज्ञ | 2 |
| (23) 95 3 95 9 | 4 |

न्गामःळग

| वृ न इस न हो न स्क्रम अन्य के समय कि |
|--|
| १ इस ५ हो दे रे रे रे रे र र र र र र र र र र र र |
| १र्देव'सर्इट्य'र्क्केम्'स्ट्रिम्'यदि'सम्बद्धन्द्धन्'म् |
| শুন্থ:নক্ত্র্না |
| ळेंगाःह्रमाश्राश्चीः इस्रामाव्याः नश्रुवः मा |
| गहिराया निर्द्रकेनाह्मराश्चित्यराश्चित्यराया 478 |
| गश्रमःमा निर्ग्धे इसम्बद्धान्य दिः श्रुव्य निन्द्रमा 481 |
| नवि'न कैंग'हग्रथ'ग्री'क्र्य'ग्रह्म अ'ग्रह्म अ'न्दर हुँ र'क्र्य'न विद्राया 484 |
| ध्या ग्राथम् प्रमान्य विश्व वि |
| ৰুম্'মজন্য |
| ब्रम्भित्रम्भित्रम् |

य म्हाराज्य श्रुत्र विद्रास्त्र क्षेत्र अर्थे न्या स्त्र क्षेत्र क्षे

शेर-श्चर-द्यर-वह्य-त्व्यर्य-वर्धेर-द्ययः ग्रीया

รุ่มเลี้มเลิงเหลี่มหมังและรุ่มโพละรุ่ม สู่รุ่มหนังเลี้ม รุ่มเลี้มาสุมมาสังเล่าสามารถ รามเลาสังเลิงเล่าสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมมาสุมาสุมารถ รามเลาสุมมาสุมารถ รามเลาสุมารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสุนารถ รามเลาสารถ รามารถ รามา

म्रोट'ग्वी

शुर्देव'वर्रेव'न'गुव'नहग्रथ'र्ह्से'धेश'र्गुर्थ। ।धे'गेदे'हेंग'नश' श्रेर-दर-क्षेत्र-देव-ग्रुव। श्रिर-क्षेत्र-श्चेत्र-राम्य-स्वेत्राम्य-नित्। भिरक्षा पक्षण पर्से प्रिया क्ष मानना सिक्र वित्र हिंदा रेग्रअस्ते म्रायान्य । हे नित्र निर्म्यायान्य पात्रे स्र यहर्मित्रे । निर्देशम्बुन्त्वायम्बर्धायम्बर्धायम्बर्धान्यम् म्वमाम्यम् र द्वार्थः स्ट्या वियासदे क्ष्माम्य स्वर्ध्यात्रे स्वर्ध्यात्रे स्वर् विगार्हेन्यर होन्या ग्रम् र्सेन्यस रेन्नेर हो वियान्या नहेन्यर हा नन्दर्वे हेन् हेन् केन । यव द्वा वेश के अपने हेन् हेन् हेन् विषय हुर वा विषय यायवियायपुरम्भायायरानु सम्बद्धाः विद्यु प्रमास्त्री प्राव्या । न्वेःनरःव्य । वेशःमशःनश्रृतःमःश्रूम्। मारःवेगःन्हेनःमरःवःनदेःनेतः ग्री-न्द्रिंश-वें-ने-श्रेट-न्टिना-वःनहेत्-य-न्त्। श्रेट-न्ट-क्षेना-नी-श्रेट-न-ने-षर नह र्श्वेर ग्रे श्वेर खुन्य य रूट अर करे श्वेर ग्रे शेर ने न्याय निर नी में अश्रेष्यन्दर्भे त्यायान्यस्यु राद्वे शासर्भा वद्य अद्भारक्षे से क्रियायायदे हेत्यावि अया याडिया पुः स्वर्धिय। त्या त्या या प्राप्त स्वर्धी स्वर्

श्रेयानाम्या यमाम्याधिमार्डे सायन् होनामित्र अन्यते श्रेनामा वे·क्वॅरःवःने·बुवःग्रेःधे·वो·८८ःवहःक्वॅ८ःवई८ःग्रःदेवःग्रेःळःवाश्रुयःवर्यः गिवेर:गुर:परे:श्रुेश:गुरे:श्रूर:गी:ग्रान्यायश:गुर:परे:प्रान्यायथः गहिसासु १८५ न १५ वर्षे ५ हे सामाने स्नू करे हे र स्वाया महि न्दःक्षेत्राचीः श्रुं रःवःन्दा अन्दिरःह्या न्यानीः दयः गर्रोदेः र्वेन् खुग्र रन्दिन् ग्री र त्री सळस्य या सेन्दिन ग्री में न सून्य नसूत्रः भूरः हे : भूरः वशुरः छुवः सैवाशः देतः सदः वेरः शुर्वे शः सः ददः। नर्हेर-रेंब-बेश-य-वे-इस-यर-रेग-ग्रेन्गी-सुदे-नसूब-ग्रूर-यदे-इ डेट'वर्रेय'नर'ग्रम्थ'नेट्य ग्रय'हे हिंद्रींद्र्यी'ग्रेशेट'द्र केंग्राह्मथ्य विषयः विदः में देश वहेंद्र अयं स्युर के नहेंद्र गुते देव द्र स्य अया गुद विषयः नरसाबन् वहेगाहेव वस्र अंडन् सेंट्यायर वशुर धेवा नस्र नाया नहेंवा यर पर्दे द सदे से याद धेत प्यद में या सर धे यो दे त्र स से दा है स सु किया गे क्वें राजायाववानवाची शाक्षु राजराचुदे।

 कुर्य। विस्तरम्भः श्वाचित्रम्भः विश्वाचित्रमः श्वाचित्रमः श्वाच्याः स्वाचित्रमः श्वाच्याः स्वाच्याः स्वाच्यः स्वाच्याः स्वाच्याः स्वाच्याः स्वाच्याः स्वाच्याः स्वयः स्वय

धेर मी द्रमान्ना दे द्रमार् हे महिषा प्रमान्य प्राप्त द्रमाने प्रमाने स्थान नश्रव गुर्गार्रे में रागुव गुर्ग भेर में नाहें र गावि कु के विर रेग गावश गुवायाधित्यासु विवासमा द्यासेवासू स्वीयास्त्र स्वीयास सुःसहदासदेः नगवःदेवःग्रेथ। र्वेदःश्चदःग्रेन्दःश्चेदःयदेःगबुदःवःशुयःहग्यःद्वाः गशुस्रानु ग्राम्या वेदा ग्री निमार्थे निमार्ये निमार्थे न ह्म कुर नर वशुर मिलेया वेंद शे नह श्वेंद के या प्रवे वेंद स्नित्री सुदे न्वें राजीता विष्ट्रें निर्देश के राजीता के निर्देश के मश्राद्वार्या वर्षा वर्ष

सह्रायदे नहार्से नायदे नायदे नायदे अपावत सम्मायद्वी नायदे निया शुःदन्नेस्रयःनिद्र। दःर्षेद्रशुस्राह्म्यायःग्रीःनसूत्रः वर्हेसःमहिसःशुःर्वेद्रःग्रीः नम्र्ड्यिन्यते मुस्याविवा कः क्रम् विच क्रुस्य स्यापित विस्य विस्य नर नमून पाइस्य गुर रु या ग्री प्रमेया व्युक्त ग्री र्ना वाया विवा र्म्यम् म्यादः विवास्त्रम् विवास्त्रम् न्यादः विवास्त्रम् न्यादः विवास्त्रम् न्यादः विवास्त्रम् न्यादः विवास्त बद्य शुस्राह्मात्राग्री:द्रोदिसादग्रेत्यास्य के.चर्सिर:दरक्षिमामी:देसः कैंगाक्षर्भविष्यविष्यात्रात्र्या न्त्रेज्ञा न्त्रेज्ञात्रात्र्यात्रात्रात्र्यात्रात्रात्र्यात्रात्रात्र्यात्रा नग्रयायस्य हेत्। वेंद्राचित्रारुवा स्वाप्य स्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य नर्स्यक्षेत्र बिट्न नर्श्वेत् श्वेते प्रमेषा सुन्य मान्य सुन्य सिन्य मिषा मि विन'ग्रायायाची नम् र्श्वेन इसमावग रेगाग्राय र नु चु रे न र्ह्मेग सेन स्य कुरे या ने श शु यु य या द र दि।

धेत्रत्र प्यता वित्र हित्य प्रत्र हित्य क्षेत्र क

विद्।।

विदा।।

विदा।

गन्दरायः श्रुवारायाविवारायेवारायम् सहन्ते। वेद्रश्चे धीयोदे वर्षे खुग्राय-प्रम्ये क्याग्विण ग्रायय प्रम् हो प्राये प्रमूत पर्वे या केत् में नकुन्सहन्परः म्यायायाया १कुषः रनयः यायवः सेन् न्रः सें धिः वेदिः इस्राय्युराग्री नर्जे नहस्य। गाः भूराशुस्राय दुरायश्चराय। सेवाः श्वेराः सेवाः भ्वेताः निवा डेश दर्ग १८ गर दुर सर सर स हैं है श रे प्यर रूर खवा वारश छत गुरुयः नुःविद्विद्रशः सः ने शः र्वे न् 'धुयः स्टः भूनः नृदः वळं स्रशः सवेः नहः र्ह्ये नः सदे नसून नर्डे अ खुअ दु न दि । ह्ना अ ग्री पहु न । ग्रु दि न स्या थ कुत्रश्रेषायाः यहन्ते केया प्रश्नुराधेर विषया थे पोदे श्रेया पार्नेन यहन्। द्रवेशपाश्चर्यपाद्रा विखायें केत्रकें स्त्रीत्र नवर में या वित्रेश यहर्मिन या वार्या अपनि अपने स्थित के से विष्य के साम हिं से दिन से कार्य हैं । से प्राप्त के से कि से गर्ने अर्मेर्स्य क्षिय भेर्ने। मेर्भेर्य पर्वेग प्राप्त क्षिय गशुर्रारादे रहेल लाना नह्याया व निष्ठ्व ना शुः न्या शुः भूनया शुद्र र् भ्रेव शेवे न इस्र शक्ति गुरायात्व ग्राया प्रिन्य स्थित हो

 गल्टरनेवे अन्यर्देन गर्डे में हे या वहुना नी इया गलना धेन या नश्रून म'ते'न्रीम्राम्यम्याहेरापह्यामी'ह्यार्था'में'न्छे'न्छे'नवे'मात्रन्यहेत्रमवे' ह्येर धिव मा इस्ट्रिये खुनार्या हो हे या यह ना नी हनाया ही द्वी खुला छी ह्यू गुःर्सदे र्चेन बद्धिर हो अप्य द्वा शे पुते खुना अ ग्री हे अप्यह्ना नी ह्वा अ मर्सिः र्रेज्ञायान्य में र्रेष्ट्रव होत् र्री सुर्व स्थया सेट द्रा सेट जी र्रेष्ट्रव या या स श्रुवाचेत्रास्यायमाळेषाः स्वत्रात्रेमा स्रोत्राममा दे । त्याः ग्रात्रा स्वत्रामः यानित्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्यायान्यत्रायान्यत्रायान्यत्रायान्यत्रायान्यत्रायान्यत्रायान्यत्रायान्यत्र येन्यगुव्योअयर्भेन्यविवर्भे गव्यःन्य शुक्षः द्वायेष्वत्रः धिः स्व सः यार्ते ग्रायाये के या स्व पावत प्राय उत्तर स्व राशी सुदे सुँ र कुंवान्दा रावास्रेवे सर्वे उद्या पारावास्रेवे वर्देवासास्त्रा दास्रेवे पारा वह्रवाची क्वें राज र्शेवाश ग्री क्रियाववा सर र्जे विवा नक्ष्र से राज दे रावा नश्रुव नर्डे अ नावव इस्थ अ शु र्षे द रे अ स सूर देन ने र देन नि प्र नि न में द पत्या इसमावना'ने'सूर'श्रुर'पदे'नसूर'नर्डेस'इसस'यस'र्धिनास' नश्रूषान्याने संक्षिणां में भ्रिष्याम्याम्यायन याते स्रिषान्याया न्यायी होन्य धिव हीं शुंश दुः य ही ह्या श हो। यह या य श्रेया श य श्रूव चालका खें महासूत्र क्या वित्त स्वाका केत्र केत्र केत् केत्र केत्य

चद्रव् सं वि श्रॅट वे द्र नव्य की भी देश सं शे श्रे शे शे ले में तह या नव्य सं वि श्रे र ने से स्व सं ति स्व स्व सं ति सं ति स्व सं ति सं ति

नसूत्रामान्त्री न्रामी न्यायर्गे राजुरानदे (श्रास्त्री सर्वेत कः) हे स्रिन न्सॅन्र्र्श्चें हे अः अहं नः क्षेत्रः यः अपियः यः इसयः निवेनः यः क्षेतः यन् यः प्रम्तः श्रेवे-दर्ग्राद्यान्द्रान्यम् अत्रुव-र्व्याक्षः त्र्यात्र्येयः होद्रान्त्र्याः ग्रीयाप्रान् र्चेर-इत्यायाधेवावेयायात्यात्वरा बुर्यायराययात्र व्याचेत्रा ५दे क्षेत्रत्। इरके नक्केरप्तरानगुनायप्ता नक्केत्रयप्तर है क्किर्यप्ता नश्चेस्रशन्दार्स्त्रेन्द्रार्द्रार्द्रान्त्र्र्त्त्र्त्त्र्या ६ वेश्वावत्त्र्त्त्र्यायार्वेन्स्नून्त्रीः श्रुदे श्रु र ख्राया य दर से सम्बद्ध र पदे प्रकर श्रुवारे पादे य प्रेर पदि सम्बद्ध से स हे अ क्रुपहेश कु गर के क्रिन्य के जिस के कि स्वाप्त के ग्री भी भारतसूत्र प्रम् गुर्वे विकाससूत प्रासूत प्रासूत प्रमान स्वामित नेयावन कें वर्दे र हिर ने क्षर नमून या नर र र वया के वर्ष इत्योयन्यादेशक्षात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या बेर्यस्यावत् शुक्राद्धानवे सुरामी श्रामावित्राचित्र स्वराह्य स्वराह्य देशमायाळेषायाळेदार्रामध्रेदाद्वीयाध्रेम इम्ब्रिन्दार्शित्र्र्रीष्य यप्रश्नास्त्रास्त्रास्त्राक्ष्याचित्रास्त्रात्र्यम् व्याप्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रा श्चानवे हे अववार अञ्चानवे श्ची । वियान स्वाया ग्वामा से माने वापन में ल. नेश इस मिल मिल ई. मूल रे. नश्चर अहे अवत महिन प्राप्त मा में। दे हे अ ग्री अ शुदे श्वें न दर्म न से द न स हे से दे ॥ ११८ १ व स ११८४% थी मोदे न सूना वन या ही या या नहे त्यह्मा अहर हे दे त्यहे या न हे या हेशयह ग्रीश्रासद्दाराद्वादी व्यवस्थित स्वास्त्र मीनस्वाया वर्हेन प्रदे यार वया यो या पर में र रे इससाय हुरा वेस परे केया रें द र वेस परे यवःरगः हःविश्वयाः निरा रुषः भ्रम्ययः ने छेरः ग्रीः द्वयः दरः गर्दः गीः ध्ययः युःदगदःविगःगेशःसर्वेदःसदेःसःकःदगःहुःधेःगेदेःनयुगःद्धयःहससः ग्रीवर्धिन्यान्धेराइरबाने प्यानब्दान्चेन व्यवसान्दावरुषाया विनातुः नस्र्वास्थानगायःदेवःदेशन्यश्चित्रं गाव्वाधारा न्याराव्यः द्वानाः त्रीस् नह्रम्यदे (र्क्षिम्याम् शुर्यम्यया अव्याप्त) वेया प्रदे प्रहे प्रद्वा पर्वे प्रहे प्रदे । श्रुरमी:श्रुरेगारादे:इसमावनाधिवःधर। नश्रुवःवर्डेशरे:रु:क्वेनामीः सळ्य. हेर त्यों र ख्या या रे विया सर्दे र प्रेय स्था या र र प्रमुद या पर अळवःगविरःळेगः इयः अः नर्गेदः खेदः यः देशः देग्यः यदेः क्वें ग्रयः नः विगासे थें राया से रा

याश्चित्रिः तृ गुर्दा न्यायः क्रियाः अळ्दा क्रीयः (११८४ः द्या ११८१) र्वेव सेदे गशुर में शुस्र ह्या श्राम्य विर यादि साध्य द्वार प्रमेन साहे। धे यो । श्रेरःक्षेत्राः द्वेषः प्रदा । यह्माः ख्याः म्रेष्ठः ख्याः म्रुषः चुः पर्व। । वेशमित्रेने देशन् नक्ष्यने (धेनेदे र्रेन्स) वेशमायह्न प्रया गल्दाने गहेश ग्री पर्वेयायाया देश लेश प्रश्लेष ग्राह्म देवे देव देव विवास र नग्रयानदे वर्षेयान से सूरानसाद्वेदायस केदारें स कुरा देवे हे स सु क्रिक्रित्रम्भाष्ट्रप्रवाद्याचारात्रम्भाष्ट्रम्भाष्ट्रम्भाष्ट्रम्भाष्ट्रम्भाष्ट्रम्भाष्ट्रम्भाष्ट्रम्भाष्ट्रम् व्यः द्वः नः श्रज्ञः भ्री शः शक्षवः ते गाः श्रें ना शः शहरः मः यः नहे वः वशाः वः वः यः वे श्चर्राद्याराष्ट्रीयाची क्षेत्रा इस्र असे दाया या देव ग्री स्र या देव नुवार्यायसूर्वाची स्वत् द्वाप्ययार धेवा हो द्ववा हु से प्यते त्रे दे दे । दु धेवा र नसूर्याशुःवर्देन् केटा सन् ने मुस्ययाया देवा की किना समार्थेन् समार निवेत्या ८८। स्वारायह्वान्त वें केत्रयान वरावी ख्वाराष्ट्र आधीवा स्वारा बेर्-र्-हेर्-प्र-र्-। बेर-प्रविष्य्य हेर्-सुब्य हुर-ह्य्य यासुब्र-र्-हेर् कुंवान्द्रिंशसुनमून्देन। ध्रियावयोवान्स्ययावान्व्ययान्त्रम्भन्तेनको नेवेः नसूर्यादेव'क्ष'तुर्याकुट'क्षुःर्रेष'नवेरे'हें हेरा'(शुर्याह्नार्याव्योवान'र्ह्ह्ये न्वायः भ्रेनः ॥ हे या सामहा वा खुदे विष्या या सु से या स्वारा सुवा या या या

शुअर्भ र्वे रहूं न श्रम र्श्वेन र्शेम् श्री रव्योव न न मा स्मार्थेन सम यश्रिस्य देवे हे अश्रु द्यो प्ये ख्या विस्र अस्योदे ((वर्षे वर्षे अदे द्र्न.बुर.»र्य.दर्थित्रश्र.श्र.य.क्र्य.भेव.भी.(दर्गताय.य.भू.प्राथतायगीता. मुत्रः अमह केत्र मार्शे मः सर्दे मा उत्र मदि विद्योवा ना विष्युः ना केंद्रा वो मार्शिः स्वावर्गःसदेः भेदः दर्श्वनाः ॥ भरत्र्श्वनाः रेदः केदः हेनाः नीः (शुर्यः ह्वार्यः दर्शेयः नःरेद्रास्टिवे वासार्द्रमा अन्यवार्द्रमा समास्ट्रीया नि यश्याचेरक्षित्रेश्वाक्ष्याध्यायाम्। स्वाक्ष्याचे (स्थाप्यायदे कुत्) बराशियरायास्यास्यास्य अविद्यास्य । अविद्यास्य । अविद्यास्य । अविद्यास्य । अविद्यास्य । अविद्यास्य । अविद्यास्य अळ्या. म्रंडेत्. (बिर.पर्या.ल्रेर.की.पुर.मे. श्रेयाहेर.कीश. क्रिंग. म्यायारा में । (यायाया प्रति क्षित्र से ।) यह केत् मुस्याया में प्रति । विवासी । इस्रायम्भा भूगे र्ने र्ने र्ने र्ने र्ने स्वायम् स्वार्थित्व स्वार्य स्वार्थित्व स्वार्य स्वार्थित्व स्वार्थित्व स्वार्य स खर.क्र्य.ईषु.पर्ग्रेज.च। पि.स्या.श्रेज.श्रेषु.पर्ग्रेज.च। स्य.पर्श्यश्रास.स्य. म्बार्या मित्र क्षेत्र त्र निया त्र व्या निया मित्र यविश्वास्त्रास्त्र श्रिस्त्र स्वाश्वास्त्र वातुर वात्रेश्वाय विद्योव वास्त्र स्व मदे पद्मेन प्रभागी भागा बुदारे गाहे भागी प्रकर हन भीन हिं मुर्भा प्रभून नर्डेशने न्या श्रें श्रेंदे न्यों नश्रायदे हिन श्रें हे प्यें न नया श्रुन से न स न्धन्याबिरः सहनिन्। रनः चुन्य ख्या देवा संदे खुः सवा ॥१६६३ ॥वीरः

नदेः रनः तुरः न दुः गहेशः भदेः अर्गे र से रदेः रगे । न ने शः श्रः है रे द के दः वह्रमान्नन् भुरक्षम् याद्यन्यः । मह्मान्निर्यं मह्मान्निर्यं । ळेत्रशृक्तियाश्ची पार्टें रानक्षर्या हे शृं यद्योया इस्याया प्रापा श्रुवा श्रीया द्या वेर्स्यवेयाधित्यह्म नेतिःह्यार्या गुर्या गुर स्र्राक्षित्राच्याःक्ष्र्याः स्राच्याः स्र्राच्याः स्राच्याः स्राच्याः स्राच्याः स्राच्याः स्राच्याः स्राच्याः रादे क्रान्निरास्त्र सार्वे सत्याय क्रित् सुरिया हो दारास्त्र सार्वे सार इनिरेक्षिमार्ने द्वार्यायाः स्थापान्य प्रमायाः विमायाः निष्मायाः विमायाः निष्मायः विमायाः विमायः विमायाः विमायः वि ख्याया क्रिया: अप्राचित्र क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया क न्वे द्या व व वे न्या मुख्या के स्व म्या मुख्या के स्व म्या मुख्या मुख्य यश्रास्त्रित्रियोग्राम्बर्ग्या में स्वर्धामित्राम्या वेश नस्ग्राश भेट प्रकट १३व भेव र ह क्या भेट । शुराह्या शामित्र शहर श्कृत्राक्षे पृते सुनाका लेका मानाका सम्मानुका के विक्षेत्र का मी स्वामिका सम्मान बुद्दान्य द्वानवि नवे खुन्ना या हार्ये दा (१११०) हैं से दा सि है । ह या वा खुर्से के द ग्री ख्रायाया मुह्न राहे ((वर्षेया पाराध्यक्ष विषये स्वास्त्र मुक्त)) सहित्र राह्य स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्

म्रेचा.सूर्या.सू खरः॥ १८। रवः बुरः वर्षे ः स्वते वरः विरः वी र विवर्षे र विरुषः उवः वीवः याश्रयःश्रुवः अवेशःसदः इ.क्ष्याः विमः यदेः वियाः सहदः सदेः वर्वेयः यः या स्यः वुर्व वु वु वा परे वे अ ह ॥११८० ८० ४०० वे र हे हे कु व वे अ ॥ शु अ हवा अ श्वेर वर्षेयायेग्राम्यन्त्रित्रदेत्रमेरे देश्कि अवेशमासह्य (शे. दुरे वियास्ट्र) त्। सःविद्वालेशयदेग्यक्षेत्रश्राद्युद्राचित्रविष्युत्राध्याच्याः श्रीमश्रास्त्रात्रम्यायायान्य अत्यावित्यादेतायात्रम्यायम् वैरादरा भेरामावे अवेराधरावह्मा भेरामार्मे व सळव भेरासावेरातुः नव्यायान्यस्य से से पुर्वे ख्यायायायो से र ग्री इच्छ बुर ख्याया प्र यहिकाशुः सेन् प्रदेश्येयाकायन्त्रन्तुः त्याह्या स्वासुद्राप्तरे खूरावदे खुयाका लूश्रा (१४६१) जूर रायोश्र राष्ट्रिया मु. यवटा क्षेत्रा मिश्र श्राम् अक्ष्र श्राम् वर्षेत्रा गुवल्यशक्त्राक्षिरासह्याः पृत्वः क्षेयाः प्राप्ते स्यापितेः यहः श्रेपः ग्री प्राप्ते स्थारः र्रे ने तु : श्रेम ' हु : न सूया न ते : ((शुअ : हम या या ते में या न ने स्वर्थ : वर्षुया मी : ब्रे श्रेवाः ॥ हेशः यः सहित्। स्वः क्षेत्रः सेवाः वेसः (१००१) से वोदः सिदः से ले. नेश इस मुल मुरा शुरा दुः नदे विमेयान येग्यान निर्देश केत मुन्यरमा अस्निन्। से हिते सुमा स्वति सुमानिन विमानि स्वति स्

स्रुवः र्ह्मिन हे अयह नानी स्निन्न ना नाश्वास नह नामि स्वास निर्मा के स्वास निर्मा नासे स्वास निर्मा नासे स्वास निर्मा के स्वास निर्मा के स्वास निर्मा नासे स्वास निर्मा के स्वास निर्मा नासे स्वास निर्मा के स्वास निर्मा नासे स्वास निर्मा के स्वास निर्मा निर्मा निर्मा के स्वास निर्मा निर्मा निर्मा के स्वास निर्म निर्मा के स्वास निर्म न

क्री स्वा क्षेत्र प्रकृत्य क्षेत्र प्रकृत्य क्षेत्र प्रकृत क्षेत्र प्रकृत प्रक

न'ग्रम्'न'वेग्'कग्राधेत्केन्'स्राम्स'स'स्सस'ग्रीस'यर'यर'न्धन् डेट'यम्'येर'मेर्'रेर्'इट'स्ट'यम्बय'य'येर्ग देवे'म्यार्यस्यं नुयात्स्यार्वेरात्रान्ध्रदायद्देवाग्रीयायेगान्ये नायरानान्देनार्येन विंदा शेर्विश्रास्राचन्द्राया धेवार्टे मुद्राचात्रश्राचार्था वोदे श्रुदे र्वेच वननः भ्रेत्रः वहु से सस सँग्रां ग्री सः न्यापा सः न्वापा वा वसः ग्राह्य वि योदेः गडिना हु र्कें न्यायि श्रुप्ते या में हि सूर ए ही माय है से यह ना यशायर वह्यायानहेन्सीन्त्रीयान्दा दळान्नद्रकेयाद्र्याद्युरहेण्यद वह्रमार्धित् सेत्राम्यायाय स्थित्र स्वरा क्रिम्या स्वराम् स्वरा यान्स्रीम्यासाधीतात्रान्धन्याविदे सेताबन्दा हे यायामावतान् वितास मीर्भास्यार्भायह्याः इति। देवि विर्धान्यान्य प्राव्यान्य विर्धार्भेषार्थः ॻॖऀॱक़ऀॱॻॱॠॸॱॸढ़ऀढ़ॆॱॸॖॸॕ॔॔॔॔॔॔ॶॻऻॺॱॻॖऀॱॸॕ॔ढ़ॱख़ॱॻऻढ़ॊॻॺॱॸॖ॓ॎ ॸॖॺॱॻऻॶॺॱॻॖऀॱ चु-नदे-भेट-ताः क्रॅन-दियाः क्रॅन-क्रंताः चीः क्रें-वेः क्रें-चेः क्रें-चेः क्रें-चेः क्रें-चें-क्रें या क्रुं या चीः इयान्नान्य न्यान्य स्वत्त्र म्यान्य स्वत्य स्यत्य स्वत्य स येग्रथःन १५ स्५ ५ मुदः नर्दे।

र्यः वृदः वर्डः वृषाः प्रदेः शःहः ॥१६०१) व्यर्भवः पः क्रुवः पः क्रुः सर्वेदेः ॥वः र्श्वेन्द्रिम् प्रति त्यम् त्येव्य त्या स्विन व्यव क्ष्यः निन्त्र होन् प्रति रश्चे त्यम् त्या स्वर हो। देवे हे अर्चन हुर देवे अख्या वें र ४१ १० ६० १० वें र १५व पुष्य सहित र्यःद्रिःयोश्रयःश्चेशः (ह्याशः यह्याः न्यायः यात्रनः याश्रयः यदेः श्चेतः शेः » वेशमासहरारी यशक्षान्ते। नर्गान्याम्याम्याम्या र्शेवार्था ग्री प्रश्चे विश्वेष्य विश्वेष्ट विश्वेष विश्वेष्ट विश्वेष विश्वेष विश्वेष विश्वेष्ट विश्वेष वि गहराकुः अळेंदेः ((वेंद्राग्रीः भी देश्चीः इयः क्वेंग्याययः दह्याः देवायः) ४५८ नम्रेंद्विन्त्र्यायायायाय्रेंद्वः॥विष्ठ्यः स्टेंद्वः। धे मे मार्थ अ. मी अ. मार्थ मार्थ में स्थान मे विट स्व न विन क्रु य शु न शु य स्वय प्रय हिं ध्व सट रेवि के य देवा वी गुव र रगः हुः में दः प्रदे दुरुषः अद्धंदरुषः शु। के निवावन्यः दुदः मीरु। (शुरु। दुः निदः ह्यारायह्यायी इस्याविया कु केर न्यन्य भारते वियास्य १ ००० वियास्य सहर-दे-भे-दिन्भे-दिन-सेट-सह भ-ग्रीभ-पार्ट्स भ-तन्नेप-इसभ-ग्री-श्चित्र सर्हा नः स्वार्म न्या स्वार्म स्वार्य स्वार्म स्वार्म स्वार्म सहर् छेट क्किन सम्बद्धा निक्कित स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्था स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्था वुर-नडु:द्वा-मदे:स्वाय:वु:(१६४१)वेर-भ्रव:नवर:ववुर-सेर्-ग्रे-

र्सिन् ग्री नह र्श्वेन् ने ना निवे वित् कुव न्या ना सवा से वित् अस्न सामा निवास निवा न्यवःरेशःश्रदशःकुशःग्रेः ((वहःश्वेन्याश्रवः व्वेन्याःश्वेनः)श्वरः न्यश्वे वदःगर्भेशःविनः हुः सेशः पाददः। क्षेत्रः शुः क्षेत्राः खदः विदः सेवाशः या नहः कदः ग्रथर-र्-वित्वार्थायिः विवाय्यश्चितायः त्रेन्यन्त्रवेषः विवेश्वः विवायः यश्राद्यायवेषात्रवेषात्रवेषात्र्यं स्टामी स्टामी शायवुद्यात्रवेषात्रात्राश्रुशः नभूव'रा'नठश'ग्राश्चर'निर्दे ग्री'विर्देश सर्देव'रार'सर्वेदे। रुश'रे' सर्द्धरशःशुःर्श्वेन'न्येव'केव'र्से'न्नेर'वे'ग्नेन्ट्'नुग्'श्वेसर्थ'पदे'र्से'थ्व'र्ग्चेश्र'(र्नेन्गी नम्श्रिन्नेना परिनेन्न वर्षेया श्रीन्य नश्चिम्य ॥ वेयापा सहन्छिन पर-त्रमुद्या नक्ष्र्व नर्डे राने स्वान्ते हे ते नक्ष्र न्दर के ना स्वन् ग्री ह्या यावया चु:कें या यो 'इस यावया सें यास खेयास सम मझ्त संदे वम 'विम खा नर्हेन वर्नेन के कुर भुगमान मार्किया के या मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्य मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्य वर्गुररक्षयाद्रा कैंगाद्राक्षेरामी द्वीः अक्षयम् व्यक्षिमामी श्वीरानहर र्देव र्चेन प्रम् प्रमाश्या स्था स्था स्थित स्थान स्थित स्थान स्थित स्थान स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स पि.मुँग्रायठशःग्रदःमुशःवस्थाःवस्थाःयरःवस्वःर्षेदःप्रदःपश्रा वस्र्वः नर्डेशने ने नुश्का अन्यायने वे निर्मुत निर्मेशन स्थित स्था

नर्डेशःगुद्राचीः र्नेगाः तुःन बुदः र्केगाः वी

यहिराम। शुराह्याया स्यात्र यात्र यात्य यात्र यात

ने प्यट हैं में अपवित पाव देवा शुअ हवा अ स वा तुट वा है अ र् हें त भेदेःगश्रूरःभेदःमरःभूवःमदेःवर्देदःशुग्रायःतुःयःभेदःमःसर्देरःद्रेवःदः वरी न्या हु वर् हो। वेंब के रान हु वर्षेया सुरा ही वेंन प्येया वरी या सर हु नर्जे अंभिन्। शुंशाह्यायाङ्गालुरार्शेषायानम् श्चेत्रापदे प्रस्तायाङ्गात्राया सहरामती ह्यासराधायो हुरा हेशाशुः भूराक र्रा धोवे देशाश्रिया र्धेग्रायाविग्राप्त्रस्याते नम् र्थेत्रणे ग्वत्रायान्त्रायायने नया मदे'भी'मो'वसेयार्ख्याग्री'र्ये मुर्गार्थु 'न्रासी' स्वाव्हारा इमाव्हारे न्नाः क्रेंत् होन् छे जे के ना ते क्रे र त हैं से र धे ना क्रेर के ना कर नर नह क्रेट्स्स्टर् अक्रेश्स विवाधिव द्वेश्या देख्ये वस्य श्री श्राणे यात्रयान्यानी ग्रमायत्र्या धीव प्रमास क्रिया प्रमाय विश्व पर्व सामे प्रमाय प्रम हुर्नेद्रश्चे भूद्रधेवा य द्वे रादेश श्चे क्षेत्र स्द्रा स्द्रा स्द्रा स्द्रा स्ट्रा स मश्राक्षेत्र भेदे वाशुर दे भेत्र वे शके ने राग्य मिश्राय प्रमुन पर मुन

यदी-र्थिद्दी वेद-क्री-ख्यायदी र-र्चेद-क्रीके विद्यान प्राप्त प्राप्त

श्रमः ह्रण्या हरण विष्या हर्षे व्या स्था विष्या विषया विष्या विष्या विष्या विषया विष्या विषया वि

परिः भेटः सबरः दः सबदः दर्देशः शुः श्रु रः पेटः पः नुः सः गुरः नशः ग्राथाः नरः वर्गुर-न-५८। ११(१) श्रीर-नाविदे थि नो खर्या गुन-धदे खर्गी ग्रीर गुर-गशुस्रासामित्रासासम्बद्धाः धिमाक्किरास्या भिमाक्किरास्यासास्या सक्षरामा वसायद्वीरावाबरागेरियाव करानु गाविया हेराकया बराह्या हु सक्षरायराग्वराद्या १३वेराद्या वडवार्यास्य स्थिता है। वहवारी स्थ वानिन्द्रन्तुं १८ वेशावनुद्राचाक्ष्रःहेशावह्यायाः दर्द्राचा उदानीः अवरः पुः अः श्रु रः परः तुः भेवाः श्रु रः पः प्रदः पुं प्रः प्रे दः भेवाः श्रे दः प्रदः है दः धियो न्या हा धि खूद श्री ख्रद थी न्दर धि श ख्रू र र भी द हिर खिद । अ सबराने ह्यू राकें वदासवाकेराया सबदे यो नो द्रान्य केंगा सामे सामरा क्षे.यु. चुर्या हे सुराय या सिंदा केंद्र प्राचित सुराय है स्वर्ध सुराय है से स्वर्ध से स्वर्य से स्वर्ध से मिले यश ग्रुन पिते अप प्रामे पिता से प्रामे साम्या सामित स्वामे । 《३》अू.वी.दी.अत्यापिक्यामञ्जून । क्षेत्राःक्ष्यापिक्यान्यः वर्गमा विशासमाध्रमा वर्गयाश्रुवे स्वन्गी धी धी शास्त्र समाधि । मश्रामुन्नामेरे मुन्या वहेगाहेन मुन्या श्रुमा श्रीमा भेनामा शुरुषाशु ग्वादर न तथा १८वेषा य वुर न सुर किंग क्वा न सुर परे र्देव'यार्श्वेर'न'५८। ((८))शुयाद्ध'नवे'यद्युट'सिर्याणी'वर'र्। दगर'र्टा

श्रू प्रवर में प्रविव में विश्व प्राप्त प्रश्न श्रू श्रू प्रवि में विश्व प्राप्त श्रू प्रवा लय. वि. ब्रूट. के. यक्ष्य. की. देरा त्या देशीय अर्क्ष्या या शुक्ष की. विक्रा या शुक्र की स्वार्थ प्राप्त प्राप्त ५८। अरशःकुशःग्रीःकेशःसद्दाराधीःयात्ररासावियाःसम् यार्टरःस्यशः मुन्तीन् नर्दे लेशत्युर्तायाश्चर्षायाया १२ लेशन्ता विवाध्या यशः श्रुवार्यायान्त्रदारे रेवा १८ हेर्या ५८ हेत् ५५८ हे यश्रुवार्या न्या न विदःख्रुवाः वयः म्यदे। १६वे यः प्रयाव्ययः वः प्रः। ((५)) धेवाः हे दः पुः वेदः रिते देव त्या ग्रे क्षा वित्र क्षु र विदा दे प्यट क्षेट ग्री प्या समर क्षु र रा हा निते ८८. सक्रमान्या सम्बद्धान्य द्वान्य द्व श्चिन्द्रम् अस्ति स्तर्भवाता नस्त्राम् स्त्री स्तर्भवाता यार-रुवर-र्नेवार्य-स्रॉट-व-उसप्यर-सेन्-सन्दे-हेवे-वा-विर्यास्त्र-सुव-संवे-कैंवा वी र्श्वे र व रे प्यट वग्र श व उ र हिट अदे स्नवश श्री वग्र व स्नव नसूत्र नर्डे अर्ने र्ना नसूत्र वशुर्र पुरुष्ट राम्य देश की यरहेत् यर्दा ((1)) शुअःह्याशः इःयाबुदःयाहेशः ग्रेः यसूत्र देतः ग्रेः कःयः विवः कः अः वितः प्रत्या

क्रमः भ्री न्या क्रमः क्रिन् व्या क्र क्रमः क्रिन् क्रमः क्रमे व्या क्र क्रमः क्रमे व्या क्रमे क्रमे

तुर'सळत्।

- ग गुर्निवेश्वर्णि नेश्वर्मा द्ये सुव्यापर मे श्रुव्यापर में श
- थ। में हेत् से मेग्रान्य प्राप्त मी स्थान स्थान
- ये। वेंद्रश्र्रित्याद्ये क्षेत्र प्रमाय क्षेत्र क्षेत्र प्रमाय क्षेत्र क्षेत्र
- ८। अर्के र्श्व से निया विष्य के स्वाय स्व
- प् शे:बिंद्राशे:रेग्राश्चरो:श्रुद्धापर:ग्रीश:पश्चुद्धारावे:(श्रुश:ह्ग्राश: न-१२ श्रुर:येग्राश:तश्चरःग्रेश:तश्वश) 1989 P65

ಹ'»1980 P3

य। १। वॅद्रेह्र्स्याद्ये क्षेत्राद्ये क्षेत्र्यात्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क

१०। ग्राम् अ.स. १०। ग्राम अ.स. १०। ग्राम

19| 13| 13| 18| 14| 16| 19| 14| 16| 15| 15| 15| ইন্মান ক্রিন ক্রিন্ন ক্রিন্ন

भूनश्याहेशय। वेंद्राग्रीभूद्राळ नसूद्राया

वुरःषरः। र्देनःद्रयः ५:५:१३ र वेदः देशः सदेः सुवः दे वे कुवः वे विः श्रेरः बेतु नर्दन सुन्तर्भा नुभा मुन्तर्भा निष्या नर्दन सिते सेन् मी सामान सम्मान सिते प्यापा श्चे त्या चु विदा ३ धुवा दे र श्चेंदा प्रवे वेंदा भूदा चल्दा प्रवे त्यद्या श्चेद्र या द्वा अन् करेदे न अन् जुर कुर चिर पदि गार अर्थे र अर देवा गान्य अर्ध हिर की पर नर वर्केंदि रें ना वार्ने द पवसार्ने द से र वर्ने द पा इससारी सार्वि सार्वि द नदे श्रु कें न्या वर्के नदे नद न्या श्री स्वाय महा मी विष्ठ कें या यह न स्वर ग्रयानिक मान्य कार्य के मान्य कार्य कार्य के मान्य कार्य कार्य के मान्य कार्य कार माव्यान्याम्यम् निर्देश्च । व्यान्याः श्रेयाः व्याः भूतः करमः मेयाः माय्याः न्दःवर्गन्दःन्दःविर्द्धतेःचीर्यार्थेःश्रुनःवःवीतःक्षेत्रःस्वीरःस्वाः यात्रशःत्रदः पदेत्रः नदः र्केदः श्रेदः न्ययाः प्रयुव्यः श्रीः द्वी सः न्यदः यो सः यास्यः र्भुवाराश्वर्षिवाणमा ववागर्वे मुनाकवे सेवायाव स्वा यावर्थायार्थर प्रश्नेत्र क्षायार्थर प्रश्नेत्। भूत्र क्षायार्थर प्रश्नेता भूतशःशॅं र्शेर प्रयेण प्रशुर क्षेत्र रंश रे ग्रुट प्र प्रशुर प्रवेत प्रये श्रीर वा न्रें निक्षित्र क्षेत्र नहार् क्षेत्र वित्र क्षेत्र नायम निवास मान्य विवास मान्य र्ने न अन्य स्टाया देश की या वर्षे विवादि मार्ग या श्री

त्रःस्। वेतःभूतःग्रेःस्वान्य

श्चिरः भ्रद्राकः विश्वारा वि श्वीः इस्रशायव रहं व प्रश्वार्थः विद्वारी राम् वनश्याय केत्र विवायाया शेरीयाश निवायो देवायात्र श्रात्र शेर न इत्। त्र मिन्य म <u> ५८:वॅ५:शेवे:गुव:हॅवा:श्व:ळॅवाश:ग्रे:हेव:वावेर:ग्रुर:वेट:यव:ळुव:वर:वें:</u> नम् र्श्वेन् ग्रेन् ग्रेन् वन्य वाया केत्र विवाया ग्रुवे विन्य नम् वन्य वाया केव विशः र्श्वेर भारात्री रेपा पावर भागी हमा भारी भारत प्रतास ही केंपार भी र्श्वे दिक्षा दे दे न्या न्या या या न्या स्था न्या या न्या नि स्था नि र्देव ग्रीव पेर्नि एडे याया सूना सून का या पेव परि त्यवा वह निर्मा सुया ग्री इस्राद्युम्। दस्रवादवनानम् स्वास्र। सःव्राव्यास्तुन्रस्वासःग्रीसःग्रमः यात्रशः भ्रम्नशः श्रीः महः देवः श्रीः श्रमः श्रीः श्री करे ने दारा के तार्वा अभागी मे तारा निकार में अपनिकार यी देया यात्र शास्त्र वर द्या यात्र तथ कु दा श्रेष श्री यात्री यात्रि हेत या हैं दि शो शेद यदे भ्रेर क्रेश रे अर क्रें

अत्राक्तान्त्राची स्टान्न विवादी स्था स्था अत्राक्ता अत्राक्ष्य स्थान है स्था स्थान है स्थान

यात्रश्राप्तान् भ्राहेताश्राचनश्राच्यापादी सी से याश्रागुद्राया या देवा सर्द्ध्रस्य लेवा न्र्यः श्रुः अश्वतः श्रुः अप्तकतः निवः प्रदेः अतः कः प्रदेः प्यतः। श्रेः देगायः रम्किन्वर्के वात्रश्रामी विस्थाना मिन्यम् वायनिवे वस्तु। भ्री वस्ते से नविव रेश ग्री य ग्रुट विट श्रुव र्सेट ग्री य सर्देव विव स्ट्र श्रुट रायय ग्रुट है। वें कुराग्री नुरामेस है प्दा विवा हु हो नरा ग्राम से समा सूर काया नहेव वर्षा नर्षा केंद्र विद्या नर्षा क्षेत्र केंद्र विद्या नर्षा क्षेत्र के विद्या नर्षा कर्षा केंद्र के विद्या भून् करे श्रु र न श्रेयाय रेन्। कु अक्व ने वे मेव ग्रीया में न श्रेयाय या क्चें यहिंदाक्ष्य प्रत्य के प्रत्य विषय या विषय यह विषय विषय नःधेंद्रादे। इस्राम्बर्भाद्रास्ये नद्यां हेद्राख्य स्त्री नहेंद्रादेश मुक्ता स् श्री है शा शु न में दि प्रवाद्या दे त्य शा है वा पा वादा सुदा र स ग्री:नश्रश्चें महिंदः श्रिम् शन्दायः द्वयः दुः सेदः मदिः मदिः या तुम् शाहे। ठे से पावि पाठेग हु सूर्य से रात्रा नश्र से दि समर मुगा मी हे द पावि येट्रम्या न्याः कुर्यायन्। क्षेयाः नकुर्यन्तुः नश्रास्य । श्रास्य निविः श्चेगावः ह्या विराधान्य सर्दे सम्बद्धवाधाने ने निर्धियः पर्यस्त्रे मिन र्धेग्रम्भाग्याक्षेत्रं विवाधित्रायम् सा विवासमा हो ना सिवानमा कुः अळंद्रः श्रें वाश्रः के कुद्रः रे रे रे राष्ट्ररः श्रें र वी वाद्रश्रः कुष्यः देवादः वार्वेदः हुः

यह है सारव्या निर्माण विष्या निर्माण विषया निर्माण विष्य निर्माण विषया निर्माण विष्य निर्माण विषया निर्माण विष

श्चेर्चेशर्रेर्द्र्येश्वर्षे श्चेष्ट्र्येश्वर्षे श्चेष्ट्र्यं श्चेष्ट्रं श्चेष्ट षायान्दराषाया षाश्चेयान्दराषायो वियायार्ये वायायान्दराञ्चयाश्ची नदेया र्देव रे पेंद्र ग्रम् वहिवा हेव या साथ पति। यवा यवे श्रेष्ट्र वह वाहे वा न वेशायदे न न में श्री शास्त्र न न हे त है न द सूर्या सक्स श्री हिन सर या श्री नर्से भेर्पित्रे मेर्ने के मेर्ने कि श्वाप्य कि स्वाप्य कि स्वाप्य कि स्वाप्य कि स्वाप्य कि स्वाप्य कि स्वाप्य यान् ही अळअअग्वाअयानदे पर्देन् और न्दें अग्वाह्र प्रवियान विवासेन धरःगडिमायद्वरःवर्वेदःधःददः। स्वानम्रोशःगुवःवःषातुःददःषाते। षासः <u> ५८.५चेल.चषु.५चो.वाष्ट्रभागी.वर्.जेश.जशाचिट.चषु.८८.क्षेत्र.बुच.५५०</u> सदे-दुश-कुन्-द्र-सदे-सून्। सळस्य या या द्वी त्र न न न सळे न न स्व द्वी हिन धराहे वह के वा देवे क्रें राग्चे अंदानी वर्देना अख़ना अंग्यार कु अपीर विवा धर-ब्रूट-व-क्रु-व्या-वी-भ्रूट-व्य-व्यक्ष्य-ध्य-देय-वेय-व्यव्य-वर-व्यदेव-ब्रमा नेंद्र पदेर सद्दर अदे सेंग्र राष्ट्री मार्थ के तरे गुर पर से क्र मी हिंद्र पर

केव में भेर भने। तुर्र तुर्भेर सकेंगर सव ग्री हिर सर सेर मंदे पर् नेशन्दर्वशन्त्रान्त्रात्रावेषानाक्षे देख्यते भ्रीक्षात्रम्यक्षेत्रम्यक्षेत्रम् बेर्यसर्देवरे क्रिंव होर्छ सेराधर कुर केंबर केवा यस सेर्यहर क्रिं वर्षित् ग्री हिन् पर वायय व ते ग्राय स्वाय ग्री खेंय वा भ्रन् करे क्रें र व यार्चेवायाधिवार्वे। वाववाधाराधीरिवायार्थीर्थेवे सून् कवे र्से रावा रु गुना ५८.८रूअ.स्.वि८.४८.वी.स्ट.वर्षास्य श्रेषास्त्र श्रेषास्त्र श्रेषास्त्र श्रेष्ठ ᡚᡃᡪ᠍ᢩᢖ᠂ᠴ᠙ᢅᠮᡪ᠗ᡪᢧᠾᢩᠲᡪᡃᡆᠽᢩᢖᠸᠴᡃᡲ᠂ᢍᠵ᠗᠂ᡷᠳᢩ᠌᠉ᠽᠵ*ᡲ*ᡪ᠂ᢆᡘᢅᢡ᠂ वावर्या ग्री विंद्राध्यवा दर वें वा क्षेत्र वा वा देवा वा वा वें विंदा वा दा वें देवा वा वा वें वा वा वें वा व वर्रेषान के भ्रे कु नगमी भ्रदायान वर न तुर दर भ्रें केंद्र भें न भाविर यश्राम्भी वासून सुत्र सुत्र सुत्र स्त्रिया स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्व वर्चेता यश ग्री शक्ष्र मास्त्र सास्त्र भारता साम्रेत मास्त्र म धेवा हु ळंद इय दर वेंद इय वायर नदे सेट सर न सेवाय है देन बश्चर रे क्वेर ग्री के रेगक के लिया है जिस्त के जान कर के लार र रेग गान कर ग्री प्रसेष सुँग्राम ग्राम ने म सुन में।

भेट्ने कें ना नो 'हे र क्युं 'ट्टा भेट्ने ना भेट्ने ना भेट्ने ना नो 'हे र ना ने क्ये 'ह्ये र ना ने क्ये 'ह्ये र ने ना ने क्या में ने ना ने क्या में ने निवास क्या में निवा

श्रे देवाराश्चे देवा वाद्यार प्रत्र के त्र के स्वर श्रे देवादे व निर्धियाया वर्गाः स्ट्रार्ट्र विस्रामित्र विस्राच्या से स्वास्त्र है। सहत्वि है। अन् कन्द्र ने अर्थे वा अप्याद्य निष्य है स्मृत्वे देना वाव अर्थी पर् नेयाधिन्ता ने भुत्रित्रे भूत्रकते र्श्वे राजा गुजा के। भूत्रक ने से रेग्या रहा सक्त प्रते व्रुव सेंद्र संप्राधिव प्रते देगा ग्वाव शः शे प्रव्य शः तुः धिव प्या देगाः यात्रशःश्रेषः होतः ग्रीःषयाः कः यार्वेः नें वियाः ग्रातः धेतः प्रशा अतः कंतेः हेतः बेन्द्रा देवायावर्षके वर्हेन् ब्रिक्षण्यु यावर्षके। अन्य कर्षादेवा यावर्थाश्चेत्याचेटा। देवायावर्थाश्चेराञ्चराळराळे श्चेवायायराया सञ्चरायरा नहेता ने गहेश मन दुन हेन हेन हिन प्रोय नवर धेन हैं। ने नशा वेंन भून वे वें निर्मेदे वर्ष के अप्ति व सूर्य निर्मे वें निर्मे र से निर्मेष के वा वा वर्ष ग्री:बूद:र्ख्य:विगानेत्

ध्ये ने ते श्रु नित्र नित्य नित्र नित्य नित्र नित्य नित्र नित्र नित्र नित्र नित्र नित्र नित्र नित्य नित्र नित्र नित्य नित्र नित्य नित्य नित्य नित्र नित्य नित्र नित्य नित्य नित्र न

मुन्न मुन्न प्राप्त स्थान विद्या निर्मा क्ष्या निर्मा क्ष्य निर्मा क्ष्य निर्मा क्ष्य निर्मा क्ष्या निर्मा क्ष्या निर्मा क्ष्य निर्मा निर्मा क्ष्य निर्मा क्ष्य निर्मा निर्मा क्ष्य निर्मा निर्मा क्ष्य निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्म

त्र्वीत् द्वा सेवि वत्। न्र्हेत् ग्रुवे स्व न्रुवे स्व न्रुवे हित् ग्रेत् ग्रे व्या स्व न्य केव स्व क

गहेशम। ध्रयः भूतः ग्रे ग्रे शक्ष्यः त्रः इसः ग्रद्भः ग्रद्भः ग्रद्भः

श्ची र अप्ताक्ष र क्रायां की अप्ताक्ष र क्रायां क्रायां क्रायां क्रायां क्षेत्र क्षेत

र्श्वे र रहं य है रेग्या ग्री क दया शुद्ध सेंद मी सूद क दूद से स शुद्ध परि क दे याबेराहे। वेराभ्रमाधीप्रवरामुख्यावा याववयाधीख्याभ्रमावी मनुया र्येग्राभून दी श्रॅम्परंद्य स्रुय मेंदि सुन्य ग्रेमें में मुन्य मुन्य श्रेम क्रियाया ग्री विवाया स्मिन् दी। नविवासे वे त्या सक्ष्य हिन पा स्थया ग्रीया पक्षन पवि अन् काक्षेत्राक्षे रुषा अन्यानाम् द्वारा विष्या के विष्या के निष्या विषया भूवान्दा र्भूवावार्थे स्ट्रान्यते स्ट्रान्य स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्य स्थापत स् क्र्याया ग्री त्र्याया स्मिन्त्र या प्रानाम्या स्मिन्ते । श्चित्राचार्यात्यात्राच्या वर्षायात्रायाः है नि श्चे भूत्रे विचाचात्रवः वनेनसन्दर्यमायेत्र गुरुपान कुन्त्र स्थेत् पर्मा वर्षे व्यवस्थित ।

र्ति-ग्री-क्रिक्षण्याक्षेत्रः क्रियार्थः क्षेत्रः वित्तः क्षेत्रः कषेत्रः कष

यदेः द्रयायाया नहेत्रत्या र्वेत् ची स्याया भूदा ह्रया में प्राया स्थानी या द्रया में प्राया स्थानी या द्रया में भूर्गी दें सर्हेर रेवा पर शुर द्वा पर व रेवा रेवा से सामी या मुया प्रस्था न्यम्यासुःनक्षेत्रधेम् ध्वायार्थे स्यम्यम् स्रेप्तर्मे स्वेत्रसम्ययायाः इससारामान्याने यानामान्या हैन् चुराने त्यसार्श्वे सम्दर्भ सम्पन्ने वा युवान्नून ग्री विनासमा अवार्ध या ग्री या या यह निर्देश विन्द्र ग्री:भु:त्राःशु:गठिगःसून:ग्रुयःग्रहः। सून:न्र-यःयःग्रींरयःयदे:ह्रेयःशुःर्वेनः पिस्रशःश्रीरित्यम्यामीत्रित्यान्तिम् ही रम्यारम् वहित्रम्। श्रीरः वर्डिन् अर्वे अन् श्रेन् अवावस्थुव सेट नु वर्षे दस्य विदा असेवास ग्वत् ग्रीशर्नि ग्रीश्चित् याचे मिर्गिशत्र न्यान्त्र मुया भुग्रास के सुर्भित नःश्रीवाशः क्रेंत्र-तुः अवे द्वादः वीशा नगाशः न उत्वाशुः अस्यः ध्याः भूतः यः सव्याभार्त्रम् स्थान्य । भेषा र्वेषा पुर्दा नग्र । यह । यह राष्ट्र राष मः अरः रें। द्रमाः प्रवर्भः अरग्रभः वर्देवः द्राः क्रवः श्रेदः ग्रीः वर्गागः श्रेमा विवासीर त्याया वर्षे या वर्षिया वर्षिया वर्षिया स्थाप खुर-वी-भूर-र्-अर-क्रीश-धंदे-क्रीव-वार्ड-र्वे-द्रवा-देर्

र्वेद्रा हो स्वाप्त हो है स्वाप्त हु स्वाप्त है स्वाप्त हो स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त है स्वाप्त हो स्वाप्त है स्वाप्त हो स

नम्रेंन्ज्रिम्ग्रीः हैं अधिन

र्टा र क्रिक्मियाकाकी:लेकासेर्टरा श ब्रह्मियदुविद्यूची.विकाकी:लेका ray)। ग्रुनः र्रेग्या ग्रुपः र्युप्यः अप्तान्य । प्राप्यः र्युप्यः र्युप्यः अप्तान्यः । न्या गर्दे सेंग्र में प्राया स्त्र न्या ना निर सेंग्र में प्राया स्तर निर नगरमान्या वे र्यास्य वर्षा वर्षा विष्य वर्षा हो वर्षा गर्युया ब्रियाया ग्री: ध्राया अप्ता व्या व्या ब्रिया श्री ख्राया अप्ता वार्षे हियाया ग्रै:खिक्रःभेटी टा चरःब्रियायःग्रै:खेक्रःभेटःटरा श चरःबेटःश्र्यायःग्रै: थ्याः भूना धूरा से अपाया वह अपी रेने न भूना की विता वित्या वित्या वा द्येग्रअः निरः कुषः विस्रकः ग्रीः सम्रदः नग्रागः से दः स्राद्य द्युदः ग्रविदेः देवः मरः के.लटा ये.रुषा अक्रू.र्स्य टर.रुयावर यराधियारीयर रुषा अक्रुरे.ग्री. निवेद्रास्त्रम्थान्यः स्वेद्रान्यः स्वेद्रान्त्रम् स्वेद्रान्त्रम् स्वेद्रान्त्रम् स्वेद्रान्त्रम् अन्। ग्रीन्ते कुषाकुषो अन्। स्मान्यन्ति स्माने व

| খুএ:শ্লুবা | <u> </u> | শ'বাবশ'বার্স্ট'র্না |
|--------------|----------------------------|--------------------------------------|
| ব্রুশ্বগর্হা | 5587 | र्ग्रेट हिन्द स्था हूँ वि |
| | শ্র্বহ:শ্লুবা | याविषागा है। |
| | 製 下 な . 子 女 . 影 ヿ 」 | ठाट् <i>त</i> देश |
| | প্র-্বর স্পর্না | নাওব.প্র-স্ক্রিন্রেমা |
| | রবব:ঝুয়:শ্লব্য | गॅ्र र्रं कु न्यतः हॅर ते (व र्यवाया |

| | প্রস্ট্র্রাষ্ট্রাস্থ্র | क्रवासर्दे। ब्रेन्पेनग्रन्सहेंबा विवटा |
|-----------------|-------------------------------|--|
| বেহাকা. | र्बे ब्रिंग्न रागी स्नित् | यहें केंद्र तिया शुं के हैंहा |
| ' | র্ব:শ্র্রিল্ম:গ্রী:শ্ল্রন্ | र्मे हो भव हा षा अर्रे हैं हा वमा हा |
| <u>ਹੈ</u> | গ্রহ-স্ট্রিশ্বস্থ্র-শ্লব্ | ନିଦ:ଧିଦ:ପିଦା |
| 新石 | र्हें बेंदे न्नुन | ॐ तेते.हॅ⊏ा |
| | বহুব'ক্ট্ন'শ্লব্য | पर्येग.र्थ.र्ह्र्ट.। |
| | হের্ন্র্বা-শ্লুদ | गाव सुतु द्रा अळें सूँव ग्री तिया प्रांत्र मंदर ज्ञा अहें द द्रो |
| \(\mathbb{G}\)' | ₹ <u>~;</u> %51 | र्गें कर् । इंखरा बुव इंस्र |
| _ | दर्ज्ञेषाः अर्देरः गैः न्नेरा | रेन में प्रथट स् |
| अर्देविः | ল্ ড স্ব | हुतुःह्रेट्-लेंग्या |
| 新 有 | 7 5 1 11 | 7 - 111 |

तुर'सळत्।

१ वित्यहित्या (वित्यिः चित्रम्हेतः धिवाः कः वत्ययः वर्ष्णेवायः P8 १ वित्रमें दित्यः त्रो हित्यत्ये सुन्यतः वीयः वर्षुवः पवेः ((त्रवोः वत्वः के यः वर्षे वः चित्रमें सुरः के अभित्रमें स्वाः विश्वः विवास्त्रमें विश्वः विवास

या यादान् चादान् क्षेत्र स्वाकाः क्षेत्र क्षेत्र निष्णुत्र । यादानी का निश्च विष्ण

《वरःनभूवः ५८:वॅर्ग्गेः क्रॅंबः रेगः» 《क्रुः धेग्» P1

अन्याश्याया धीयोदेः इयाववगानस्वाया

न्दःस्रा धेःगेदेःसळ्दःहेन्नन्दःश

श्चेरःश्चायावतुरावशः वेदायावेदायावेदारादेशाद्रात्वारे से यदरा न्रह्में न्राक्षेत्र से क्षेत्र महिषामहिषा स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत सेसराउदायादेवार्हेदासराग्चेदायादे से सामित्रा हो। देवे कंदासाह्म वर्रोयायम् धीमीग्राम् र्सूरानेमायम् भ्रुग्यानेमायम् सुर्मेर्द् रेषी हिन्यर ठव ने वी इ नयर ने या सर एकुर न थेवा । १ वे या पा सूरा न हेन वर्रेन् ग्री ग्राव क्रिंन खेन वर्ष्य प्राय क्षेत्र वर्ष वर्ष प्राय क्षेत्र क्षेत्र वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष याधीयो विश्वानु विद्या धीयोदीर्से में या श्राष्ट्र मुन्दे सुर्या यह पारा विश्वा रात्यश श्रियार.विया.वरीर.कयात्रास्त्र विष्यार्टा श्राप्यासस्ययः वह्मामवे र्से विश्वान्य निष्ठ नर्से नर्से शासी लामेत सक्त हेर है। हैं से क्रॅ्र्न्यरि:श्रु:श्रु:श्रूट:चालेश:ग्रु:चाथेन:था देवट:दग्रुट्श:द्वटायायाः ग्रेट्: डेशः गुः नः खूः भेः न्दः गूः भेदेः नद्वाः हेदः दें। १३ वेशः नश्रृतः दे। रदः कुदः नशर्नेत्रान्याराधराभे भूताबेराभेरान्या केंगाने केंगाने केंगाने स्थान ग्रीमित्रसायाधीमी बेरामदी ब्रुविमित्रसामिर्ड में रावळत्रपिरीन्नरातुः ग्रमान्येत्रात्रे। नेराभूनाग्रीमान्यालेमायमाळु भून्यातु स्थान्या स्या स्थान्या स्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्था स्थान्या स्थान्या स्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या मो धित्र या चित्र मि । धि मोदे मान्द्र या न चुर्या म्या मे या ची न ची न

यहिरास्त्रिं साम्यास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र

धेव वदर्ग धे मेदि सळव हे द भूद शे माद्र र मेरिव त्य नवमाव न्धन्यम् ग्रुन्ये मान्यायने यग्नुम् क्षेत्र स्व के के साग्नुम्य के में र्रेष: ५ : वेंद्र: व्याधी: वो : वेंद्रेश वेंद्रेष: वेंद्र्य: वेंद्र्र: वेंद्र्य: वेंद्र्र: वेंद्र्य: वेंद्र्य: वेंद्र्य: वेंद्र्र: वेंद्र्र: वेंद्र्य: वेंद्र्य: वेंद्र्य: वेंद् यश तुर नदे से र दर के वा भें र पदे से या देर मणा वें र से दे र तुर यदे भ्रेम ने प्यून समामान्य क्षा माने स्थान विषे स्थान के प्यून समामान बुर बेव है। अर गर्र अर अर पदे अर क विया यवि अ बुर हिर है। अर कदे दे चे दे त स्व श्व शे प्राप्त भी श्वे र न यथ गावव गावव गावव शिर स्व श्वे र र्रे। ने स्वरायरें निक्षे र्वेण सर स्निन्क सुरा ने त्र रास्निन करे ने निक्य है। नर्गेषानदेग्नर्भासरार्गे शुर्पिये सम् सूर्कित हिर्के सार्रेस

यान्त्रीय्यान्त्रीय्यान्त्रीयान्तियान्त्रीयान्तियान्त्रीयान्तियात्तियात्तियात्तियात्तियात्तियात्तियात्तियात्तियात्तियात्तियात्तियात्तियात्तियात्

ने सूर वर्गुर नवे कु अळव वे। धे मोदे हो र य र र ने दे मार्ट र रोगे रें तें रें रें रें राया है या परि पातर परि प्या हुवा है। वें राधिया रहिर या वायया ग्री'नर'व्याविवा'अर्द्ध्रद्भाग्री'वर्त्रेव्यन'र्व्यूद्र'ग्रद्दा धेवा'वार्त्ववाश्वदे'श्रेवा' ५५.५.स.चरा थे.मो.५इ.भूमामो.ब्रॅस.वैर.स.४स.५६मा.हेर.५५४.सीमा र्वेगागी भूर क हुर विरा धे मेदे होर राया महेत तथा रर में स्वीम्था ग्री:भूर:क:रे:क्वारा:र्मा विटा र्श्वेर:येवारा:या क्र्रार्ट्य्य्य पराश्चेयायः नरुरायाञ्चर्कार्या स्ट्रेराम् सेराम् सेरामित मुर्गामा सेना <u> ग्राह्म अप्तर्भाग्य द्राप्त अप्तर्भ अप्तर्भ अप्तर्भ व्याप्त अप्तर्भ व्याप्त अप्तर्भ व्याप्त</u> वन्याचे ज्ञा रामित्रासुर सुर विरा धे मो वे यारा विमायर सूर मार्ट्या

र्वित्वरत्वहुवारात्या ध्रेश्रास्त्रीं नान्से ने त्ये वोदे वा स्वायाय स्वरासे रा ने निर्मा क्रुव प्रमुख्या शुः श्रेव प्रमानहेव। यह माहेव प्रवे में माले में वर्देव ले अ स्याञ्च मान्द्र अ न्द्रा धि मो विद्ये ले अ स्याञ्जे अ मा बुम्य वरेग्राश्राग्रुर्पते नह वन्राग्री सायगाउँगाय गुरा क्रूर् वेत्रीया ग्रथम् नु न्वर्षे साम्याप्य प्रोति ग्रा बुग्र स्थित है। वित्र सेति वित्र खुम् नु <u> वित्राधिना सानवित्र सित्रा वित्रा वित्रा मित्रा वित्रा मित्रा सित्रा सित्रा सित्रा सित्रा सित्रा सित्रा सित्र</u> वी वित्रः शुरुषि उप्तरः करे अतः श्रीतः श्री वित्र अप्ति । या वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वि सम्बद्धारावे भी में माराध्याद्युसारस्य वर्षेद्वारावे यास्य होत् से प्रविदे ग्रमासुरसेन्यावर्ने त्या श्रुवा वी ५ वे मासून की वात्र मान्य प्राप्त स्थाने हिन सर्कें व हो द शी भी मिहे राष्ट्र द द हो साम साम स्वाप्त स्व स्व द हो । नेश्वास्थाने वान्यम् राष्ट्रेन हिंदान दे त्र त्या न्या स्टूर नदे सूर्यो यान्दरुष्यान्द्रा यान्दरुष्याने क्षेत्रः सर्वेत्रः स्वीत्रः स्वारुष्यः वियाः व्यापे विवेश भ्रम्य भ्रम्य द्वार्थे न स्वार्थे न स्वार्थे न स्वार्थ न स्वार्थ न स्वार्थ न स्वार्थ न स्वार्थ न स्वार्थ न स्व ममा धियो विमान सुया सुया स्यापार त्या सुमान स्यापार स् श्चापी द्वारा मा त्वारा में स्वारा में स्वार यानिहें यामया नेंदाधेना सुन् न्यून तुना स्वाम्या तिया ने हिंदा ने हेंदा देवा য়ु-द्वाशःश्रीशःश्रु-राशःस्यःवरःश्रीतः वाद्वारः कुः धिवाः सुः तुरः वार्त्ववाशः वरः व्युतः वार्ष्वेशः वादः वर्षे वादः द्वारः वर्षे वादः वर्षे वर्ये वर्षे व

गहिरामा धीमो प्राप्ता श्री मार्गी प्राप्ती व्यापान विष्टामा

धियो दे रूर वी अर्कें द गुर गुर पदे र वा वी श्रें र न ने खुय र र ग्रीमानमूत्यानदे से मान्दान्या मीमानस्यास्य स्थापिता सदे केतातु मान्दा नुः अप्पेन् नः व्यक्षान् व्हेते वेन् प्येना व्हेन हो अनः नहिना होन वर्दराधी मी न्राम्ये वर्षे कुरा ही वर्ष क्षा के राष्ट्रिया स्वर्षा सर्द्र ८८। अर्ज्ञ निराग्रहार्सेग्रमाग्रुहानवे हेसास्य ५६मार्सवे इसामाहरास्टा ग्रुग्रास् निविद्येश देश शुर्विद्य प्रियं न्या स्वाप्य प्रियं ने स्वाप्य स्वाप यर देश ग्रीश वशुर हे दें दा अर्दें द ग्री थी मोर वसे या रायश अर करे ग्रिनान्द्रश्रः हे प्रविद्यासर्कें द्रायदे प्रमः ह्याय छुट र देवा या प्रदायने ययः नुसार्या अर्गान्त्राहे स्वानानित वित्रामहत क्रम्यास्य वित्राम नुसार वि श्चायक्षतःश्चित्रःश्चित्रःयोग्योः यो विद्याया विद्याय विद्

श्रे देवाय नेवा वी विंद्य श्रे बुद सेंद्र प्रयान निर्म हैं केंवाय है। रदःचित्रस्त्रस्य वार्याययः चित्रसः चर्या वात्रतः कवार्यः संतिः स्नूदः कः ५८। श्रे.मे.मे.मे.मे.मे.मे.मे.मे.से.मे.से.मे.से.मे.मे.मे. यश्चितायादीरमार्श्वेरित्वेशाचुर्वश्च शेरेरेरेरवदेरमानीःश्वेरित्यारेषा भूर्-कःशे नेर-पर्। भूर्-कवे सर्वे दानेर्-हेना पेतरहे। दगः श्रें र नीः याश्रयाचार् अदे हेशाशुरवर्षे नदे हैं अश्वन ही काया सूर् कर नित्राश न्दर्वार्श्वेर्यक्षेर्यायार्श्वेर्य्य हो न्दर्वे न्ववार्यो हिन्यर्यस्थे स्था स्थासस्य हे र र्मेग्नामि धियो विवार्भेग्नास्य वाह्रवायायने नशास्य छै। साव्य स्वीर्मा य विवा वाय से ववाय विवा वी प्रवा हैं र उस य पहें त से रुप र विव स्वा ब्र-क्रि-नड्द-क्षुस्र-रिवे-क्षु-नुक्ष-क्रु-केन्-ग्री-धुवा-विक्र-र्धेन्य-ग्रीका नर्गेषःश्चित्रचेत्रप्रेत्रणेगोष्ट्रिग्यस्र्र्र्,नर्श्वास्यम्। वदःव्दर्गः अन्निन्दर्धे वो वित्रस्य महेव प्रश्वास्य प्रम् सर्वे व वि

न्राक्षा व्यापा स्थापा स्यापा स्थापा स्यापा स्थापा स्थापा

कःलशःश्र्वाक्ष्यशःवाद्यःश्रीः भूतःश्रीः । क्रिन्द्रेशः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वाद्यः स्वादः स्वदः स्वादः स

प्राया क्षेत्र राज्य निष्ठ क्षेत्र प्राया विष्ठ क्षेत्र प्राया विष्ठ क्षेत्र क्षेत्र

श्रान्त्र नहेत्। धे जोदे न्यू माल्य श्रे स्वर्त्त ने निव क्षेत्र स्वर्त्त के स्वर्त के स्वर्त

गशुस्राम् नेर्ग्णे भोते क्षार्युर्ग्न भराम

कुयास्वर्याव्यव्यावेदाव्याव्यः क्ष्र्यः व्याव्याय्यः व्याद्यः व्याव्याव्याव्यः व्याव्याव्याव्यः व्याव्याव्यः व्याव्याव्यः व्याव्याव्यः व्याव्याव्यः व्याव्याव्यः व्याव्याव्यः व्याव्याव्यः व्याव्याव्यः व्याव्याव्यः व्याव्यः व्यावः व्याव्यः व्यः व्याव्यः व्

नः विन्ते अवाः ने अः ग्रीः विने वा अः ग्रीः स्वा ने स्वा ने स्व वा अः ग्री अः श्चिते हरा या या या या निर्देश श्चित्र न्वायर वर्षेत्र प्रशाणिवा वा बुवाश सर्केत्यर हो न प्रशा श्रुप्तर वा बुवाश ग्री'नर'य'सर्कें द'ग्रु'सर्कें द'ग्रेन्'ग्री'यत्रेय'न'ग्रुन'स'न्टा थे'गेदे'ग्र्युन्स' क्षराक्षे जावरानश्चरायराष्ट्राने स्टायहीय ही जाराया सरहीत पार्या नवे निरम्याय थे निरम्म नम्पाय देया देव न्यायर सुदि सुर वर्षेत्र कुंवानी क्याया सूरा सुरा सुरा सदी पी नो दे ना स्वाया अरहे न ना सवा नर अर्कें दार्शि। धिःर्सेन्यायात्वार्यात्वयात्वेतः भूत्या गुगान्। स्ट्रेट: रु नगुनाम वनशः गुःर्देना ए श्वर्मा वर्गेर तुः ग्रेन्द्र न वर्भेर न वर्भेर में र्'नर्द्ध्रामित्रक्ष्याम्रियाद्येव्रक्ष्यामी द्व्यामार्ने स्वर्माने प्राप्ते स्वर्माने प्राप्ते स्वर्माने प्रा वर्त्रेयाची याची याची सूनयाने नित्रे दी माधी साने गार्थे मासे यासी देशक्रामु के शुश्राद्ध न व श्रुषे दिन में श्रुम्य श्री के कि वी मात्र विद्यान स र्शेम्श्राधेवायश्रादे द्वायी । अप्येवावे वहेंद्र देवाहेशव्हेवाद्वेय द्वारा मुर्रित्र मुर्गित्र मुर्गित्र मिल्लिया मुर्गित्र मिल्लिया मिलिया मिल्लिया मिलिया मिल्लिया मिलिया मिल्लिया मिल्लिया मिल्लिया मिल्लिया मिल्लिया मिल्लिया मिल्ल राष्ट्रभागुरावेराष्ट्री वित्रक्षे वित्रकार्यामा वित्र वुरावर रिमायरा गुर्याय वि वेट्रायाउदानकुः वेदायेगाः सुन्।

गानियारम्बर्थाने स्वीत्रस्य स्वीत्रः विराधेते स्वाति होत्रस्य भेत्राहार्केत्रस्य स्वीत्रस्य स्वात्रस्य स्वीत्रस्य स्वात्रस्य स्वात्रस्य स्वीत्रस्य स्वीत्य स्वीत्यस्य स्वीत्यस्य स्वीत्यस्य स्वीत्यस्य स्वीत्यस्य स्वीत्यस्य स्वीत्यस् ङःहःहःनविःवे म्नवःयशः चुरःविरःधेदःहे से प्राप्तः चेर्प्यः चेर्यः चेर्प्यः चेर्यः चेर्प्यः चर्यः चर्यः

हारान्यस्यश्रास्य प्राप्त स्थाया स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्

उं कं हं माश्रुयार्थे प्रमान त्या मुद्दा लिट खेते हे से प्रमान त्या मुद्दा के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के

यार्थ्येन्यम् वर्षेत्र्यम् अस्त्राप्त्र वर्षेत्रः विद्यायात्र वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्र वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्र वर्षेत्रः वर्येत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्येत्रः वर्येत्रः

वःनिःणयाश्वसःम्बात्यशः चुदःविदः चेदःसः श्वेदः से स्वाद्यः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्

ञ्चान्द्राः अति । विद्यालया विद्याले । विद्

र'वे श्वे 'र्वे 'यम जुर'वेर'श्वेदे से 'र्वे 'म्व'न्र ख्रा वर्ष्य प्रदे हो र

स्थाःश्चेत्रप्ति ।

यात्रेःश्चेत्रप्ति ।

यात्रेःश्चेत्रप्ति ।

यात्रेःश्चेत्रप्ति ।

यात्रेःश्चेत्रप्ति ।

यात्रेःश्चेत्रप्ति ।

यात्राःश्चेत्रप्ति ।

यन्ते समीत्र पायमा भ्री विदासे प्रदारि ने प्रति सी

र्वेदः नुष्याया व्यवस्य वर्षे दः वर्षे वर

निव ने नेंद्र भेग में ने अरेश अहे अर हरा मेंद्र प्रतिया कुषा की से अर मान विद्या

भून क र्चेन अर वुर नदे नु अरं न नहेंन पर दे से अअर न न न अर दगार्श्वे र बुद श्वेषाश्चेशागदायायन्त्र प्रदे धुवादे र में नहार्श्वे र बुदाया तुर्द्ध के ना नी के ना नी र्श्वे राजा प्राप्त र श्रुवे र श्रु । यह नी र श्रेन । वह र या है र श्रूव र श्रे वेद्रवदरा देशक्रिश्रभूद्रक्षस्वरश्रुसहेर्स्ववाश्रद्धर्भाद्रस्थान्यस्यराद्याः श्रुद्धर ग्री निर्वास्य में सम्मान्य स्वर्धा गुर्व श्री समें विद्य में दिया निर्वा न्दः स्र श्रुवः यः न्दो या त्या । स्र श्रुः स्रे : स्रे : स्रायायः ह्या । नृत्रे : नस् : नेसः वःसिकाराधिव। विवेशासाक्ष्म सुदेः ह्ये राजारहा सेवा हेवा हे राप्ता श्चाळवाळाणवे श्चे राख्याया निर्मार्ने वा सुराश्चे या ग्री निर्मे निष्म या स्थान वर्देव मंदे भूद करे भुः इया शुः हैं या मा शुद्र विदार्योद दु विदेश या मुद्रा थी। यो विया सम्यान्त्र त्यायने नमानु मानु मानु स्वरे स्वर होन् तु मान्ये प्यो मेवे मा बुम्य प्रम्पे देवे श्रुरि स्टुव्य शु र्वे या प्राविमा श्रुव प्राञ्जा यो । न्ध्रेग्राश्चर्त्रत्वर्त्त्रम् धियायात्वयायात्रीः चेत्रास्यास्यात्रीः चेत्रः श्चान्या विष्यो विष्यो विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषया विष्या विषया व क्रिन-दर्भन-भेत्र-भेत् श्चान्तियान्याव्याव्याद्वीव के स्थे म्वायस्य रेशियायाय्यावयान्य दि स्थे इस्रासाही सूरासर्कें दारायार्वे ग्रिसालीट धिया या त्यासारी रायत्या मश्रस्यात्रमात्रात्राचन्यप्रात्रातेश्वराम्यायाया देवस्यासरार्स्यरासरा नरंद्राची भुर्त्र श्राश्चेनश्राप्त्र धीना श्रामद करम् मेद्र केदायनम विश नश्राणे मोदे श्रेन सेट नु न श्रेन दे अर्गे यग श्रें अ विट श्रून नश्म श्राया यु निवि र्से स्वा मे नि नि निर्मा तर् निर्मा त्र निर्मा निर्मा त्र निर्मा नगरने दुः के 'बेर'नश धेग'अर्गेदिः श्वें ग्रेब्र', प्रतेग्रथमा ग्रुवें प्रहें प्रदे इयायावर् नुयायाद्रा येयाअवार्क्षयानुः भूतिरावासूनयाने धेवा दशयत्रुप्दर्भायमें ह्युयाबिटा हुर्प्य हीटा नवे प्रते हें पा नुराम में साद्रा

में गिरे भुत्र पर्से ग्रम्भ त्य में अन्त व्या में त्र में दिन मान में भें में प्र नियायाया न्दःवर्गन्याने अन्यान्यः वर्षे वर्षे । वर्षे वर्षे वर्षे । नर्द्राची दिर्। भेगास्मिन हो लें विस्ति विस्ति भेगाम हिमारा हिमारी न्वेनशयद्या दुराह्मु अविरावे रामवे यदी खुन्या इत्या दु निर्दे सान स्रोवे नश्रयाध्याप्रवाष्ट्यवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्रवाष्ट्यवाष्ट्यवाष्ट्रवाष्ट्यवाष्ट्यवाष्ट्यवाष्ट्यवाष्ट्यवाष्ट्यवाष्ट्यवाष्ट्यवाष्ट्यवाष हेगानसूर पानक्क सारा भू तुरे खुग्रास सु ग्राम्य भी हो हेस है सा सु हे नर्दर्भित्रभूनशास्त्र धेनासम्बर्के र्श्वेट ग्रुट रुप तुन्यन्य राविनानीश वर्त्रे ख्रियाश्चरायाश्वर या विवासिंद्रे सर यहिंद्र स्था ख्रुर द्वा या यादा वर्षे श अन्यदेग्वयाम्यास्य होन्। विष्टे र्सेन्यर्य हो सेन्या वर्षे न र्येन्य विष्य मश कुलार्सेना परे प्रिंश से दे श्रूर महुत सूर भी मो तसे प्राप्त न निर नुःधेनाः स्ट्रेटः विनयः शुःनार्धेः नदेः इसः सः यहः नुसः सः या १ स्ट्रें स्टुः द्रशः सुहः वरः वरः भूता देःवर्गः विः रवः वः वः वः वः रुषः श्रा धिवाः सविवः सविराधः वः ग्रव्यादर्द्धेर्यासुःग्राग्रयायायाः सँग्रयादी। नस्वार्यः स्प्रान्यः स्रीः स्रव्या प्रथमः ही .ज.चीयां था कु.यह .ला.ची हा ही या ही .हिंदे कू या हो .हिंदे कू या है .हिंदे कू .हिंद कू .हिंदे कू .ह ८८। टे.र्या.वे.दर्श्याक्ष्याः भ्रायम् अपियाः साम्याः र्याः स्वेदः विद्या सङ्ग्यः सः

धु दर्गी व्यासर हैं १५ १५ रे दर्ग सर्वेर न हैं देव हैं न से न से राम ग्रम् येत्र गुप्ति वेशप्रे प्रते प्रते कुष्य गुर्म् प्रति हेश हुर्मे गणु वि.वि.चन्या न्यीत्यादिर्म्स्यीःकःक्नायान्ये न्नूरमाने न्तुः ठवः यीः सर्वे न्त्रा न्युराना क्षे वर्गमा सकुः स्वामाकः निमासः स्वामानः सः र्रेस्यान र्रेस्यायः रेमायः रेमायः । र्रेस्याः र्रमाः रेमायः र्रेस्यायः विनः मुरुषः शुःनश्रुत्यः है। धिनाना तुन्य सावि द्रयः सहे यः सर्ने सुरुपः देः न्तु उत्र भे मोदे सहे या ह्या ग्री ने या पा के या यहि कि या शु श्ले न या पदे न्त ह्वाराश्वादेशानिदा द्वासेदायावर्षे ख्वारासदातु गुद्धाता वाववा केवर्रा ग्राचन कुरा वर्षु केवा वर्षु कुरा ग्रापुर केवा र्युर धीना हुना हुःदरुःचःष्या द्व्याःच्रेयायः व्यायद्यः द्व्यायःच्रेयायः नगवः क्षेत्र न् क्षेत्र ने ।

थ्या विन्शी धीयोदे हिन् के राजनित्या

दःश्वेःर्वेदःश्वेदःश्वेःव्यव्यःश्वेदःश्वःश्वेदःश्वःश्वः व्यव्यवः श्वेदः व्यवः श्वेदः विदः श्वेदः श्व

१ग बुगर्थ ग्री क द्या है अन् रहा धे मेदे प्रवृत्ते हे से से मिवा । नर्जे ल्. स्यावर्षित्राच्यायात्रात्रत्र्या वियात्रयात्रस्यात्रत्रा र्यात्रात्र ग्रथः हो ५ 'ग्री' थी 'गे 'श्रें 'श्रें दे 'ग्रा बुग्राश 'ग्री' न वि 'श्रुग्राश 'दे 'ग्रा बुग्राश 'दे दे ' सर्द्धत् गुर्रा शुर्रा प्रदेश पाद्र स्था पाद्र । विषापाद्र सा गुर्रा हिंदा । वस । वस । वर्त्रेत्रभूवर्या थ्रेम्त्रर्शे सक्रुर्यम्था है स्ट्रिन् वर्ष्ट्रम्य स्ट्रिन् त्रुर्यः वर्षे स्ट्रिन् स्ट्रिन् वर्षे स्ट्रिन् स्ट्रिन् वर्षे स्ट्रिन् वर्पे स्ट्रिन् वर्षे स्ट्रिन् स्ट्रिन् वर्ये स्ट्रिन् स्ट मया धेनाम बन्य राज्य निर्मा मित्र मि यार्श्वरहेश्यायो पर्वायार्थयात्रास्यायावयार् या श्रुवरहेश्यायात्रायात्राया सहसायराष्ट्रियायर्थेट्र्र्य्यक्ष्रियाळे वात्र्याचीयास्ट्रियायहट्याय्य श्रेना याया सहसा परि द्राया श्रेन् परि । परि । से दा द्राया से दा । परि । परि । से दा । से द <u> न् ज्ञरमः भेगः गशुमः ग्रीः के न्यमः श्रु रः ममः श्री वः सुरः यरः वेदः गर्षः ।</u> नवसा है ज्ञुः भूर सर्वादे ने से देशे ने सवसा न ज्ञुन के निष्या निष्या रुषान्ञुरामाष्ट्रानुदे सूरानानर्रे शासेन पुरियान्ता देवा हाषारदे वर्रेग्राय: प्राच्या शुः स्याय: प्राच्या या व्याय: प्राच्या या प्राच्यः वहवाश्रासाक्ष्म क्षेटावी धी वो हे द्वार्त्वा द्वार तु वहेवाश्रा ग्रह्म द्वार वि

देनास्तर्भी क्ष्यान्यस्य विद्याहेत् न्या विद्याहेत् स्थानित्रस्य स्था

दश्चित्रः श्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्य

यश्यक्ष्म् ने श्री स्ट्रिन् क्ष्मे स्थान क्

इमाया नेंद्राग्री भी मेरिन् हो नाम निद्राया

र्गेट श्रुष्य पॅव प्रव क्रुप्य श्रिष्य श्री । व्याप्य प्रव क्रिय श्री । व्याप्य प्रव क्रिय श्री । व्याप्य प्रव क्रिय श्री । व्याप्य क्रिय क्रिय श्री । व्याप्य क्रिय क्

१८ श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री माला में विद्या क्षेत्र क्षेत्र

शःश्चुःमहः क्रेवः ५८:५मयः विटः वें रहूं : नः श्रेवाशः ग्रेशः अः धेवाः

ग्रे भी मो इसस ग्रे सूदे नाद्र सा सुद्र माय सद वह नास निहा नाय है । सा धिना से प्टेन्त्र । अप्धिना न् जुरु सं से से न प्रमुर विदा । अप्से न स यार-रुट-लुयाय-सेत्र-पदी । या-सेवाय-पहेंद्र-पदे-ळुव्य-व्य-सेवाया । सेद-धर वर्ष न वार वी राज हैं वा १०० हे राज सूर पा सूर सूर करे हे छिट खें र रा अन्-नहःरेगाः पदेः नर्गे दश्यः पद्राप्यः स्त्रुतः पश्राने व्हरः पत्रेनः क्षे हिरा खुः क्वाया के या कें वें। कुः तुया यक्वें त्राये वायवा हो दे ही हो द मण्यत्थ्वत्म्रान्द्रस्तिः श्रिन्द्रम् व्यान्यान्ये मण्यान्ये मण्यान्ये स्व यार्था में देश के यार्था निवासी । या विश्वासी विश्व धे भेर्राप्त मुर्थे है। ।१३ वे अर्घ्य अर्घ वे र्दर गृः थे सुस हर म्यानवर्द्धा नियान्यारा हे स्थान्यान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्या स्थान्य ग्राइट पट से म्रोकेट दे।

न्चर्र्याच्यान्यक्षान्यक्षेत्रः विष्णुः अधिः विष्णुः विष्णुः

स्तर्भा अत्यानाहें द्वा विश्व क्षेत्र क्षेत्र

अःश्वाशान् विद्रश्याचे विद्रश्याचे निष्णा विद्रश्याचे विद्रश्याच विद्याच विद्याच

षी'मो'सेट्'म'र्मा |र्मे'षीमा'म्हेट्'म'सेट्'म्म्'त्युम् ।१५५ वेश'ग्राट' महारूष'र्मे ।

१वाराया हो द्रा ही । यो । यो । यन प्रा

ने'ख'णर्। ग्रम्थ'होर्'हो'णे'गोदे'क्स'ग्रर्भर्रात्रात्राहुंथ' नक्ष्र्व'स'र्रा ने'र्गामी'र्न्न'न्हो'नक्ष्र्व'स'म्हिस'ख्या

१गर्या होत्र हो त्यो पे नो दे रहस ज्ञात्स प्रता न स्रामा रहे या न स्रम रा बेट-५८-ळेग-५८-वर्हे५-४-अळेंद्र-४२-चे५-४६-ग्रावे-धेद-४४-ग्रम्थः <u> चेन्द्रा नेद्राची भूदे वचेत्र ख्याद्र अध्वापर ग्रम्भायः ।</u> इस्रयायायाया होत्री धीयो वियाहरि । गात्रया अदे नरही धीयो सुस इ.स्.चारत्यासुं नदेःवावयाचीःस्रीवयास्यान्या सुःहिताद्वाववरचीः हिन्यर क्षेत्र के न महिमामी क्र कित्र मी क्ष के कि में दिया न क्षेत्र का मि न्त्रग्रास्त्रिः नुःतयह्र अस्य स्वरः नुः हुनः यदे छुवः नृहः स्र श्रुवः यस् अधिवः या माता श्री सकुः प्यसः री सः वी सः तर स्व सः श्री या निर से या मित्र या निर से या मित्र या निर से या निर सं स उन्थे। नाशुस्रायान्ने नाली नायान्थेयानुस्रायाने। ह्वासायह्वानु सिन्दा यदिर्धेन्द्रि । भिन्नु हुः सेन्द्र निन्नु । सेन्नु निन्नु । भिन्नु निन्नु । श्री विश्वास्त्रित्व विश्वास्त्रित्व विश्वास्त्र विश्वास विश्वास

पशिषानिश्च विदा स्त्रीयान्य न्याश्चर्या श्चित्र सामित्या पशिषानिश्च स्त्रीयान्य न्याश्चर्या स्त्रीयान्य न्याश्चर्या स्त्रीयान्य न्याश्चर्या स्त्रीयान्य न्या स्त्रीयान्य न्या स्त्रीयान्य स्त्रीयान्य स्त्रीयान्य स्त्रीयान्य स्त्रीयान्य स्त्रीयान्य स्त्रीय स्त्रीय

दर्हत्यार्थे ।

दर्हत्यार्थे ।

दर्हत्यार्थे न्वे स्थान्य स्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्य

या नाययाची प्रचेत्र नाय विश्व स्था नाययाची प्रचित्र मित्र स्था नाययाची प्रचेत्र स्था नाययाची प्रचेत्र स्था नाययाची प्रचेत्र स्था स्थाय स्

म्रेट्स स्थान्य स्थान

ची: भी ची: क्रिंग् ची: क्रिंग् व्याचित्र क्रा क्रिंग वित्य क्रिंग वित्य क्रिंग ची: क्रि

वर्षाः ईष्यः वः दे। अश्वेदः यः याद्रश्च स्थाः वेदः द्वी शः यदेः श्वे न्याः विद्याः वि

वेशमशुरशःश्री।

महिनके कुरमे क्रिंत्र अधे वा मर्य हेर है जि के में शुरा हु यथा हेशवह्यादरक्षरवावेवाकेवा हेरा एक रखाश स्ट्राहर हें वादह्या <u> ५८: हे अ: यह वा ५८: अट: वा के वा शुअ: वा श्रेट्र या वा ५: वा अ: यः इस्र अ: ५८।</u> श्रेर्यावि वित्र हो द्वारा गापि उक्त हर १५ ५ माया दे के हर भाव अपन हैं ज़ुर्दा भेरमिवेर्द्र क्रें हु राषद्विम् नवेरमा हेर्या दार्धमा भेर गिवि दर हे अ प्यद्र अर्थे उठ पवि गा हे द या अ प्येग मुद वर्दे ग्रथ अर्थे उठ र निव सेन् ग्रम् र्माने प्राची मार्च मार्ची संस्थिम स्री ने स्राचीन प्रमाने प्रमाने प्रमाने प्रमाने प्रमाने स्री वर्देग्रथं उत्रामित्र मान्त्रेया हे अवह्यान्द्र अर्थे उत्राद्याया उत्र दर्भारम्बिन्विन्याचेद्रम्य रायाद्रम् अराम्बिन्दरावर्देग्रयाख्याद्रस्य गान्तेन्या धाधेनानीं राधेनासमें उत्तु सुराहे कुसमित्राम्बद इस्रयायासर्वेदानेदारस्य पर्देग्याउदायासर्वेदानेदाविदानेदार वै। र धेना से र निक्र शु तुरु है र से र अर्थे उद र दिन से विकास वर्षे निका ठव-५-५ मुर्यायम् । अःलेगायर्गम्य स्थानश्चरः हो नः से दः श्चे रः से वा से वा वि ८। ह्वार्या भी क्षेत्र व्या भी क्षेत्र या व्याप्त व्याप्त क्षेत्र क्षे र्ने से से राम्या वया नहें नाये के रमारमायी के पावया समीव से सक् दे.चेश्यः तत्त्रे त्यः क्ष्र्यः क्षेत्रः क्ष्री विश्वः त्याः व्यवः विश्वः विश्वः व्यवः विश्वः विश्व

द्धीः संप्यतः स्वानि । द्वीः निष्याः स्वानि । स

गहेशयह्वाची थी मेन्द्र वाक्षेत्र विश्व क्षेत्र वाक्ष्य क्षेत्र वाक्ष क्षेत्र वाक्ष्य क्षेत्र वाक्ष क्षेत्र

मश्यम् मन्द्रेत्र वेश गुर गुर्वे । हेश यह्मा न इ में ये नार मुरास वुम्य नःयश र्वेनःवह्याः विनःन्यः सेनः ग्रामः समा । सिमः यविवेः वोः यामः स्व मत्रा विशवहोय विद्यासुस वहोय विद्या । अपूर्व विषय वारा वर्त्रेषाणमा । हेरावहुमान इन्तें सात्नारात्रा । होराम्बदार्श्वे मानार्षेता श्रेश्री विश्वान्त ह्वारायह्यायराग्रम देखियानेन्याहरस्य षर। विह्वायरवडरायसेन्यरही । भ्रेट्टिक्वाय्ट्यारवार्ययसे व्या वियानभ्रताययानाभृते भाना नहाया सामा विरामी वि व सःक्ष्रनुः वर्षे दः यन्ते विष्वे विष्यः याद्यः विष्यः वर्षः याद्यः याद्यः याद्यः याद्यः याद्यः याद्यः याद्यः न्वीय। । नरेवायायानु न्वाय्वयायार्थेन्य। । वियायि नेवाय्याया यानित्राया सन्नित्रम्यान्ते क्षेत्रान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र ग्री:भूनशःशु:हेशःवह्याःयाव्वतः इस्रशःसेट्रायः उत् ग्री:सवरः वदेः सवदः उतः केन्-न्-निक्ष्-नर्गे अ: धेन् नहः ह्येन्-ग्रे-ख्यायाया हे या यह या नर्दे या नेत्र यानः नुवर सेन संदे सेन मी र्सेन न विवा गान्त त्या सेन सम विद्युम में । हिस वह्रमानदुःयमा मान्यमानविःस्रिन्दा दाम्यवासुम्रास्री दाराया गशुस्रासावेटानु हो नावे से पुर्वे खुग्रासान्या हा हो हो स्वा नावासासा र्या गारामा अपराया चुनार्या वाधेना नाडेना सुर अहिर तु हो तायया है। यर मुत्र सुत्र ये अपि श्रुत्र सुत्र स्वर स्वर सित्र सित् स्वर मुत्र सुत्र स्वर स्वर सित्र सित्

मि र्वेत्रवह्यायी थी यो बेट या वि गुत्र व्या हिन से न पुर से पह्या ग्रह र्रर्रित्राणुयानु मुर्रित्रा स्वाप्त स्वाप्ति स्वाप्ती स्वाप्ता सुरावर्श सुर न्दर्ने व श्री विन्यम् व श्री व स्मर् श्री न्या प्राप्त स्मर्थाः इस्र र्शे । दे इस्र रिम्न वि द्या ये र्से द य पहु य प्र रिम प्र ररःगीःश्वरःध्याःग्रीःभेरःगविःदेवेःश्वःग्राद्यः स्ययः रदः कुरः नवेः ग्नित्राने त्यराम्बद्धाविष्ठा हिन्सूर नदस्य दिन प्रस्ता होत् हेस ग्रम्भा ने न्यायी वह्या द्धारी हिया अप्तह्या यथा दे दि से न्या स्था वह्या। सिंदी सें प्रत्या विष्या । सार्विर प्यार विषये । विष्य पुरसे वे अवेट न्दा । क्रें न्द्र नेव क्रें केन लेंदा । वे अ अ क्ष्म क्रेंव वह्या यो . र्से न प्येना दी। से द ना विदे से प्येना गा उ ए उ द द । से प्येना ना द ह ए द न मह्यसन्द्रा संभिनाक्षन्त्रत्वावायाः विष्यानस्यानस्यानस्यानस्या र्धिनाने। दें धेनानायर्दा के धेनानार्यं वाद्या के धेनावदी र्बे धियायाद्दर्गयाद्दर्ग अदिराविक्षः व्याविक्षः विव्युत्तरा विव्युत्तर्थे अदी नडरूप्त दुपारेगामी र्थेव त्य श्रुरि ग्रेश ग्रायस्य र्थे ग्रायस्य स्वाय स्वयः न्वूरा ।न्यावस्यासे हे से न्यायया नाययावस्यान हेना यर है। मकुनर्द्वसारायमाहिन्सरस्था | तमायस्याचे नदे सुनानमान्सा | वेशमित्रम्या रहेषा प्राप्त स्वाप्त स्व याडेवा. पे. कू. याचा त्राचा त्राच त्राचा त्राच त्राचा त्राच त्राचा त्राचा त्राच त्र लेगालेग्राम्भानभू साम्रामिश्वामा मुन्तु ने लाया मानेश्वामा स्वाम मदे थी मो महिरा वेश मुद्दा ।१६वेश मासुर सं भेटा महेट से साम सु न्यात्रिकास्त्रात्रिकास्त्रात्रात्रात्र्या र्भुरके'र्ग्वेर्रियाद्युयार्वेर्यस्थाद्युयात्रेर्ग्येष्ट्गायुयादे मुराना र्विः त्रमः क्षेः विद्वारम् प्रमः विदेशायः विदेशायः क्षेः विद्यायः विद्वार्थः विद्यायः विद्यायः विद्यायः विद्यायः लूर्जिरा रु.क्षेत्र विश्वावी अरूर्य वर्ष्ट्रय वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर वह्रमास्री । १०३ सन्दा वर्गेना वर्गेना वर्गुमा वर्गेमास्र त्रामास्र वह्रमायाधेमा स्टार्श्वेदे पाधिमायावह्मा न्त्री सायदाश्वदान्य। वदे मश्यार्वे में से द्यावि या श्रुम्पार्या वरेवाशायस्या वासेवा वि वस्पेश

निरा वर्रेग्राम्य वि उद्गायाम्य वस्य श्रीतः चित्र ग्राह्म स्यास्य क्षेत्रः विस्

ग्या प्रति विश्वा के स्वा विश्वा विश्वा के स्वा कि विश्व के स्व कि विश्व कि विश्व के स्व कि विश्व के स्व कि विश्व के स्व कि विश्व के स्व कि विश्व कि विश्व के स्व कि विश्व शुया दुः नवे : इः नवे : क्षेत्राचा ना शुया ना यदुः नः प्यान्य हुना है। १११ वे या मदे के वा वा हे वा सु वन रा ग्री रा वसूत है । यह वह वा वाहे रा ह नदे हैं रा नभूत-तु-नर्डेश-य-तृन्। न्व्यत्राध्य-त्रेषा-वे-तर्देश हेश-वह्षा नइ'न्रें अ'श्रु'नश्रुव'रादे 'भ्वाय'ग्रेय'यय। नश्चन'रागुव'ग्रे 'पावे'दिह्न' हिरा विश्वतर् हेन हें र लेग्न अहर अवश्व स्थ्य रहा विश्वर क्षु-तुदे-प्यदःवहुवा-ठव-ग्री-पो-यदः तुदः वर्गः देव-ग्रीयः वसूवःयरः ग्राह्म मार्थित सार्वे सार्वे सार्वे सार्वे स्थाने क्ष्र-निर्म्न प्रमानियान्ता है निर्मा स्थाने मान्य निर्म्न प्रमानिया थरा वह्यायिकेशची पर्वे राधर सुराह्यारायिक यार केंचायिक गण्ड से प्र १३ हे अ' पट ' वहुवा' र्रें द' के दे ' दुर्वी हुअ' य' के दुर्व राम ' वा शुरु अ' य' के वा अ' म्रोटार्झे सटायटा नड्नारेंदि सुन्तरा है नगदान है नशहें देट दिर येगा क्रिटाक्ससासुः हेसायह्याय रायवे हेसासुः दाधीयाद्या यादाय सवेः अवरःशःणेगःश्वरःभदेःश्वरःगरःयरःतुः ग्वरःतश्वा ग्रःनदेःश्वेगःमः वःतरः ८८। अभाविया: बेटार्ट्स के याविया या अस्ति हो दायाँ के प्यार प्रह्या से।

र्दिन र्चिन हैं निवेद पहुंचा पा धेदा । १८ वेश पा सूर प्या पहुंचा ची र्से र न'र्ने'र्मेर्'ग्री'रेश'र्श्रेव'श्रुन'र्शेर'स'प्येन'रा'वेग'रु'व्यस्ययाया स'राह' ग्री:अपिश्रायदे।पि:क्वित्र्त्य दाश्राद्यां वे प्यटायह्यां में। द्वे व राया क्वश्रा ग्रीदें। |अन्ते मारामा अस्यया ग्रीदें। |वेया मार्यासा है। हेया यह मारा हु षरःवह्मार्चेनःग्रदःनग्रायायद्याहेरःस्वे भ्रान्याशुःवःसववःन्देशःशुः श्चर्त्रविष्यायायार्वेवायात्रस्याययात्राचेत्यायात्रीयः धिमाक्किट्टा न्वद्यान्चिः क्वा ग्री ग्राह्मा १५ देया नर्षे या स्व व्यवस्थानेतास्य स्थान्य स्थानित स्थानि नः सः दिते हे सः सुः भ्रुषा न उसः ग्री भ्रेष्पे पा न मः के वा सः स्री मः मं भी वः हुःसदःनर्भाग्यस्थार्सेत्। तेःक्ष्र्रः ग्रुर्भात् । स्वार्म् वः ग्रीः तुः धिमाः स्वार्भ्यः ग्रहः षरत्र्वारुत्वव्यः धेरर्देर्या धेराने वाया के के के के का की कार्य धेवा'स'वार्देवारा'स'धेवा'ल'देव'तु'से'लदेद्द्र'चित्रवात्रद्द्र'ण्टा श्रुवा'स' न्दा अरमोद्रायाद्रभा हेशाशुःत्वाशासदेगादानायादाह्रस्यशायाया लट.उद्देया.श्वर.रेट.चतु.श्वर.क्षे.रेटा इश्र.श्व.वियाया.सतु.य.र.ज.याश्वया र्न्यायात्वर्ष्याः श्रुर्न्य स्त्रात्वरात्वर्ष्याः वर्षेत्रः वर्ते वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः नेशःश्री विदेराने सूरानन्तरा ने ने निम्मूरा ग्री विदेश विग्रुरा ने शास्ति। हीर पीव ही। द सुवे सूद पाय समर सा सुर दर्गे स पवे दें व सेव हीं।

न् अर्वे उत्राची भी हे अयह वा भी वो व दुः भी दर द अर राया अर गशुसन्ते सर्गे रुत्र नुतर वर्गे है। दे न्या समय हेत् न दुः यस य पीया स गर्नेग्रथं प्रदेशाप्तः प्राचित्रं या प्रदेशाप्तः प्राचित्रं या प्रदेशायः प्रदेशायः प्रदेशायः प्रदेशायः प्रदेश नहेगारुटानाद्या वस्याहेनागराध्याक्षे होत्यवे केराग्ने सुरानाहे विदेवदावया गान्यहियायाम् अयाम् याम् यामहिया हायाम् या यहिशा राज्यश्वाद्याद्याद्याराश्वाद्याद्या वाषीः द्वेत्रात्याद्वाद्या राम्यीत्। महारायहेवायदेयीयोग्वरुष्ट्री विक्वायाळासावायान्या इस्र रही । ५ . लेग. स. या है या स. स. दे. स्र में . इस सी. सी. स. या वे. सस्र स. स. सी. न र्चिना साध्र त्र साहे। ना सेरासर्गे उत्र श्री भी ने न्त्र सेराधा हा सेरा नक्ता यासेरानतुना उत्सेरानासुसार्वेत्राप्ताना क्षेत्रयान्त्रात्वारा क्षराक्षाययेयात्रार्याययेयात्रात्राच्यात्रात्राच्यात्रात्राच्यात्रात्राच्यात्रात्राच्यात्रात्राच्यात्रात्राच्या उदान्तीः श्राञ्चान्यस्यास्य स्रोधान्यते । यदे वासा उदा प्रमान । यस्य वर् नायानक्ष्राम् ग्रायाचेर् शुरा दुवे श्री गारियाया विना के कुर मी विरा धरःनेवः हुःग्रथ्यः विदा अदःग्रविदेः गाः छः हः धः छेदः हैदः हैवः इगः छेदः सर्वे रुव श्री हेव श्री न्या स्टार्म विकाश संक्षि श्री है या इया विवास स सरमात्र अपितः सर्वे उत्पारमी मैं ना अरुदर से विवार न साम सि

यहैगाहेबाइन्साहेटानी सेनासहित्यं स्थान स्थान हिन्द्र स्थान स्थान

र्या विष्णि स्वा त्रिया विष्ण विष्ण

याते सेटाम्बिमिडिमात्या सेटार्दमा हुः सुन्दर्भात्र मात्र स्वीट्र मित्र मात्र दिन्न लेबर्जे । ने न्वालयक्षक्षके स्थर स्वर्ता स्वर्व स्वर्यात्या मेदे से स्वर् क्रेंग'न्र्'भ्रग्रा धरें 'ख्या'ध्यारा लेरा'न न्या' क्रु'न स्राप्ते अन्या क्रु' वे नसूल सूल नसूल र सूल र से अरा समाने ना साव हुना पासे र प्रसाद रे न्वासर्वे उत्यम्पद्वाप्ययक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्षेत्रवे वो न्व वस्यानाधेनामित्रमारेशानीमा यासर्वे उत्यायाया विसासानिका श्रीट पावी वर्रे पाय उदा न ग्रीट्य थे पाहे या प्यान प्रामीय ग्रीय ग्रीय ग्रीय ग्रीय धरः र्रेजियाः वी

च्या वर्ष्वा यात्वा व्यावा व्

वर्देग्रायाधिया हु शुरु के हे द्या यो ह्याया उद्यायया ये वह या नहेन नह्ना नह्या क्षुन्ररतस्य नेनुस्केरके सर्वे उद्यापनिह्या न्वीं अः यः अः विर्वेषा अः वर्ने वा अः उदः श्रें दः वह्या वीः श्रु रः विदः अः व्यु दः यहा नक्षःनक्ष्माःक्षःतुरःरःधेनाःकुरःनरःवस्याःचेरःश्रेःवह्नाःमश्रायःधेनाः न्हें अप्तर्री नवस्रा याधीयाः सर्वी उत्तर्दर पर्देवासः उत्वाविसः गारः रहः ध्ययः न् श्रुमः म्रमः श्रुमः श्रेष्ट्रिष्य स्वर्षः विद्यान् । यद्वान् । यद्वान्यत्व नरत्सुया होत् से 'र्चन पवे से राज्ये । इन्ते 'र्जेन प्रता हे 'र्जे प्रता हात्रा हा ते[.] श्रेना श्रेना रहे अः यदे श्रुर अर्कें त्रायाय हुना यश्रेन । नाहे अयह ना या छुटा विदा येग्रस्भू रस्मार्हेग्रस्में द्वीयाया सधीयर्देग्रस्मे से में राजिया सळव्यार्यसायसाञ्चासीयह्वा ।१६३ सामायूराञ्चात्रेवापदेयसळें वार्ट्वा र्शे र्शेर प्रतित् तीर गी अळद अउधाय अ सूरि न हें र पर्रेश शु शे वह्रमाम्यस्त्रेत्राध्यात्रावर्देम्यायः उदः श्रुम्यायः यदरः चुरः वः श्रे। म्यूरः सुः श्रुः नुःयश्राधारायाम्ब्रुसायदाद्धंदानहेगाः हुःसे नुःद्रमाःयाञ्चदेः नहेंद्र येग्रथाश्वराष्ट्रीः भूरारें रात्रश्वरायायात्राक्षां रात्राक्षेत्रा ।

द्रायार्द्रे नान्ता द्रिक्टिता द्र्वाश्वारा वेश्वराय विश्वराय निक्ष्य विश्वराय विश्

नत्त्रमा धीमो पह्मा मदिमात्र मात्र मात्र मा

ल्यानित्रक्षेत्रः स्त्रीत्वर्णात्रः यात्र्वरः यात्रः विद्याः स्त्रित् स्त्रात्रः स्त्रित् स्त्रात्रः स्त्रितः स्तिः स्त्रितः स्तिः स्त्रितः स्तिः स्त

श्रेरते। विष्युर्वे दूरम्या केंश्राह्मस्यया ग्रेटे वे दिन् ग्रेटि केंपा हुर

क्रमान्त्रिमान्त्री विन्न कुर्यान्त्री स्थान्त्री स्था

यळव्र यात्रे। श्चिम् यळव्र यात्रे यात्र यात्य यात्र य

नम्त्री नात्रश्यम् इत्वेदार्श्वेदास्य नम्त्री श्री नम्द्रि स्थान्य नम्त्री नात्रश्यम् स्थान्य स्थान्य

विश्वस्थाः श्रुप्ताः ति श्रुप्ते स्थाः यह स्थाः

मःभूतः दे। यह्माः भरा होतः प्रदेशः स्वत्याः देतः विश्वाः प्रदेशः । स्वतः प्रदेशः विश्वः प्रदेशः विश्वः प्रदेशः । स्वतः प्रदेशः विश्वः प्रदेशः ।

 च्या शुःश्चनः विन्याने स्वाहित्याने स्वाहेत् । व्याहेत् स्वाहेत् स्वाहेत्

विगार्हेर् होर ग्रे सुरानहेर् पदे प्रेस्य खुयार् ग्रुस्य दे के राजे पहेर् हा ८८। टे.जशर्वेग्राचस्यश्चर्ह्ट्राज्याधेवायश भ्रूनशरदेवे देवावेशः रायर थे जे शसकें दारिया ने दें दा की दें सारी या दें साय है दार्गे सारी। नेया गुना ह्वा गुना गुना गुना में ने विष्या में में निर्देश श्रीराप्तासर्वित होतासर्वासा भे। वित्राप्तामा मित्राप्तामा स्वराज्या स्वराज् वह्म । क्षेमार्ने नम्बर्या न कुर क्षुर्ने द्वा वहे व क्षिमार्थे । दिव द्वी मार्थे प्राप्त क्षा विकास का क्षा व चुरःस बुवः श्वरः बुवः सेरः ग्रामाश । सर्देवः वेवः रेसः सदेः कें शः धृः धृवः सरः भ्री दिवनेशम्बर्धरशानी धीमोत्रह्मामदेनम्बर्धन्मुन्सेन्त्रम् क्षरत्र वार्वा क्षार्रे व वार्व वार्त त्र वार्व वार वार्व वार वार्व वार वार्व वार वार्व वा वह्यार्ह्ने दे भ्रेट्रायाय महार्हेट्र प्रदे द्रुयात नेयायावत व्ययाह्य प्रमः द्र ग्राटार्ट्रेन टें सार्वेद्धित सरकार्ट्रेन सर्वेदायदा की राधि स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स्वीता स र्दर:विवाःषा नरः स्रवसः विवाःषः सेः वाववः म्रीसः सेरः वर्दे विसः सः वर्दे । पेतः र्वे। ।र्देवर्ने खायरी अपने वेरर्ने लेका केरर्ने वर्षे क्षुन्य वेरहेका शुर्मी यह वर्धेन्यन्ता ध्रेशनेन्द्रसम्बन्धिर्देन्सर्वेन्स्वे वर्षेत्रस्य हे में नर्त्रायन्ता दे स्राचावव या पर बुव से दर् माना र विदाहन नश्रस्त्रम् स्वर्धिः हिंगा सः क्षेत्रे ना प्येतः है। देव त्यः द्येग्या सः त्ययः क्षुः दृदः। क्षुः

र्वेत्र प्रायम र्नेत्र त्र सूत्र प्रमा सेट प्र प्रीट र वित्र से । प्र तित्र हे सिं रहे प्रायम सुत्र र विष्णु स्था से ।

नकुन्या वरः चुरः श्र्यायः धेया नविन्या

क्षेत्र-दर्भव-भव्या अभिन्न्य भी भी विश्वस्थाय स्थापनि श्रेट-इट-क्रियामी नह र्श्वेट-संदे हुस यावया याहत त्यासन है। श्रुव रस्य ग्रीन्यार्थाः भेर्त्रः भूर् १ हेरः ग्रीहिनाः वः स्वायाः स्वयाः स्वयः स्वय अद्धंदशःश्रा कुःग्रान्श्चीःभेःगेःनेंद्रायायत्रेःनदेःनवेःश्चद्राद्र्यायाधेगाःगेः वर्त्ते :श्रृंवाधराम्यरात् नुर्यायाधेवाते। कुम्यराक्ती अर्ते कुन्नश्रृवानर्षे नर्द्धन् परिक्षे न न्या नभ्रया रव न्या सेर मी सर मना गुर गुरा अः हेनाक्षःतः श्चःना त्रनाराः निर्धः नश्चरः नश्चः त्रश्चरः स्थरः येनाराः श्वरः श्चीः श्रुवे श्रु र द्वापार्धे दश श्रु श्रू र पश रें र र र श्रू र प्र या या पर्वे श यह । तुगरहा वुया यन रिष्टी रहा हिंद्या हिंद्या रहा रैंसि। गुड़गरी क्ष नुःस्वाराधियाःस्रे। कुःवारःक्रीःधिःवोः नहवाराः नरान्याः न्रेरान्यः स्वेरास्यः स्वार्याः याद्रस्य ते देश सम्दु कु याम हेट निवेद न सुवाद वे सिराधिया है र्षेर्प्यशर्वेर्प्र्प्ष्याचर्स्रे गुर्दे ।

स्वायाधीयाची न श्रम्याययास्य स्व द्वी आख्राक्षे क्षे खु खु दि दे व्यः व्युः खे खे खें खें खे खक्के न्त्रुत्या भाषा व दुः दुवा नता वा वा विः व क्ट्राई है है। य. ह. ५. डे. है। ये स्ट्राई सी सासाय है सी लामाया सी सी है। या न्। ग्रा क्षेयाययः होन् ग्री प्ये मो स्यापित प्याप्त स्थापित स कुंवायदी क्षु क्षेत्र विभागे मुदाना विवा पुर्वा नमून विदान विष्ठा में पुर्वा दु नसमा निवरिः देरानाम् अयाध्यना सिंह । प्याना विवर्षे । प्रमेरा नुःवःर्रे व्यान्या ।रेट र्वे हिन् हिर व्येष्य विष्य । बिट वी र्वे व सर.कृ.च.ल्री विश्वसारात्यात्र्यात्र्यात्रवेताचित्रः,चत्रात्रा वित्रसायवरःह्नाः वर्नेन्न्रस्थकुर्या विवेश्यः इस्यावेश्वर्यास्या विस्याने हिन् धरानम्या तिःश्वायाया सेवानम्बन्धाना स्वापि । भ्रिक्तिम् सुरास्वित्या ग्रेयानम्ना १०-वे १०५८ कः यद्यवायम्। १ मव ग्रे स्वावया द्वरा स्वीया वर्देव। भिरंतुः भिरंदरक्ष अवितः द्या हि.ज.थ.यथ्यायाथता |वार्यया: विद्या: विद् | न् ब्रम्थान्दर्स्स्रेन्यायान्वदा | व्यन्त्राविष्यायानेन्यास्यायान्या |पि.पिटशःशर्वेष्रःस्ट्रिःग्निट्यःग्रीशःनग्नग । विश्वेषाशःसदःर्वेषाःशःर्वेटःशः

ननमा । ने देवा इसका ने न्यूका कु न सुन सुन । विकास मान गावे गान्दर्रहा १८७ इसस्य वे द्रान्यमा । संधिया इसस्य वे न्यानु नस्या । मु:इं:इ:इस्रथ्यते। । धि:यो:यहिश्याहिश्यदिंद्र:य:यहिया । देः नवित्रन्त्र्रम्थाः ग्रीः देः विष्णि । स्प्रान्य प्रान्त्र । वर्षेत्र प्रान्तिया । इस्रान्य प्रान्य प्रान्तिया । इस्रान्य प्रान्य प्रान्तिया । इस्रान्य प्रान्य । इस्रान्य प्रान्य । इस्रान्य प्रान्तिय । इस्रान्य प्रान्य । इस्रान्य प्रान्य । इस्रान्य । इस् र्थानु निया विवासि स्वानि निया विवासि स्वानि नःवा रिटार्टार्ने नदेखे नरानम् । वार्मिन वार्मिन वार्मिन । लर.य.र्ने.र्ने.र्ने.र्ने.व.र्ने.व.र्ने । जर.न्नेर.व्यूचा । जर.न्नेर.व. वे देवा अ नही । भ्राप्त प्रिया है अ अ प्राप्त राष्ट्र वा किया में वा अ प्राप्त वा स्वार्थ अ रासेत्। भ्रिः इत्य प्रायकु उत्याहेश। । अगा अपा वेश प्रयम । गैं स र्रासिन्ध्राच्याम् । पानिन्न्याया क्रिस्तिन्त्रीत्ति । पानिः श्राद्धाः र्वेन् निवेन् निया । माराया पान्निया राष्ट्र निया । सामन्या राष्ट्र स्था केमा वर्रेश्वी सिश्चारुट्विनाः ध्वारम्य सम्प्रमा । गार्श्वाराः श्वीताः प्रमाया । यी'स्' श्चिर् दे 'वेर्य मासूर'द्या । गी'र्र 'गी'व्य 'वेश श्चर प्रस्म । गा श्रेय शर दरायायहमारावया भीत्युः धेरावे याची । गारी गायी वियासरा नम्या । भैर्नर भैर्षे भारतम्या स्वापित से भिर्मे भिर्मे स्वर्भ निर्माण चलेव मार्श्याय श्रिया ल्याय वा मिर्ा भेर्मे ख्रिश्याय श्रायम्या विद्वेश

तुर'सळत्।

य य में रासहंद्र (अप्यान्त्र गुवर् गायः क्रुत्यः सहयः ग्री ग्री प्राय्य प्राय प्राय्य प्रायः प्र

प् ग्राम् ग्राम् । ग्राम् १८ विष्य । ग्राम १८ विष्य । ग्र

(। सर्कें र्श्वास निया स्वास निय

य। ये 'डेव' से 'रेग्र राप्ते 'सुव 'प्तर' ग्री राप्ते सुव 'प्र से दि स्व से दि ।

নমূর নউম্প 1988 P7

ধ ব্যানি মর্ক্ত নমংশার্ম শি দ্বি শ্রুমান্দ্র্যাম বেরী অ' ক্টর্ ৯ P113
০০ ২ব। নি 'ইর' মী 'ইবামান্দ্রী শুরু দিন বী মান শ্রুর দের (প্রী মান্ত্র)
গুরু ন্ত্রন ৯নমায়া 1982 P212 P217

११ वॅदि:अर्ड्स्थ(श्रुअ:ह्वाशःश्रॅवाशःग्रे:प्रमे:क्रुव:दर्गेव:वॅप्याय: ইবিশ্ব:বश्चेवाश्र) P100

१२। १२। १५। वॅरि:सर्इर्स(ग्रास:सी:हिते:स्रुस:ह्यास:प्रेसेस) P18 P22 P218

१६। शे'ब्रिंव'शे'नेग्रांन्धे'क्षुव'ग्रांनीश'नक्षुव'रावे((नेन'श्वेंव)) र्हेन्टा 1984 P65

१२ में ८४६८४ (८मे १५८६४ के अपसेयामी मार्थसप्त्रस्थ) हेन. १८६४

१५। में ८ अर्ड् ८४ (ग्रासः से फ्रिटे सुसः हवा या व्योवा के त्र P100

१८। रो.डेब्र.श्रे.देवाश्चर्ये सुव्यापर वीश्वरम्ब्रुव्यय (धे.वीदे. चन्द्रप्यायम्बर्ध्य विष्टुक्र 1980 P16 २०। सर्ळे र्स्ट्रेन्से नेपाय निया क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र प्रिया का निया क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षे

२१ २^२ (शुंश हु निवे क्षेत्र) निव निवासिक निवेश से स्था अवस्था निवेश से स्था से स्था अवस्था निवेश से स्था अवस्था निवेश से स्था अवस्था निवेश से स्था स्था से स्था से स्था स्था से स

२२। में र अर्द्धर्य (वें त से दे व व प स्पर् १८८६

२३ शे विंत्र शे रेग्य र द्ये क्षुत (पर ग्रेय र क्षुत र परे (पी ग्रेय र प्रा क्षेत्र क्षेत्र

१८। ग्राम् शुद्धाः सेवास प्रसे श्रुम् । विस्ति विस्ति । विस्ति ।

१५। १६। में ८ अर्ड् ८४ (में ५ ग्री प्रमा के प्रम के प्रमा के प्रमा के प्रमा के प्रमा के प्रमा के प्रमा के प्रम के प्रमा के प्रमा के प्रमा के प्रमा के प्रमा के प्रमा के प्रम के

१६। मूर्अक्ट्रिश(श्रेशःस्वाशःयन्तरःश्चरःज्याशःयन्तरःयाद्धशः प्रमुश्र) P29

१८। ३०। र्नेन्रिंह्र्स्यासीन्स्य क्षुत्राप्य में श्रुत्राप्य में अपने श्रुत्राप्य के विकास के वितास के विकास क

३१। ﴿र्रे:हे:कुय:रेवि:माश्रुट:हें अ:सेंग्रश्निग्रश्) P518

३३। शे बिंद्र शे ने प्राथन में भ्रुद्ध । प्रायम् । भ्रुद्ध । भ्रु

भूनशःनवि'न। शेर'गे'क्र्य'नव्या'नश्रृद'म।

शेटर्रास्त्रभूवरुर्देवरग्रीर्द्रोक्षास्त्रम्भूयर्द्रम्भूवर्र्द्रम्भूवर् ठेगा हु भु र तथा नक्ष्र च र ते च छी । छ र पर लेगा है गया पर क्षेत्र थे क्षेत्र ग्रीअसीटमी र्सिम्याप्त्र स्वामी सेट प्रमुव रेटा हिन् में रिस्टिन के मा वॅरिटेंबा:यव:द्धंव:वज्ञेव:कवाय:विर:दवा:कःव्रेव:यःव:श्वु:देव:वाव:क्षेवाः वी क्रुव क्री क्रियं स्ट्रिय या या या या या प्राप्त के या प्राप्त की क्रियं की स्ट्रियं की क्रियं की क्रियं की क्षिम्यायाः विमार्थेन् सेन् ग्रीः हेया शुः दर्शे विमा ग्रीन्यान्ता सेन् मी ह्येन्या ॻॖॱढ़ॆ॔॔ॺॱय़ॱढ़ऻऀॻऻॱॺ॓ॸॱढ़ॱढ़॓ॱॸॆ॔ढ़ॱॺॐढ़ॱॻॖऀॱॸऻॾॕॸॱय़ॱग़ॖढ़ॱॻॖॸॱॺ॓ॸॱय़ॻॹॸॱ नमा क्षेत्रन्देव वेद सेमा सेट के ना नासय न सेट देते देव इसस न्रहेन्यरक्षेय्यूरर्से ।नेयूर्यूरव्येष्ट्रेष्ट्रिय्हेन्त्र्रा ।नेवयर्षेवयहेन् यःग्वःग्रम्भेत्। दिवाः ग्रेनः श्वः वदम् अंति स्वाम्। विवः विवः स्वः शरशःश्रिशःश्री विश्वनःसःइसशःग्रदःस्रेन्। यद्यस्य विशःगश्रद्यःसः ८८। रेव श्रूटश टवा ८ वट वहेवा हेव ज्ञावाश प्रशा के सार्केश की वावश ख्यायायायवरन्यान्त्रा हिंग्याचेन्द्रन्यां केरायया ग्रस्य व्याप्त के प्राप्त विकास के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्मा के निर्म रेगा'रा'ग्रार'त्य'त्रहुग्। जुदे'ग्राबुर'रेदे'सेर'रेद'त्त्रस्थराविर'र्, कुर्'यर' <u> चुरात्ररापिर्दराया येदाया ध्रियायादा निदातुत्व वियासा वियासा । वियासा </u> र्शेनाश्चान्यास्य प्रत्यान्य । या कराय द्या स्थाने प्रत्या स्या स्थाने प्रत्या स्थाने प्रत्या स्थाने प्रत्या स सर्द्धरमानम् विद्यानम् त्यात्वामानाय्यम् कर्णीः से सुर्दरायार द्यायीया अत्रकः वर्षेयाः कवाश्यः विदा वहः देवा सः सेदारा विवादवा वशः शुः विदायवाः प्रशत्त्री प्राया विषा अप्ति प्रश्राम्य से प्रायम् प्रमानि स्वाप्ति । स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वापत न्यायम् अर्मेन विमा स्मार्चेन मेन स्मार्चेन स् नमा वर्ने र से द मो इस मावना इद वर हो हो न वर पर होते।

न्दःस् अदःमे दें ने न न्दःस

१नसूत्र नर्डे अः स्था इस्र अः शुःनर्गे दः प्रदे से दः नी सर्वतः हेदः वः

75574

र्ने ५ अ५ की नम् क्षेत्र प्रदेश्चा न करण हैं भें विवा के के वारा वारा या श्री या वीरा था ग्राया केरा में अळव केरा हे प्रस्ता है गा स्वीत खुषा या नहार् हें रास दे नहून । नर्रेशःश्रः सम्सर्भः सु नित्रं द्यासर द् नुरान वस्र भाउदा सिते के वारेशः रमायान्त्रिक्ति मात्र देवान मार्थिय देवान मार्थिय देवान मार्थिय विश्वास मार्थिय विश्वास मार्थिय विश्वास मार्थिय श्रेर्दे के शक्त स्वया शे में ने हिर्शे के ना सुन्न या का हे त्यो प्राची प्राची स्वर्था स्वरं नन्गानेन्द्री । १ वे अः सः न्दा अः भ्रुः मङ्गे निवे साम्यासः इस्य सः वहुणास्येः क्षें रा धे में वर्षायदे यदमा हेर उदा दिन में दें यह क्षेर या विद धेव वेश र प्रमा १ शे पुरा द्वा प्रमा के श भी श्वर निर्देश सम्मा श वर्षे थ नः सुः हे मा खेटा सहे सा सु। हें न सी हैं ने सि हैं न सी है न सी हैं न सी है न सी हैं न सी है न सी हैं न सी है द्रवेशवर्षुद्राचार्वश्रमाशुंशादुःवदुःवेदा देःधदाश्रेदाचीवर्षुदार्गुः ळायान्श्रेम्राश्रासाधीयो त्र्र्यासदे नन्मा हेन्न्ना श्रेन्न्न् नेत्र हो त्रहोया नदेः कः यः न्रेम् अः सः नेतः श्रीः नेतः स्वारिकः स्वारः यन्तः स्वारः विः योः नेः रे'नशर्नेद'रे'अट'शे'ब्रेंद'रेट'गढ़ेश'अद'ळट्'वर्शदश'सेट'ग्रुन'सदे' ध्रेरप्रा भ्रेरपे में त्रायानियान त्रामें प्रायम्य विकास के स्राप्ति के स्राप्ति के स्राप्ति के स्राप्ति के स क्रॅ्रिं निर्देश हो स्ट्रिंग विद्या के स्ट्रिंग के स्ट्रिंग स्ट्र स्ट्रिंग स्ट्रिंग स्ट्रिंग स्ट्रिंग स्ट्रिंग स्ट्रिंग स्ट्रिंग बेट्र ग्रीका उद्या शुर् के कि की श्री र रेवाका विकार विदाय वाटा सूर प्यटा दें कि

र्वेत्रयाधीर्वेरार्से । रुषाधिषाणीः नमून नर्वेषा ह्यायादी में रामी खुन्यारे गशुस्राग्नार-दुर-मी हे सार्श्वायद्यरसायस्य। वद्योवासहर्दास्यवरादी हसस्य र्राप्तानी व्यायार्थे या स्राप्ति द्वाप्त क्षेत्राचा विष्य प्राप्ति विष्य सर्दिना वि.धि.धू.कुर्मी अ.योषेश.यमिर.कुर.कुराकुरी कूरा क्रिश.संस्था ग्री.हू. ঽ৾৽ৡ৾৾ঀ৾৽য়ৢ৾৽য়ৢ৽ঀ৾ঀয়৽ঀ৾৽ড়ৄ৵৽য়ৣ৽ৼ৽য়৽য়৽য়৽য়৽য়৽য়৽য়৾৽য়৾ৼ৽য়ঢ়৽ <u> हॅ</u>न्डोन्छे अवसम्बद्धन्द्वस्य वासेन्द्र्यन्त्रम्य वासेन्द्र्यन्त्रम्य श्वाम्यरळ्टामी नह श्वेट हेर नत्त्र मा स्वाम्य प्राम्य धिमी सुट न वस्य हेवर्दा विशेषायायदिवायायादर्गियाश्चरायाधिया विरास्टर्गिवी श्रेट्याया भे वित्र में दिन में दिन में दिन स्थाय वित्र विद्या वित्र स्था भी म्हेरिंग्ग्रेबर्ग्यवास्त्रियासळ्वास्त्रीर्ग्यस्यान्दर्वे क्रिन्ते स्थान निटा गर्भरार्द्रेगार्स्स् नवटार्ख्याविस्र मा स्वामी द्वामी द्वामी द्वामी स्वामी स्वामी स्वामी स्वामी स्वामी स्व यासीटावेशाउँ सासूदे वृशायशाष्ट्र यम् र्सूदाया वर्षे दायमा वर्दे दायदे शे हु:स्ट्राळेदाची:खुम्बर्याद्यात्रम् द्युद्रम् द्युद्रमे व्ययसम्बर्धः मह र्श्वेन हैं न्यायय न्याय हैं वर्षा सेट वे थि यो न्यायन् याय धिव है। धि यो गठिगार्डसायान्हें दानुक्रित्रपदे तुसामसे दासम् धीने दुसादर्साम यश्चराचुरार्दे। विश्वर्श्वाशायचुरावास्त्रश्चारामुःवारामुःवारामुःवश्च नर्डेशन्गायशः हुनःनःहै ःक्षःनःनित्रेन् भूनःयः नक्षेःयगेनः हुशःसरः

सर्विने। वि.सी.सू. कुष्रा में श्री सार्या सार्या ता स्था स्था सर्वि सार्य स्था मार्थ न्होते'सबद'ठवा ५वेस'ग्रास्य सम्मान्या मेरिः श्रूय'र्धेव'न्न सुंदिः नेया गुना ह्वना तु। क्षेना न्येन क्षें के या महना प्रदेश मुर्या की ने की में के न्रहें न्या के त्या हिन्यमा के वायाना यह के के वायों विष् ६ वे अ व शुर न पर गुव व अ अ श्रुव अर न श्रुव ग्रुट । वे द श्रुव व्या यो न अ श्रुरःग्रीःनहःश्रेदःसदेःख्वारादेःसावळसरायदेःद्वरःग्रीय। श्रुःळदः गिहेराग्राम्यान्द्राक्षेयाराम्याम्यदेशेरायी अळद्राहेरायवीं दाख्यारा देशेर व गहिरा में गडिना कें ५ ५ सुर भ दी अेर में में में ने कर वर्ष मत्वा व ५ ५ र गै'नहःश्वेर्'रवे खुग्राया सूर् गुरादा से प्रक्रिस्य राजि श्वेर् प्रवृत् पर् नहेता शे. मुः महः केतः शुर्मा कें सामर्दिन मिते खुम् साम्री धी मी पुः साम् साम् रायश्चित्। भ्रेट्रायाद्वर्षायायश्चित्राचेश्वत्यायद्वर्ध्वर नहरम्नाश्रायाद्याधीत्रायशायदी द्वानवे प्रनर्त् नुवरातु विश्व विदेश प्रशा अन्यायदिरावे में दाञ्चरायविरामवयायीयायारावियायीयायीयावे याय सर में पर्माप्तर मुद्दारें के की में किया के का से का में के प्राप्त की विका गश्रद्याययाः नेत्र तुः गययाः चरार्हेग्या नेता देगाः या श्रुप्ता स्ययाः ग्रीः नन्द्रभ्रम् अ। क्षेत्रानी विद्यान क्रम्म विद्यान म्यूर्म स्वाप्त द्रम भ्री त्रिक्ष मान्ने विश्व मान्ने विश्व मान्ने क्षेत्र मान्ने क्षे

कैंवा'णे'वो'वाशुअ'र्'से अ'रादे'से र'र्'। से साव से र'वहर वो से र'र्र ८८ वित्रस्य क्रिंत्रस्य विक्राणा वित्रस्य वित्रस वर्डेश-रुट-मी-छिट-धर-ह्रेंग्श-धर-ध्रेंद्र-धे-ध्रेंद्र-महिश-गा-वर्धेश-दशः नर्गे द्रायि हिट नदे सुम् राया दे सूर नु दायद सम्याय न से द्राय से दाने भेर-दरक्षियाः यद्विभागान्त्र त्रमाभेषाः द्वारा वहः भ्वेतः भ्वेतः स्वाराधाः द्वारा र्देवरहा केटर्टरळेग्यहेकरकेर्वर्या केर्ने केटर्टर्ट्वर्येट्टर्स् वयायहँगान्वीयाया क्षेत्रावे नेव क्षेत्राचे नेव क्षेत्र निम्हिन प्रमासुमान्य स्व मदे क त्रावहें वा नवें राहे। ने सूर नववा म ते रेवारा मदे वाव म स्वारा न्दास्त्रम् सद्धिम् राष्ट्री मा स्नुत्र न्दा प्या स्नुत्र है। वेद्र स्दा मी निहास ह्यान हो या या व्याप्त कर्त हो या से पाने साम के प रा लेश रावे भ्रेम वेश मा क्षेत्र किया था किया युवा ग्री ह्या शाहर श्री राथा श्रीटास्टाञ्जावानी विद्वास्त्र स्वास्त्र वास्त्र वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्व मैशर्ने व में वित्रायम् द्वारा व राज्य के के व राज्य व व यद्यायह्वायहर्नेवानी देशें सेवाया क्षेत्राची सक्षव केत्र नुनेत्र नेवा स्था श्रेश्चिर्यं रायदे श्राम् हर्से वा श्राम् श्रिम् श्राम् श्राम् श्राम् श्राम् श्राम् श्राम् श्राम् श्राम् श्राम्

ने भूर सा गुरा व से द र सा व र सा व र में व गी । शुरा पर द द र भूव मदे सेट इसम सेट पु वर्ष वर्ष सेट प्रमा दे प्रा सेट पी वर्ष वर्ष केंग धिव वि व अर धिव दर्गे श राये के व की श है न से रायहे श श है वस्या केत्र में हैं हे वहें तर्मा राष्ट्र में राष्ट्र रायायर में नसूरावरायेर ग्रेन गुरु गुरु राया से दिन श्री शित्र पर है। थ्व'रावे'भेट'ठव'रेवे'र्टे'र्वे'र्ठभ'न्र्हेट्'रावे'भेट'यश'भे'व्दव'र्वे। ।वरे' वर् न सवा केरावा नर ग्री इसा र ग्री र स्वर इस सा न सूर्या र सर पर सा नसूर्यायदा ने निविवागिनेग्याया गुवाहान वार्षेत्राचित्राची वार्षेत्राची वार्षेत्राचित्राची वार्षेत्राची वार्षेत्राचेत्राची वार्षेत्राची वार्षेत्राची वार्षेत्राची वार्षेत्राची वार्षेत्राची वार्षेत्राची वार्षेत्राची वार्षेत्राचित्राची वार्षेत्राची वार्षेत्राची वार्षेत्राची वार्षेत्राची वार्षेत्राच वार्षेत्राचित्राच वार्षेत्राच वार्येत्राच वार्षेत्रच वार्षेत्रच वार्षेत्रच वार्येत्रच वार्येत्रच वार्येत्रच वार्येत्रच वार्येत्र धुगक्षातु के देगा या पर त्वुरावया दे त्व इस्ययाया ख्रा द्रा द्रा इस्य द्रो जिंदा मश्रक्षेत्रा पुरव्ह्या वर्षे चुर्शे भेर उत् देवे देव ची देवे देव स्वर् श्रेर्द्धराधेत्राचित्र १वेशप्रवृत्याकृत्र श्रेर्वा श्रेर्वा श्रेर्वा श्रेर्वा श्रेर्वा श्रेर्वा श्रेर्वा श्रेर् यादेशाया विद्वान्य से केंद्रान्य ग्राह्य से साम्या देवा की हैं के सिर्म के साम्या ने'वर्' सुन्। से'न्ने भ'हे। ने ने संस्व संस्व पासे र पीत पासे साम ने स ग्रम् अरावाष्ट्राचरार्भ्रेष्ठाचयरार्धेर्पाच्यार्थ्याञ्चाञ्चरात्राच्यार्भा वर्त्रेयानवे सेटाइसमासेटायमा तुरावेषामासु वर्त्ते न्या माना दे भूरा गुर्भकें केंग् संधित सर सर हिंद ग्राट ख ग्राद्य मानिवेद सेट उत् दे हिंद ग्री सेट रं स हें द राम सेट पेद रापम दें म सेट दें। १८ १५ मुदे प्राप्त प

र्देव श्री दें ने क्रिव या केट भी सक्व केट दिन श्री पाट थी भी दर्भामायमा बुदानदे भ्रादे देवाया दह्या मार्येदा से दा के भादहेया। मीवनुन कुः धे मोदे द्वारा सारा कुर या से निहें साम सा कुर के या सा यार विया इस क पर् सम्म भी भी वित्र की दिन के दिन के दिन की वित्र का सर रस्राकुरागुराग्रा । देवे सेरावेशर्मा पुरवेहिता । १ वेशान्स्रवारा वर्न हिन क्री अ र्र्सेन न्सें न र्रेन सें न से वे जा सुर जी सें न वहु जा खें न न सा से न ग्राट-सुटा । भ्रीट-वालिये-धी-वी-वाट-धीत-खा । हिस-यहोय-धिट-दस-सुस-वर्तेषाण्ट्री । अर्थिनिविष्यभागराध्वापरा । हे भावह्यान दुःर्ने स विग्रभः व । श्रीरःगविवः श्रीरः नः व्याप्तः श्रीरा । वेशः पः प्राप्तः समुवः परः श्रीटाधीवावार्ट्स्वार्श्वेवाद्यां भाषा देवार्श्वेवायायाटेशायरात्राहेशायह्याः श्रुर्द्रों अः प्रश्रा धेः वो वेरः पदः वरः व्रुशः प्रवेरः द्वं यः यश्रा सुदः वः वस्यः

या ब्राह्म । विश्वास विश्वास

१र्नेन्'भून्'य'ण्याच्यम्'र्श्चेन्'यदे'युवायाग्री'सेर्वा क्षेत्रा'हेवा'र्षेन्'न्वे य'या

कु'न्नरःश्ची नहःश्चित्रं निवाद्यः विवाद्यः विवादः विवादः

वर्चेश्वादियाः तृत्वस्य स्वाद्याः स्वत्याः स्वाद्याः स्वत्याः स्वाद्याः स्वत्याः स्वाद्याः स्वाद ग्रे भेरमे रेशके वारे में राय श्रे राभे न तुन पर नहेत्। कर सदे वाल्र नुःनश्रूवःमदेःनेवःकुःनेनेवःश्रूवःमद्या धेःनोनुःसःदनुशःमदेःनन्गानेनने नम्रेंद्वित्रिः मालुद्दिः इद्याने अद्यो स्यामालया स्वित्र स्वर्धिः सम्रोत्र स्वर्धः र्श्वेर्र्स्यायमानुराववेःभेरावी नेरायमान्यावर्षेत्रमान्यस्था श्वेता न्सॅन्ड्रेंब्र्ड्रेब्र् थे थे मेदि मिन्यावया सेन्द्र्य हु। । सेन्से पिन्यावया क्षेत्राः धुरः दशा क्षित्राः वीशः र्देद्रः इस्रशः क्षेत्रः यरः होत्। १००३ शः वाशुरुशः मायदे हिंदा ग्रीका थी मो का क्षेटा दृष्टा क्षेटा मो का स्किमा ग्री ना स्कृत साथित ममा भेर-दरकेवानी अळदि हेर्न्यार सुदे हुँ र न ग्रुन खुवास पानस्य क्षे गुन्नों राया के प्येत सूर्य क्षे वित्ती राष्ट्रिया गुनाय प्राप्त किया गि हेत ग्रवि'सेट'गेराचेर'स्ट्रूर'सेट'गे'सळ्द'हेर्'डेग्'नर्गेर्'द्र्य्यूर्'सेट'सेट' ख्राया अर्थे वा प्रमाय में वा वा वा वा वा वी साम विकास व वी द्वेदिश्रामाद्राध्यम् अञ्चल स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स <u> ५८.क्ष्मामी क्ष्यामित्र श्री ५.स्य १.स्य १.स्य १ स्था १ स्याप्त १ स्था १ स्था १ स्था १ स्था १ स्था १ स्था १ स</u>

 ८८। क्षेत्रासूर सेवास ग्री समय उत्तर्ते तर्र स्वर परि तथ से र विस नहग्रम्भराद्यः में निष्यः भूतः व्यास्त्रम् । स्त्रम् र्देन स्व मी सूरे कः न्य निया धेव वेया मत्या सेट वेया मंदि केया कुट ब्रिट्स्ट्रि.सेर्स्ये.सेट्स्वेर्क्षेट्रक्वेरकः निश्चेर्द्वास्वित्राचार्ये विश्वासास् नु विना पर्ने न न से दास पी व सपे के ना स्र न में मुस्य सुर स्थु म पुरा पा से । नर्देशस्य स्टर्दे न् श्रीया नर्दे न निया या स्टर्स स्टर्स निया स्टर्स स्टर्स स्टर्स स्टर्स स्टर्स स्टर्स स्टर् अ.लूर्या पर्र.रेयाकाका.बुयालर.लर्ग योर.री इ.यंश.ग्रेर.के.यंश. सर्वेद राने निया के या त्युन हो नियो सूदे क निया निया भेदारा हूँ रासा न्वीरायदे।पन् न्वाय्व की स्वीरक न्यावेराय प्राप्त वी सेट नाया निस् नशक्ष्यान्ता क्ष्यात्यत्र्रेशनशस्त्रस्यश्चर्मस्यश्चर्यः स्वराधितः यार विवार्देव प्रतः ध्रव प्रयारे भ्रातु विवार्दे र भ्रूर शे से र वी । ह्यूर से या न्दःहे निव्यक्षायक्षायक्षा के व्यन्ति नायमें नायन विया वियो ना ना यायनुयायायीटानु पर्देनायाने प्यान्ये सुदास्त्री क्षनायायी सामित्राची सामित्रा वर्षेयानवे क्रान्त्र्रियायायया म्रायानवे के सायया क्राय्य नि नदसन्द्रिये नित्रे नित्रे नित्रे नित्रे नित्रे नित्रे नित्रे नित्रे स्त्रे नित्रे स्त्रे स्त्रे स्त्रे स्त्रे स श्रेट्रा शेष्ट्यूराने। देवाशे क्रेंवाये प्रेंचे प्रदेश यो प्रिया स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन र्शे ।१११ वे अ'माशुर्अ'ने द्रा हे अ'दह्या'यी'धे'यो'याद'रुद'वेया'अ'व्याय'

वःश्वां अरः नहेना अः वर्षे ना अः श्वां अः हः श्वरः व्यां अः ग्वाः नितः हे । अरः श्वे वः श्वरः श्वरः श्वे वः श्वरः श्वे वः श्वे वः श्वरः श्वे वः श्वे वः श्वरः श्वे वः श्वे वः

यदिमापारेगार्दे वार्दे वार्चे दिन्दे हैं के स्वार्थित स्वार्यित स्वार्य स् र्बेन श्री नक्ष्रन नर्वे अर्थ ने प्रमानमें न प्येन माहिन मन के पर्येन माहिन देन देन में देन में देन में किया में मार्थित के किया में मार्थित के किया में मार्थित के नन्गामी अः ग्राम्पर वर्षे नुः सेन्। नेवे में त्राम्य सेन्। सेन्य सेन्। सेन्य सेन्। सेन्य सेन्। सेन्य स यदे ग्वत्रायदेशक के निर्मेश भीता र्वे व र्वे व रेने निर्मेश व रेने र्रे इस्र अर्दे 'ग्रद्य मी अर्थ नग्र ग्राम् पुरे दि स्वाप्य पर के दर्भे पी दर्म श्र गान्त्रःक्षेमार्यः नेवा प्रते निव्यान्यः निव्यान्त्रः निव्यान्त्रः । सहरायाधेवायवे भ्रीतावादीत्राधाताते त्याचा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप र्श्व र श्रें र मी मार विमा इस शाय है । भूर न भूर ग्राट र र श्रें र भिना सर नह र्श्वेन्यस्मनम् ने न्यारेना प्रवेगान्य गान्य व्यास् नियम् । <u> ५८.च८वा.तर्भस्रस्य अ.ज.सूर्य स्त्री. तर्भे ज.स.सूर्य ५.८म्</u> नम्र्रेन्गी। विन्र के अगाययानम्रेन्य भे त्यापन्। धे मो न्यापन्य

यः विश्वास्य वार्वे न् हो न् स्थरः नुः त्यव स्थरः यहे व वहः ह्ये न् स्थरः यह वाः स्थरः स्थरः यह वाः स्थरः स्थरः यह वाः स्थरः स्थरः यह वाः स्थरः स्थ

श्रीरामी सळ्त्र हिन्। विनया के बिनार्ट्या महत्त्वा पर्वीन पर्या कः वाशुअवर् पुर्वो श्रायायशा धिः वो प्रमः क्षेत्र प्रमः क्षेत्र प्रायो प्रमः क्षेत्र प्रमः मावना पळ ५ पते भून राय दे र द्वी साहि ५ माय छे न दे मात्र रा सु मार्टे र रेग्रभःहे। वर्तुग्राभः मङ्कः नगरः येश अटः यहग्रम्भः यात्रे न्देशः ये ग्राव्य ८८ शे में र बिट देवे देव में नवे के ८ दुर्वे विश्वास्त्र स्था स्था सेट मी दमें राया ने स्ट्रीत स्ट्री रेग्रायायानहेत्रप्रों या ग्राप्ता सेटारी स्थापन्युना ग्रेट्रा ग्री सुप्ती से प्राप्त स्थापन धेव'सर'स'बर् क्स'र्वे'र्र'क्षेया'सर्'र्स्यास'क्षेया'त्युव'वेर्'ग्रे'क्रेव' ग्वित इस्र ग्राम् से में हिन्य नहेत् हैन म्यायस म्या से में नि नह हैंन ग्रे हेर्यय डे क्ष्र न रे दे केर मे न न न म स दें न मे र में या न हैं केर मुन मन्दा देवने धेदायादेशके निह्न देवा की मावसा स्नावसा से से सामेदा

धर्वित्। विर्धेशयदेर्धेशयदेवशःशुःद्वयःर्अत्यवस्क्षेत्रशिः सळ्य. केर. क्रेचा त्ये राम हो। स्टायार त्या या न्या साम होते हें या निष्या स्था मुक्षेत्रमित्रे हिन् होन् होन् भीत्रेत्री निवेश्यक्त बुर हो स्ट म्यार या यान्यायान्त्रः वोयायायान्यास्य स्वान्यायान्त्रः वित्रः वित रदानी नश्रुव जुते देव दे दश्याय ग्रीय नयय केट नह देव दे त्ये द्वार नम्'यावह्या'यम्'त्रेन्'यान्ना अन्यो'र्स्यायायान्नास्यायाया क्षेत्रःयर्हेत् चित्रःदेव्यः स्वत्याच्यायः स्वतः यदे देव दे ख्याय श्वा हु से देव या वेय यथ। से द द द से या स्व शे हिंद से नः भ्रे। केना स्रदायार्दे वाददा स्रवास विद्यादा स्रोता स्राप्ति वाद्या स्राप्त श्चेर्यन्दर्भिरायायानहेवायरास्टर्भावयार्देवावेषाः ख्वायाश्चनातुः गहिरागायर नहें न नें नाराया नर होन प्रिये सुवरा सुवे सर्कें न होन ही । थी । योदिः विष्यायायां निर्वे यायम् या विष्याम् याया विष्याम् याया विषया ग्रम्याचे रहे सायन् या ग्रम्यो स्थान इन्ग्रेम्रेन्या से निर्देशम्य क्षेत्रा स्वाप्ति क्ष्मा में कि स्वाप्ति से स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स विनर्ने । विने भू नुवे सळन हेन डेमान में न स्था केर में नह र्रेन छैन यशन्दर्भेटर्द्रेन् ग्री प्रवेशन ग्रम्य वर्षेत्र स्वेद्र विद्रा भेट ह्रस्य ग्रविग

यः वह्रम् निर्ने प्रवे प्रके प्रकेष प्रकेष प्रकेष प्रकेष प्रम् । इति ।

द्रभेट'इट'सेट'ठव'ग्री'यत्रेय'न'ग्रुन'र्ख्या

श्चिरः हेर छेर या धर छे हेर छेर रहर श्चेते हेर छेर गहेश शु वर्तेन्यः भूरः व वरः मे वर्षे वर्षे प्रमेन्यः के म्यायः वे स्यायः निष् कैंग'वे ही अ'णेव त्या अेट'न्ट केंग'ग्राच पेव प्यट हेंग'चंदे हैं न्ट अ' वर्त्रेवानमः भुन्नान्त्रेन ही वर्त्रेवान सुनामा भेनान्त्र स्थान यासीटान्टासीटाउदानी। यद्येयानानुना द्धयाहिना सामाना उटानाया के स्ने। शेटर् पर्मे सेत श्रुर्णि विषेत् सेट या रवा यश मिटा सेट रहत ही दिसा र्रेन्देखन् भूत्वेर्त्यापरम्पायकायन्त्रकारायायम् राज्या न्यराजी भी ने तर् रायायराज्य स्त्रीय स्त्रीते हिना सरा यह न्यरा स्नर र्देव'य'गर्विय'नश्राधेट'न्द्रधेट'ठव'ग्री'यत्रेय'न'ग्रुन'स्र्रे श्री'र्देय'ग्री' र्नेन ग्री नर्ने अर्थे ने अर्थेन नवे के लेन प्रवे नवन ग्री अने वे श्रीन या वहे रराविवाग्री पर्वेषाया है प्यरासे दारा दिसारी ही सक्या पाया हैया पा क्षराश्चरायवे श्वादे त्या श्वेदातु नित्राया श्वादेव श्वी त्रवेया वा शे स्वादा व

यने वार प्राप्त के अर की अर की प्राप्त के सम्मानि के अर्थि के की नाम कर है। वर्गुरस्वया यासुरविष्ठातिः कर्षायाने रायया देवायावने याता मेन्यि भी । नियम्भे साम्येयायाय दिन से सेन्। । यदे पी सायदे लेसा श्रेयानती । नुर्हेन्याधेन सेरामवन सेयाधेन। विसामस्यस्य विदा देवे रदावर्षेय र्व देव वस्य उद्धार देव स्था रहे स्था रहे से य रहे से य रहे से य रेंदिःवर्त्रेयःनःसेन्या र्नेन्यःसेःमान्यःमःनेःन्ननःसेंयःसेःसूनःनसः न्नरः र्वेदेः खुव्यः ग्रीः स्टाः सळवः नहेंद्रः ग्रीः होत्रः स्वेदः स्वेद रॅव प्दिते प्रहें न शुं हिन हो न ने प्येव कि स्थाप प्रश्नित प्राप्ते के प्राप्ते के प्राप्ते के प्रश्नित प्राप्ते के प्राप्ते यः अधीतः यः वर्षे धित्रम्यायन्त्रेयानास्रीयम्बानास्ये स्रीमार्ह्म्याम्यायन्त्रेयानाम्बुनार्ह्म ११वेशमाश्रुर्भा भेरमीश्रासळेंद्रम् मेर्से सेर्से देश'सर होत्'स'वे 'क्य'सर हिंग'सश हे 'चर'चहग्रश'क्या शेट देवे देव 'वे वर्देर्दे लेशन्ता देव ने त्यावरे स्नून बेर रे लेश न हेन सावनव लेगा हु बर्डिरा रेप्परहे अर्जु र्रं दिवेषान वेर्पित के । र्रं हिन्निक्ष्वावायमा । विन्देश श्री वार्श्वे ना होन्दो । वार्श्वन देवान् विन्त्रा धिरःर्रे । १३ वे अप्याक्षरास्रे वार्या स्वानाया धिवार्वे ।

क्रॅंश हे स्याम्ब्रे न्या स्टायळवा शुन्दा हैं ना मित्रे न्द्रें या खुवा या खेता

रेव में के न्दरमाय मुन ह्या निवे के स्वार्थ में निवे मुन व है ने हिंद ध्ययः धेव राम्या वितः हरा सुते प्रेंत गी वावया गुः धेव खरा सर्वे सुमः नुःवावयः भेः तुरुः परुः वाशुरुः ने हेन् उवाः भेंः भें भें के हिन्दि हिन् हीं र्नेन-तृ-तिश्वयान-तृ-सून-निन्नायानिका-तृ-तिश्वयानिकः सून्या नम् होन मदेर्नु अन्तरम् अळन् न्दर्श्वे अळन् शेर् शेम् अर्धे नम् विवास्मान्द्रेशः धरःवर्द्धरःवर्षःवह्वाःध्ययःरदःसळ्दःधःर्वो वरःहोदःधर्या देवार्यःवाहेरः यश हैंगारारें में अप्याधियायाया । श्री. तु. तु. या श्री. या श्री या श्री. य ने या द्वी के स्वार्त्त के त्रा विश्व विश्व के स्वार्थ ५८। विश्वयानवे नमा कमार्था स्थान स्थित । नम् धि रुषान नसे सान्य श्रुम् । वासून्त्र्यान्याने प्रस्ताने । विदेशिक्ष्याप्याने वायवाने । १५ हेश नमून है। भेर ने नेंद्र या निवियान वे कें। हैंना या या शुःश्वी अर हे। न्ह्रिन्स्रत्द्रिन्स्देगुद्रःश्चेरानेश हैःसन्द्रा नुःश्चे विवास्रस्रिंगश्च श्रेराहे श्रेराया देवा हुन हुन वहाया वर्षा ने सुरायहाया नदेः नन्न भी शश्चार्ते न न्म स्मार्थन स्मार्य स्मार्थन स् ब्रटार्ट्रेट्रायायह्वायाधेवासूनस्य क्रेंग्स्यावदाळेदावस्ट्रियायाध्या सर्केग्गंगेश न्यासंदेर्नेन्यायह्यायन्। । श्रुनेन्यनेयानासेन्यमः यावर्ग इसम्बाहिरासुरवेयायायमा । महार्सु यहिरासुरवियायाधी । ब्रद्भित्तेत्र विद्याः हेत् ख्याया । १६ वेयः यास्त्यः स्वा हित् चेत् छीः श्चा इस्र श वे 'स्ट मी 'न हैं न ' चुवे 'नें व 'व 'न नें र श न न न मी श से 'व हु या 'सर ' वर्देन नगर मी अप्यह्मा भारता अद्देव शुंश मी श्रुंन खुवा धीव वा सर यक्षत्रः भवः प्रमाध्याप्तरः हिना प्रते श्चितः सुरायः श्चितः यक्षतः यानिनायः ग्वित्याव्याः हुः सेन्या सेन्य्यः सेन्यः स्वतः सेन्यः सेन् निटा हैंगाम्याननग्यायदे हैं न होन ही सुदे न हैं न होने ही सक्षा प्याप्त धरायुनाक्षे ळदासाइसावयोवावासा सुद्रस्यरायीयात्रे वित्रा ने ने न सूर केर र जुर्मा ने के र र मी सक्त हैर से न ने सन ने स्व न याधिव। १७७ वियाप्ता हिंगायते वियायते सुया हेत् ग्रीय। श्रिषी दिव हे नह्यायायाधीय। ११८ वेयायासुराययासी।

वस्त्र स्त्र स्त्

यर निर्माय पर रंग पीत वियान है में तार्य नु से र न्र से र उत् ही । वर्तेयानःश्चानवेन्त्राम्यान्त्रेयान्त्राम्यान्त्रेयाः स्त्राम्यान्त्रेयाः स्त्राम्यान्त्रेयाः सरार्श्वेरानदे के नहें दारारेदे थेदा के गुदार्श्वेराने सानहें दाख्या की न्रेंशारीं मारायाश्चाविमाश्चरायदे र्वोकायात्री न्रेंशारीं रेळें वाववा इस्रायमा बुरान् प्रवेत् वेत् केत् केत्र माना स्वायम् । विष्यमाना स्वायमाना स्वायमाना स्वायमाना स्वायमाना स्वायमाना स्वायमाना स्वायमाना स्वयमाना स्व देशदेंबरे में नर हेर प्रश्नान हरा नह देंबर ही प्रहेश न हुन ब्रा देंबर यायह्यायम् होत्रयाने वस्यूत्रयान्य वस्यूत्रयाम् येत्रयाम् येत्रयाम् येत्रयाम् येत्रयाम् येत्रयाम् येत्रयाम् ये न्द्रभार्याने प्रमाणी हो साले वा निया हो ना है ना है ना हो ना है न ग्रैअप्दर्-गुअप्पप्टरळन्याचेता स्टानबिद ग्रीया ग्रुनप्य बिवा सेदायया न्रें अर्थे ने वहे वा ग्राट केट के कुस्र अप स्ट एं कुर सेट न् नर्गे वा कें वा सदस्य धरम्दर्भिर्भागविष्ठाविषाची भेरात् भ्रूराग्रह केंगाम सेता दे निष्य भेरा मैशमान्त्रायमें नद्रपर्देन्यने। सेरप्रदेनेनेनेन्ये सेर्पेन्नेन्य नःलूर्यमञ्जूष्यता यरःश्रुर्भःभाषयःसूमःयिमानुमःसूनः विराक्षेत्रःश्ररः <u>५८.श८.१२५.मी.५मेलायाचीयातासास्त्राचेत्राक्षेत्रावह्म्यातासाम् १५४.मी.</u> क्रिंशायुर्दित्यम् श्रुर्द्धाः दे द्वाय्ययाय्यवायाः विवाद्ययायाः भ्रात्युन में। । ने या के शाय ही में दाया नुभाषा श्राय्य स्तुन स्तुन यरः श्रूरः न श्रुवः श्रॅरः रु: ग्राम्याया सर्वेदः यरः वेदः यः श्रूरः धेदः या र्वेदः यः

न्येग्याय्यात्वे र्नेव क्री क्ष्याय्या क्षेत्र प्राप्त क्ष्याय्या क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्या क्ष्या क्ष्या

च्यान्य विद्यान्त विद्यान्त विद्यान्त विद्यान्त विद्यान्त विद्यान विद

श्रीन्त्राचन्त्रियाः स्वार्थित्र स्वार्थित्र स्वार्थित् स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्ये स्वार्थित् स्वार्ये स्वार्

शेर्देशक्षात्रम्भाशेश्वराष्ट्रीः नद्दा स्टायशस्त्राश्वराद्दार्थेवात्रम् र्शेन्यश्ची अन्तेन्य अन्तिन्य अन्तिन्य वित्राच्य अन्ति । अन्ति अर्थिन । अन्ति अर्थिन । अन्ति । अर्थिन । अर्थिन गुरार्ने स्रुयात्रयाद्यात्रात्र स्रुरायाद्या त्रयात्र व्यात्रीयायाः न् भ्रीत के से दाने पा सूद दें नास हो दाय है। से दाने क तस हुद न से दा ही। नन्ग्रास्त्रिः क्रीः इस्रासः नबरः ह्यः द्राः स्राधः वर्षे स्राधः वर्षे स्राधः वर्षे स्राधः वर्षे स्राधः वर्षे ळग्राश्रियाचारुदानरायाचे देवायान क्रेट्रियायाया हुदान प्येताहे। ये वादा विगारमानी अपन न माने स्थार के स्था के स्थार के स्थार के स्थार के स्थार के स्थार के स्थार के स्था के स्थार के स्था के स्था के स्था के स्थार के स्थार के स्था के स्था स्था के स्था के स्थ र्वेगामार्गिके से नगदानदे इसावगुर हेन माने। ननुसावहुगमाया हिन्गी न्नर नित्र सुवा क्षया क्षया है सुना है सून से सूना भेन गी प्यर वश्चर व। ।दे नविव धुव देर हैं निहर है नि के किया है निक विक्र देश है । नह्न्वासराधराक्षीत्वार्म ।रवारेवार्राष्ट्रवार्वार्वे उवासक्ष्राया । कु'यनन'सुर'य'थे'र्गश्राह्मण'ह्में 'यर्। । यर्देर'हे 'क्षेर'वेश' गुःसे द'हे नविवा । र्ह्से प्यट से द रहे स देव रव देव से साम स्थाप । विश्वा सुरस्य स क्ष्म शुक्र सें र ग्रामा र के किर निर से र मी मिया सदे पहुंचा खुल है र निया कवाराव वर रव के देवारावर्षे रायायया सेरायावर्षे र सूर् रूर् र ब्रैंगसूत्र ग्रेंट र्सेग्रा ग्रे । हिट् पर से । ताते । से । इससा ग्रेस स्वेट प्या सु न्वाराशुःश्वरायरायर्विन्वायरा। यहेवाःहेवःश्वरार्थेरानवेःर्देरःहेःसूरः तह्नाहेन स्वाम्यार्क्ष न्याप्या के से त्या स्वाप्या स्वाप्य स्वाप्या स्वाप्य स्

र्हेन् ग्रेन् भ्रान्य प्रमाणिक क्ष्या क्ष्य प्रमाणिक क्ष्य क्ष्य ग्रे क्ष्य क

गहिरामा भेरामी महमाराख्यान भरामा

श्री प्राप्त हिंदि हैं। विष्ट प्राप्त के प्राप्त हिंदि हैं। विष्ट प्राप्त हैं विष्ट हैं विष्ट प्राप्त हैं विष्ट हैं विष्त हैं विष्ट हैं विष

१८र्दे द्राम्याम्यास्य

यर्ने न् मुला हे शाया है। नर्ने शाया है। विवा त्या क्षेटा मिला स्वराय ने विवा स्वराय है। स्वराय है

वुर कुष रु श्रु लेग श्रु र परर वो पर्रे र प श्रूर कुष पर युर प्रश्र पर्रे र कुषान्ता ने क्षरानन्ग्रायाये सेटा इस्र राषान् हें नि शे गाबुदानु वर्षेत मुयार्चिमा अदे अदिलेश मुद्री यदे राष्ट्रिमा अदे अदि लेश पाया मु अर्छन र्थेर्ने। वर्रेर्कुयाक्चीः भेराक्स्याक्षेत्रेया पात्रवापात्रव्यास्य स्थ्याः हो ५ थी : इ. न. २ ८ भी ब. हूं या इ. क्षेत्र अप सह है या अह : हे व या वि र युन सह र ध्रेर्रे । वर्देर्कुणन्दःह्रेशःग्रुवःगिष्ठेशःवे स्थेरःगीः वहग्रश्यशः न्देशसें इस्रायासेट नित्रायास्य स्थाने वित्राया स्थाने स्थ सर्रिरान्ध्रमात्रा वर्रिराक्त्रवाची सेरान्द्रा हे साञ्चराची सेरान्ध्रमात्र वर्त्ते ।१८वेशामश्रुम्याम्भूम् नसूत्राचर्ष्याम्यशास्त्रीसाम्या मुयाद्राहेशामुनाग्रीत्रे ने नामिश्रास्त्रे द्राप्या प्रमाणा विष्या सुरा इसमाधिवावात्रम्योगाववात्रवाद्येत् छेत्। ग्रेसन् छे गाविससाह्य प्रदेश श्चेति वर्ग प्रमासी । केंग प्रमासमा हेमा उत्र श्ची से प्रमासे से प्रमासे । केंग प्रमास मार्थि । क्ष्र-नित्रम्भः सर्व्यादेवः विद्या देः न्याः इस्र स्थान हेन् व्येत्रः स्थान हिन्द् स्थान हिन्द स्था यर्ति सूर सेट सबर पर्टर नदे क न्या ग्यर दु न सूद ग्राट न हैं द देंद माववरन् से प्रश्नुस्वरने निमा ग्राम्परेनि क्रियासमा यायन् सामा निमेस वा गर्भेम हा नश्चना यहा नगय देहा गर्थया विश्वः सुन्दान्हा भेहः

सबर्याना श्रुराया वश्चुराया सरावा न्यायावा सेरावा वाश्वस्या श्रेश्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्य

अन्यादिर-५५५५५५५ व्यादि विवाधिर दे। वेद अन्य श्रेरःश्रेःश्रुरः विवाः स्टारे दे वर्षे दे कुषाः भ्रुसः वहवाश्रासः धिवः षदा श्रेरः म्बर्नित्रः स्वरङ्कार्द्वे अभाग्नित्रः श्रीत्रः स्वर्मा शेट-५-अदे-नश्रुव-देव-हे-अर्द्ध्द्रभ-शु-र्ये-५-वी देवा-वावशःग्री-श्रूट-र्द्ध्यः बुद्रास्ट्रान्यसः बुद्रान्यदे देव विवाधिद्राञ्चनसः निवासः विवासः न'विग'रु'ग्रेन'म'भे'रुर'श्रे। वर्नेन'कुव्य'ग्रे'भेरा व'न'नरा वन'म'नरा गर्वेद्रायाद्या नश्चद्राया वेश्वराया वेश्वर्याया व्यव्या हेता सर्वे पर्देग्रास्त्र प्रतः प्रसः प्रस्ति पर्देश में प्रति । विष्ये प्रति पर्देश स्ति । विषये । ८८। वर्ष्ट्रियाः यद्भार्या वर्ष्मुवः यद्भार्याः वर्षम् वर्षाः वर्षम् वर्षाः वर् न। नडन्यन्त्रकन्य। नदश्यन्त्रभूदश्यःविश्वयःश्रीवाश्यन्द्रिनः कुः सळद् नश्रू ५ ५ से ५ स्था व्यापा वा वा वा ने स्था ने वे सा से दि हैं या ना व खुणा सा नड्यान्ता कुःक्रेवःसरःर्नेःभ्रवःडेयाः हः तत्र्यःसः तत्राःश्रीः हिनः सरःश्रीशः

श्रीट्राचावि से ना वादिवा प्रवस्था थी वो वादिवा प्राया श्रु किंवा सा सा सुर्दिवा सा सा सुरा हिंदा है। यान्त्राष्ट्रीःष्यत्राश्चार्याः शित्राचार्यम् श्वाद्याः यान्त्राच्याः वित्राः यानहेत्रत्र्याचिया क्रुं अळ्त्र प्राच्या क्रिया चुन सूर निर्माया या श्रेव प्रश्नायदें निक्ता निक्ता वर्षे निक्ता वर्षे निक्ता वर्षे निक्ता वर्षे निक्ता वर्षे निक्ता वर्षे निक्ता र्टा हे अ ज्ञुन ग्री हिट्टा पर दे। के वा द्वार द्वार क् वे र के टा हे र नश्रुव देव देश उव दे प्पेंद से द दिया है स्थूर निष्यु र न श्च-न-१-१ विद्यान स्थान याडेवा'स'न्रा ळेवा'न्वरानु'अ'र्धेन्'ग्रारारे'रेरानश्रुव'र्नेव'रेश'ठव'विवा' मेन्या मन्या मह्येत्रम् भून्याकृतुन्ता भेन्ने स्टाधुयायाहे कृत्र नम्बार्यास्त्रे कुः सळ्व नश्न पुर्ते से वार्षे से वार्षे से कि वार्षे प्रस्ति कुष्ण प्रमा दे यशः व्यापान्य स्था हे शः गुनः ग्री शः निन्न शः निन्न । न्मयाधीः नेशः कुषा अळव चीशा ळेंगा विभागविगा इससा नेर्सा सेटान्या |गिरुर्भाष्यतः यहगार्भासीटः ज्ञायारे मा विराधः वे भीवः हः यहायाः यहे। यायाने। केया हिसाया डेया प्रदेश सेटा इसस्य प्रदेश कुया प्रदा । दिना सूत्र का न्यामहिषाण्यतः हेषाञ्चराणिया विषापाणीय वार्षेया सूत्रार्थी ।

श्रीट्र प्रदेश्चे नाय्ये स्वास्त्र स्वास्त्र

र्गेग्रा शुराणुवाग्री ग्वराञ्गन्याश्चात्र । वर्षात्र । वर्षात्र । वर्षात्र । वर्षात्र । वर्षात्र । वर्षात्र । रुःसरावशुरःनवरःस्पिर्दो श्रुरःमानबरःमें श्रुरःमवे सेरादेशादी । श्रुरः र्ने विश्व साम्मानिक विश्व क्षित्र कि सामित्र के स्थानिक विश्व कि सामित्र कि । नडुः धेन मारमा स्वार सें र नडुः नर वर्षे । । डेमा पवे श्वेष्ट न प्राप्त श्वेष्ट ग्रम् नर्हेन्यर्न्यम् गुन्रह्मित्यो न्नम्यो अस्य स्थान्य विन्यहेन् यन्ता विनःक्रिंशनहेंन्यन्ता वार्यागानहेंन्यवेः सेरानुःवक्रून्यन्त रेग्रयायया केंग्रावे नेया गुर्यया दूर है। शुर्द्र व्यव्या दूर थेंदर थेंद धिया विश्वरित्वस्थाक्षेत्रराचित्ररात्रा विश्वरावश्वरादेशात्ररा क्रॅंशरायायायाया वियाक्र्यायी सुराविया सुर्देव न इर वहुया राष्पर रे ने व्याक्त अव से न प्रति पर्ने न किया की से न प्रति । ने स्वर प्री न प्रति । ने स्वर प्रति । ने स न्वीं अ है। वाय है : श्रेट : वेदा अ : यह : हैन : हैवा : अर वाट : या हु र : यदे : वा वे : ने वित्यसमें द्वापावदाया से पहुणादा से टापावदा से प्रमुचा सुरासे हुटा नमा वर्देन कुषा भूर निर्मामा परि वनमा है और मी निर्मामा है या नाया केव विगाधिव सम्देश श्री

१हेशःश्रुवःग्रेशःवन्ग्राशः

र्भः श्चुःमङ्गेः नः गुरुः नृषः श्चायः श्चायः श्चायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्व वर्देन कुष्य श्री । ने व्यानहेन नमा श्री नमा निवन व्या श्री वर्दे नमा है मा मुनःम् । विशः न्दा भ्रःभ्रें यथ। यहनः धरः नमुनः धरेः रेग्यायः प्रा क्रॅशकेर्या वित्रा । दिन स्वा अराधरा निवा । वित्रा कुलार्चेनाः अष्ठेन् त्यानहेत्। ११५ वेशानश्रम् अपास्त्रम् वर्नेन कुलार्चे सेना वी र्चिवा सदे वर्देवारा खुवारा निवा प्येत प्यट से दे वरास से कि प्याप्त राजी । नग्नाम् नुर्दर्भे केंवायाग्री ग्नव्या द्वाया श्रू व्याया ग्रीया केंद्र प्रदेश देया ठवः विगार्थेन धेन वर्नेन कुणार्वे विदेश्चित्र भेना नुगुवाय भेना सुन न्वीं राक्षे के वारा निष्ट्र के विता ने प्रमानन्वारा ग्राम् से निष्ट्र प्रसानित वितास राष्ट्र न कुषाक्ची सेरावी वी नासूर सेरावी सरावादिय सेरा वर्ग नवसावरेषान र्शेग्राश्च अळव व्राञ्च न्वर मुर्ग्य व्या निर्म्य व्या में प्रिय व्या में प्राय व्या में या व्या में प्राय व्या नहग्रास्ति सेट हे हे रागुन ग्री नहग्रास्त्र स्ति गुट्य दे दे ति पर्दे द कुषाक्षीः भेराक्ष्रवाराये स्वीर्धिम् भार्युः यहमाश्रास्था हे शार्दा क्षिः क्षेत्रास्य हे ग्रीशः हैं या नशा शेटा दु नश्चन या नशा नु या गुना प्रशाहे या श्वन प्रशाहे या शाहे या श्वन प्रशाहे या श्वन प्रशाहे या श्वन प्रशाहे या शाहे या श डेश.चु:क्षे भूतःडेश:धशःवहवाशःदरः। गुवःडेश:धशःवहवाशःवत्रशः

दे.क्षं.चंतुः स्वायाययः स्वायायः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वयः स्

त्रेन स्त्रेन्त्र स्वायन स्वयन स्वायन स्वायन स्वायन स्वायन स्वायन स्वायन स्वयन स्

यम्यानुनः भ्रानदे है। यथ। भ्राह्मयया दे भ्रान में मराद्राय ये प्राप्त । बेन्यायाधिव श्री श्रामार्भिव में मार्थिय म हेश शुः स शुवः धरः देवः क्षेवः धरः हेता हेश श्वा हेश श्वा ग्रे क्षेर दे न्हें र पर्रे र न्या हुर र दु हुर पा देना स प्येद पर केर नर विगाने भूर श्रुर श्रुर राम में द्वाय पर्धेर से पर्धेर प्रति स्वर्धेर प्रति स्वर्धेर प्रति स्वर्धेर स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्येष्ट स्वर्धे स्वर्येष्ट स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्येष्ट स्वर्येष्ट स्वर्येष्ट स्वर्येष्ट स्वर्येष्ट स्वर्येष्ट स्वर्येष्ट स्वर्येष्य गुवायार्वे अर्थायदे पर्दे दाकुया की केटा द्वाप्यवा कुवा श्रु स्वर्थ केटा वार्थ स न'विग'नर्जे नते'के। ने'क्ष्र-क्ष्रें र'न्में श'रादे'क्रु अक्रत'न्ट क्षु नभून थेंन यदे क्षेत्र वर्षा क्षु र द्वीय भी पर्दे द कुषा की की द वे किया सर पर्दे वाया या र्ने र्राम्याम् वार्यान्यायान्यायान्ये वित्रे प्रति वित्राम्यान्य वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य वित्राम्य वित्र श्चर्र्, श्चर्राम् श्रम् श्वर्ष्या विष्य विष्य विष्य श्वर्ष्य श्वर्ष श्वर्ष्य श्वर्ष्य श्वर्ष श्वर्य श्वर्ष श्वर्ष श्वर्ष श्वर्ष श्वर्ष श्वर्ष श्वर्ष श्वर्य श्वर्ष श्वर्ष श्वर्ष श्वर्य श्वर्य श्वर्ष श्वर्य श्वय श्वर्य श्वर्य श्वय्य श्वय्य श्वय्य श्वय्य श्वय्य श्वय्य श्वय्य श हे अ क्षुन ग्रे अंद दे विंग अ हे द द अ रदा विंद अ विं नदे के द द गुरा अ राया धेव'सर'ग्ववर'श्रीशाप्रशायेव'विद'वहेव'नेने'नेवे'नेव'य'न्येग्रायावया

श्चर्मा भवता वायाहे। वाववाविवावीयार्देवादे त्याक्षरादे सुरा यं विवादेशायर द्वेशा श्रीय शाय द्वेत्र शा श्रें व कर वावव द्वायाया ग्रम् अविश्वास्त्रस्थश्राग्रेशम्बद्धम्यवी । नम्बे हेशस्त्रुन्छेन्ये । कुः सळदः द्याः यः वेद्रियः श्री सः देश । १८ वे सः याशुर्यः से । १ प्रया हे सः श्चराग्री वर्षा क्षेत्र यह ग्रामा यह से दा स्यामा वर्षेत्र मुन्य से स्था यह त वयानर्सेयानी भेरास्य होरावासुन वर्षानियानी रोया क्षेत्र प्र र्थित् द्वीत्रः श्वार्श्वे त्याया वदी व्यव्य प्रता है। दे निहेत देव व्यव देया के वा दी। ने प्येत भ्रीस प्रमानि प्याप्य भ्रीस ने भ्रीस नि मिला भ्रीस नि स्वीत भ्रीस नि स्वीत भ्रीस नि स्वीत भ्रीस नि स्वीत ५८-दे वह वे श्रेस । दे दे वे श्रेस ५८-दे हे ५ श्रेस । दे थे श्रेस वे दे श्रेस डेया हिन्यारा में दिया से दिया से दिया है या सिन्या में त्या से सामित्र हिना सिन्या से सामित्र से स नहेंना ।१०० हेरान्स्रम् १ केराम् निर्धि हेंहे। से मा हिन् द्र्य न्या न्या स्वार्थ स्वार् नश्रुव नर्डेश न्या नर्डेश मा इस नवियान स्वास हैं में बेद होश सन्दर वर्गामा १० में या नर्मेर या स्मानु नु नु न नहें द में दे से द त्या नहें न त्या गुर्भाभाद्या सुरासमुद्रा देशसेंद्रामी भुग्नार्भा से से दार्मी सामह्या वहसा सहेता स्वाप्टेनमा नसरास्त्रा नह्यानक्षरास्त्रान्त्राह्मराह्मराधरा

३गव्रभूर्र्भर्र्भर्र्भर्र्भर्म्यव्याःग्रेभःयह्यासःया

श्चेन्य विद्यान्त विद्यान्त विद्यान व

य्वे स्वायान्य व्यवे स्वाया विष्ठ व्याया विषठ व्याया विष्ठ व्याया विष्ठ व्याया विष्ठ व्याया विष्ठ व्याया विषठ व्याया विष्ठ व्याया विष्ठ व्याया विष्ठ व्याया विष्ठ व्याया विषठ व्याया विष्ठ व्याया विष्ठ व्याया विष्ठ व्याया विष्ठ व्याया विषठ व्याया विष्ठ व्याया विष्ठ व्याया विष्ठ व्याया विष्ठ व्याया विषठ विष्ठ व

1 शुःहे निवास शुरि निवास शुरि निवास स्वास स्वास

2 श्चनश्चर-देव् ब्र-श्चिशनक्च ने निन्नश्चर्य श्चित्र व्या श्चित्य व्या श्चित्र व्या श्चित्र व्या श्चित्र व्या श्चित्र व्य

विवा ध्यान्द्रम् है। स्यानवाया वेयामाकृत्व स्ययार्थी।

3 श्चर्नेत्रसेन्न नश्चर्या श्वर्या श्वर्या विद्या विद्या स्थित स्

4 श्चान्त्रन्य निष्ठ अद्दान्त्र निश्च निष्ठ अप्त विष्ठ निष्ठ अप्त विष्ठ निष्ठ अप्त विष्ठ निष्ठ निष्ठ

हे.यहवास्तर्स् । व्हेत्राक्षरास्य विवागास्तर्त्। व्हेत्राक्षरास्य विवागास्तर्त्। व्हेत्राक्षरास्य विवागास्तर्त् । व्हेत्राक्षरास्य विवागास्त्र विवागास्य वि

क्रियासक्क्ष्यम् । विश्वास्त्र विष्ठाः विष्ठा

< शुः १ अअः या न्याः श्री अः या न्या अः या

न्तरः भे अः ख्रेरे श्चें न् ः ख्रुयः न् न्यूयः भे त्रा श्चे यः श्चे न् ः ख्रेयः श्चे न् ः ख्रेयः श्चे नः ख्रेयः श्चे नः ख्रेयः श्चे नः ख्रेयः श्चे नः ख्रेयः ख्रेयः श्चे नः ख्रेयः ख्रे

यार विवा यो १९ समा वर्षी स्ट्री श्री क्षेत्र स्ट्रीया मा स्ट्रीय स्ट्र श्चिर्यात्र म्हिन् के अप्ताईन् प्राये से स्प्रान्त हैं हो । वि से वार्वेन् स्नून् श्चे श्रेट.वश्रश्च.वर्रश्च.वेश्वश्च.वर्राच्चेश.व्येश.वर्षेश्च.वर्षेत्र.वर्षेत्र.वर्षेत्र.वर्षेत्र.वर्षेत्र.वर्षेत्र र्धेग्रथःग्वितःविगात्रयःन्विन्ता नन्ग्रयः द्वायः ने विः हे यः सूनः ग्रीः वन्यः निया ग्राटा धेव स्वया स्वया स्वर्धा स्वरं क्षेत्र वर्षेत् कुरा द्रिया स्वरं क्षेत्र वर्षेत् कुरा स्वरं क्षेत्र ग्री सेट मी निम्मार रहें यान सून परि सह्मा दे साम्मा है। द्याय दूर हो दूर र्रे अर्छर-५८। अिल-स्रुव-ल-र्शेवाश्वार्थ-स्वाल-स्वा । हे नर-अर्क्टेव-स्वावार-र्टा अस्त्रात्रमा वृद्याति । वृत्याया । विवाया विवादिया स्त्रास्य त्याया सिंति हे त्र से रायदे स्वा । दे स्वाया से रायदे ह्या स्वया से रा हे नर क्रेंब व क्रिंश क्रु वहुण १३०डे श नक्ष्व हे क्रु नर हम श्रम क्रिं बुर्पितेशेर्प्याकेर्द्वेश्वर्षात्राप्त्राप्त्राचेर्पितेश्वर्षे नभूत्ग्राम्। हेशःभूतःग्रेनिष्ण्याः द्वापान्त्रां स्वाप्ताः स्वापताः स्वाप्ताः स्वापताः स्वाप ब्र-लिंग्रास्रास्रे से पळन्ने। नि ययम् सु यन् हैं या ग्री यह या या प्रान्ता क्रय्यार्क्षेत्रःयन् क्रियाग्रीयायन्वायायागिक्रयार्थिनःही ।

यात्र चुराना खेते क्षुप्र क्षेत्र प्राचेत्र क्षेत्र क

2 क्रथ्यक्तं रायदार्ह्ण्या श्रीया श्रीया हु या हु या हु या श्रीया श्रीय श्रीय

वर्देन कुषान्दर हे अ गुनागहे अ शु शे अ पाने की प्राची निन्न या सुषा सूर मुर्यायदे न्त्री न त्री नगर्भिः र्वेषा अवराधिवार्वे। । देवे हे शाशुः तुराववे शाशुवे प्रवासे केवा गुन-नगद-कुल-सळ्न-ग्री-सम्साम-इसस-दह्या-पदे-क्रें-वेस-ग्र-नदे-नश्रुव नर्डे शःश्रु श्रेट कें ना ने 'न्ना मव से 'धेश विना सर श्रुर पानह धेवाया भिःवयान्धेन्यात्रभून्येवा ।ने.छ.न्नर्से.वर्नेन्क्याञ्चा । २१वेशन्ता वर् द्वायनेयानायार्श्यायाया । क्रु सर्वाययायार्थ्य वर्षान्। विषानमूनिन्। हेरामुनाम्। मुग्यानम्भन्तिः सेरा नहनाश्रासाक्षेत्रामान्त्रनाष्ट्रास्त्रान्ता वर्षश्रास्तासाक्ष्ट्रीया स्वर्थास्यासा नेशायत्याधुवाउदाक्षातु न्दा र्वेषायायायायायायी सेदायहवायाया हते भुः भुः नुः नुः निः । णः गुः भः वः र्क्षे वा अः यदे स्थे रः यन् वा अः यः र अः धुवा वी ः र्द्धेग्रथायाद्येया:क्ष्या:या:रशास्या:क्ष्या:या:क्ष्यःत्य:दर्। यदःयःक्रुःसर्वतःर् नुर्यायाञ्चर नुःर्रेषा मद्रापुः नुः नदः नः नर्ह्वेषाः यः से ह्युर्दः याः सूर्वस्ययः न्वायः नः न्दायः नः न्र्र्वेयः नः न्र्र्वेयः नः वावयः भेवाः न्याः क्षु-तु-नठमःहेमः गुनः ग्री-भेदः गी-नहन् मा वनमः नत्त्र नक्ष्र्वः पः नदः। नहन्यायाया वर्ष्यात्रायाक्ष्याच्यायाया क्रान्यायाक्षेत्रायायाक्ष्यायाया देवे भ्रेश शुरेग ग्वर्थ ग्रे इस नव्या गिर्दे स्वा द्रा द्रा नि विच हु र्शेट प्टर वर्शे चिव र्थे द र्दे। दग्र र ये च श शुश्र ह्वाश शु। यवाश या अहेराया इ.च.श्रेमशासुश्रामी का निश्ची सेराप्ता कराया सुमाया नुःच। मालुरःम। र्रेरःमःश्रेमाश्राध्ययः उत्रः द्वीः क्षेरःन्। ह्वेरःच। नुश्राम। वराया दरायाश्रीयाशास्टायविवाग्री श्रीटावेशायग्रूटायावे श्रीटागी द्वारा नव्यापळन्यते भ्रम्भाव अर्थे व स्था स्थान्य स्था स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य लर्। लेक.१४.१८८८। रर.यबुष.ग्री.श्रर्ट्यायश्रर्टे.यक्षेष.रा. ८८। दे.र्या.स.यार्ट्यास्यदे.चि.क्ष्या.क्ष्या.यार.लूर्य.सस्य.रचे.स्यास्य वळन् प्रवे भ्रवश्राशुन्द्वरावाने सावक्षश्रावार्वे रावी श्रीराने प्रवानी वरा हा क्षेत्रासिष्टर् नः विद्रात्राम्ययार्थे । । नगरायेनशः हुराधेनाः मङ्गारेहेरेः गश्रद्धारायदेगाय। श्रेदायायद्यायाः स्वाप्त्रम् स्वेयायदे पर्देद्धायाः ५८. ई अ. चुन ग्री. ५ वी. न मिं द अ. अ. केंगा न र वी ५ त्य अ. अ अ. रे. में दे क. द अ. म्रे नवे न् न्रे न विवाग्र प्य न न्ये अप में ह्या अप्य न प्रमान हेता क्षेत्र न में व

ळेत्रॲॱर्नेर्वः अळॅग्गंगः नहः श्वेंन् रेग्गं पदे रेत्रः द्येषः श्वेंग्रयः नश्चेग्रयः श्रा इस्रान्धे न्दरक्षेत्रा स्वन् ग्री इस्रान्वत्रा एकन्दर्भे वस्र विस्ता हिन न्मॅन'ने'हेन'ग्रेम'ने'सृश्चे'लॅ'१६६१लॅंर'नइसम्पायते'सेर'गे'इस नवगर्रेशरादेःगशुरःर्केशःनेगागे नदः द्वा श्रेरःया शुश्रःग्रेः श्रुरः द्वा यश्राम्भी म्दानिव में मान्या म मी मा सून्। छन पर्ने न मी मा सून्। ने न मा स्था मी मा सहस्र सा सून्। सहस्र सा सून्। श्रेरायानम् श्रूर्गे होरायश्रम्रारहो ना हो शासदे हे शार्चे ना सरा विश्वयानिया अवाग्रीयाग्रद्धियाग्रद्धियान्य विश्वयान्य विश्वया अवाग्रिया विश्वयान्य विश्वयान्य विश्वयान्य विश्वय र्सेन-नर्भेन-वर्न-छेन-छे-माश्र--न-नस्न-छे-स्न-छ्रा-छ्रा-धिन-र्ने।

ययः क्रेन्द्रान्द्रान्द्र्यः यहंद्र्यः श्रीः न्वाः व्याः क्रेन्द्र्यः व्याः व्याः क्रिन्द्र्यः व्याः व्यः व्याः व

मशुरमायाद्या माल्याद्यामीयाग्याद्या देवायाद्यात्यार्थेवाह्या । नभून नर्डे अःगुन्य कुषा श्रेन छेन। । हे अय्वर् हा नवे से मा अयः प्रमा नश्चनित्रों भेरायारेग्रायाद्या ग्रामा व्यवा व्यव्यामा भेराया भेराया निराया में यादे।द्याप्त्रस्थारुद्राकुषाविनाधुः द्रान्तुद्रानुद्रानुद्रानुद्रानुद्रानुद्रानुद्रानुद्रानुद्रानुद्रानुद्रानु श्चार्यात्रमाहिमाहेशमाहेशसम्बद्धार् नुप्तमानीशमाहिमार्श्केत गठिगामी अपनअनअ हे । क्षा निर्मा निरामे । वन हि । निवर्धित्रस्य वत् नहः ह्येत्रित्रेषाः स्वति वि देषाः पावस्य पावतः त्याः वी । वह्नाः श्रॅं न्दः इत्याधेव पर्देशः वेव निहर्वे वायवेया परि नुषार्वेशः ग्रथम् प्रतिः वित्र ह्रथः हिन् न् नेया वित्र अन्ति । वित्र न्देशन्दरस्र शुक्र सदे सेट मी न् हो न माश्यर न निमायहो न सर पर्दे न सदे र्वेग् अदे त्रेर नक्षरमायदा धेव प्रमाने प्राविग वेग ने मान हें वा ने नश्चॅ्रदासे नुसार्से ।

क्षेर-प्यर-विश्व-विदेश्वस्थान्यस्थान्वन्दर-प्यदः नर्गान्यः भूनश्यः श्रीः न्य्री श्रीः प्यान्यः प्राप्तः विदेशः वि

र्ग्नेटार्ट्यान्नासदे सेटाची न्स्याचारसासानुसासर्वेदा विटा वहनासा स्वार क्ष्र-वा वर्रेन्कुयाकीः भेरान्या हे यात्र्वाताकीः भेरान् के वार्षिताने विष् बेब सूर ५८। गर या ग्रान्य या विदे के अरे हे र ग्रे में में दे से ब्रा हो वा न्देशसेविः भेटान्टा न्देशसेन् ग्रीः भेटानु श्रीः स्टानी सेटान्टा र्वेदे : क त्र अ दिर्देश और दिर्देश व त्र वा अ लट्टिने निवे क्राम्या कर्ते क्राम्य क्राम क् ५८। ष्या या क्रंत्रें श्रेवाश्राण्चे भ्रेटाचे ५५५५५५५ गुत्र त्र सक्दरश निमा अन्ति। नृत्ते। नारे से सम्मो अळव से प्येन सार्श्वे अया निष्णा ग्रामा वर्दरम् वर्षे में हो द्वारा का ही क्षेत्र का की दाया दही न ही प्रमाय हो दा है । क्षेत्रात्रस्रुवास्य पर्देत्रिक्षा देवे सेटा इसस्य स्वित्या पर्वे विष्य प्रवे के प्रदा र्श्वेन् ग्री होन् त्यराष्ट्रमा हो ना विवाधित हो। नियम वो के हिवान्यमान्या न्यर यर्केन होन हे या परि के मार्थ होते का न्या हो न्यर हे या पाने। नह नर्गेषाक्षेरासाँ दार्श्वाकायकानसूत्रायदे श्री रानहरानी देवा सूरात्रा गिहेशगापरामिर्देगान्सरायदेर्देव धेवापा क्षेत्राची ह्यें रायन्देश ही। वट.री.श्रट.री.सी.सी.सी.श्रीश श्रे.प्रे.प्राट्य अ.सु.री.सी. न्यरवे अर्केन्यर गुन्वे न्देश रेवे केर धेव स्था गुन्य वि न हेन्यवे श्री मार्थित श्री मार्थित स्थान स्य

1 न्रें अर्थेटा रद्धेन् कें अने त्यार्चेना सर्वन सुर्धेन सर्वे वुर्यामाने के याने वे प्रमें या सी प्रात्में प्रात्में निष्य क्षेत्र के प्रमुख्य विषय विषय विषय विषय विषय विषय वनशःग्रादःष्ट्रमः नहग्रशः ग्रादः। श्रीदः नेतिः श्रुः वः नहेतः त्रशः मदः गीः नष्ट्रतः जुदेर्देवरेर्केशम्बदर्दरसायदेशस्य म्यायस्य नर्गे नः विवादेशसर न्वें अःवा ने प्यटान्टें अर्थे ने त्या क्रें वा अराक्षु राधा वेवा प्येव न्वें अते। दे न्वार्थाण्चे सुव्यर्भे त्यारो प्राप्ता वस्त्र विरामिने रामि रामिन स्टामिन स्टामिन ग्री:केंशायास्त्र अनुवानु नवना मित्रे केंगा से त्या अनुवारे ना से शाम है। निर्देश र्रेन्द्रियाची द्रिया की द्राप्ति की द्राप न्देशसेन्द्रिन्यात्यसेट्याट्याट्या सेट्यान्य सेट्यान्यसे वह्नाःध्रयः षटः दर्देनः से दे इस्र अय्य अये वास्र शुः नसूत्र द् र्षेन् या वादः यद्र से द्राया से द्राते मुस्य स्टर्स्ट मी मान्या स्विते प्रदेश से दे प्रया मी 'न्रें अ' केर 'भेत है। कें अ'ने 'य' कें मा अर क्षुर 'पदे केर 'भेत 'या र दिया' क्रॅशने सेट ने दे में मास दे पहुना खुया धेत सदे ही मा ने धेत हो नहें स श्रेरायाश्रेराविषाणी र्वेषा स्रवेष्ट्रणा ध्यारेष्या देषा श्रेशा श्रुप्त स्रवेषा ध्रेर्-र्रे दिश्व केंश्यार व्यक्तिया सर श्रुर विट केंश दे रदा वा श्रुर परे शेर-देवे-विग्रायदे-नश्रुव-देव-दु-गुन-मवे-शेर-वस्र अ-उद-दर्भ शेर-धेव-वै । वर्दे व्याविष्ठेवावीय। दर्देशक्षेटाद्दावहवायाक्षेटावी हिदास्य होवा न्नरमी के न्यादिन राष्ट्री निया के प्रिया के प्राप्त के यासे विसानन्ग्रसारी केंसाने दे प्रमेश में साम के स्थान के स्था के स्थान के यासे विसानन्ग्रसारी निम्मासासी नामिता है। दे से विसामित हैं नासिर वह्रमा:ध्रवा:संविद्या से:बेस:सदे:र्र्ममा:सदे:नसूत्रः चु:सदःदे:सःधेतः यदे भ्रिन्में । स्रिन्में नर्मे अस्योत् ध्येत स्रोत् स्रोत् मि स्राप्त स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स् बेन्द्रा देव के का के वा स्वरंद विष्य स्वरंद विषय स्वरंद स गहेशक वशर्षे वासर ग्रुवास विवाधिव द्वीं शर्शे । दि सूर धिव स देश के। व्हेर्कुवादराहेशज्ञुवाश्चेशावहग्राशाचाराधेवाधरादुरा केना श्रु र हिट शेट देवे र्चेन सवे न सूत न विर गुन त सेट दे रहें र देवे दें र श्रेरःधेवःर्वे।।

2 नहन्यश्रिमा वर्षेत्रकुवान्मा है अः गुनः श्रेन्या श्रे श्राम्या वर्षे मदे सेट हे स्ट में किया सदे या द्या स्वाविद है त हे त्यस के स या व्यव विया मी भेट र भुर र र दे र यह मार्थ र भेट येग्राम् अर्द्धते वियात्रमा रूट हिट हिम देश हेगा सर नह सुर परे श्रेरःग्रारःविग्रम्राद्धेरःकेंशाने व्यासे वह्या याने केंशाने वे वह्या श्रास्त्रीः सळ्य हेर हे या नश्च हिरा के या भी या या सेर हे श्च र या सेर प्र सेर ठव की प्रवेषाव ग्रुव है। ध्रुव देट दु हो इसस की हैं दें र प्रदेश किट में अर्थायश्वास्त्रित्ते देव त्वते धिव सूस्रायदे हिंगाय सूर्व तु सिट पाया ध्रेश्राध्यानम्द्रे के शामान्य निमानी भ्रीत्त्र क्षुत्र स्वा ने स्वर क्षुत्र स्वा मित्रक्तुः सक्तं नित्रक्तुः व्यादा से दि से दि से सित्र से दि से सित्र स यान्यायायावि साधिव राया भेराने वे तह्या खुया ग्री देश द्या स्वा भेरा में या सदे से द भी द भी कि त्र में कि त्र में मि सदे प्रत्या में दिन से द भी विकास से प्रत्या स्वीत स्व र्देव ग्री क त्य से न स्थान स् र्शे शेर मे कुष अळवा श्रुषा निर श्रेंट कु नु श्रु र दर्र श शेर पे न पर । कुः अळ्दः नसूर्र्र् प्रेंर् सेर् सेर् सेर् म्या साम्री साम्री साम्री मान्य सुर्से प्रा क्रेंतरान्द्रथ्वायायारोदावोत्रस्यरायदेवाश्रद्धरायास्यास्त्रवा वे र्घट. उदायाञ्चया देटशालेटा द्वाचाया लेटा र्घेटा लेशा च हवा शास स्था शहे

नन्ग्रासिर धेत्र है। सेट दे द्वा में किंग सदे वहुग धुयास धेत सदे मुना भरावाराधेताधरास्टावी मिवासे वहवा खुवा की देवारे वस माल्य मदि वहुमा धुय पेंद्र स्वा सेट दे दिस्य सेट दर महमाय सेट महिया गायिव है। बैंगा सदे दें व दे त्या दें सामे स्थान है सामे हैं सामे हैं व दे त्या यह गरा बेट भेत मंद्रे ही र दें। । इर्देश बेट संया भेत मंद्रे महमाश्रा है दिना सेट हो। श्रेर-देवे-ब्रॅग्ना अदे-वह्गा-ध्रय-धेव-व-देव-दे-य-देश-श्रेर-दर। दे-यश-माल्वर प्रदे रें व त्या श्रु र प्राचे प्रमार्थे प्राचित प्रवास के प्राचित प्रवास के प्राचित प्रवास के प्राचित प नेशक् भेट इस्र राष्ट्र है र निहट में दिव विमान्द मान्य भून रा भी दिव विष्ठेश विष्ठेश खेंद्र स्था अदः इस्था उदः ग्रादः दिश विष्या विष्ठेश गदिः गिविः अञ्चर प्येतः तस्य वे ता दे प्येतः हे। से र गिर्च गिर्मा से तर् स्वा से तर् ने न्या व्यव में व या हैया व्यन्ने व से स्ट्रिं या व्यन्त स्वर्थ व्यन्त या विष् व्यन्दिर्भासीटान्द्रा स्नुन्यान्त्राव्यक्षायान्त्रायासीटाधीताने। यन्नाया शेर-भेर-शेर-शेर-मी-ळ-रूश-गुर्श-ग्री-पहुण-धुत्य-ग्री-ळ-रूश-गुरू-पा-स धिव'रामार्भे।

दश्रद्रभी हो द्रायम शी दही ना

श्रेट्ट स्थ्य के वा श्रेट्ट हुन श्रेट के विषा श्रेट्ट स्थ्य के स्था के स्था के स्था श्रेट स्थ्य स्य स्थ्य स्य स्थ्य स्य स्थ्य स्य स्थ्य स्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्थ्य स्य स्थ्य स्थ्य

ग्रास्ट्रिस्त्रीः द्वावादित्र श्रुस्त्रीः प्राप्त्र श्रुस्त्र स्वाद्य स्वाद्य

यावन्यायादिन्यान् भूनवे न्या ग्री न्त्री ना सेन् केन सुन सुन सुन सुन

होर्से केंग्या

पळ्च. पहुंच. क्रुंच. प्रत्या क्रम्या हैं व. प्रत्ये क्रम्य हैं व. प्र

2 हिन्द्र्स्य विद्या हिन्द्र्य के स्ट्रिंग के स्ट्रिंग हिन्द्र्य हिन्द्र्य हिन्द्र्य के स्ट्रिंग हिन्द्र्य हिन्ट

ग्रथ: न्द्रा व्यापा: प्रति: श्रुः श्रु रः न्द्रः स्त्रा विष्या: स्रु रः न्द्रः विष्या: स्रु रः न्द्रः

द्यु मार्के । व्याप्त विष्ठा विष्ठा

ठ। त्राम्बुसम्ग्रीम्ब्राम्यो प्रमास्येत्रम्यक्षाम् ग्रीस्य स्यामे। द्रोत्र

वा कः ना श्रुवः ना श्रुना विष्यः मा यह सः मा सहेवः मा मिंदः ना नमेशः मा गिनेराना भ्रमाग्रामा ग्रामा नभ्रामा भ्रमाना भ् नर्हेन्'राप्ता नसराम सेराम सेराम सेरामी हिरामी वयाया स्वास्त्रमा श्री र्रे.चा क्षे.चेश्राय.ट्र्या.ह्रेय.त.ट्टा ट्रायटा ध्ये.चा श्रूटश्राया हैया ना गहुराया गणुराना र्केट्या नह्न्या नह्न्याना क्षुत्र्र्यानीकार्या ब्रुवा छन्। छन्। छन्। छन्। छन्। ध्रुवा यदः स्वा यदः स्वा यदः स्वा यदः स्वा योषः गोया ध्रेना ध्रेना गुत्रा यूना यूना यूना यूना यूना यूना यूना वार्ये विया ये। कुने हेररो यायार्येवाचोक्षत्रार्येवायायीयात्रस्यायार्द्धवायात्रा सहस्राया हे या र्रटाया अर्हे या झाया श्रिंसाया राज्याया क्षात्र अर्ज्ञ या श्रिंस या श्रे क्रूंव पान्या अवय प्रभा स्वाय व्यवस्था सु से न व व स्था स्वाय क्रम् से न क्षे.येश.के.ब्रिय.क्षेत्र.त.रेटा अक्रियाश.ता रेक.या श्रेत्र.ता येक.या श्रेर. न। क्षुनुरुक्षुरुक्ष्रिर्भवाग्यवसासर्रित्त्रिर्देशास्ति। सिन्देस् निवन निर्मा निवास के त्री निवास के निवा

र्याराणी हिन्द के अपि निमानिये स्थानिय स्थानि

वियामिते से हिंग हिंदा पारमामिते इत्वराष्ट्र न्या सूर्व त्या सूर्व न्या सूर्व न्या सूर्व न्या सूर्व वर्तेयाश्चरश्चें र विदा गानश्चिमारी तुर्सि धेर्-तुर्देद ना वर्से न न न दि नु सर्थ सबर सुर के त्वेष सु से द्वेष राष्ट्र । सु तर्र न सु स्टर न न सु स्टर न न सु स्टर न न सु स कैंगाम। अर्कर्स्सक्रेर्प्यमम्भामित्रे विरमी से वेरम् । इर्म्स्मिन्सि धीन्द्रम्भन्द्रम्भ । यह्र मायह्र मायळ्व्न निवेतः भ्री यळेन ह्रिया मायते विया । यदः यदः न्यः न्यः न्यः न्यः न्यः न्यः । द्वितः अपिशः न विश्वास्ति क्षेत्रा म्हार विश्व विश् गवर गशुस्र गदि र्वेग सदे सुने नगरे । हिन केंस नहेंन पदे सुन हुस रा निः भूगाधित्राया भुः मुत्रायायायायाः स्ति । स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स् क्रिंग्नाईन्यदेशेटार्ह्स्यायाधेवायराटेशानेयावर्देट्यानेटा छिन्ह्स्या ब्रिनावा ८८.क्यासक्रें नाते श्रुन्ट श्रेयाके विट्रकें राने ने स्थारा स्थार शुः शुर्गान विश्वति स्वराय भीता भीता निर्माण विश्वता से सार्थी श्रे.कु.कु। । वाती. वेर.कूप. तुर्वेवा. श्रु.पविवा । व.स्वा.स्वेश्वर तात्रा.श्रु.तात्रा । रेव केव श्वाहार्वर शेर्वर। । त्र मी विवादा हायाया । वु दु दे में र ब्रेन्श्वेन्याये श्वेन। व्रिक्षेत्रके नकुन्यक्रियक्षेत्र क्षेत्र विन्छे श्वेयः न'नश्रासे'हिन। रिनाद्रश्रासकेंग्राप'न'नग्र-रेवि'नश्रद'णेना'यश्रे

वेश्वास्त्रम् त्रित्रक्षम् वी त्रुश्वास्त्रभ्य विश्वास्त्रम् । वाश्वेरम् त्रित्रम् विश्वास्त्रम् विश्वस्त्रम् विश्वस्त्रम्यम् विश्वस्त्रम् विश्वस्तिष्यस्त्रम् विश्वस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम् विश्वस्त्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम्यस्त्

अन्तर्भाष्ट्रित्राचे स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्था

ति श्रासन्ति। क्विन्ति। येगस्यम् हेस्स्स्रित्स्य व्याप्ति। स्थानिक्ष्यम् क्विन्ति। क्विन्ति। क्विन्ति। व्याप्तिक्ष्यम् हेस्स्स्रित्स्य

वाश्चे 'हे 'हे 'हे 'ब्रुबा' वडर्थ' ग्री 'ख्रद्दा' द्या दा दा विकास के स्था के

या वर्षायाचा सम्मा गरेट्याया गरित्याया गरित्याया गरित्याया निष्याया सम्मा गरेट्याया गरित्याया निष्याया निष्यायाया निष्यायाया निष्यायाया निष्याया निष्याया निष्याया न

द्येषायदे न्द्रिंश से न्द्रिंद भी विद्युत्त या न्द्रित विद्युत्त भी ।

वर्दरायाधीयाहियाध्वीरायहरातुः विवासराध्वीरायादी या थेवा हो द न विव द द दे न द द है न द है न व द है श्रे भिना गुरु भे ने तर्य प्राप्त स्था अपनि मान प्राप्त स्था अपनि स्था अपनि स्था अपनि स्था अपनि स्था अपनि स्था वर्देन हो द र हो से द र विवार है वा द द र हो या स्वार के वा प्रति हो या ५७८८ नशुनामा गुन्नस्य नशुन्भुन्भुन्भून्य शुन्रस्य शुन्रस्य सेन्या <u> इन्यर पर्ने ब होन हो अंदा के प्रुट व लिया बन गार हु व व हें न परे के टा</u> यायावियान्दरक्षेयान्द्रन्या गुर्वानुक्षु वस्ययानुक्षेत्रा कार्करार्वेशा वदा हर्नान्त्रन्त्र अन्यरायस्य हेराना भूत्र स्था स्थित स्था स्था निर्मा ग्री: स्र-, न्रानिः स्रान्य स्रान्य स्रान्य स्रान्य स्त्र स्तर्भ स्त्र स ने। नर्हेन्यनभुन्नभुन्नभ। है अयानिहिन्तिहिन्ते। सेंदर्भिन्न। नश्चनरानश्चनरायं वेरायः भेरत्रायळे वर्ते। । यदा ह स्वास्त्राया नदुस्रानदुस्र करानायनना सुरागीसाता कुनत्तर्मत्रा वेसा राक्ष्रनु ने न्यार्थे तथा धुवा की क्षु के त्या क्षु माले की माने कि ने विष् क्षरःश्वरःकें गुःनवे देव प्रशानम्य ने विद् कें शासकें व पर ग्रेट प्रशागुः न नहें द्रायं के दादिका के वार्षेत्र के वार्पेत्र के वार्षेत्र के वार्षेत्र के वार्षेत्र के वार्षेत्र के वार्

म्नुन्द्र-तृन्द्र-त्र्वे ।

म्नुन्द्र-तृन्द्र-तृन्द्र-त्रवे म्नुन्द्र-त्रवे से स्वर्थः स्वर्धः स्वरं स्वर

4 म्हार्या मिल्याम्य न्हें प्राप्त मिल्याम्य मिल्याम मिल्याम्य मिल्याम्य मिल्याम्य मिल्याम्य मिल्याम्य मिल्याम्य मि

योक्षेत्राक्ष्य विद्रायम् । इसायम् श्रीयात्राक्ष्य विद्रायम् । इसायम् श्रीयात्राक्ष्य विद्रायम् । विद्रायम् । इसायम् श्रीयात्राक्षय विद्रायम् । विद्र

८। २४.वाश्वयःग्री.२ग्रे.२.से.२.स.२८।

ठा हिन्यावि नर्हेन्य से से से स्पर्धेया सुरायराहिन से सामहिन है। रमेरःवा गडिमानका नडा हैंदा हि। वर्च अः हें त्रानम् मार्थः हैं वर्षः ८८। क्र.या चक्र. इ.चक्रेट.ता चळ.चा छेर.क्र.च.सं.च.स्राच. য়ৣ৴৻ঀ৻ঽয়৻য়ৢঌ৻ঽয়৻য়ৢৼয়৻য়৾য়ৄ৻৻৸৻ৼঢ়৻৸য়ঢ়ৢয়য়৻য়৻য়৾৻ र्ट्टिन्द्रिम्द्रियारी वाश्वस्याक्षेत्रिः स्रीट्टिस्स्य स्थापाद्याः स्थाप्ति स्थापति स्थाप्ति स्थाप्ति स्थापति स् ग्रीशःश्रु ग्राद्याः सूर्व पाद्या वक्क स्वाप्त विक्ष प्राप्त विक्ष विक्र विक्ष विक्य विक्ष विक नर्डे नकु न्रं वा वियाविया यहिका सुन्त्र राम्या राम्या राम्या वियाविया यहिका सुन्त्र राम्या विद्या ८८। श्रियादशुरा वर्कः भ्रेरा वाश्रियात्वाक्षः तुः वर्ष्याद्वाराद्वारः ८८ः भ्रेरः ८८:स्या-८८:श्रेषःसश्चान्यनःस्त्रःस्त्रःसःस्त्रानःस्त्रा

यारश्याः नहें न्याः स्वेदा । यहं न्यां स्वेद्धाः स्वेदाः स्वे

यद्रमानिहर्न् नावे श्री स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्

5 यहणः ग्रेन् ग्रेन्थः अद्या न्द्रिंशः विदेशः यह स्वा ग्रेन्यः विद्या ग्रेन्यः विद्या विद्या

ळ ळं ८ न विया से क्रेंब भार्य

ण्यान्य स्थान्त स्थान्य स्थान

देश दें दें दें दें दें दें दें दें ते वा वा क्षा वा

र्मेन'नड्'श्रे'त्र्य'स्क्रिंग भ्रम्थि । श्रिय'नड्'श्रे'त्र्य'स्क्रिंग भ्रम्थि ।

6 श्वाशायर्देन्यये श्रेता ग्रुन्यत् हिन्दे श्रेत्र श्

गश्चित्रः नहरः नुः श्रीरः ग्वित् र्दरः श्चेत्रः न्यः श्चेत्रः स्वरः श्चेत्रः श्चेत्

विस्त्यः के मः के वा 'न्वमः वाहिषः प्यतः त्वनुषः श्वीमः नुष्यः वाश्वाः याद्यः प्रीः नुष्येः यः क्षेनः सः नुमः।

वान्तः निर्मा व्याया व्याया व्याया वित्या व

विन हु त्यना त्ये के क्षेत्र कर्न क्षेत्र कर्म क्षेत्र कर्म क्षेत्र क्षेत्

श्रेन्द्रिन्द्रेन्द्रम्थायात्वर्ष्याः श्रेन्याः श्रेन्त्रः श्रेन्याः श्रेन्यः श्रेन्

7 देश'न बुद'नी' भेटा भ्रे में नद्या' जाबब नर्स भें ब'रायस' नहेंद

र्म्बर्गानि र्म्म् प्राचित्र क्ष्म् प्राचित्र क्षम् प्राचित्र क्ष्म् प्राचित्र क्ष्म क्ष्म प्राचित्र क्ष्म क्ष्म प्राचित्र क्ष्म क्ष्म प्राचित्र क्ष्म क्ष्म

ग्रायाद्राया प्रति श्रु सेर वी विवास स्थे श्रु र न दर।

त्र विद्यानियहूर्यात्र्य श्रुत्य विद्यान्य विद्यान विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्यान्य विद्

मन्सम्बद्धाः मुद्धाः निव्याः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः

न्या अवार्याय वित्र होत् हो न्यो से स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वयं स्वय

1 श्रेश्वास्त्र विद्या स्त्री त्या स्त्री त्या स्त्री त्या स्त्र विद्या स्त्री त्या स्त्र स्त्री त्या स्त्र स्त्री त्या स्त्री त्या स्त्र स्त्री त्या स्त्री त्या स्त्र स्त्री त्या स्त्री स्त्री स्त्री त्या स्त्री स्त

- 2 श्रेअन्त्रन्त्रहित् श्रेशेन्त्र व्याहित्त्र वित्राहित्त्र वित्र वित्र
- 3 श्रुभातुःगाल्वत् निर्दे । विष्ठा व

यदेरःश्चेशः त्रान्त्वाः वाववः वरः यः वेशः यदे वर्षः व्याः व्यः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्

श्चीर्या स्थान स्

यावर्गणदा यहूँ द्रान्त्र व्यावर्ग व्यावर्ग्ध स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्

होत् श्रुम् । श्री श्रुम् । श्री सास्त्रस्य । स्ट्रिस्य श्री स्वर्धा स्वर्धा । स्ट्रिस्य श्री साम्या स्वर्धा । स्वर्धा । स्वर्धा । स्वर्धा स्वर्धा । स्वर्व्या । स्वर्धा । स्वर्धा । स्वर्धा । स्वर्वे । स्वर्धा । स्वर्धा । स्वर्धा । स्

1 ने छेन ज्ञान स्थान होन छो स्थान होन स्थान ह

चतः श्रुं ते त्येत्र स्वार्थ त्या स्वार्थ स्व

- 2 न्यवस्य न्यास्य न्य
- 3 न्ये: न्वायाया चेन्यी स्थान्य स्थान

र्व हे स्ट्रेम के लेग स्ट्रम अर्द्धमानम् । यायय नम याम र्वे हें याय हो न ने 'दे 'न्ये 'वेश' ह्या वेश' प्रश्रम्य प्रश्रम् न्ये 'न्रम्ये 'उद' प्रवेश में 'रें *য়ৢ*ॱয়ढ़ॖ॔॔ৼয়ॱय़ৼॱॾॣॆढ़ॱय़॔य़॓ॱॸॗय़॓ॱक़ॗढ़ॱय़य़ॱक़॓ॱॻॱॺॱয়ढ़ॖ॔ৼয়ॱय़ॱॻऻॺय़ॱॻॖ॓ॸॱ ग्रे क्षु क्षु र द्वीं र है। द्वेर वा वे द वा री र वा धु धे सहय है र वहर हैं। ये रेंग से दायहे या अप रहें वाया निवास के सम्मान के ता विवास के सम्मान के ता विवास के सम्मान के ता विवास के सम सराष्ट्रमञ्जूनायदी । निर्द्येनाग्री निर्द्यान्य स्थित । विर्याना न्मे न्द्रन्मे उत्रम्भ र कवा य शु न में निया भूमा क्षे.ये.बुरा.संदु.सर्वेट्रश.श्च.रे.चर्ग्रेट्र.स.चबुर्यः अव्हट्या अव्या चर्षः स्याद्वाह्याह्या अस्ता अस्ता स्रीयाश्याया वर्षियात्रास्य स्याह्य र्शेग्रास्राधेर्द्रास्येर्द्रस्यान्यून्त्रीय्रक्ष्रस्याम्याय्यानेत्र्रीःस्राचेर् ८८। देरः अन्वस्व पान दुःग्विमान वस्य दिन दुग्य पितान सुमा र्नेग्रा देशःश्रेग्रायः र्नेग्याय्यः होतः श्रेष्ट्रायः प्रवरः द्येः देवः यश्याचेर्ची चे च्या हिया धेरा स्था दे प्या त्या त्येर ची छिर् सर्थे वर् न र्लिन्य केंग् कुर की न सूर्र न केंग्र वा व्यय हिंग्य स्टर त् से। रन नम्नार्यायाया होत् हो नवित सुन्ते धित प्रदे देत द्रा सर्द्ध रया प्रायाया

बेर्फी नविव श्रु वे प्यतः नवे र्रेव र्ज में न स्टूर र्रे

4 मार्क्याम्बर्धान्तेन्त्री स्वार्क्ष्याम्बर्धान्यवेश्वरामी हेस शुःशुर्व्याञ्च ५८ वा त्रुवाया सेवाया ग्री १८८ रहेषा वायवा वर सेवाया से। न्धेरवा बे'रे'रे। र'र'रा वर्च'रु'रु। हिं'र्रे'र्रा व'र'रा गुवाके'वी हे. धुन्ध्री वहूवाक्राक्ष्य बर्स्स व्यस्त्रस्य ब्राखाखा श्रीस्तु र नविवःश्रृंवःयः नदा ध्रेयः ये। शेरधे खी दे दे दी छ उ उ है दे दी न रर्रेवार्यक्षियास्त्रियास्य विवास हो। यस हो। ख़्र हो। हैं या हो। हो या हो। हिया हो। इता मेत्रुयाये। क्षुन्तुन्ता ह्येत्रारोह्येता रोत्यारोत्रोता ह्यूंग्यारो क्रिंगळुंगरारो रळुंग नित्रारो निता केसरारो केसा विगरारो ยูกุลผมามาสมาภักมาขนามูราฐารุรากุลูกุมาข้าระาฐเกากุมณา गुनः खुंवानी : भूनशः शुः देशः धरः नुदि ।

 वर्षामन्यावत्रुम्। भ्रायळवन्योतेवह्र्यार्वेन्योरेन्रो । पाश्रम क्रम्भामवे न् ज्रम्भास्त्र ने भेर मे । श्रम्भामा स्वर्भे न वित्र से न भेर भेर ने माना शे देव । भ्रु वे विदे प्रक्री र नवा की वाश शे की वा । धन र गाय देवि वास नह्रमाळेसमा से किया । सर्म्य प्रमान के किया । हिन् ब्रग्रशहे केव सेंदे हिव क्वर्य है या । ग्राव्य प्यति मु हिव केव कर क्ष्र-रिया विशानगर सर्वेद गुराय त्राय मुद्री विद्या परिया क्रियायाम्स्ययात्यान्द्रिया । ((नयरासक्रित्या वियाना यश्रेषेश्वराक्ष्युन्ता वार्यराष्ट्री सेरावर्यराख्यश्री । १५५वर्षीः ब्रेर्नायर्ट्वियायो। क्षुत्र्यायर्ह्नायरः ग्रुप्तिरेर्नेत्यारः धटास्टर्निरे इस्रायान्द्रात्रा रहेत्यान्द्रिया शुर्श्वेदाना स्थ्रान्त्रे स्विदा विदार्श्वेत्रा न्रह्म् निर्मित्र सिर्मित्र के निर्मानिया स्वाप्त के निर्मानिया सिर्मित्र के स ने गहिरा ग्रीय के वा ने व ग्री व्यापाय ही व ख्वाया के वर्ष नर सा हि। गरःवःश्वरःध्वयःग्रेःश्वरःषरःवः ५५.५ श्वरःश्वरःने गिर्वश्वरः वरःशः ग्राहर दें।।

५ श्रे.च्या.क्ष्यायाश्रयाचेराची.श्री.श्री. श्राक्षःश्रासुरादराद्देशःस्

यक्षेत्रावद्यात्त्र्यात्रत्यात्रत्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्रत्यात्रत्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र

6 रुम्मम्मया ने ने भिर्म् प्रमास स्मान स्

য়्रमेवःम्वःत्र्याः भेवत्रः वाववः विद्याः वाववः विद्याः वाववः विद्याः वाववः विद्याः वि

स्वार्त्तान्त्रः क्री विश्वराक्षेत्रः स्वार्त्तान्त्रः क्ष्याः स्वार्त्तान्त्रः स्वार्त्तान्त्रः स्वार्त्तान्त्रः स्वार्त्तान्त्रः स्वार्त्तान्त्रः स्वार्त्तान्त्रः स्वार्त्तान्त्रः स्वार्त्तान्त्रः स्वार्त्ताः स्वार्ताः स्वार्त्ताः स्वार्ताः स्वार्तिः स्वार्ताः स्वार्ताः स्वार्तिः स्वार्ताः स्वार्ताः स्वार्तिः स्वार्ताः स्वार्वाः स्वार्ताः स्वार्ताः स्वार्ताः स्वार्ताः स्वार्ताः स्वार्ताः स्वार्

निव भी भीरामी मुन रहं यान निरामा

न्त्रः तिर्वायः सुर्या श्री वित्रः वित्रः श्री वित्रः वित्रः श्री वित्रः वित

राःक्षःतुः नेवः तुः सदः वेदा केवाद्यरः वाश्वसः ठवः श्रीः सेदः दी गुः सुः ता गुःषा गर्गेषा उर्रात्य वर्रात्य हो के मो के वे सूखा के रहे ही वे का मःभुःतुःन्ना केवान्नरःचविःष्यत्रः उत्रःश्चीः सेटःदी गाःषः सेटःवार्केः तःषात्रा गायायानीया रवाने रुवाने। दावार्देवाने। वेयायाष्ट्रास्य यर्देवाने। हिन क्रॅंशन्ता न्द्रकुषाम्थयाचेत्रम् भेरावम्यविमासमिन्यस् रटार्टेशाव्यार्टेवाध्वरश्चीः काल्यापाद्वेशायवायन् यात्राये सेटा इस्रयादे । हेशःग्रुनःग्रेःसेरःधेदःसशःसेरःवर्शासःदरः। सृःधेःनरःग्रेःक्रेदःसशः गुनःमन्ने भूदे गुनः द्धयः ५ : श्रॅंटः ग्रं ने श्रा वें ५ : भूटः ५ दें शः ग्रे : कें गः ५ नरः गिरेश प्यत् ग्री सेट मुट न त्य विद्र के सन्दर्द ए या सवा ग्रेट ग्री सेट वनायः विनाः अः नार्तेना अः नाव्य र विनः सेनः नः नुसः नुसः नाय्यः स्थः सक्षेत्रः 31

युःय। श्रेट्यं श्रायात्री न्हें द्वा श्रायात्री स्वेत्यात्रा श्रेट्यं श्यं श्रेट्यं श्रेट्यं श्रेट्यं श्रेट्यं श्रेट्यं श्रेट्यं श्रेट्यं

 2 त्यायानासहस्य देश देश त्यायानावसार्थ्यानासे सम्बद्धा सेटा स्था त्या त्या क्षेत्राचित्र स्था क्षेत्राचित्र स्था क्षेत्राचित्र स्था क्षेत्र स्था क्

4 ग्रिकें र्रायद्ग्या केंग्राञ्च प्रमुख्य क्ष्या व्याक्षेत्र स्था व्याक्षेत्र प्रमुख्य व्याक्षेत्र व्याक्षेत्र प्रमुख्य व्याक्षेत्र प्रमुख्य व्याक्षेत्र प्रमुख्य व्याक्षेत्र व्याक

हा नर्सेव केवा है वेंना गर्ने र न्यमा निर भ्रया कु जु नरा

5 नग्रान्यस्थायक्ष्यायत्था नग्रान्तिः न्देशः न्देश

6 चि.जश्रां अध्यातर्था चर्षियास्य चि.चतुः त्राच्यास्य चि.चतुः त्राच्यास्य चि.चर्च्या च्यायाश्च्रां वियास्य क्ष्यात्र वियास्य विया

7 त्रज्ञास्यर्भात्र्या धेमात्रज्ञासरार्वे उत्ती । मर्डे में सहसर्जन्य स्वानायि से से निराधेता नग्राक्त्या महिला से से समार्ट्या स्वानायि से से निराधेता नग्राक्त्या महिला से से समार्ट्या स्वानायि स्वानायि स्वानायि से स्वानायि स्वानायि स्वानायि स्वानायि स्वानायि स्वानायि स्वानायि स

- यीय। यश्चय्यात्रस्था विश्वास्त्रीत्। विश्वास्त्रस्थात्र्या श्वास्त्रस्य विश्वास्त्रस्य विश्वास्त्रस्य श्वास्त्रस्य श्वास्य श्वास्त्रस्य श्वास्त्रस्य श्वास्त्रस्य श्वास्त्रस्य श्वास्त्रस्
- 9 र्नेत्रमावत्तर्भामा र्नेत्रध्वाधीः भेरानुमाध्वानु श्वर्षः भेरा श्वर्मा केरायन् भाषीः भेरायने भाषीः भराष्ट्रभाषीः क्रायने भाषीः क्रायने क्रायने भाषीः क्रायने क्रायने क्रायने भाषीः क्रायने क्रायन

म्ब्रियहूर्यक्ष्म्य । विक्रियहूर्यक्ष्म्य । विक्रियहूर्यक्ष्म्य । विक्रियहूर्यक्ष्म्य । विक्रियहूर्यक्ष्म्य ।

१क्षेट्र श्रुवे त्युव रहं या वश्व प्रायश श्रुवे युव रहं या वश्व प्रायश

स्ति। स्ति त्या व्यापा स्यापा स्वापा स्वापा

- 1 त्युनःकुः धेः नोदेः र्र्ज्ञाः विन्यः प्रत्यादि स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर

ह्यारा अळं व ह्याया व्रयार जिया व्रयार

युगारी किरायुग्या युन्सिर किर्मेर सा व्यार्थेव्याशक्या भ्रियासभ्रयाश्रास्त्र मैगाउद ""मेग्रायहंग हिर्नु "" वर्ष्ट्र स्वर्थ। र सुना विकासिन का श्रीत से दिलें विकास से दिलें बेशमान्ध्रात्रवेश्वेरामी कान्या भेरामान्य मान्य मी कार्रा प्र वह्रवाः वेद्राक्षेत्र क्षेत्र क्षाया विद्या 2 क्रेंब्रिसेट हे अप्पट एट्ड च ट्विट्स पीवा वी स क्षुन या केत्रस्या एक स्वाधित विकालको व्याप्त विकालको व क्षरान कुरान थुरास कुरास मक्रिया मार्चित्रा मार्चित्रमा मार्चित्रम् गडेर-न न्युइरना न्युवरान न्युवरान नगुःन नगेन वर्ते द्रान विश्वास्त्रम्भ्यत्राम्बर्धाः विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम् येन्यर त्युरा वियापये नमून रेन्य सूर न्यूर अपनाय प्रमेश निया मदे सेट इसमान्त्र मा भेगान्त न्या कर्ते व स्व रहे व तक्षा समान्यू मा नश्रीराने सेवाश्राचित्रस्य न्वरश्री वा वीश्राचेश्राचित्र

| | 3 श्रीटाहेशन्त्रात्यात्रात्रात्रात्रात्र्यात्रात्रात्रात्रात्रा |
|----------|--|
| | यर्कें व हो ८कें व यर्चे या या वें व र यावें व र या |
| | বর্নী'ন'''''হ্নী'না অইব'র্নী'''''হিব'না |
| | ग्यम्विः अर्गः नर्षे ग्रद्धः हेत् ः अर्थेः स्र |
| | শ্ভিশ্——ভিশ্বপ্রভূত্র——ভ্রতিত্র |
| | 지문'지'''''' 문'지 저'지의자'''''' 제의자'취지 |
| | विश्वास्थ्रातुःतिः र्श्वेत्त्वहुणाः सः र्वेटः यविः गुत्रायः हिनः |
| <i>-</i> | |

विश्वास्त्रात्ते र्थेत् पह्नाः श्वास्त्रात्ते अद्यान्त्रात्ते र्थेत् पह्नाः श्वास्त्रात्ते र्थेत् पह्नाः श्वास्त्रात्ते र्थेत् पह्नाः श्वास्त्रात्ते विश्वास्त्रात्ते विश्वास्त

धेवर्त्वे।

उत्स्वाध्व सेटा हे सान् ग्रम्या सुसाय राज्य प्राप्त प्रमाणी सासून

71

गहुअर्थेवहुअअर। वह्वाअवह्वाअर। वसवारा वसवाराया वार्सवारी वार्सवारी वार्सवारी सर्केट्र भेट्या सर्वेट्र अपिया में प्राप्त स्थानिया स्या स्थानिय स्थानिया स्थानिय स्थानिया स्थानिया स्थानिय स्थानिया स्थानिय स्थानिय स्थानिया स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स्थानिय स वर्षेत्राचा वर्षेत्रया वर्षेत्रया वर्षेत्रया वर्षेत्रया वर्षेत्रया वेशमान्नम् नुपदे देवाशमान्यसर्वे उत्ती सेट वेत तुरस्टे । 6 शेर हे अ श्रेन्य अप्टर्न य अर्मे उद मी अ श्रुन य क्रेंत्रया क्रिंत्या क्रिंत्या क्रिंत्या हैं वार्या केया है या है या लाह या अर्था अर्थेया अर्थेया ञ्च-त्राण्या हेन्य राप्ता हेन्य राप्ता नव्रशास नहसाय है से ता है रा भुष्ठ मुन्न ह्न्य र ना स्वारा वेशनाः क्ष्रम्मामा अदे न हे ग्राया धिना गी नुया माने सुदे ग्राम्म या मान र्देव छे । छन् न्यर वित्र न्यर होन् न्यर हो ।

- 2 क'न्र'श्रेदे'में द्र'श्रेय'स्यूय'य। यदे'य'क'न्र्य'स्येद्र'उद' द्र' श्रेतेर'ठद्र| पर्मेद'ठद'पश्रिय'यथ।
 - 1 श्रमेव उव वी देव स्व भी सेट ही सदे र्वेव या क न्या मया न

2 श्रे क्रेन उन्ही र्नेन क्रेन प्रेन श्रून क्रेन अवे हे अ श्रु के सुर य य अ युन य क्रेन ने य हे अ यह या य न क्रें अ न में अ य ये क्रेन न हे अ यह या य न क्रें अ अ न में अ य ये क्रेन क्रेन क्रेन क्रेन ये ये क्रेन क्रे

गहेशयह्यायान्ध्रिशन्विश्वयते श्रीत्रेत्रेत्र हिन्तेत्र हिन्ते यान्य श्रीत्र श्रीत्र हिन्ते व्याप्य श्रीत्र श्

र्श अञ्चन्ध्रा नेयास्य स्वास्य विकास्य विकास्य स्वास्य स्वास्य

नः शुःशुराया देराना श्राना श्राना श्रीराना श्राना श्राना श्रीराना

गुना र्सेटना करना क्षत्रिं।

नवर में भूमें नमर में भूमों गर्ड में हुय में बुर में बर में

या नियम् स्ट्रिस्य विष्ट्राया वि

याःश्वाश्वरायाः हेरायह्याः स्थायः दिन्यायाः स्वायः हेर् सेन्यायः स्वायः हेर् सेन्यायः स्वायः स्वयः स्वयः

यो दे अंग्रा क्षेत्र या क्षेत्र

पिहेशपह्यायान्ध्रिंशसी प्रमिश्रासी सी में वासी भी की वासी भी में वासी भी की व

वी यादा धीत स्थान स्थान

या नियाओं में या हा श्री श्री स्था श्री सुराओं सुराओं सुराओं वार्य वार्य

यान्द्रास्त्री स्थार्था स्थार्था स्थार्था स्थार्था अस्तर्या यहेवारा स्थित्रास्त्री यत्त्रास्त्री विषयात्रास्त्रास्त्र स्थार्था यहेवारा याष्ट्राया स्थार्था स्थार्थी स्थार्थी

इय.क्रेय.क्रां । इय.क्रिय.क्रां श्रीय.क्रांच्या श्रीय.क्रांच्या श्रीय.क्रिया इय.क्रेय.क्रांच्या श्रीय.क्रांच्या श्रीय.क्रिया इय.क्रिय.क्रांच्या श्रीय.क्रांच्या

विवारं अ'विवाश्चर'या क्रव्यथ'रेवाञ्चर'रेवाञ्चर'रेवाञ्चर'रेवाञ्चर'रेवाञ्चर'रेवाञ्चर'रेवाञ्चर'रेवाञ्चर'रेवाञ्चर'

ग्रेन भ्रम्भाष्ट्र । व्यापात्र भ्रम्भाष्ट्र । व्यापात्र भ्रम्भाष्ट्र । व्यापात्र भ्रम्भाष्ट्र । व्यापात्र व्यापात्र । व्यापात्र व्यापात्र । व्यापात्र व्यापात्र । व्यापात्र व्यापात्र व्यापात्र व्यापात्र । व्यापात्र व

गर्डं में नश्चन प्रमानित्य प्रायम् हो नित्र हो

का क्षेत्र्री। का क्षेत्र्री। का क्षेत्र्री।

क्षेत्रस्वतेः क्षेत्रस्य स्थान्य । हित्रस्य स्थितः स्थान्य । स्थान्य स्थान्य

वेशमः भृतुशसर्वेदम् ।

अश्वान्य श्रीत्र त्राची स्त्र त्र त्र त्र स्त्र स्त्र त्र स्त्र स

2 र्विट्याल्यात्यः याद्वेयः या व्याप्तः या व्यापत्तः या व्यापत्यः या व्यापत्तः या व्यापत्यः या व्यापत्यः या व्यापत्यः या व्यापत्य

3 अवतःहेत्वःत्रः तः श्रेतः या क्रेंशः व्याः श्रेतः त्रह्मा दिस्यः ह्या स्याः त्र्याः विष्याः येत्रः विष्याः येत्रः विष्याः येत्रः विष्याः स्याः स्याः त्रेताः वेत्रः विष्याः येत्रः विष्याः विषयः वि

4 अर्वे उत्रावदाना क्षेत्राचा क्षाकृषा क्षानक्षुता थ्राधी ध्राधिता

भ्रमाःभ्रम्भ है। स्राउद्।।

6श्च तर् से नाम वहिया वहिया वहिया के वा के वा के वा की वा क

7 तस्या हो न तहा न स्थे न त्या न स्था न स्थ

र्श्वेनश्राम्यम्बद्गायश्चेश्राम्य मुर्दे ।

द्रभेटा हो ह्या प्रदेश सुन रहेला न १५ हा

1 हिन्द्रमिले निर्देन् स्वे क्षेत्र में नुन्य क्ष्य क्य क्ष्य क्ष

य्यतः में न्यमः में होन्या वित्या वित्या के स्वया के स्व

धि'गोदे'न सुग'गान्दशा क्षेत्रभा विन्गावे नार्हेन सदे सुन्दर हा नः क्रेंत्र सदे श्वापित्र में क्रिका की का निकार में सिदा स्वीति श्वाप्त स्वीति स्वीति स्वीति स्वीति स्वीति स्व अळअअअअप्टर्न्स्टर्न्स्ट्रेन्स्ट्रेन्स्ट्रेन्स्ट्रेन्स्ट्रेन्स्ट्रेन्स्ट्रेन्स्ट्रेन्स्ट्रेन्स्ट्रेन्स्ट्रेन्स्ट बन्द्रासंक्षेत्रमित्रे स्वराधिताचे नित्तु सार्वे साम्याम् । केवाओं नगायदिवासक्दर्यासेनार्स्रिनान्स्वाद्यासार्द्रमाविदासक्वराख्या ग्री:वयात्रमा भेगागीमाक्षामा वेमामदेग्धामानेमाग्रामानेसार्भेदारेटा न्तुःसदेःक्षः नः वियासदेःक्षः नः वी ज्ञः नः से स्वासदेः से नः विया से ना ने याहे या ॻॖऀॱॾॗॱॻऻॸ॒ॸॺॱख़ॱख़ॸॱॿॖॸॖॱय़ॸॱऄ॔ॸॱॸ॓ऻॗॿॖॱॸॱॾॣॕढ़ॱय़ढ़॓ॱख़ॗॱॸढ़ऻॗॿॗॱ विरानाञ्चाष्परानरायर्ने वा चानाक्षे क्षेत्रामये क्षेत्रामा वे त्राञ्चाष्पराविरा नःश्चाप्यरःपर्नेत्रःयं भेत्र श्चाप्रम्यःप्यरं श्चितः सरः प्रया श नवे न सूर्र र र से र मी न सूर् ग्री विर् सर हो न परी पर में र सूर् ग्री विर क्रॅंश-विवारेट्रा डेश-वाशुर्श्य-धन्म रेवा-धा होट्र-धा क्रॅंब-धा वसूर्य-धा रयान। श्रयान। श्रमान। देन्यार्शम्यान्यान्यान्यहेन्यवे सेरासवराष्ट्रीः मुन्यान्यान्याम् रामियो स्राप्ति स्राप्ता स्रापता स्राप्ता स्रापता स्रापता स्रापता स्राप्ता स्राप्ता स्राप्ता स्राप्ता स्राप्ता स विर्यस् ग्रीयाविरामवि निर्देर्यये से स्पर्यस्य स्थान

ब्रा श्रुंश्वरा अय्वत्या गुनाहेरा बेंगाही महर्या हैन प्रश्वा के स्वा के स्व के

ग्वित प्यता गुर्नि हे सावन्य साव हिन स्वार्थ स्वर्थ गुर्भ गु য়ৢ৴৻ঽয়৻য়৾ঀ৾৽য়ৣ৴৻য়ৢ৻য়৾৾ঀ৻য়৾৾য়৻ড়য়৸৻ড়ৢ৾৾৻য়ৢ৽ नडन्द्रशक्ति। प्रशक्ति। प्रमाशक्ति। विवादी क्रियायाने विवादी क्रियायाने विवादी यायाकुग्रायाचीया वर्षेत्याव्यार्सेत्रात्वेत्राचीयाचीयाचीयाचीया यानक्षेत्रायायान्यो नक्षेत्रा यातृना श्री साम्याया स्थाया विसामान्या नश्चित्राः ग्रीः नः वस्याः देनः नश्चित्रा । नश्चित्रा याः व्यायाः वस्यायाः वस्त्रायाः वस्त्रायाः वस्त्रायाः वस् यार्ह्मेशाने सूत्रावि। वार्षिवाशा वेत्राद्यायशार्षिवाशा वर्श्वर्शायायशा नगर। नगरमायमायरमा नहें निम्ना नम् निम्ना मनदः न व्यायायाया व्याप्ति । येट नर न क्यायाया क्याया वियाया क्र वस्याने न में राययान्यान या स्वारा स्वारा से वाने न न विद्या यो पा सेन् पंदे हिन् पर रं सामानित्र मानित प्रस्थ स्त्र प्रदे सुर्थ हिन्

प्रविद्धान्तः स्त्रेत्। ।

प्रविद्धानः स्त्रेत्। स्त्रेत्।

2 विन्कें अन्देन्यते केन्यो नुवेन हैन्न क्षण्या नुवेन हैन्त क्षण्या नुवेन क्षण्या क्षण्या क्षण्या क्षण्या नुवेन क्षण्या क्या क्षण्या क्षण्य

- 1 श्र-क्र-वारुवा श्र-श्रिवासम्पर्देवासम्पर्देवासम्पर्देश विदेश क्रियासम्पर्देश विद्वासम्पर्देश विद्वासम्पर्दे
- 2 श्रे क्रें द्वा श्रुक्ता श्रुक्ता द्वा श्रुक्ता श्रुक्

য়ৄয়৸ঀয়ৢঢ়য়য়৾ঀ৸ঀঢ়ঢ়য়ৢয়৸য়ৣঢ় र्द्रान्यकेषाद्वराष्ट्रिश्रास्त्र श्रूष्ट्रिया धराध्या ग्रुषा श्रूष्ट्रा रुयारुया नरानुरा धराधें अवियाराष्ट्रातुयार्देशसें द्वापी हिरार्टेश ग्री क्रम्य देवा ग्री या केंद्र पाया ने इत्ते विश्व के के निमा परिता परिता विश्व के निमा परिता परिता विश्व के निमा परित विश्व के निमा परिता विश्व के निमा परिता विश्व के निमा परित विश्व के निमा परिता विश्व के निमा परित न्वीं या स्विं त्यून का न्या स्वायि हे या वहुवा वन के वा वी या वहन या न्या ळ·ঀয়৾৾৽য়ৼ৾ৼয়৽ঀয়ৢয়৽ৼৼ৽ঀয়য়ৼ৽ঢ়ৢ৽য়য়ৢয়৽য়৽য়ঢ়ৢয়৽য়ৼ৽ न्वर्याक्षे श्रुरिने केंगान्वराविरावश्चेत्या याने र्येनाने यारे र्येरा रे। नने नुवनो पया से पिया से। हारे हिंर रे। वनो वें ना ने वा से विया से। क्रें रे के र रे विकास स्मृतु स्था के वा प्रवस्य विकास क्रयश्ची र्ययार्स्रेव पान्ना द्वी या के वान्नर निवेर निस्ने निया है या कुत्र-देर-विर-द्यान-सँग्रास-ग्री-इस्र अविन-तुःवर्ग्वेत-ते। कर-न-व्या-विग-वननः हे सः मसः करः नः भूगाः भैगाः इगाः हुः वननः मः धुनः बुदः नवे छस्रसः अर्कें वर्षान्ता करावर्षाने विवानो विवानो विवान हे या यथा करावरे विवास वनन'रेट'रे'वग्रम्'सळंस्रराळ्ट्'रेट'क्रुव'रेट'नर'ट्य'तुर'वनन'संदे' ह्य-क्ष्यायायाय स्त्रेन्द्रि।

3 गुन्न महिन्यवे से मणे गुन् रहेया गुन्न या गुन्य मिन्य मिन्य प्राप्त विवाद र वर्त्रेषानान्द्रसावर्त्रेषानानेषामानुष्राधिन्दामाद्रायादायायदास्य सम्भा स्रिन्द्रित्र्विराया हेर्स्याव्यायहेषा है। हारा दे हेर्स्या हिर्म ने अ'नश्चन'यर'ग्रु'नदे'धुय'गिहे अ'यत् रह्तं त'यद्यन'हें अ'ग्री'दगुय'र्ह्से न' ठेगाया ग्राष्ट्रेम न्रोगावे गठिगाया सुरान हैन सेग्रारा ग्रेरा ग्रेरा ग्रेरा या प्राप्त हायमा हेर्पार्सिन्दरहेर्पा हानदेख्यास्नामाळार्यासन्त्रममा हा नःवर्रे देग्राश्कृत्रप्रे भेटः इस्राय्य केरः शुः भ्रे विट धेग्र केंग्रायटः ना न्येरः वा नञ्जना ञ्चना नञ्जनमा ञ्चनमा नाउना गर्डेना नउना र्छेना नवुरा ववेना द्युरा द्युरमा क्षुन्तःनरा नेवे।वानान्नः क्षेत्रे वेनःमः माननः न्दायायवेषानवे जुन्न वे न्देश से न्दा क्षेट मी क्याय कुर न्याय से प्रकुर । विगाया गुप्तमा ग्रेट्योयायमा स्विगाया देवा माम्यापीया स्विग्रास्त्राया स्वि वर्द्या वृता कृत्यस्यळेष्ठावेता क्षेत्रप्रेत्रकेष्ठार्थासूत्रम् वेद्रासं यस या नहेत् वस निद्या यस ग्रह्म वेद्रास् ने हेद्राया । नहेत्र दस वर्चराना अयो वियाना वियाना वियाना विश्वाना विश्व

| मदिःसुरःर्देत्। ग्रुःनःन्हेर् मदेःस्रेरःमी ग्रुनः स्रुंषः रुःसर्देतः सरःग्रयः नः |
|--|
| क्ष्म ग्रेन्स्यां ज्ञाल्य न्द्रम्य अस्त्रेया अस्त्रेया अस्त्रेया श्री ग्राम्या विश्व |
| ग्री-गुन-र्ख्यायर्ने र-नसूयान्यानि स्री |
| 1 क्षेट्रमाबि मन्द्रमधि क्षेप्त्रम्भ क्षेप्रकार्था |
| নশ্যা নশ্ৰিমা নশ্ৰিমা |
| ন্সুম্ম্ শালাবিষ্ক্রম্যা নত্ত্বা লালাল |
| र्शे नर्गेर्या नर्गेर्या |
| नसूत्र स्वा श्रेय राज्य व |
| ब्रे"""वै। नर्डेश"""वर्ढेश |
| ন্দ্রিনাশ্র্মান্সন্মিন্দ্রাল্যালাল |
| শুমা—— শুমা বহুম——— ৰুমা |
| वस्यां विष्या क्षुन्तुरुष्यक्षित्र हो ग्रेन्स् ग्वित्न न्दाय्योयः |
| नवे गुःकैंगागो से र गावे दसस्य रेवे पि गाइर ग्रे ग्रे ने र गावव से र ग्रे |
| यश्चितानी सेट प्रविष्य प्रदेश प्रयास सुर्हेष प्रवाप प्रत्या विष्य प्रयास सुर्हेष प्रवाप प्रत्या विषय । |
| 2 क्षेट्रमावि सर्ह्य सर्मित यह मार्थे प्रसेट्र से प्रमान |
| |
| নৰ্নীশ্য নিশ্বস্থ্য স্থ্য নুমান সম্ম মান্ত্ৰন্য স্থ্য |
| |

| ন্প্ৰীম্ম শ্ৰীম্মা ব্ৰন্ম শ্ৰীম্মা ব্ৰন্ম |
|--|
| স্ক্রিশ স্ক্রমা স্কর্মা |
| ন্ত্রী শুর্মিন শুর্মিন |
| <u> </u> |
| क्ष्रमुदेर्श्वास्यम् सम्भाने मेन् निर्माणवर वर्षे वर्षान्य मिन्न स्त्रीय निर्मा |
| र्भे मान्य से न् ग्री ग्री ग्री ग्री मान्य से न् मिन से मि |
| 3 भेट पावि अर्द्ध्य अर्था अर्थी उत्र पेंट्र सेट्र ग्री अर्थे सेंट्र सूच पा |
| ইূলি সমুন্য বসুন্য স্থা |
| নম্ব্ৰ সমূত্ৰ নমুত্ৰ সমূত্ৰ |
| नशुव्यायम् नश्चेत्यायम् |
| नभूरव्य भुरव्य नभूरयव्य |
| শ্রদ্দাদ্দাদ্দাদ্দাদ্দাদ্দাদ্দাদ্দাদ্দাদ্ |
| ইুবা শেশ ইবা ব শ্ববাবা ঝা |
| शुर्णा वर्ग भ्रेंग हिंग |
| क्षुःतुमः सर्वेद ने। होन् तहोयायमा क्षेताया सर्वे उदार्थेन् व। होन् |
| र्रे ग्वित् से न् ग्री त्या के ग्वा स्वर्ग कि ग्वा से ग्वा ने प्यम सामे कि स |

गर्नेग्रारायदे सर्गे उदाग्री ग्रेन्से गाव्दाय ग्री ग्राप्त स्त्रीय ग्री ग्राप्त स्त्रीय ग्री श्री स्त्री स

शुरामित हो दार्स मान्य से दारी हा कि मा से दार्दी

4 श्रेट्रणिवि'सर्द्ध्यामः हेश्यत्ह्रण्यो श्रेयद्वातिः श्रेष्ट्रम्थः श्रेष्यः श्रेष्ट्रम्थः श्रेष्ट्रम्थः श्रेष्ट्रम्थः श्रेष्ट्रम्थः श्रेष्ट्रम्यः श्रेष्ट्रम्थः श्रेष्ट्रम्थः श्रेष्ट्रम्थः श्रेष्ट्रम्थः श्रेष्ट्रम्यः श्रेष्ट्रम्यः श्रेष्ट्रम्यः श्रेष्ट्रम्यः श्रेष्ट्

भेत्रामा भेता हो । । भेत्रामा भेता हो । ।

श्रेरःगी'गुन'र्ख्य'ग्री'र्क'द्रश'र्नेर्'ग्रह्म'रुद्रश्रेत्रश'द्रसेय' द्ध्याची देशासवर रवाशाहशाहेशा सुरा न्या नुसा है। दे प्यर प्रार्थर श्चरायायर्देराक्चियाक्ची:श्वराद्याक्ष्याय्याक्ष्याव्याक्ष्याय्याक्ष्याय्या য়ৢ৴ॱय़ॱॾ॓**য়ॱॻॖ**ৢৢৢৢৢয়ৢৢঢ়ॱয়য়য়ॱॸॕॖढ़ॱख़ॖज़ऄॖॱऄॸॱऄॕॗढ़ॱয়ॱॸ॒ॻॱॻ॓ॱয়ॸॱ वेन्यर्भेमावन्ये अपन्रेस्यस्य स्वाप्त्रेन्यः विषाधिन् वेन् विष्टिन् व्याप्ति विष्टि क्रेवःसर:र्:क्रेंग्रभ:र्गेश्वःपदे:हेवःवर्वेषःक्ष्र वुःवःरेःवर्हेर्ःग्रेःश्वःषरः वज्ञुः सदः नः वदि सः वेदः सेवेः गुरुः हैं गाद्यवः विसः स्यान्य सेवः विसः सुः वयेवः नवेर्दरस्कुष्णसर्वेद्वरम्मेद्रसूस्रो । १५.५५ मानव्यत्वेषाने ५६० मा वस्र राष्ट्र विश्व स्वापित स्व क्रियानान्दाक्षेत्रकासोन्गी पर्याप्तान्ति सुति सेटान्यासर्वेनायायान्त्रा

च्राच्यान्य व्याच्याः व्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व्याच्याः व

वदः वरः श्रेः श्रें वा व्याप्त व्याप्

यद्भान्त्रमाहित्राही श्रमाञ्च स्ति नक्षात्रमाहित्यमाहित्रमाहित्यमाहित्रमाहित्रमाहित्रमाहित्यमाहित्यमाहित्यमाहित्यम्यस्यम्यस्यम्यस्यम्यस्यम्यस्यम्यस्यम्यस्यम्यस्यम्यस्यम्यस्यस्यम्यस्यस्यम्यस्यस्यस्य

यद्भान्यभाव्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्यात्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्यात्य

ग्रम्याव्याविष्यं विष्यं भ्रम्या विषयं विषयं व्याप्यायं विष्यायं विषयं विषयं

च्राम्याविष्ठः श्रुम्याव्या व्याप्त्रः व्याप्तः व्यापतः व्याप्तः व्यापतः वयापतः वयापतः वयः वयापतः वयापतः वयापतः वयापतः वयः वयापतः वयापतः वयापतः वयः वयापतः वय

यात्रायात्र्यात्र्वे स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्था

ग्रम्यान्यान्यान्त्र द्वी स्मान्या नन्त्र ग्री नदे । स्या न्या न्या स्या

य्रम्भाविष्ठः भ्रुम् । प्राप्तः प्राप्तः । य्रिष्ठः प्रम्यः व्याप्तः व्याप्तः । य्रिष्ठः प्रम्यः व्याप्तः । य्याप्तः व्याप्तः । य्याप्तः व्याप्तः । य्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः । य्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः । य्याप्तः व्याप्तः व्यापतः वयापतः वय

श्चित्रः श्वाद्रसः गादेः स्रोदः त्राद्रसः व्याद्रसः श्वादः स्रोदः स्राद्रस्य स्रोदः स्राद्रस्य स्रोदः स्रोदः स्राद्रस्य स्रोदः स्रोदः

2 प्रह्मा श्री द्रा श्री

1 द्रस्थान्य विकास विकास विकास विकास विकास के ना के ना के ना के ना ने के ना ना के ना ने के ना ना के ना ने ने के ना ने न

श्चित्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्र सञ्चत्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्रात्त्र

2 वर्नेन्क्षणक्षरायहनाशाया बेन्सा ह्या अरा वि वेशाया क्षातुःवर्नेन्कुणक्षरायहनाशायवेः क्षेत्रावि जेशाया बेन्को क्षेत्रकेशर्चनाश्राधेन्द्री।

6 श्वाशायर्द्वाश्वर्धानात्र्वा । क्षेत्राची श्वर्षाची श्वर्षाची श्वर्षाची । दे त्यश्चाचा क्षेत्राची । क्षेत्रश्चाची । दे त्यश्चाचा श्वर्षाची । दे त्यश्चाची । दे त्यश्चाचा श्वर्षाची । दे त्यश्चाचा श्वर्षाची । दे त्यश्चाचा श्वर्षाची । दे त्यश्चाचा श्वर्षाची । दे त्यश्चाच । दे त्यश्चच । दे त्यश्चचच । दे

1 र्नेन खून ग्री केर वा क्षेत्र खुर क्षेत्र का खून पर्म द ना बेन

भूत्रश्राद्धी हिन्दार्य हो व्यास्त्र व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त विष्ठ विषठ विष्ठ विष

- 2 क्षेमाञ्चर्द्धं स्वर्धं हे सुर्द्धं । देव्याच्या देख्या देख्या क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका क्षेत्रका हे स्वर्धं हे स्वर्धं क्षेत्रका विकास क्षेत्रका क्
- 3 र्नेन्थेन् ग्रीः कः न्यानिश्यः श्रुमः न्यान्या नः उद्या नेः नेम् निनः हा व्यान्थे। व्यनेः नेम्यायः निनः हुदः र्ने।।
- 7 देशन बुद्दा शेरित श्रुपा श्रुप्त स्थान बुद्दा में दिन श्रुप्त स्थान बुद्दा से स्थान बुद्दा से स्थान बुद्दा से स्थान बुद्दा स्थान स्थान

श्रियाधिन् महोन् स्याया विश्वास्य सेन् में

8 म्रा वित्र क्ष्य क्षेत्र प्रवेश्वर में मुन क्ष्य म्या म्या क्ष्य क्ष्

च्याःश्चिमः स्वाद्येन्द्रभः स्वत्ये न भः स्वाद्यं स्वाद्

लक्ष) वेश्वराक्ष्यां विष्या प्रत्या ध्रुव विष्या विषया विषय

याश्यानासर्क्षेत्रायां प्रेत्वा । व्याप्तानास्य व्याप्तानस्य व्यापत्तानस्य व्याप्तानस्य व्याप्तानस्य व्याप्तानस्य व्याप्तानस्य व्याप्तानस्य व्याप्तानस्य व्याप्तानस्य व्याप्तानस्य व्यापत्तानस्य व्याप्तानस्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्

यःयो श्रद्धां तस्य विष्यं विषयं

र्वितः भूत्र श्री । श्रीतः या वित्र या

१ क्षेट्र श्रु वे वसे वा स्वाय विष्टा

गुन्न-पूर्वित्रकें अन्तर्हेत् सदि क्षेत्र स्वर हे अन्तर्मा न प्येम क्षुर हे सेट ग्वित प्रयेय सुंग र्के ----क्रेंव:स्री म्----म्व'स्था वर्चे----वर्चेनःस्। में----गर्भरःमेन। भ्री----भ्रीवाया मु----मुवा व----व्यवःया गर्धे-----गर्धेवा कं---ल्जा वहें----वहेंबा हे----हेबा व----वत्। अर्वे----अर्वेत्ररी क्टॅ-----व्हॅन्स्। ब-----व्हा र्हे-----र्विःस्। वर्-----वर्वःस। য়-----য়য়। वश्री----वश्रेम। नर्वे-----र्वेद्रः स्-----र्देदः रेप क्किं----क्किंव मा अहे-----अहेवा नश्चे ----- नश्चे वा के ----- के वार्षी

गर्हेर-----र्हेरा गर्हेग------र्हेग বর্বাম-----র্বামা বর্বম-----র্বমা वर्षेग्र------ वेग्रा वर्षुय----- मुरा वर्षेत्र ----- वेत्र वर्ग वर्ग ----- र्ग नसुस-----सुसा नहर-----हरा वर्ने ५ ----- हैन वर्कन----क्रमा वर्कें हिन्न----केंद्रम वर्के ----- वर्षे वन्य---- नश् বার্ত্যবাষ ----- প্রবাষা বাপবাষ ----- প্রবাষা न्त्रम्-----नुनम् नहुम-----हुम् নকুম-----কুমা ৠন্ত:র্মামাথমাশূমের্মমার্টান্ত नर्हेन्संदेश्वेदान्युनार्ने।।

यद्गः यद्गेयः र्क्ष्या मान्त्रः यद्गेयः रक्क्ष्या

पिर्देगावगार्थे या नहेव वश्वे र व्या या मवगार्या क्षेत्र कंया

ब्रान्स व्याप्त विद्या म्हार्स व्याप्त विद्या विद्

१. जुःनःनिह्नं भिराधी त्रिया द्वाया द

- (1) श्रीट्रमाविष्यमें उद्योग्यान्य महित्यि स्वीत्य विष्य द्वा
- 1. अर्देरश्रायायस्यार्थेर्पा मायावस्यारेश्वास्यार्थेर्पा

नर्भू र ग्रु र ग्रे र ग्रे र श्रे र श्रे र श्रे र श्रे र श्रे य

नक्ष्यः नुःश्वेद्दान्ध्रयः नेव्यः विष्यः न्व्यः न्वयः न्ययः न्वयः न्ययः न्वयः न्ययः न्वयः न्वयः

नहेशन्तरहेशनेन्। नहेंत्न्न्यनहेंत्नेन्। नहेंत्न्न्यनहेंत्नेन्। नहेंत्न्नियानहेंत्नेन्। नहेंश्चनहेंत्नेन्। नहेंश्चनहेंत्नेन्। नहेंश्चनहेंत्नेन्।

नक्ष्रेन् ज्ञुनक्ष्रेन् ज्ञेन् नक्ष्रेन् ज्ञेन् नक्ष्रेन् ज्ञेन् ज्ञान्य । ३. अ. व्यास्य । ३. अ. व्यास्य । ३. अ. व्यास्य । ३. अ. व्यास्य । व्यास्

श्चन्य निर्म्य निर्मा निर्मा

- (2) अट्याबिया भ्रेस्य प्रित्य प्रत्य प्रत्य
 - नक्षना चुःक्षेंना चेट्र नक्षना शः चेद्र क्षेंना शः भेना नक्ष्या चुःक्षेंना चेट्र नक्षना शः चेद्र क्षेंना शः भेना नक्ष्या चुःक्षेंना चेट्र नक्षना शः चेद्र क्षेंना शः भेना नक्षया चुःक्षेंना चेट्र नक्षना शः चेद्र क्षेंना शः भेना नक्षया चुःक्षेंना चेट्र नक्षय शः चेद्र क्षें न शः भेना नक्षया चुःक्षेंना चेट्र नक्षय शः चेद्र क्षेंय शः भेना नक्षया चुःक्षेंना चेट्र नक्षय शः चेद्र क्षेंय शः भेना शः चुः न्हा । नक्ष्या चुःक्षेंना चेट्र नक्ष्य शः चेद्र क्षेंय शः भेना शः चुः न्हा । नक्ष्या चुःक्षेंना चेट्र नक्ष्य शः चेद्र क्षेंय शः भेना शः चुः न्हा ।

3. श्रेट्याबिन्धेन्द्रम्थेत्यार्थेत्यार्थेत्यार्थेत्यार्थ्यम्यात्रम्यायस्ययार्थेत्यः सन्दःक्षात्रात्रस्यात्रम्या

इर्ज्यत्वेत् चेर्इर्यं पर्देर्यं वित्रा वित्र व

4. भेटाम्बिन्धः श्रेसः धितः प्रदेशः प्रदित्यः प्राप्तः प्रदेशः प्राप्तः प्रापतः प्राप्तः प्रापतः प्राप्तः प्रापतः प्राप्तः प्रापतः प्राप्तः प्रापतः प्रापत

- 5. श्रीत्र विश्वाद प्यतः स्तर्द स्वर्थः स्वर्यः स्वर्
- 6. श्रेट्रमाबि'रा'श्रे'श'धिव'रादे'श'र्द्र्र्स्य'रा'त्र्र्स्य'या'त्र् नश्च'त्र्युव्य'क्के'त्'श्रे'नाव्याव्युव्य'या नगुःच'वित्र'चेत्'नगुर्याय्युव्य'या

वर्वेर:वु:वर्वेर:वेर:वेर:वाक्ष:वु:द्रः।

नश्चना श्वास्त्र नश्चना स्त्र स्त्र

7. श्रेट्रावियाटायटास्ट्राचित्रं प्रश्वाशुस्राचीयायस्य स्त्रीट्राचित्रा मैसादस्याम्

त्युना ग्रान्युना ग्रेन् त्युना श्रान्युना श्रान्य वित्रा व्युना ग्रान्युना ग्रान्युना श्रान्य व्युना ग्रान्युना श्रान्य व्युना ग्रान्युना श्रान्य व्युना ग्रान्युना श्रान्य व्युना ग्रान्युना ग्रान्युना श्रान्य व्युना ग्रान्युना श्रान्य व्युना ग्रान्युना ग्रान्युना श्रान्य व्युना ग्रान्युना ग्रान्युना श्रान्य व्युना ग्रान्युना श्रान्य व्युना ग्रान्युना श्रान्य व्युना ग्रान्युना श्रान्य व्युना ग्रान्य व्युना ग्राम्य व्युना ग्रान्य व्युना ग्राम्य व्युना ग्राय व्युना ग्राय व्युना ग्राय व्युना व्युना ग्राय व्युना व्युना ग्राय व्युना व्युना

8. श्रीरामाने माराप्यरासुरानवे प्रभामासुरामा वसुरा हो प्रभेषामा श्चर गुःश्चिर श्चर अप्य श्चिर अपनि व म्राचाम्याचेनाम्यान्यस्थान्य ब्रेट गुः ब्रेट गुंद अर्थ में द्रार्थ भी ग मुर्था मयारा हिराया मुजाया क्षेत्रिया बेट'ग्रेबि'कुट'न'ठव'ग्रे'ग्रु'न'न<u>ह</u>ेंद'सदे'सेट'गे'दसेय'द्धया श्रीट्रायादी साम्रे साधित सदि सादि सादि साम्रे ता पहुंचा या प्राप्त दिन प्राप्त स्थान वसावस्वाके वद्याया नसावस्वाया न्त्रामा ग्रुप्त्रामा ग्रेन न्त्रामा विकासिमा हिमा न्वावा शुःवर्वीवा श्रेन नगवा ने व विवा रेवा गल्गा गुः दह्मा ग्रेन य द्या वेद रह्मा देवा गर्नेव ग्रु पर्नेव ग्रेन पर्नेव नेव में व रहेग यान्यायाः शुः वर्देयायाः श्रेन् वन्यायाः विवा गडुव ग्रुप्ट्व ग्रेन गडुव नेव छुव हेग ग्राबुद्दार्ग्यहें व होत् न्य बुद्दार्थ विष्ट्र सुद्दार्

श्रेट्यावे प्राक्षेत्राधे व प्रदेश अर्देट्य प्राप्ट्र प्राप्त व विश्वापाया

न्रावस्याकं वन्रामान्रावस्यामा न्वार ग्रुप्तार ग्रेन् नग्र स विर हेग ग्रुड्-जुःग्रुड्-डिन्-चर्ड-र्-सर्केन्-डिग् याउया ग्रुपार्डेया ग्रेन् पठया पर केंया शासीया गहरागुर्गहेरागुरानहरान विम् ग्वराग्वराग्वराग्वेराच्वरायाविराठेग न्यया चु म्येन चुन नयम्य य स्थिन के नाक्ष चु न र श्रीटामिवे सार्श्वेदे सार्देट्यामान्यादस्यामान्द्रामान्द्रामान्यादस्या वःवन्यःयमःवस्वान्तेनःयो न्ननः जुःदननः जुेन् ननशः भं ने सः निम न्नें गुःदर्भे गुन्सें ग न्तुनः चुःदत्त्वर्यः चेन् स्वनः स्वयः नेव न्त्यानु त्र्याने न् स्यामास्य केत र्यंग्रियं येत्र्यं येत्र वित्र स्वारा स्वार नर्वेग्। गुःवर्वेग्रारा ग्रेन्। संग्रारा स्ग्रारा निग्रास् गुः नुः नुः । श्रेरःगिविःगरः परः रुदः नवेः रुशः गशुभः गः वस्यः हो रः गरिगः गीशः वस्वायाःमा

तगुराग्चातगुराग्चेत्रतगुराम।
स्विराग्चात्वराग्चेत्रयाव्याः
स्विराग्चात्वराग्चेत्रयाव्याः
स्विराग्चात्वराग्चेत्रयाव्याः
स्विराग्चात्वराग्चेत्रयाव्याः
स्विराग्चात्वराग्चेत्रयाव्यायः
स्विराग्चात्वर्याग्चेत्रयाव्यायः
स्वित्रयाग्चेत्रयाव्यायः
स्वित्रयाग्चेत्रयाव्यायः
स्वित्रयाग्चेत्रयाव्यायः
स्वित्रयाग्चेत्रयाव्यायः
स्वित्रयाग्चेत्रयाव्यायः
स्वित्रयाः
स्वित्ययाः
स्वित्ययः
स्वित्यः

6. श्रीट्रावित्राक्षेत्राधिव्यापिव्यावेट्रायां वित्राचान्त्राचा वित्राचा

नशतस्याळे दास्या पादाया सुसाया राष्ट्रिया स् नगर्गः इन्नेरिन् हेर्नानम्य नरमा ग्रु प्रकमा ग्रेन नरमा अप र केंग्र अप नर्ने गुःदर्हे गुेर् नर्ने अपानि अपी नित्राचुःगित्राचेन् नित्रास्यानेन्यः भेग नन्तुः व्यक्तः वेतः नन् । संनि । देव नर्या गुःवर्क्षया गुेन् नर्या पार्क्षया रेगावः न्या श्रीरःगिविःग्रारः परः सुरः नवेः स्रावेद्रसः सः न्दः नः न्वेत्रसः गाः दसः वस्याकें वन्यायर वस्या होता सेता म वर्षेन गुःवर्षेन गुेन र्षेन मा वस्रा मु वस्रा मु द स्रा मा वर्देर: जुःवर्देर: जुेर:देर: यः देर: डेग वह ज्ञावह जे दाला ना वर्केर ग्रु वर्केर ग्रेन केर ग्रु वळर ग्रु वळर ग्रेर भर ग वतुन् चु वतुन् चु न् तु अ या तु अ भी ग ववार्था गुःववार्था गुंद्राचार्था भू गुः नुः नुः

र्वाया भेरावी प्रश्नुवार्ट्य निप्ताया १ श्री साम्भ्रवाया

है: अप्ताही प्रयापित विष्ठ प्रयापित विषठ विष्ठ प्रयापित विष्य प्रयापित विष्ठ प्रयापित विष्ठ प्रयापित विष्ठ प्रयापित विष्ठ प्र

भेष्यान्य मुद्रान्य मेत्र देश्य मिन्सिक्षेत्र मुन्य केत्र सिन्द के श्चेरःश्चर्दः श्वर्यादः याद्यः याद्यः याद्यः याद्यः याद्यः याद्यः याद्यः याद्यः अन्यामी अर्कें वर्षे वर् ल्यानम् नर्ग्या अहँ न् अव्या अन्तर्भ न् अप्तर्भ न् अप्तर्भ न् या व्या अन्या में अर्के वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे मार्श्वे रास्ट्रेट र् रेया देवें या ये ये हैं राय किया म्राप्तियान्तरक्षियाम्या यात्रश्चान्यस्य ग्रीन्स्ति वर्षेत्रभ्यायाः नहेव वर्ष ने राप्तीया वेरा गर्र स्थाप्त कर्ष कर्ष स्थाप्तीय र् अ वै निर्देन स्रायन् स्रीय । सन्हेन स्थान स्रीन स्थान्न हेरा ५८। वर्हेर्यस्वर्द्रायवेश्यविष्ठः ५५८: श्रीम् । श्रुम्बस्यश्यादायदर्सेरः सपीत्। १३० वे सर्से प्राया शीस नसूत प्राया नसूत पर्वे सामा प्राया । यदःरदाने नश्रुव जुते देव द्वादा वर्षे वा नते के दःद्रश्चे माश्रा की नहः कदः विदः ग्रम् भेरमी नसूतर्दे तथा र्रमा साहित्त्व सान्सरमा प्रेर्मा सामि स्थान श्चेर्यन्द्रमा द्वाप्यक्षिय ध्याप्रम्थ स्वर्षियाची वदानु यान्त्रायह्यात्राश्रार्शेट्यते श्रुते श्रुत्रे राख्यात्राश्रुत्र सेट्यते स्ट्राविते सेट्य नर्हेन् पर्देन् ग्री न्री मुक्ष न राय न न न सूत्र हे सी न में न माल्य न न गवराणें रामरी अरे शें रागे मिराधुगार् राज्यात्र महें रारें ता बुता सें रा न'ने'प्यश्न'न्द्रीम् शन्यव्यन्ति।में न'ने'सेन्'प्यन्त्वतुन्द्रीम् भून्'कदे'

ग्वरुषः भ्रम्वरुषः दृरः गुदः श्रेंदः वः नव्यः दृर्वे रुषः श्रें।

कुंवायदी यहर द्वीर या स्था सा सु प्र हिन्या हिंग या सर या सु या ग्रीभागित्या ग्रिते हिना हेन नक्ष्म नहें भाषा से नाये । निम् ने ही र्नेदे र्श्वे द्राध्या अत् । गुत्र सिव्य द्रित दर्गे द्र राज्य स्था सिवा । १८ रहे सा गश्रम्य निता भेर मे नभूव देव के नहें द रा में दे ग्राव हैं र प्राव हैं र प्राव हैं रेंदिःवर् नेश गर्-र्वत्वर् नहेंद्र नहे वळन् प्रवे र्द्धवाया नक्ष्रभाने न्युन् न्वी भाषा ने क्वाया नवे नात्र स्था भाषे वर्स्यावन् रेगामवर्गमविवः इस्रयायापराने सक्दर्याधेवाराने। न्येरः व। श्रेंगार्डशरार्डेन्द्रस्यालेशस्याश्वरास्त्रम्यदेन्द्रेन्द्रोत्रायार्गे नर्हेन् जुदे र्ने ब प्रमान व्यास्त्र मान्य प्रमान वि प्र र्भेग्रास्म्रन्यर्देवासीयद्वानात्यार्थेत्यस्यस्विताते। सेटाम्डिमायास्वर ध्यानी वित्रम्भायकार्गे नासी वर्षाना से द्वारा है । या दे नामान स्मान स्मान ग्रम्भन्य वेया नुःषा वेदः तुः ग्रम् वयः स्र से द्या से दिन देयः ८८। यात्रअः भ्रम्यअः महेंदायमेया मी देवा क्षामा मेया प्राप्त मेया मेया प्राप्त मेया प्त मेया प्राप्त मेया प्त सर्याविरःसियोशःश्रः इरशः हे तकर्तात्री शःश्रुः सङ्गेहि हा ग्रीयः द्यायः श्रियः अळंत'८८। श्रेश'ग्रे:हे'र्डेंट'वि'स'र्शेवाश'णेत'हे। ५८'टेश'ग्रे:ह्रस'नविना' वर्दे अदशः क्रुशः ग्रीः नगवः विं दिवे द्वारः दुः ग्रुशः से द्वा वर्दे रः से दः गीः नश्रूदः र्देन या पर देना वर्गे या वनो ना से रहरा ना से दार हो हो ने सुरा स्था उद्ग्वाहेद्रास्र सेवि द्वीद्रस्य स्वर्ग्वर प्रस्व प्रम्य द्वी स्वर्ग्व में वेंद्र त्यम् ग्रीत्। सून्द्र त्या सिन्द त्यम् स्वाद्र त्या से । सून्द्र त्या ग्रीतः धरायादायावर्याचा । स्वार्श्वे राध्ययाची धेवान्व उदा । विशार्देव क्वा विशार्देव क्वा नविदेश्यह्याः सबरः नर्गे सः राउदः नर्गे नः यः ने सः देशक्व स्थाय सम्राउदः न्वीरश्रासदे न्वरानु वर्षी वरावसूत्र ही। न्वीरश्रास उत्र वेश हुत् सुर नःविषाः धेर्नः सर्वस्रुदः सः स्रोदः सरः षाशुरुशः सः यदिशः ग्राटः षाश्रयः सरः नेशमानविता भेटानी नसून देन या पटानान्य सून या नहें दार्च या र्शेम्थान्त्रीक्षान्त्रात्रा क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या विषयाञ्जन्या ग्री-देव-गहिश-धेंद्र

१श्चेर नहरंगे नश्व देवा

श्चित्रः विद्यान्तः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्यः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यानः विद्यानः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्यः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान्तः विद्यान

मनिर्देशने स्टाधिता सेवासायाहेर यसा देव या वात्रसाय देशने सार्थे इससा । पारेपायानुः सासी श्रीन् रहेना । नुः सापि वा गुः पार्वसासी श्रीन्। |गठिगायागर्यार्ययाद्यारायायायायेत्। ।यदिन् सुराष्ट्रयायस्य उत्देव प्रवितः बूटा । गाउँगाया बादा बूटा ना अदि के या पा बूटी हैं के राजी । ग्री-र्नेव-नेय-श्रुय-प्रवे-श्रीय-ने श्रुय-पावि-नेवे-नर्स्थ-श्रीय-प्रविन्धीय। प्रक्रव-विरामने रामाया कुर्ना कंविराम श्रेमायाया श्रेमामाया सम्मानविदानु। र्देन विराम विराम निर्मा मुक्ता मुक्त र्शेन्यराद्रिंशसेट वस्र उर्देश सेट में श्री राजन हो में दिन पीता हे से श्री से नहरःगी देव दे ते श्वरे देव मानव त्य श्वर देव प्रति माने र डिट्यान्यायियां निः सूर्रक्यायायायात्रहेत्रत्या वद्यवियासँग्रयायाकः सम्बद्धियायार्श्वे राग्नेया व्रवार्ष्ट्रयाग्नीया परामुखामीया ग्रहासेसयाग्री N'वेशमें न'पासर'र्'नश्चेर'यात्रश्चम्याः श्चेरेत्र'ययः श्चेर'नहर वी देव अव है। रूप वी श्रुष्य वा श्रुष्टी वा श्री वा श् भूनशर्नेव के पोव पारा श्रुम् मुरानशा क्षेव से मुना के ना र्येन शर्मे न्नरःवीशःवीं नःवाश्वरः नुः चुरः नःवे श्चे रः नहरः वी देवः वश्वरः वर्शः वर्षः

३गव्याभूवयाग्री वस्त्रार्देव

यात्रशःश्लेनशःशिःदेवःवे। देवःद्रःश्वरःयवेःश्लेरःयारःश्लूरःश्वरःयोः व्यक्ष्यःयोः व्यक्ष्यःयोः व्यक्ष्यःयोः व्यक्ष्यःयोः व्यक्ष्यःयोः व्यक्ष्यःयोः व्यक्ष्यःयोः व्यक्ष्यःयोः व्यक्ष्यःयोः व्यक्ष्यः विष्यः श्लूयः श्ल

नम्श्वें न्रंचे शर्में न्या वें न्रंचे स्वाया चें प्राप्त स्वें न्या स्वाय स्वय स्वाय स्वय स्वाय स्वा

वर्त्रेयानर्दा हेवान्वयाद्दा नेदायान्यस्य स्यापराद्रे नाम् दुर् मुर्यायाती भ्राम्याद्वीत्रेरायाम्याद्वीत्रम्भेत्रस्यावन्ताम् रास्त्रा য়ৣৼ৽৾৾য়ঀ৾৽য়৾ঀ৽য়৾ৼ৽ৼ৾৾য়৽য়ৢ৽য়ৢ৾ৼ৽য়য়৽ৼৼয়য়য়৽ঢ়৽য়ৢয়য়৽ৼ৾য়৽ঢ়ৢ৽য়ৼ৽ वर्गुर वर्गे नः है। अट गठिया य किया सद अप्तर नश्च र तर् देव भी ढ़ॕ॒ज़ॱय़ॱॿॱॸ॔ॸ॔ॱज़ॹॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॖॸॱॶॹॴॶॖढ़ॱऄॱऒऒ॔ज़ॱय़ॸॱऄॕॗढ़ॱय़ॱढ़॓ॱॶॖय़ॱढ़ज़ॺॱ ग्री नक्ष्र दें त विग प्येत भ्रीमा गल्र दे गारे श ते भ्री स्थान म र्श्वे प्री प्राप्त म मैशर्मे नःहै क्ष्र क्षेत्र स्रेत्र स्रेत्र स्रेत्र स्रेत्र स्रेत्र स्रेत्र स्रेत्र स्राव्य स्रेत्र स्रेत्र स्र र्श्वेराग्रह्में विष्यं देन्य स्राप्यायह्वायि से स्रिन्या देन्स्रिन्या न्रह्में न्या । भुग्रारा ग्रीराह्म स्यास्य न्या है निवास निव षर:शुःदगुर:न। । अवर:नात्रशःधे:नोदे:श्रृंनशःवशःदगुरः। । **८०**वेशः गश्रम्भःश्री । देः प्यम्बस्य द्वेते के ना स्रम् से प्यम् न स्यान्ति । स्रम् गठेग सून पर्दा केंग सर सुपद्य ना वेग में अर्दे व से में पर्दा नन्भेन्याम्यादिक्षेत्रावित्यास्यादिक्षात्राम्याद्वात्रास्याद्वेत्र हे निश्व श्रीत्वार प्यतः सुदः निश्व स्वादः प्यतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः हिन्द्रशर्नेद्राविषाची भेराउँ अर्झेद्रायादी अळदात्रा चडन लेखा ग्रुट में भी ग.का या वरात्रायय नग.मूरा वहाय.जर्भा मैंट.ड्री वर्चर.ग्रेरी ह्रा. म् वर्ष्क्षभाषा सूर्। प्रवानार्भगभार्म् न सुरायार्भ्रम् वर्षः न सुरायार्भ्या

न्वे:न्नःकैषा:बन्:ग्रे:क्रेव:श्वरःव। यषा:बैरःनु:ब्रुष्णय। व्यवेदःवयःग्रेयः वर्क्ष्या ब्रूट में त्या श्रुवा गुन सबद वस गुट । हैं से वेट गा का वस समित व.र्नेटा ग्रे.र्नेट.क्.यो वृश्यताक्षे.येषु.श्रेषु.क.चश्रशी.वींट.सपु.शुट.स्यश्र ग्री नक्ष्र देव मावव द र वशुर पेंद मावी मग सें र वे ह्यू ग र वे प्या वर्षेत्रायश्वे वर्कें दार्यो सूटार्च ते से तारा स्वा निवास न वे वर्षेट्रास्त्र श्रीत्र श्री म्री. म्री. म्री. करु. यट्या. म्रीयस वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र स्थित हैं वे हेव ग्वी श्वर है य वे वें प्राप्त हिन पर नु हुर पर वे शेर पेव पर हेव धरादशुरावश्रा ह्वाश्राश्ची प्रह्वाधार्य हो हो ह्वा वहावाश्रेश्राचारा वहवाया । यवरःश्वरःदेवाः यदेः सेटः देवः वया । श्वरः वहवाः वेटः यः होटः यः वि देशनाम्बर्यान्य। । ८१ वेशमासुरसःस्। ।

ध्याश्चेशर्मि न क्षेट्र के स्व के स्

गवर रु: श्रुर पर से त्याय श्रेरा हिं रें हिंदे श्रेर प्रोर प्रोय से द्रा हिंस शुः सेन् पर्न नहेन् पर्नेन् ग्री न्वर वी सायह्वा पा धेव प्रसा है भूर हुर गुरःदग्यायः नारे व्याप्तः चित्रः चित्रः चित्रः चित्रः चित्रः चित्रः व्याप्तः व्यापत्तः व्यापतः वयापतः व मदे पुरा से तर् नदे मुन् मुन से से मिन सून देन से तर् न ते पुरा मुन रेगामी ग्वाबुर है। वर वस्वास्य गुव ह्वेर वर हो र प्रवे हें वरहा। वर र्मार्यते म्यार्थ वर्षे वर्षे वर्षा भी भी स्थार में स्था श्रुवायाः ग्रीःवायदः वायायायः दुः हो दुः दाया श्रुवःवातु दः दु। श्रीः श्रृं दः द्वारः ववाः सक्षमासर्वे रेति सूर् रेति वात्र वारा सूर् रेवा परियान्य रेता स्री वी नहः कर प्राचित्र अहि प्रमान वर्षे वा अधि प्राचित्र वा वर्ष ग्राचित्र वा वर्ष वा वर्ष वा वर्ष विष्य প্র্বা'র্বা

अन्य श्री न क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्व क्षे

ग्रीश्रासीटाम्डिमात्यामें नायोत्रासूट्यासीत्रान्तायाँ नाने सिटालेयानिसीटा वर्ते त्या ग्रु नवे दे चे क्रिंत पवे देत क्रिंत नवित त्या वित त्या येन्स्नि नहेन्यस्तित्वियः है। स्ट विस्यान्यस्य मुर्भायस्य स्त्रीयः न द्वा यदेर्नेन निर्मा अन्यापन भी धेर्ग्युन र्सेन निर्मा यस्त प्रते से सेन विशासविः श्वाने स्माने नावशाने सः श्वेन नु स्थान हुना समास श्वेन प्रवेन नि र् विराने कर मी अवस्यात्र या वर्षे नार्टा वर्ष निष्या मि से स क्ति-द्विन्त्रम् न्यात्रम्य स्वयः होत्रस्य भूवायवे देवाड्याया विवाया विवाय व र्शेट वेश मदे श्रुम्ट देश द्रश्च श्रुम्य श्रेष्ट स्था श्रुम्य स्थान स्था ८८। तकर अपिव ग्री गुव र्से ८ ५८ तथा मी स्थादशुर यथा मार स्थर म्रात्रित्र क्षेत्र क्षेत्र वित्र क्षेत्र वित्र क्षेत्र क्षेत् यदे मुन श्री अधीव है। येग्य सर न निर्मा देव में केदे गहेर है। इर र्वेर-श्चान-भ्रुव-नडरू-५८। विद्यान्ध्व-प्रव-ह्य-पवर-श्चेन विरूप यश्वस्त्रःयःसूरःर्रे ।

र्शःश्रेशःमि अद्यादिष्यः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विषय

र्शे । ने प्यर वार्डे में नि वार वार्य रहेर वी हिन यर पेतर है। नह वार्य रहेर वी'न् ही'अळअअ'य'नग्राय'नउन्'नेअ'य'वाशुअ'सॅ'न्न-'न्ने'नेअ'बन्'ही' वर्हेनाः ख्रियः रे प्येन् ग्रामा वर्ने र नग्र था वर्ष हे र स्वे ख्रुव श्री से र विवादः न्वेर-इन्याने न्वेन्यर ग्रुष्ट्रे। क्र्रिंग्गी नम्यान्य स्थान्य वियाय न्या क्रेये वहरमाया न्वास्या वेयायवया वेदाक्षेत्र, न्यास्यायया विवासियायया विवासियायया वेशन्ता रुपदेवन्त्रपत्रेन्त्र्रम्या विश्वास्य स्वाराष्ट्रम्य उद्दर् नु ते सादा समा से विं त्र हो दाया हो सा सु विं कु सा ही वि वि वर्गुरायशर्भेवाग्री। दयमार्भे। यया केराशास्या विमार्गाम्या विमार्गा च्याने। सुम्यास्त्रीमा पर्के क्षेत्राची प्ययामा महित्राचिया स्वर्थन स्थित ररःश्रेरःचवग्याः ग्रदः नश्रवः देवः गविवः दुः वश्युरः वश्य दः श्रेः दुः राः वेशः यः द्वः कुदे हे अ दे द द अ वाद अ क्षें र पदे पदें वा हि अ अअ पदें वा से दे के र र र वर्गुर नर नहेता उ नशुभा उ ननमा उ वर्गेया उ भूरा उ मा शुनु यान्यवाची देवाचान्व वसायेन संदी येन ने नर्गे या श्रेन होन संदे नुसा श्रे मार्डमा सदि मुद्र ग्री स से द्रा

ने भ्रान्य प्रवास्य श्रमाया क्ष्रिं स्वास्य प्रवेदा या श्रेष्ठ स्वास्य स्वास्

न्वायानिक्षामहेव। सामायार्भें मा ह्यायायार्गे हो द्वायायाय्यें न रा स्रेर्धिर जार्ष्याया सेवाराज श्वीवारा स्रेर सेस्य स्यापित वर्षेत रातातम् निर्मा स्वाकातास्य प्रमानस्य प्रमानास्य स्वावानास्य स्वावानाः कर्मा विरानमा कुर्मा नसूनमा स्वामा वेरानम् हुरान ने नगन भेरें न प्रमुक्त निया स्वर्भन मेरिन गर्म मार्थ मेरिन स्वर्भन मेरिन ग्री हिन माने नहेंन पदे से रायायान सुन ज्ञान नहेंन पदे से रान रा हेंनाया र्देव देय ग्री अप्त्यू र निवे अर्कें व ह्वा अप्निवा प्येव सें दा स्व कर प्र प्र क्षेत्रे में न वर्ष निर्मा के स्वराके स्वराधित है। ग्राय है में स्वराधित व ग्रवतःस्वरुप्तः नेरात्रु राश्चे भेता भ्रम् श्राम्य । स्वरुप्त स्वरुपत स्वरु गहेशसु नहीं राधर सूट दें।

गडुरानिराक्षानुः सेरानुः सरावयेयाने वहुगार्ने नः सरार्ने क्रेंन्याया इत्येर वर्गुन कु वे भी मो वर् नवे नवर मो शर्मे न सुँग्र सक्दर शर्व अ भें न गुर्ग श्चाने किंत्रे कें ना क्ष्र न बुद्दा केंद्र स्ट सक्त निर्मे न श्वर केंद्र साथित याने र्भूमायम् होनायम् वर्षाना कु स् हिते कान्या स्वान नर्गेश विन्यम्न्यः व्याया विषयः भ्राया विषयः । होत्राची के वार्चे वार्या वावन प्रत्या श्रेया त्रा त्राची प्रत्ने वार्या यम स्वित्रे वुराने। नगुरा नवियाया याना श्वरा वेंगा । धरा नहुरान्ध्रन्य रहेंगा र्ग्रेग्रायास्त्रुर्त्र, त्रापार हेर्त्र पास्य नेया पर्ते विष्या हिर विष्य गुरा गुरुष्ट्रायन्यामार्द्धेन्यये केंगार्गेग्यान्या नवेना ग्रेना ग्रेन श्र्वाश्राद्वाक्षात्रीयाश वा वर्षम् क्रुश्वाश्रास्रवेदशास्र स्वाधार श्चिश्चरत्र प्रावेद्गे प्रावाययायरहें न्या प्राव्य व्याय विद्या यानःस्य स्रमःवर्षुमा वेवाःग्रेता स्रमःत्रेता नहुनःग्रेनःस्रस्य ममा ब्रेट्स विवादिन त्या श्री र नित्र हो नित्र विवासी श्री र प्राया गुन र्सूर। त्यार्यम्यायाची में नासी वदाना विष्यासा नेया में दिन ची मानदाया गर्विषः नगदः नशःग्राचनः ग्राचनः ग्रुः न्वीं शःश्री।

नत्त्रमा भेरानि रेजि त्युरा छुषा नत्र प्रा १ श्रेरा नश्रुवामा

बेट इसस्य सामा निर्मा होता होता त्या सामा निर्मा होता हो सामा है। श्चिर्यन्तरक्ष्यार्यायायदेख्यायाः नियाः धेराने। श्वेराश्चेष्ठाः वियाः भूतः ळदे'ग्रादशःभ्रानशःभे'दर्भः नदे द्वारः दुः र्दे र्चे व्या हिया हु से र्वे द्वारा स्थापिक या मीर्अस्तर्न् अदे में होर्प्य है और मी रही नदे छे अर्माद अलिमा धेर्या अन् क न्देश ग्रे कें राजा यथा ग्रुटा नवे केट मी विन् त्या वर्दे व ख्या वेपा ग्रम्भित्रम्भा भ्रम्भित्रभुत्ति । स्रम्भित्ति । स्रम्भित्रभ्रम्भित्रभ्रम्भित्ति । स्रम्भित्रभ्रम् इत्याविदे विवाधित वी दे विदेश है स्थूर त्यूर व न्या के व वात व्यावहेव य ५८। देव गर ५ वा क्रेंब भेते रहे वा वा वी समामान के के हो दे ५८ से र यदियार्ट्रेन् श्री:इस्याश्रद्भार्य, स्यार्ट्यायाय्येष्ट्रयाया स्थार्ट्येयाया स्थार्ट्याया स्थार्थे । र्धिन्गुरसे वर्तन पर्वि के से नियम है सन्दर्भ स्ति सहे सा दून वर्वेदि खे न खे न की बे अन्य कुन्दि अहे अन्य दे कुने में न अहे अने अ विन के अन्तर्हेन प्रदेश्येन नुप्रकृत निम्न विश्व निम्न विश्व प्रमाण निम्न विश्व विश् नःवेशःमदेःभ्रमशःशुः विदःगविः नहेंदः मदेः भ्रेदः पदेः देवः पदेः देवः याः भ्रुदः

कें हिन्कें अन्ते हिन्यवे से हान्यकें निर्मा से हिन्य के नाम से हिन्य के नाम से हिन्य के नाम से से हिन्य के नाम से हिन्य के ना र्श्वेन्ग्री तुर्भाया विश्वाप्य विन्दिन्दिन् विन्याया वात्र प्रतिन्त्री प्राप्त प्रतिन्ति प्रतिनित्ति प्रतिनिति प्रति प्रतिनिति प्रति प्रतिनिति प्रति प्रतिनिति प्रतिनिति प्रतिनिति प्रतिनिति प्रतिनिति प्रतिनिति प्रति वशुरावर्शे न ने शेर मी में में वशुर द्वार में शाधिन त्या महिश से शिषा यायन्वाळग्यान्ना । श्रीन्दाः श्रीवायान्वो श्रीतान्ना । व्यावे व्यार्थे वाया र्देन त्यार तह्या । डेश रावे याहेश क्षेत्र श्री श श्री श्राची वा हे र से र यो रें रें समुद्रान्धिः र्नेद्रानुः सरायह्याः पादी यनेरान्ध्रद्रानीः सेरानीः रेने यसूर कुंवान्द्रमाठेमा अवन्ते। दे प्येव व श्वामाठेमा हेन अदमी न् हो न नु अवन वर्गुर-त्र-विषा-धेव-द्र्वेष-ग्राह्म गहिष-भ्रेष-भ्रेष-भ्र-त्र-विद्यावि-तर्हेद-धदे-श्रेरःगी'न्द्री'न'गठिग'रु'अश्रुव'र्यदे'श्रेरःर्रे । नेश'व'श्रेरःगठिग'गीश'र्नेव' ग्री क्याम्यार्या दुः या क्रें व पाये वि न व या प्रती पाये या स्वाप्त पाये हिं व ग्री क्षें या पा बन्दरमञ्जूनमञ्जेन्स्रेरमोन्स्रेर्निव्युरस्युवार्रमधेनया द्वीपान्स्र नह्नुयाश्चरायदे देवा की क्या वार्यायर यह मार्यदे यह वार्यदे से हा क्या या है। र्ने मान्तर र् प्रमुद्ध रायो र प्रमा से रामी हैं में प्रमुद्ध खुरा स्टासी रामी है मा र्देव-र्राःसरायह्याःसःयाहेशाय्यःचरःसेःया त्रुरःसें। विवायारःसेराधेरः क्षर्गीरिने विशुर्गना अधीव प्रश्रामि किंग्नी विश्वास्त्र में मिना पर्ने प्रमा हःवर्दे ।

१ ह्य-जाने नहें न प्रते से म जी में में प्रत्युम रहें या

ह्य निवासी कि निवासी निवासी निवासी हिंदी कि निवासी हिंदी निवासी है। सन्दर्भः न्वावारावे सुर्भेन्यः से सुर्भः विद्या वन्सः सर्वेदसः नः वृत्रः क्रिया श्रे र र र ल्या या राये के । इन या ले या है र या थे से सार या या श्र श्रुरः भेर्न्द्र सेर देवे देवे के जावन र विश्वर देश सं भेर भेर है। कु जार दे सेर द्र्ट्रियार.ट्री जर्ब.ट्रे.ट्य.स्थ.स.ट्या.ब्र्ट्रिय चेश.क्ट्रीय.क्ट्रिय.स्थ.य. नश्या नर्गेश्वर्यदेन्त्राश्वर्यासर्हेन्त् ह्येरामे स्वर्धित्रमेदेन्त्राश्वर्यः र्विगान्नेयानदेः नुषाशुः सम्बिन्त्। भुः समुः क्रेन् स्रेनः सदेः ह्वाशायः विवाः (गुःग्रमें हिरायस) हेसारिक केंगा में रादेगा में राद्या रादर समें दावेसारिक श्चिर्यन्द्रान्त्रः के स्वापित्राची पालेदास्य द्वाप्त सुनस्य द्वाप्त पालेदासी देवा यान्वियानवे हिन्नवि नहेंन्यवे सेराधेन्या सूनसाये राज्य न्रह्रेन् प्रवे से हर्न् नर्गे वा स्थान्याया श्वान्त र द्वीया या सुराहरी । प्राप्त मठिमान्नत्र हिन्मिले महेन् मित्रे सेन्य समामा सुरु र से। सेन्ने हा न-दर्धिरक्ष्यान्ह्रित्रहेश्येरक्षिर्न्यक्ष्यान्त्रम्यह्येन्। व्यान्तिन्य र्टान् भ्रेन्य राष्ट्रम्य हाये । इ.सी. अया र्टा व्या अया यहा वेटा भ्रेन्य रा

र्टावर्षिः श्चित्राया केंत्र श्चीः विर्वे वायवायाः विष्टे वायान्य विष्टा विष्टा विष्टा विष्टा विष्टा विष्टा वि यवर पदियात्रा अँगाळग्याय देशे न त्या या त्रायाय या अग्याय स्तर में र्बेट रें मा ब्रम्था विट प्रदेश कें दिट प्रमाद कें मा कें अपी कें दिया प्रमास केंद्र या वेशमार्श्वाराणी सेटास्या इस्राया दे । हिन्या वे निर्मित सेटा सेटा स्टा येत्या धुः अन्वादे गुः नवअ हिन् के अन्वह्नि प्रवे सेन्ये वित्वादि । यद्भीयायायास्यायायास्यायाः चेत्राद्मा वित्यायाः भीवायाः भीवायाः भीवायाः न्दा नगदक्षें से हो दक्षें नवेव मा यस वे से क्रिंव क्रिंव हो व सम क्षुन्तुरस्यान्दरस्यान्यायायवे सुन्दर्भ ह्या निवत् वेव सेवायान्यया वेद्रा के अपने के कि ता कि श्रेटादे 'द्या'त्य श्रुवाश तर्दे द सदे श्रेटाट्य द्याया श्रु श्रुटा संदे हिट्ट रहे श निव हिन्दी। स्वापीय समात्रा देय मरमात्रा वेय मास्य स्व है। हिन्यवित्वहेन्यदेशेन्यः क्रेन्यान्यः स्वर्यस्य स्वर्यः स्वर्यः र्वे मान्त्र नु प्रमुद्ध न ने प्रमुद्ध ने प्रमुद्ध ने स्था ने प्रमुद्ध में में स्था ने प्रमुद्ध में स्था ने प्रमुद्ध में स्था में मे यदःश्चन्ता रुषायाययः होन् ग्रे श्चन्ता श्वायायम् वायायस्य स्था धेव विद्या गया हे समुद्र में व गद्या स्थान से द्वा ग्वा व साम में व स्था में व से स्था से स्था

त्रःश्चान्यात्रः श्चेः व्याः श्चान्यः श्चाः श्

हिन्यावि नहेंन्यरे सेट ब्राट्स गान्द प्रह्या होन् ग्री सेट न्यक्र नवर खेर दी बरमा गाये सेर वस्य हैंदा हि। देर सहस्य द्वर से बिम यःश्रीम् अन्ते । हिन् मिले महेन् पिते श्री मिन् स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री स्त्री नव्यायाचि कुषार्नि रिन्सहेया ध्रेतिन्नर्नि वेयापायुर्नित्रम्नयासु म्बर्या में देव मार प्यर से द राया दे द्वा विद माले ने हेंद राय से से द द माले हैंद विद्या श्रेस्रश्चराष्ट्रे स्थान्य प्रमा यहेगा हेत्र द्वर से रायद प्रदा भ्री वेशनाक्ष्यंत्रम्भेस्रश्चराध्यायम्भासम्द्वराष्ट्रम् <u> ५८:ब्रह्म के के अप्तर विष्यान कर में ज्ञान कर के ज्ञान के विषय वह के प्र</u> ॻॖऀॱॻॖ॓ॸॱख़ॺॱॺख़ॱक़॓ॸॱढ़ॸॖॱॸॺॱऄ॔ॱऄॕॸॱढ़ॻॖ॓ॸॱॻॖ॓ॸॻॖ॓ज़ॱॹ॓ॱऄ॔ॸॱढ़॓ॱॴॗ म्बर्भागितः भेराने मुजान हिंदा प्रियो भेरा मुलाम्या निः भेरिता नव्यायाचि वेयापदे सेटाची क न्या ग्री ने न्टा नव्याया है ग्रामा ने हिं यदे श्वर्षेत्र भ्रेम देवे हे अ वेवाय ग्री सेट दे प्यट ग्रम्थ गा हें तरा सेतरा

गश्यः विदा हिन्यवि वर्हेन् स्वे श्रेम्ने प्यम्यान्य स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त स्वाप्त्र स्वाप्त स

ग्रम्भागी अर्गे अर्देन निर्देन ने निर्देग हेन मुन और या ग्रामा अरके विटाइसाम्बर्धात्राद्यात्र्वाम् म्याद्यात्रात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्य यशः ग्रुनः सः धेतः श्रुन् गर्ने नः स्वरुषः श्रुनः ग्रिनः ग र्श्वेर्यायान्त्रीयायवेर्धेनाक्षेटाने निवानी में वार्नेटानी में वाया वहवावानी वर्रेन्रेन्न्गवन्यर्गहेम् गर्रेन्नि पर्रेन्नियर्गेन्नियार्गेन्नियर्गेन्निया न्वीं अरो वर्नेन व्यव कुराहिन हे या त्वा अर्थेन हिन्द न्यु श हिं न अर्थेन इत्याञ्च प्रदेशम् या त्राया व्याया उद्या । श्वाय्य त्र स्वाया या व्याय विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विषय र्रे प्री विषय निर्देश्वर निर्देश के निर्वेश के निर्देश नवर्पित श्रुप्त व्याप्य । वेशपित क्षेत्र या या यह प्रति शप्त स्व ग्रॅटा हो राधु अदे कराव तुवा या रादे हैं में न्यू सु हो से वह तर हैं वा पर बेर्याया वर्रेराधेंद्रा(५) रूपा कुषाहेर (८) रूपा के से (३) रूपा বাৰ্বাম(१) ব্লা ক্ল'ন(१) ব্লা বাৰ্বাম'ডম্(१) বডম'শ্ৰমে'শ্ৰী' सर्देश्-वर्हेन् श्रीः श्रीं त्र श्राच्येत्र प्रश्न स्वार्थ स्

र्गेट्टि.श्रट्मी.चीय.क्ष्य.ची.श्रेयश्य.श्री.यक्षेत्रात्रक्षेत्र वहताचेट्ट्यी. श्रीराम्याक्वे नात्रे न्ययावर्त्ते सायशस्या श्रामी मार्गे दानु विमेया नवे नु शासे श वरा क्रुव अर्घर यमा वेव र प्यें र प्रें श्रेरानेशाम्रिशायहवानेत्रम्भेतात्रभ्यत्याधेतायत्। वित्रामिनेत्रस्थार्थः ने हेन ग्रे अंदर्द वहवाम क्रिंग् ग्रे अंदर मुस्य सामा श्रिन्य से दर्भ में से दर्भ शेर-र्-अःश्वर-त्रशःक्षेत्रान्तर्वेःभूत्रश श्वर्येत्राश्वःश्वर-त्रविः नर्हेर्-प्रदेः श्रीर प्रमासी वाल पर्से या किर हो। ख्या हि। न्यू असर्वे। वाले खरा है। मुः भूरः या वेयः परे कः नयः भी वर्षेया हो हि। यह यरा भूरः यः इययः वे छिन्यावे नहें न्यवे से न्यो ने न्या में से खें या सार्या से न मदे से मुन्या वर्षे साथा वे नित्रा विष्या विषया श्रर्ग्यम्। अर्थ्याचेषाठेश्रायाक्षातुः इस्रश्राते व्यह्याचेर्याचे स्रीता

समा हिन्यावि नर्हेन्यि सेन्यान्य होन्यो स्था हिन्यो सेन्या होन्यो स्था हिन्यो सेन्या होन्यो स्था हिन्यो सेन्या

हिन्यिन वितर्देन स्वेरिक्षेट की दिन्दे स्वाप्त वितर्भाव वित्रय वितर्भाव वितर्भाव वितर्भाव वितर्भाव वितर्भाव वितर्भाव वित्रय वितर्भाव वितर्भाव वित्रय वित्रय वितर्भाव वितर्भाव वित्रय वि यार बया से दे र्देन व्यायह्या पदि से रास या हिया सार्देश से या ब्राह्म से रा याने विद्वे सूर र्षं या से विद्वार निष्ठे स्थान स्थान र र्षं न न र भ्रे वित्रित्रे वित्रे वित्रे वित्रे वित्रे वित्र वित्र वित्रे वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र हिन्त्यः श्वान्वेयः नेवान्त्राचे वालेयायाने हिन्द्राच्यायळें वा श्वान्य स्थायन्। श्वा वे.श्वे.क्र्यायावे.ह्रव.इयाक्ष्यायाटालवाया व्ययाश्चे.प्रक्र्याट्यव.श्वे. रेस्रायान्या ग्वित्राचगुरास्यान्यत् ग्रीःगुत्राहेग् श्रुः व्यापाशीः ग्रीत्रायाः र्धेव निव मी अ विद निव विषय अ सदि से निवा मी से द हे व सर वहें व स क्षेत्रयासराविष्ट्यालीयार्ट्टर्ययाग्री.श्रुट्ययाप्र्यात्या क्रूट्टायाया ह्रा र्नेन शुक्रश्ना रेन्दिन्न अगरळ्य वेशमर्यग्राम्यन्ति होरान लिजार्टा देशाने किया ही ही ही ही स्थानित जा लाटा ही राजेटा है। हा सा ही इवारात्रा द्वीः सर्धेन् से रहेवारा वेरायास्य से रहेर दे प्रामी र्वेवा सदे नमा भ्रे साभ्रेराश्रुरामे देशायदेशात्रमा सुरावहरामा द्वारा से स्वराद्धं वाम्री

नरःषः द्वेवः ग्रीशः श्रीटः अविवः दृदः नश्रुटः नवेः वद्वेषः नः प्रेंदः व्व हिंदः दृदः दा ने निर्देश मिन्दरम्य विश्व संस्थित स्थान स्यान स्थान स ने ने ने ना अप्तर्भ मान के निष्य के ना निष्य के ना निष्य के निष्य के ना निष्य के निष ध्याने नावमायमा हिन्सा से सामे देखा विना सूरा नर नहेना नगाय हैन नश्रमानित्त्वाराष्ट्रित्रारीया क्षेत्रात्र्वित्त्त्त्वा अत्राह्य र्हेर्स्साम् नगरदेव उत्रद्राच्या निसाम्बद्धा राष्ट्रिय मुन मदेष्मभान्दार्देष्ठ्राक्ष्यात्रम् न्दार्वेष्ठ्राम्यस्य प्राप्तम् न्दार्वेषा नदे-नन्न में अन्य बुद्यो अद्य कुर्य कुर्य क्षाय वह क्षेत्र के किन क्रिंश से १ वर्त ना से द्वार हेत्र से क्रिंश के से मार्ग में स्थान के साम हिता हैता से साम से साम के साम हैता हैता से साम साम से साम से साम सा मदेन्तरन् नुराने। वार ववा श्रे वा श्रे र वदे श्रे र प्वारे र व तुर सूर श्रुर्भः यदी । यद्येदानी देशें । यहार हुवा विवा मुद्देवा शायर हुदे।

३ ज्ञानान हें नामित्र के नामित्र में निष्णु मार्ख्या

महत्र नार्धित प्रहेना हेत्र गुत्र श्ची महत्र नित्र के प्रहेना प्रमा भूत कि नार्थित स्वी कि नार्यित स्वी कि नार्थित स्वी कि नार्थित स्वी कि नार्थित स्वी कि नार्यित स्वी कि नार्यित स्वी कि ना

श्रेन्या भून्कः श्रेवेर्ट्ने ते भून्यान्य अर्थे वने ग्रायान्य वनेनशःग्रीःवर्गुवःश्चित्रःकेन्द्राःविगाःधेनःवा श्चित्रःश्चित्रःकेशःनिह्नः न्दाम्राया होत् हो अदाम्दाया अदासेत् स्वी स्वी स्वी स्वी स्वाप्त स्वाप मित्रे भेर विवासे र व वे। भूते र्श्वे र न रेवार्ने इसामर वेसामित्रे सुर रे ५८.चल.राष्ट्र.मुंबर्ग.र्ट्र.याष्ट्रेश.श्र.श.सक्ष्रश्र.स्था च्र.क्ष्या.मी.स्था नवगः ५ उदः गयः के नदः अवा देव दिया ग्री यगः येव वदः दुः ग्री नदेः श्रेर्नो में में मान्त्र प्रमान्त्र प्रमान्य प्र रेगाःचरे रें दार्येय सुंग्राय स्त्रीयाय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय विगाः ह्या चुःनवे मासून सुन् सुन् सुन् चुःनवे मासून ने नगान् में सामित स्र नविव निर्मे निरम्भ स्वास क्रूॅब्र-संप्या वर्त्रेयः श्रुदे हिंद्र क्रूॅब्र भेग हिंद्र अपने मा वेश ग्रुद्र अप क्ष्म वुःनदेः भ्रेटः भ्रेः क्ष्टः नः विवाः वीः भ्रुः वा बुवाशः वाटः प्यटः सः व्युटः नरः कैंगार्श्वे र.र्.ल्यायायदे कें। येटारे हेर्यो टें में यार्ट्रायदे रहा निवारे यशम्बद्धान्त्र न्यू स्थान्ते स्यान्ते न्यान्ते न्यान्ते मार्थे वार्थे वा व्यायित्र वार्य स्तर व्यायाया विवा क्रियायाये वार्य विवा क्रियायाये वार्य विवा विष्यः प्रति विश्वा विष्यः प्रति स्वा विषयः विषय होत्रविवाद्याव्यवादिवादेर्वाश्रासुद्यास्य विश्रायवे सेटास्य

अः इस्रश्चे । विद्वाले विद्वाले । विद्वाले विद्वाले । व श्रेराधेवायम् श्रेराग्चायित्रेवास्वायाः भ्रेष्ट्रवायाः भ्रेष्ट्रवाश्रेष्ट्रवास्वायाः के। ग्रीशर्श्रियाश होत्रपदे श्रुश्चु र प्र्रोग्रिश ग्राटा होत् श्रुश्य श्रुरपर ग्री र्शेग्रारायवेयाश्चाश्चरात्राचानायाहितायवे स्थिताते स्थानाया स्थानाया स्थान वशकेंश उव ग्री नरेंश में सेंगश ग्री नेंव क्षेत्र मन्ता क्याम गावव नुवा तुःनःनिह्नःप्रवेःसेरःविषाः विष्ठाः विवे 'दिस्यःसः सँग्रायः ग्रीःदिवः पः वह्षाः स्वे। श्रीरारेते र्थेन पुरवेत श्रुप्त श्री श्री रानर वर्षे वा श्रुप्त श्रुप्त श्री श्री प्राप्त विकास हिन्गी स्नान के ने नाम भी नुवस प्यान निर्मा के साम स्नान सके वाली निर्मा न'निह्न'मदे'सेर'में 'स्नि'मिन्गिले'निह्न'मदे'र्नेत'तु क्रुर होत्'ग्रे 'वनस' निगानि वर्त्रेया शुश्चु राया दे 'पिनाया दे 'में वर्णु रामित श्री रादे 'द्रा न्या न नर्हेन् परिक्षेर विष्या के अर्थे क्षु वान्त्र अर्थे प्यर वी विन्य पर प्यर के तर्म थे वर् वर् वर्ष्युरियो है र वहर र वुष्य विद्या न्रहेन् प्रते श्रुष्पर नर वर्षे व प्रान्ता विन् प्रस्तु श्रीर स्रवय पेन् व व प्र न्हेंन्यदेळें सेरस्वत्ने हेन्यर न्यान्य न्यान्य न्या ग्रान्य सेन्यदे श्रीट्राचाव्य मु: भ्राच्या शु:ळ प्याय्या श्राच्या प्राच्या विवा पु: भ्रू अअ प्यायः নমুবার্ন্

गुःनःनिह्नं भिदेश्वेदाष्ठ्रपाविः श्रीम्थाग्रीः देवः दुःश्चेदाः स्वापावदः

वी'सबर'णट'नभुर'ग्रु'न'निईर'मदे'सेट'वेवा'श्रुर'मश्रा वार'ल'श्रुर' ध्या श्री अर ने विन्या वि न हेन्य स्वाय श्री ने त्र न त्री महित्य स सर्श्वर्यंत्रे सेट्से खेन्या राप्ते साम्या निया स्था निया नर्हेन्-परिक्षेट-नुक्षान्त्रेग्रायासम्बुर-प्राययास्यास्यास्यादे नुन्निन्द र्देव'सम्बन्धन'रावे'मिन्यावे'न्देर्यास्य स्वायाम्भामे स्वायाम्बन्धाः स्वाया धुःसमान्यार्वेन्यम् भूष्याम्यार्थः विष्याम्यार्थः मुन्यायः भूष्यः प्रवेधियः व विन् अन् ग्री वर न् ग्री के वा नहेवा या सर श्रुर श्री वा व्या ने प्या स्वा वा वेवा पुःविष्यासरावहेवाक्षेत्रराष्ट्री निर्मात्वा सर्वे विन् गुर्मा वहं वासाञ्चवः होता क्षः नः नन्ता क्षेत्रः या अर्केता क्षुत्रः वुः यत्या नार्यमः नार्वेतः यहता मूर्यातक्रयाचिरा र्रेयातासीरा विसासासीयेषु सुरास्यास्यस्य विपारा विगानश्चनायर गुनिदेख्या गुनिर्देश से सून प्रिने देन या प्रह्मा छेट। त्रमा त्रेना वर्षा सुरःसँगमःसेरःस्रिःसःनगःने त्रःनःस्र्नःपवे देनःयः र्श्वेर्प्त के वा वी क निया स्था या प्रेर्प्त या सुर्व अपन स्वित कि वा स्था नर वश्याराते। नगे मन श्रीशासर्गे वित्र ग्रुश र्गेत्र वित्र तुरा वित्र तुरा वित्र श्चितः वैवाशानेशास्त्राची भूतान्त्रन्त केशासुवाशासी सेशास्त्रास्त्री। र्देवारासकेंद्रायम् होत्। वीदायासून (बुर्व्यया) में बासे सामेंद्राधियायासमः पहिंद्र सहित कर सर्चे स्ट क्या विवा प्रेव कर में क्षेत्र स्व क्या के स्व क्या

रग्यान्त्र निर्मे निर्म श्रीत्र यहिशाग्र प्राचा श्रुप्त प्राचा श्रीप्त प्राची श्रीत स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स् रॅंश'व्यानभुर्र'नथून'ग्रेर'र्र्रानय'रे'ग्रिय'य'र्सुग्यासम्बद्धाःकः सक्ष्याग्या केंगागे क्वें रानदे वरात् होता क्वें रानदे से वरात्र स ष्ठित्रसर्व्धित्रसेत्रग्रीसाग्चानात्त्राष्ठित्रक्षित्रामहेत्रसदेशस्यो प्रश्चेत्र वर्तेन्यः स्ट्रम् वर्तेन्यः यहानः न्यान्यः स्ट्रान्यः स्ट्रम्यः स्ट्रम्यः स्ट्रम्यः स्ट्रम्यः स्ट्रम्यः स्ट्रम् यदे देव द्वार विष्ट स्वार विष्ट है पर देव विष्ट है । विष्ट है विष्ट है । नगुना-५८:५ ही नश्रानगुना-ध। अना-धराना बर-५८: ज्ञना-देःना बर् । बुर-५: ल्य्येन्ट्रियान्त्रेयान्त्रेया हे सम्भूमान्ट्रियान्त्रेयान्त्रेया न्दामिनेरानवेरनक्क्षा बेदानराकुरान्दाकुराधिन्या वेरायाक्षानुरा सर्केंद्र'संदे:श्रुदे:श्रुट्र'त्र'इसस्य श्री:श्रेट'श्र्य'त्रा'दे द्रा'त'दे श्रुट्रेंद्र'या वह्रमाम्यानुयाग्री। हिन्यमार्थिन् ग्राम् भेन्य द्वीः या क्षय्याग्रीयाये यया उत् ग्रीः केंग्यानान्ता अध्यया सेन्या नित्री व्याप्तानान्य स्था स्थितः स्था सित्र क्रिंग्नाईन्यियेक्षेट्राय्युर्वेन्। नुष्यायीष्ठिन्यर्ष्याय्येन्द्रियेन्द्री |५:५८:वाववःविवादी। इ:व:वर्हेर्यदे:बेर्वाःवश्चरः५:वर्वाश्वरः५विवाःवश्चरःवश्चरः५विवाःवश्चरःवश्ययःवश्चरःवश्ययःवश्चरःवश्ययःव श्रेरासवराञ्च्या नरुरा नरामा नरी स्रीतासवरामा स्तुरामी मुन्ता विया श्रुरा न्वीयाया ने न्वाया श्रुम्पर से र सुर च न स्था से सिन् से या न से न से र श्रेट्र प्रमुद्र नवट र्षेट्री इ में द्र श्रेट्र नवन वनन श्रुट्र में मात्रवर व रुमा वेशमाक्ष्य, वुः वुः वार्मे म्यादेश स्त्रीमा विष्या विश्व स्त्राच्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विषया विष्या विषया विष नदेर्ने न्यमार्थेया है। विन केंगान हैन पदे से हा देश हैन पदे हैं। वि नन्द्रिन्यदेश्वेर्यायवदेग्यन्त्रायायायार् रेष्ट्रम्यद्यानेन्त्राची रेन्न् য়ৢয়ৢ৴৻য়য়ৼঢ়৾৻ঢ়ৢঢ়৻য়৾ঀ৽য়য়ৄঢ়৻য়য়৾য়য়ৼঢ়ৢ৻য়ৢয়৻য়য়ৢ विगाधित मी। भेरामी दिसें विमुरा खुंवा भेता परि विना का विमेता के विमा भी । नुःनःन्र्हेन्रप्रेश्चेरःवगवःवेगःग्रस्यःग्रेश्चेरःन्युरःनवरः

त्रान्त्र विश्व क्षिण्या विष्ठ विषठ विष्ठ विष्ठ

श्रीत्रात्त्र रवावयाया श्रीतिश्वयाया श्रित्वश्चेता येवायाश्चेता वहालेया इस्राचुरावेशासार्सेग्रास्टान्याची सामुनामदेः म्बर्भाग्री भेराद्वा प्येत्र है। दे द्वा प्यश्च के वा द्वर वा है शाउत मी भेर इस्रयाया चु निर्देशे दिन विवार्षे दा गुरा चु ना दिस्याया सुरा से कि वी में विवास ग्वित या अप्तर्देश सम् सेट दे द्वा कुट वम स्रुम स्य वैत हु हुट वदे से । ळ्ट्रा ह्रियायायम् प्रदा श्रदाहेतावेयायदे कार्या साम्री प्राप्ति व्यापन धे अ छे द में पावन से दा दे द पर्देन द दा पर्देन में पर्देन स्था है अ पर्देश का पादि । मानेन्द्रवेयायशक्षमामेशम्बन्धना नुन्तः द्वेत्रायाया द्वेत्रायाया द्वेत्रायाया द्वेत्रायाया व नर-र्-द्वान्वरुषाः स्वायाः सर्वे स्वायः अःश्वरःयरःसरःस्ट्रास्यःश्वरःश्वरःश्वरः। यथःकेरःक्षेत्राःवीःवनःयः नहगान्यपर सेर मी न् हो न ग्रार नु गर्ने ग्रास हिंदा से न नु न हैं। रिक्षेत्रकेषान्त्रम्यादेषाच्याचेषाच्याचेष्ट्रम्याकेषाचे श्रीम्याव्या नक्ष्राने। निन्यराग्नियारान्वीयाने। नियरान्। भ्रीत्रान्तिन्त्रान्यस्याने। श्चेंग्रायाध्यायञ्च हार्सेटायडेययाहे स्रेवाययाहार सेंटा पर्विव त्रे हो नरासे हिंग हो नास्न कु र्हे नाहसरा हारसा मुद्दाराया हुर हुर नाहसरा श्र.चरश्र.स्या.र्ग्ययाश्चर्र.स्रीयश्चर्यायाश्चर्यायाश्चर्याः वेश्वराष्ट्रस्यद्वरः न्ता क्रॅना हो.या न्येयाशक्षात्रेशस्य क्षात्रः सम्बन्धः विन्यायाः यहेनः र्ये श्रेत्र प्या ने प्रवाणी है अ श्रे होता श्रेत्र प्या है अ श्रेत्र होता है अ श्र

न्वाः भवाः वान्यः निवाः विवाः विवाः

~ हिन् कें अन्तर्हेन् यन्तर शुन्य अत्तर्देन यदे कें र मी में में

दशुराकुषा

वावन प्यान क्षेत्र प्राचित्र वावित्र वावित्र प्राचित्र वावित्र प्राचित्र वित्र क्षेत्र प्राचित्र वावित्र वावित्र वित्र क्षेत्र प्राचित्र वावित्र वावित्र वावित्र वित्र वित्र

हे'न। वुयापाक्षुनु क्यमाने छिन् केंगानहें न प्रदेशीन धीन पानकें न न बेन्ग्रम्। नेन्न्यानी अवस्थर्यस्य सुर्विन केंश्य हिन् संदेशेर विवासुर वा भेटानेविन्देन्तिमानवरानुत्वसूत्रायधेवाने। न्यायायकेवाने। श्रुवायाकुटा व्ययायकेत्री यक्रमके ना नदे न क्रम्न श्रीमहे क्रम्येन व्याप के. रु. र्सेटा वियामा सूर तुया सर्वेदामया म्यान्या ग्री सेटायया ग्रुसया द्रा क्षेट्राहेर्पायन्तर्दा नहरक्षेंस्र सम्माने केत्र में रानक्या विका वर्गुरानाक्ष्म ग्रम्भान्या क्षेराही न्वायाना नहराक्षेत्रमानस्माने ष्ठिन के अन्तर्हेन प्रदेश के मन्दर प्रदर्शन अन्ते मन्त्र मन्त्र के ना स्वन्तर के स्वर् व्यायवीत्रत्वे यात्रात्री स्वायाया व्यायते स्वायते स्वायते स्वायते स्वायते स्वायते स्वायते स्वायते स्वायते स्व न्वायः नः ग्रुहः। देः विवा यहहः भ्रूष्य अष्यः स्वाविवा वे अप्या भूः नुः ने खाह्या ग्रीः श्रेरःश्रेवःमः नेवः हुः मार्ययः प्रश्रा श्रेरः ने 'न्याः म्रह्मा से ' हिन्यावि निर्देन सदे से दान्य मन्यू राजा स्थान स यर भे क्वें र र ने अ यर ग्रु बिरा ग्रु अ र र के त से । क्वेर हैं के त से । द्याद नः केत्रः में नित्रः श्रूष्य्या केत्रः में वियामा मान्या में में त्राया श्रूप्या है या में या नभून'नर्डे अ'न्र'। रुअ'ग्री'वर्षिर'वेदि' क्रुन्'र्से न्यायावहवा ग्रीन'ग्री'कंन्'र्सून' यदे अन्य शुः या नित्र सुत्र दुः से सर्वेद न्य शुः र नित्र याववरसञ्चर्त्रम्भेर्त्रस्थिः श्रीत्रम्भेर्त्रा ।

नुग्रायदेव पदेश्वेर तथा कराया वस्य उर् डे परा गर यदा स्रि:स्या स्रिक्षा स्राध्यामा स्राध्यामा स्रिक्षा स्रिक्षा स्रिक्षा स्रिक्षा स्रिक्षा स्रिक्षा स्रिक्षा स्र र्भे से त्र निर्देश हिन के अन्तर सके अन्तर कि स्वार स्वार के निर्देश से स्वार से यश्रिन्द्रेश्यन्द्रम्यदेश्यन्त्रम्यत्रेश्वर्ष्यः श्रुत्रम्यश्चर्यः ५८-१५ मी त्रापाय में तर्म में निर्मा में निर्माय के निर उट्टासहें मा र्सून पार्सिन प्रमार्देन प्राप्त स्थापट न हें न पार्चे न हे मारा के न यारायाञ्चरायदे सेरार्देन ने हिराग्री त्याया के स्वान के साम बेर्'ग्रे'सेर'मे निर्देर्'र्द्र'रे पर'हे'म्रस्य प्रत्रात्र्रित्य से हेर्'ग्रा भूवस वन्त्राम् । वित्रकेशान्त्रम् वार्मिन्यवे क्षेत्रम् । वित्रम् रॅंशक् नार्हेन् सर्ज्ञ निवे न्रेंशर्ये मार विवा नी रें में न्र रेशन बुर नी । र्नेन क्षेत्र पर हो ८ दो। कर समेन सम्बार मिरा पिरा केंद्र केंद्र केंद्र में ना सा किरा र्ह्मार्थामाव्यायाः सेना मारायरान्युन्या मारायरान्युना हेराया क्षात्रमञ्जूमायाने भुवायावर्षेत्रायवे से माने से स्वर्धा वर्षेत्र निर्देत ब्रेथ के निव पुष्पायय नर सर्वेद या विके कर सम्मान स्था

श्रीन्द्रम् स्वाद्य स

यर्ने रात्र सुर्यात्व येदा या है वा त्या त्या है वा त्या है राया है वा त्या है व

तुर'सळत्।

1/20 ব্যান্যস্ক্রেশ(ব্যব্ধান্তর্ভুন্টের র্টাস্থের্থান্ত) P7 P26
2/23/26/30/32/34/38/40 ব্যান্যস্ক্রেশ(মান্ত্র্যার্ভুন্ম(মান্ত্র্যার্ভুন্ম(মান্ত্র্যার্ভুন্ম) রীব্যমান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যার্ভ্রান্ত্র্যান্ত

- 4. ব্র্নিষপ্ত্রেশ (নহার্শ্রিনিষ্ট্রিনিষ্ট্রনিষ্ট্ট
- 5. वेंद्रियास्य (सुस्य ह्वास क्रिंट्स) प्रमाय क्रिंट्स (सुस ह्वास क्रिंट्स) प्रमाय क्रिंट्स क्रिंट्स (सुस ह्वास क्रिंट्स क्रिंट्
 - 6. ব্র্রিমের্ড্রেম্(প্রিমান্ত্রাগ্রারান্ত্রন) বহামা P213
 - 9/25/27/31 শ্র্র্নেমর্ভ্রেম(গ্রুস্ক্র্রিমর্ভর্রেজ)P7 P8 P7
- 10/11/16/39 गुर-मेंदि-मेंद्र-ग्री-लेश-रेग-द्रमे भ्रुद्र-ग्रि-मी(ळंद-स-रेगश-गिहेर-ग्री-द्रग्रेथ-त्र)P1991 P125 P128 P8 12/13/14/15/19 शे-डेद-से-रेगश-द्रशे-भ्रुद-ग्रिट-ग्रीश-

- नश्चुन पदि (ळॅन अ ने गणि ने र) 1988 P117 P122 P123 P10
- 24. ये:हेत्यी:रेग्याय:द्ये:क्षुत्राय:गीय:पक्षुत्यः पिद्याः विवाधः विवाध
- 28/29 র্নীর্ন মর্ভ্রের (র্নির্নিট) নের ক্ট্রির আন্তর্ম মন ক্রীনাম) P207
 - 33. मैंदासळुंदर्भ(नम्रिंद्वासम्यानेदारमार्स्नेद्र)P14
- 35/36 में 'डेब' से 'रेग्र प्रेन् भुव' प्रद्ये में भुव' प्रद्ये (केंश' प्रज्ञुद्र स्वाय केंद्र प्राय केंद्र केंद
- 42. ग्राव्यस्थितः से प्राय्यस्थितः स्थ्यस्थितः स्थ्यस्थितः स्थितः स्थ्यस्थितः स्थ्यस्थिति स्थितः स्थिति स्थितः स्थिति स्थितः स्थिति स्याति स्थिति स्याति स्थिति स्थित

শ্লীন্থ ন্থ না শ্লীন্ধ নাৰ্যানশ্লব না

ने प्यार नहार होत् सार निरमा उत्र की समें समार निर्देश समय उत्र वे के ना में। इस न्हे से न पाने से न में। विश्व न न से न में न प्रके से न सहैं दाया नमून नर्डे याया है हैं दा हो दा । शुद्धा दि हा नी समय उन क्षेत्र विश्वास्त्राम्भ्रम्भ्रम्म् वारायेग्रास्त्रम्भ्रम्भ्रम् गल्दास्यायानानाःहेयायत्वयाने। र्वेदान्नदान्नेदान्यदेश्व वर्डेशःश्रुः अन्वाद्या भेरः न्द्रः भेरः वी रहें वा श्रासदे । हिन् स्वरः विवा हुः असे नदे केंगरें न भून तथ अर क्रिया है या है या तर या न त्रा सदे न मान न गिहेशन्दरस्य निर्देशके मार्थन्ति। वेद्रस्य क्षुर्स्य क्षुर्स्य के किम् वि व धेव सर वया व उर् छेटा १ कें या दर कें या यो क न्या शु शु र र र रे से र यी कें वार्याया है या देवा हिन बुदा है। तुर्याया के हिना या दिन है। यह दिन् नेम नने विराश्चिन्यते हु बराक्ष्य किंगा अळव केन पर परेंन्य कर वळन् क्ष्रम् श्रीयाश्चीतार्थेन् सम् निह्ना विनाधीना श्चीता सम् सम् सम् सम् अन्। ग्री नम् क्रेन् प्रेत स्थानव्या कार्करान है नम् अन्। ग्री वेस्य ख्रायाया ८८। व्राथान्य वर्षाया स्थान क्षेत्र स्थान र्षेद्रश्रुय्याचेरळेत्रायाळे द्रायाचा त्रायाच्या व्याचे द्रायाच्या व्याचे व्याचे द्रायाच्या व्याचे व्याचे व्याचे द्रायाच्या व्याचे द्रायाच्या व्याचे द्रायाच्या व्याचे द्रायाच्या व्याचे द्रायाचे व्याचे व्याचे

८८.स्री श्रीट.ची.क्ष्यीयायायायाया

क्षेत्रः भ्रम् स्थान्त्र विष्या स्थान्त्र म्यान्य विषय । स्थान्य स्थान्य विषय । स्थान्य स्थान्

१ शेर मी र्कें माश्रासदे सक्द है र न १ र मा

श्रेरामी र्क्षिम् अपने अक्षत्र हिन् प्रेन्ने। श्रेरान् अपन् अपने अपने *बेट*-५्रसन्द्र्स-१८-र्क्टिग्रस्य या क्षेत्र-५८-क्षेत्रासाधेद्र-५८-गृहेश-पेर्-५८ यथा श्रेट्यो कें वायाया केवा प्राय्य केवा प्राय्य विकार्य प्राय्य केवा प्राय्य केवा प्राय्य केवा प्राय्य केवा है। इस्रन्ते न्दर्केषा धर्यो श्रुर्णे विराव बुद्र वस्र केषा वी का नुसर निषा बेर्प्यस्थित्यस्थास्य द्येर्प्या वस्त्रम् वस्त्रम् स्कर् हेर्प्स्याम् स्वर् सिम्बासदारी मित्रा विश्वासदा क्रिया स्ट्री स्वर्था तक दार्से दार्सिया गशुस्रावेशपान्दा सावसायदे गुन्न गशुस्रावेश महित्यदे सुन्दे से स् न्त्रीयानाया वर्तराञ्चराग्रीः श्रुरागिवेराग्रुनासया सेरायया स्वाप्तराया हे <u>षदः भेदः मुदः वः अः धेवः परः भेदः दुः अः वद् अः वदेः भेदः वीः र्वे वायः यः धेवः</u> र्वे। विनेत्रान्यस्वानीः सेटानीः स्वायायान्या सुः स्वायास्य स्वायाः विषायान्य विष्ण विश्व विष्य विश्व व

<u> ५८:ळेग:ब८:ब्रु.२:पदे:हॅ८:ब्रे८:ग्रे.ब्रु.लॅ८:ळ८:ळेग:अ:लेव:य:शे.प्रःपहः</u> ळेव'हेर'ग्रेस'ग्रर'पस'येव'स'सेर'मी'स्ननस'सु'नसूव'सदे'हीर'र्रे । दि' निवर्त्रः श्रुः श्रुं अर्कें व रक्षे प्रमेषानायमा दे पारे मारे मारी मारी से र वर्षायायात्रास्री है स्मार्टेवात्री हिरायरास्वितावादेशासमा सरा र्रे वर्षा ग्राम् स्ट्रम् क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विष्ठा विष्ठे विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ गानविष्ठित्यम्हित्यम् हेत्र्यम् हेत्र्ति । ते निष्विष्ठ्रं गान मेह्रियं वहे हे त्याम रेदि विश्व चु न ता से वासा सवर कि वा हे सा चुदे। विदेवा इसस वर्षे वा नर होत्रयने के मानी स्रत्रे । ११ ने सायहरान प्रयत्य नियक सार्वे तरा की नातु ग्रथार्थे। क्रि.अक्ष्याने त्यर्युत्यन्या ग्रीश मूर्यो यर्क्षेत्रम्या स्वरंद्र्य वर्रोयार्श्विष्यरार्भेष्यराश्चा श्वास्त्र श्वास्त्र वित्र श्वीस्त्र श्वास्त्र श्वास्त्र श्वास्त्र श्वास्त्र श्व रासेटा देवे हिन्यर क्रेंब्य रास्ट्रिया हे या राये स्ट्रिया यी सस्य या विना नुस यासी ह्या पर्दे विश्वाद्या सुस्रापदे सी ह्या या विश्वापदि सामित्र ग्रम्। श्रुः अदि निर्देश्वितः श्रुवि ख्रवाश्रायः क्षेत्राः अक्षवः हिन्यः धेवः धनः श्रिः अः ते निर्देन हिते देव अर्दे नाया प्रयासे दानी वित्या सुपार्दे नाया प्राप्ते ना द्रवेशमाशुर्श्यायादी श्रेरामी र्स्टिम्याया प्राप्त रिस्ताया प्राप्त स्थाप्त श्रेम्या यदे खेग्राय ११५ इ.५.५ वृह वर्षे ।

शेट्ट्र अप्ट्र अप्यायशाम्बद्द्र शेट्ट मी र्ट्टिम् अप्याया मुद्द्र शेद्र मी

ह्यन के संस्थित स्थान से के स्थित हो। स्थान के स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स मंदेर इत्या यश्चा स्टान्य विश्वास्य विश्यास्य विश्वास्य विश्यास्य विश्वास्य विश्यास्य विश्यास्य विश्यास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य न्दः न्वन्याः विर्मानाः श्रुवः श्रुवः न्दः न्त्रः त्यवदः वह्या । वेशः नश्रुवः मदि विशेषानम् रे सक्रम् वस्या शिष्ट्रे से मा हा विष्या मा प्राप्त विश्व निवन्ते रातुः विश्वाराष्ट्रातुः या भेराष्ट्रीः सार्ये रशः श्रुं रात्रा वुश्वास्त्राष्ट्रा तु'नङ्गुन'मर'तु'न'वर्त्रेव्य'न'र्स्ट्रेन'म'र्षे ५'न्'सेट'स्थराङ्गस्य'न्ते' तुम्'मदे वी सेवास स्वस्वस्वार देस यह वा से कंट्स या के दे से दे ते दे ते दे से ही दूर दिया वेशन्ता मत्या तुस्या न्यरमा धुनमा वेषास्या कर्मसा सक्त ययः केर मी: अवर प्रवस्त प्रश्निमा सी प्रति । यदिर ययाकेर नेर देव दी पर परे ग्रुन हिंद शे थे मो हे सेंट पर य केव सेंदि गश्रम् वर्षा ग्रेम्वो क्राम् क्रिया स्वाप्त विकास स्वाप्त स्वा श्रीरावी किंवा शारा यश्रास्त्र शारा श्री हिवा शारा हुवा हु तर्वे या श्री या वर्षे व गुन्दा भेदासबदेयानार्सेग्रायासूनायालेशायायान्दरकेसे। भेदा न्दः भेदः मे । र्कें म्राया मञ्जूनः प्रमः ग्रुः नः न्दा ने : न्या श्रुनः ग्रेन् या नः र्रो म्राया ग्रीस से विसान बुर दें। देवे देव दिसे मास से केंद्र वा नु से सह सा विद स्वा स्वाया र्रेनिया स्वित्या स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वय कुःसर्क्वः ५ रुटः वर्गा धुरुः देटः ५ रवर्गाये वर्षात्रा स्वायाः ह्यायाः वे विटर्ज्यान क्रेनर्वेद्यी:प्रवाहत हो:रेग्यारी:र्वा वेयायाः सुर्वः इययः वे अट मे केंग्र पर प्राप्त ने प्रमामी अवस्त्र केंग्र माय देवे में प्रस्ति । वार्या होत् हो सुवया वे रिवाय हैवाय केवा सुराव केवा हु वहार हो हा र्शे सहे अ निरः क्षेत्र स्वाराधित। स्वाराय हें व त्या अर्टर स्वाराधि । मुलार्ने अपन्तु अवतान वेश मु अर्के प्राप्त । ध्रुव देर प्राप्त प्राप्त । नवरा ग्रे:देनार्थःग्रे:तु:हॅद:डेनाडेशःधःश्व:पीदःधशा नायःहे:हिनाः <u> न्रॅस्था भेत्र भार ने देश सबर सान्र ना स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप्त स्याप</u> वशुर्रिस्य प्राप्ते व हो। अवि र्श्वे राजा वार सुर वी अवर प्राप्त सेवा सामी सेर अवदःविगः श्रुरः धरारे श्रुरे हें र हो र श्री श्रुराववर विगः वी र स्वराहे र श यदे सूर्वे द त्य त्य मार्थ से से र दे ।

यदेर्द्रान्द्र्राच्यान्द्र्यां श्रान्द्र्यां श्रीत्राच्याः विवाद्र्याः विवाद्र्याः श्रीत्राच्याः विवाद्र्याः श्रीत्राच्याः विवाद्र्याः श्रीत्राच्याः विवाद्र्याः विवाद्र्याः श्रीत्राच्याः विवाद्र्याः श्रीत्राच्याः विवाद्र्याः विवाद्र्याः विवाद्र्याः श्रीत्राच्याः विवाद्र्याः विवाद्र्याः विवाद्र्याः विवाद्र्याः विवाद्र्याः विवाद्र्याः श्रीत्राच्याः विवाद्र्याः विवाद्र्यः विवाद्र्याः विवाद्र्याः विवाद्र्याः विवाद्र्याः विवाद्य

स्यामा स्वास्त्र विष्ठा स्वास्त्र विष्ठा स्वास्त्र स्वस

१र्थर मी र्स्टिम् या या ये दे ने ने ने निया या

श्रेरःगीः व्यायायाः श्रेरः यहरः य

वर्रासहस्रासी देशे विश्व के वि स्र में अर्थक्ष्र अर्थे र सद्या क्षेत्र स्र में र में र में र स्र में स्र में र स्र में में र स्र में में स्र न्रह्में न्या के विद्या के विद्या के न्या के न्या के न्या के कि न्या कि न्या के कि न्या कि न्या के कि न्या कि न्या के कि न्या कि न्या कि न्या कि न्या के कि न्या कि न्या कि न्या कि न्या कि न्या के कि न्या कि न् वे हिते प्रमुद्राध्यय द्वा हिते के दिन्य वे मुद्राप्य अस्तु मुद्राप्य अस्तु मुद्राप्य के नि वर्चर-दर-पार्ड-सवानी-विर्नायर-पार-तार-तार-भ्रेत्र-सर-देवाश्वास्त्र-ती-श्रीत्राष्ट्रिक्षास्त्रक्षात् रक्षेत्राक्षात्राक्ष्यातेत्। यदिनः देश्वराश्चात्रक्षिणः विवा वै। अवभार् पर्नु नुदेश्मेर इसमाने दिन्य निमायसाने सहस्माधेन नर्गेश नरोरः वा खुरुष्ट्याः धेन हेरुष्य । हिन्यां वे नहेन प्रदेशेन धेन मश्राद्राच्या द्यो म्याद्रा द्यो म्याद्राच्या वित्राचित्र म्याद्राच्या देशन बुद नी भेद सहस्र दुः र्कें नाश संधित प्यदा नाद बना नी दें तथा वह्यायावरायमाने सक्दरमाधिनार्वे ।

या हिन्यावि महेन्यि से क्षेत्र स्त्र से क्षेत्र से

श्रान्द्रभान्द्रम् ।

या ग्रान्य में द्वार स्वार स्वर स्वार स्व

द्रा म्हार्या स्ट्रिं स्ट्रिं

हा देश न बुद मी भेट सहस हुँ न स्था देश र ही हिंद दिर दा हिंद हैं न स्था हिंद हैं न स्था हिंद हैं न स्था हिंद हैं न स्था है न स्था हैं न स्था है न स्था

क्ष.वर.ववेर.श्र.वर.र.श्रूर.र्रे ।

याने क्रिंश्वर क्रिंग्या अर्यार नियाने प्रमुद्द चुदे र्द्द क्री र्द्य याने क्रिंग्य क्रिंग्य

श्रीटाहेशासु मुनाये प्रत्यास्य स्था स्था स्था सुरा होता से पारी माने। द्येरत्व भेर्नेषाद्यार्यो भेर्षेव्यव्यव देशभेवर्ये व्युभः श्रुभः ह्याया केंग्राम्यक्षराउदार्स्ट्रेट विट चर्या सेट या केंग्रासूद विट वहे यका मा वर्चे रायासुन सुसार्से वायाया सेवा त्युयारेट विटासाचा वेयाया सुरा म्रे। यदे द्या केया भ्रें र द्र भ्रेय प्रदेश्ये। भ्रेट या हेया है । ह्य या वि या है द्रारा न्दा विवान्त्रियां विदार्क्ष्यान्द्रित्यवे स्वाद्या स्वाद्या स्वाद्या वयायत्रेयाञ्चराञ्चेयावर्देवायाद्यदास्य द्वाराञ्चे क्षेत्राञ्चरावेदायरा मश्यास्त्राच्यान्यस्त्रित्त्री विशासदे स्वयाची स्वयाची स्वयाची स्वयास्त्रवा विता वहेनरायानेरायया क्षेतानेदेनिहनक्रियात्रीर्मानम् सूर्वित वहेनसःसदेःक्षेत्राःगीसःसर्देनःसरःनर्द्धेनःन्। विसःसरःहिनःक्षेतःनेःस्वः ग्री:क्षेत्राः पर्देन् राय्या सूत्रः विटः यहेन्याः यदेः क्षेत्राः वेयः यावतः नर्या स्त्रीर स्थित स्त्री वित्र मित्री मित् श्रेट्रियाची वड्र रूप्ट्र शेवड्र वदे हिट्र यर दी दे विश्व राग्य केवाची क न्यानेत्यादर्णा दर्याक्षरायाक्ष्यास्य स्यानेत्राया र्शेवार्यासेन्यान्ता वर्ते ते ने व्ययम्बिवाययात्वन यम् वित्राची ।

यात्रव्यक्षयाः भ्रीतः स्त्रीया अत्यात्रवेषायाविदेष्यः विक्षयः भ्राय्येषाः भ्रीत्राय्येषाः भ्रीत्येषाः भ्रीत्येषाः

र्स्य विश्वास्त्र विश्वास्त्य विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्य

या श्रुप्ताह्य के स्वार्थ के स्व

त्यावर्त्तन्। स्यान्त्रिस्यान्तिः महित्याविः नहें न्यादे स्थान्त्रे स्थान्त्

य श्रम्भान्य वर्षे म्यान्य वर्षे वर्षे स्वर्धि स्वर्धि स्वर्ध स्वर्धि स्वर्धि स्वर्ध स्वर्धि स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य

या विद्या भी त्रीय विद्या के स्वार्थ के प्राप्त के प्राप्त के स्वार्थ के स्वर्थ के स्वार्थ के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्थ के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य

ॻॖॱॾॣॖॖॸॱऄॸॱॐ॔ॻऻॴ यॴॱॻऻॸॱढ़ॊॻॱॻॖ॓ॸॱॸ॔ॱॻऻढ़ढ़ॱॸॸॸ॔ॕॴॶॱ ढ़ॼॆॴॱॴढ़ॼॆॴॱॸऀॱॴॸॱॸॖॸॱॸढ़॓ॱॼॖॱॸॱढ़ॊॻॱॾॣॖॸॱॸॎ॔ऄ॔ॴॱॸॊॱॐॴॴॱॼॆॸॱ ॸॱढ़ॊॻॱॾॢ॓। ॼॖॱॸॱॸॸढ़ॼ॓ॴॸढ़ॎॱऒॸॱॸॖॴॱॼॆॸॱ ॸढ़ॎॱॸॻॱॾॗॖॕॸॱॿॴॴॸॸॱॴॹॗॖॗॸॱऄॸॱॡॕॻऻॴढ़ॴॹॖॗॸॱ ॸऻ

न्यात्रात्त्र त्र क्षेत्र स्वास्त्र व्या स्वास्त्र स्वास्त्र

त्र चेत्रस्य १५० कर भ्रेस्य स्वाध्य स्व

याकुःक्रेवःत्रः ग्रानः र्वेषायाया वरेवः यथःश्वेरः वा वीं यावयः ग्रीयः याक्षात्रः विष्णाया वेषायाय्ये याक्षात्रः विष्णाया वेषायाय्ये याक्षात्रः विष्णाया वेषायाय्ये याक्षात्रः विष्णाया वेषायाय्ये याक्षात्रः विष्णायाः विषणः याक्षात्रः विषणः व

द्येन्त्र्। ।

हा शुव्यन्त्रः चुन्तः क्षेत्रः विद्यन्तः विद्यन्तः

र्देव'सळुंदर्यासेट'र्क्केंग्या सेट'र्ट्, संक्षेत्र'स्य स्थानहेव'सर' सन्नर्यात्र क्षेत्र'स्य स्थानहेव'स्य सेट्रा स्थानहेव'स्य स्थानहेव'सर' श्रीटार्क्सियायाधीताते। यात्रयायाक्रियाः भ्रा वियायरायाक्रितात् श्रीरायहरा र्गन्यस्थास्त्री निर्देशस्य विद्यास्य स्थानित्र स्थानित् स्थानित्र स्थानित्य स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र रेयाग्रीया ग्रम्थायळॅग्राचेयाप्यायायायाच्यायाची ग्राप्ता युर्यावेया ययर वात्र शः अर्के वा स्टा धीत रामा देव अर्द्ध र मा भी टार्के वा मा वे मा यह वा मा या नियम्बा नियो मिव प्यानियमा मिक्ट क्षिम्य मिया स्थित मिन क्याश्चरित्रवर्षस्यारी नेत्रत्येवार्वेरानवरा नुधेन्तवराश्चेवान्ग्व नुशक्षेत्रायानवी में नायारी स्नायान वर्षा नुः से सुन देरे नु स्टा हैन डेशमः भूत्रशसर्वेद हो वें दान्नित्य यस देवास दर्धन बर वी सेर क्रमासेदे सेट वी विवास स्ट्वें र पटा द से कु कि वी वी कि से नमासे न्नरमीया र्ह्सें नवर भुवनया कु अर्हें नर्वे न वेयाय कु न्यहें न्य वे तिविकायां मित्रे । विविदालमा ग्रीयावीयाया के कायते ने नमार्सा न हैं। मह्यस्य केत्र सेंदिर ने महा केत्र महिम्स केत्र महिला म गुवायां वेयायायायाया है हि है ल्वा द्याराया द्यो पर्व राय है व कि सर्वे न्ययान वरास्य (क्रें कं न्वें वर्षे यान्वरम्य स्वर्थाय स्वर्था वे सामा सुरम् या श्रेट्राची र्स्केया श्रायन् अपन्त्र अपन्त्र स्त्री श्रायात्र श्रायात्र श्रायात्र या हिया हिट्रा ग्रयायान्य ने ने प्रयादि । यह में विकास के प्रयादि ।

चर्चरः चर्मर अदः स्वामा चर्चरः चुः चरः विचाः यः चरमः ग्रीः अदः विचाः श्रुर्भित्रिक्षेर्भी क्षेत्राया विवासे। श्रुः वाद्यायविवा विया विया प्राप्ति स्रु यावर्यालेखारा है नियादा होते याले निया विश्वे नियादा हो दायाद्या या निया गालेशमाने भेरामी र्सेंग्रामा सुना हो राग्ने साने। रे क्षा सुना से रासे प्राप्त से साने यानवःश्चिनःकैंशःगशुया वियानवःगित्रेशा भुःनुःगेंदःनुःनभूवःगदेःसेदः वर्षायाम्ययाग्राम्भेरामी स्वायाम्य वर्षे दे न्ययाभेरायम्य नःसं श्रेंग्राशः मुद्रेदः विद्यान्ता नम् नम् नम् निर्देश्वरम् मान्यान्य स्थानियाने स्थान मी र्कें म्यायान्य अवयक्ति वासे न्या स्थान्य स वर्षायाधिव प्रयाने पादिया हिया है। हिरामर प्यराधित दें। न्येरः वा गल्रायगयर में न्था बेरमाग्रुसमा कुः समार में दे गिरेशगाहित्यारेगा कुत्से नित्याहरामी केंग्रा केंद्र भूतरा नर्रे ख्र ना वरी निवित्री विश्वासाक्ष्म नुश्वासकें त्रास इस्र श्रित से द्वी कें वाश्वास प्येत र्वे।

गिलेग्रयाधिरार्केग्रा निर्देश्यादेश्याद्याधिरात्रात्या विष्याध्यात्र स्त्रात्या स्त्रात्य स्त्र स्त

म्रेन्यावियाययाभ्यः स्ट्रियायावियायत्रायायाः स्त्री । दे स्ट्रून्यस्य वियायाः स्त्रे स्त्रु सक्तर्थेन्ने स्रम्भारम् निर्मानि स्रम्भारम् निर्मानि स्रम्भाने हिन्यानि । धेव समामम्यान विमाने समी । देवे देव द्वे सम्बर्ध दावे दावे दार्वे दार्वे व धिवामा नर्जे ना नमे का से ना धिवान में ना से ना क्रवार्देशामा वेशामासुन्तुःस्री टार्चेन् देनाशाधिवामार्देशासा वेशा वेशा यदे किया वरे वस्त्र र में द रेवास प्येत या वेस या किया दे वसुव हो द सी कर न्याशु शुराध्याया स्वीत स्वीत स्वीत स्वीत । दार्से दार्य स्वीत । वेया मदेःसबरः क्रेत्रान्यारः धरः से दः से दः देवः हे वा सः सरः न सूत्रः स्या क्षेत्रः स्या क्षेत्रः स्या क्षेत्रः स न्देशः भेतः या र में न से वाश भेतः पर्दा विश्वासः भूमः भेनः सममः हेवाशः क्षेत्राश्चरायम् क्षेत्राः मुन्तर्भे ।

तिः भूरिः श्रेरः छ्वामा व्यानः विद्यान्ते स्त्रान्ते स्त्राने स्त्रान्ते स्त्राने स्त्राने स्त्रान्ते स्त्राने स्त्रान्ते स्त्रान्ते स्त्रान्ते स्त्रान्ते स्त्रान्ते स्त्राने स्त्राने स्त्रान्ते स्त्राने स्त्रान्ते स्त्रान्ते स्त्रान्ते स्त्राने स्त्राने स्त्रान्ते स्त्रान्

ग यश्राश्चानित्रं द्वारुवाश्चानित्रं विष्ठवाश्ची । यावश्चान्यं श्चित्रं विष्ठा विष्ठा

मा नर्गेशकेन देव रुव श्री श्री सेन र्षेण्या क्रव न् या सेन प्राप्त केन रिया क्षेण सेन स्वाप्त केन स्व

वयान क्रिंत् क्रां सक्रें स्वें न्या विश्वास क्रिंत् न्या गुत्र त्या निश्वास विश्वास क्रिंत् ।

ठा कें भ्रम्भनशर्मे द उदा ही सेट कें माया के या शुस्राया क्षेन्या मा हेन्याडेयात्यास्यार्हेषात्रुमाया रुमाक्कुन्र-र्योक्षाया हेन्न्र-रु र्स्ने न मुन्य के न मु क्षेत्रको यर्ने वस्यायात्र में क्षेत्र यह र किया थेव पर दे द्या किया गवर विग गे क न्य शु श्रु र के शेर अधर भर्र र र श्रु र र में य निर ने श्रुर्भ्य अक्षेत्र निर्देश ग्री विद्र केंश वित्र व्याप्त श्रीर वी केंत्र श्रीर विश्व र नर्जोद्दर्गारुष्यः द्रमेर्द्रान्द्रम् द्रमानी रास्ट्रहें त्र विद्या व्यास्ट्रहें त्र नगा वेशरावे केंगावने केंगा गवन वेगा गी क नश हो न राया के र सबर नः भुः सः श्रु रः धरः वर् गारः श्रु रः से न तृनः धरा से दः सवते से तः सम्राहे । श्रेरःव्युवः ग्रेर्ग्रेन् में द्वाया के दावीया भिदाया के वा के वा के वा वा वा वा विवा मी क निया शुर्व ह्या हो द्रा हो त विया ग्राम्य थे त स्था सामा स्था सामा श्री सिमा समदः श्रुट्टियः यादेशः नेशः मन्तः श्रुट्टियः नेतः तुत्रः वायः केदि।

श्रेरःची र्स्टियायाया राज्येयायायाया

यद्गळत्। याल्ताख्याशार्श्वादेश्वेत्रात्त्राध्याश्चाद्याः व्यक्ताः विद्यक्ताः व्यक्ताः व्यव्यक्ताः व्य

युते स्वाभावता सदे स्वाभावता स्वेत के ना नक्ष्या वित्त स्वाभावता स्वेत स्वाभावता स्वाभावत

र्वेषा वर्षेषा से महास्त्र क्ष्मा से क्ष्मा क्ष्मा

या विश्वासाक्ष्य क्ष्रियामा विद्यामा व

श्रेट्र ने क्ष्मिं स्वार्थ क्ष्मिं स्वार्थ स्

यश्रभुतः देश नन्नान्नविद्यन्त हिन्द्या स्थान्य स्थान्

वयास्टा) डेमामास्ट्रम्

ग्रिक्शक्ष्म्या क्ष्म्या विष्यायाः क्ष्म्यायाः विष्यायाः क्ष्म्यायाः विष्यायाः क्ष्म्यायाः विष्यायाः क्ष्म्यायाः विष्यायाः विष्यायाः क्ष्म्यायाः विष्यायाः क्ष्म्यायाः विष्यायाः क्ष्म्यायाः विष्यायाः क्ष्म्यायाः विष्यायाः विषयायाः विष्यायाः विष्यायः विष्या

र्श्वास्त्र में प्राप्त कर्माय कर्माय कर्माय मा प्राप्त स्त्र में मान्य कर्माय मान्य मान्

हीं यो या अने विकास यह स्था या स्था यह स्था या विकास यह स्था या स्था यह स्था

यशास्त्राक्षेत्रीत्राची वार्ष्यायाक्षेत्रम् होत्या वार्ष्यात्रहें वा

यर्थे।

या वर्ष्च्यान्यस्त्रात्त्रं स्वाधान्यत्रः स्वाधान्यत्रः स्वाधान्यत्रः स्वाधान्यत्रः स्वाधान्यत्रः स्वाधान्यत्रः स्वाधान्यत्रं स्वाधान्यत्रः स्वाधान्यत्यत्रः स्वाधान्यत्रः स्वाधान्यत्य

यश्यात्मा व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त व्याप्य व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्य

र्देव'अर्ड्ड्र अ'न्द्र शुन्ते वि'अर्ड्ड् वार्थ्य वि'अर्ड्ड वार्य वि'अर्ड्ड वार्थ्य वि'अर्ड्ड वार्य वि'अर्ड्ड वार्थ्य वि'अर्ड्ड वार्थ्य वि'अर्ड्ड वार्थ्य वि'अर्ड्ड वार्थ्य वि'अर्ड्ड वार्थ्य वि'अर्ड्ड वार्य वि'अर्ड वार्य वि'अर्ड

र्देन् अर्द्ध्यश्चर्याया अप्याया विष्याया विष्याया प्रति । विष्याया विषया विष्याया विषया विषया

श्रेरःवीः र्क्षेवायः यदे विदः र्क्षेयः वयदः य

श्रेट्रा क्रिंग्यायदा क्रिंट्र क्रिंग्यादे स्थान्य क्रिंग्य क्रिं

वै। कैंगानी क न्था हो दार्ग देगा ग्रवस्य मुद्रा रावे द्वी सक्दर द्वा गर् येन्नि । वियायवे कियायया नेयायव्यानस्य प्रदेन्यो सर्वत वियाय न्हें न्याबि न्दा न्यमा हु से न हें बिर्याया स्थान थित था क न्यस्थ यद्र-यह्नि-पानि-दे-प्यया देया-पाद्य-प्यस्य-पा नेय-पानु-सूत्र-सिप्यः ८८। नक्ष्मनः मद्रेन्यो अळव ले शराना व्यवस्य श्रीट र्ळे ना शर्धि र स नविवर्त्। ग्लीट्रानविष्यर्तनदान्त्रेत्रहेट्रान्नोर्नाम् अर्धराम् मुर्यास्य सहरमः त्रुव प्यम्) वेम प्रति चे द्वीय प्रमा स्वीत प्रति व क्रुयाया वेयायाय अध्यासी दियो प्राचित्रा वियाया न्या क्रियाया नियाया वियाया नियाया नियाया वियाया नियाया नियाया श्रेटःक्रियाया क्रुयःयरः ग्रुयः श्रेष्टियः यथः एवयः ध्रियः स्रियः यथः यक्षेत्र है। येर में कें न्याय पर्ट कें न्याय प्रते कें न्याय प्रति या में प्रति प्रति विद् वर्द्या विरामी केंग्रायायाय वर्षे सूरात्रे ना विराष्ट्राय सूराया हेंगारा बेर्पा केर्या केरा केरा के विकास मिले हैं त्या है त्ये हिस्सा राष्ट्रे प्राची । हिन्यर नने स्वा हिन्य अधिय। नर्गे अन्तर मी अस्व अयर हैं अय धेव दें।।

महिरामा में निस्यास्य स्था से स्था में स्ट्रिया स्था स्था निस्य स्

र्ने न्या स्वर्था की किया मी वर्षे वा ख्याया खुवाया वाहे या अर्थे न स्री गडिगाने। श्रून-नर्यन र्ह्वार्य्य नहन प्रमा नेत्र श्री में निर्मा ने प्रे <u>ๅฦฺ๛๚ๅ๛๚๛๚฿ๅ๚๛๚๚ๅ๛๛๛๛๚๚๛๚๚๛๛๛๛</u> क्रुंव प्रस्त रें व्या श्रीय रें व्या श्री राष्ट्र प्रमा रें व्या रें व्या रें व्या रें व्या रें व्या रें व्या कैंगा हु पर्दे न सवे खुना र ने प्येव हो। ने वे सक्व ना विना असे ह्ना न्ना नःवर्रे । यं अया हिश्रा श्री अञ्जी अञ्जी न स्त्रा श्री न स्त्रित न दे न स्वा अ नभूत्रसेट्रम्भाट्र्र्र्सिट्य्यस्से व्यवस्थे। देवे सेट्यो स्विन्स्य प्रेत रादे हिर्दा शेर सबर रा श्रुदे क न्या श्रुर विर केंगा में क न्या शु गुन्यदे भुर्ते । अदे से म्नाय हैं ग्रस् लेस यदे के ग्रामी क न्यस् ग्र्यायदे भ्रिस्स् दे भेष्य देशके। अर मे किंग्राय भेव व किंग्या भेव ब्रेल गुते न्देश रें ख़ेंग मानन्तर या सर्वेत मते न सून से से विन माने वा

श्रुश्रास्यक्ष्रश्रश्च रायरायहेता नर्रश्रासं याडेयायी रेनें निरा रहायित हिन के अ अँग अ क्रेंन पदे के न जी के ग अ प लेग हु गुन परे ने । 🗢 हे अ वार्यायम् वार्यम्याययाने याः वेरायने याः वारात् व्यास्त्रयाः स्वार्याः नदे से द नी र्स्ट मारा निया मी सम् स्वाप्त निया में सम् यदे श्रुश्चुर र्वेद रहेवा धेद रामा हैवार वार्य स्वाय वार्य स्वाय ह्वार वडोव्य नवे द्वारा केट में केट न्या में केट द्वारा केट द सर्वे विश्वासाक्ष्म नुर्दे । ५ विश्वासनुद्वास्य स्वास्त्र स्वास्त्र से द्वास्त्र से द्वास्त्र से द्वास्त्र से द सर्वे वियासयासर्वे दायदे पायया हो दारी सुसु मारा समय दे किया पी दारा स्वानस्यान। वेशामासुन्तुन्त्रिनस्त्रानुः सह्वाशासदेः सेरावीः क्रियायायाया क्रिया हु हो दायायायायायायायायायाया अदारु याया न्ता र्नेन्ची। हिन्यरार्द्धेन प्रदेष्ट्या श्रुर्वे स्वयं अवत्र केया हु वहेन प्रदेष व्याः ह्रेना यश व्याप्य स्त्रिना

डेशन्तर्तुःनहें न्याधेवा । अन्तस्ययान्यान्तावर्धवा । (वेशन्ता भेरने हेन स्थान् ग्रेयसम्बन्यार द्वार स्थान स विन्यम् क्रिन्यम् विन्यः क्रिन्य के न्ये वे व्या व्या वे व्या व्या वे र् अप्तर्भामवे निष्णिक्षेत्र उत्राप्ता ने प्यत्र मुख्य हो प्रत्से वा स्रित्र हो । मुद्रायादेशायम् नवृह्रम् विषायमायकम् यादेशाने। श्रीमाद्री स्वीति वर्ग्यन ग्रेन् ग्री कुं न्देशन्ता अन् क्या के किया वर्ग्यन ग्रेन् ग्री के क्या वर्ग्यन ग्रीन लर्। कुर्यासर्गी मुद्रायायाय हैं या ग्रार कुर्या थे हियार्गर में सहेश वर्षिर वनरशानु उदाद्वाव विर्मर कुयारी मेन् निविद्येर नु नवरा वेश स्थायळें व है। भ्रम्थ नग ग्री नहें न दें व नार पर नु र न विगार्ह्रेग्रथायरार्द्धेत् श्रुवात् क्रिया श्रम्था उदा ग्रीयादेयायरा नुस्याद्रीः न्दःक्षेत्राः स्वरः यः नर्वे अः नर्वे अः स्वरः साह्यः ने । ने व्यत्ये ग्वन् साम्ययः र्यदे सूत्र राग्नेश सेट कें ना निहेश ता पीत सेत सीत मी सु निहें। है सिदे ब्रूटान ब्रेटार्नेदे प्ययाम विशासाक्षानु सेटा के मामहेशामदे मावी सब्द र्निं केंगाया केंद्राकी में मार्थियों मार्थियों मार्थियों निर्मित्र केंद्रान्ता केंद्र क्रिया यहिषा क्षे प्रत्याय प्रति क्रिया मेया वा हिष्य प्राया में प्रति प्रति क्षेत्र यो । क्रियासाम्प्राम्प्रियामहित्राक्ष्याक्ष्रियाक्ष्रियाक्ष्याक्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्य न्द्रस्त्री स्वार्थ स्वार्थ माने सम्बन्ध स्वार्थ न्या स्वार्थ सत्रुव से द दि।

यित्रभारात्री केयायी अर्क्षत्रित् प्रहेषा स्याभार्यो हात्र सम् या अर्क्षत्रमित्र-र्क्षमा अर्क्षत्र हिन्स मित्र नर्गेन्स से स्थान अर्क्ष न्यर वें के तर्भे वे कें वा राषा शुरा वा राषा भी राषा है राषा धेया दिवाग्री। हिन्य सहिन हिन्या दिया हैया असेव यस मार्थित या स थे। किंवा थे व थे वो १२५ अ म १३८। । बेर मिंद्र अ १५ अ में में व की छित यर: ह्रेंद्राया अद्याक्त्र्याते : भुवयाः श्री वियापाः भृतुः द्राप्ताः भेदः अदः भेतः वर्षाम्यादेवान्ती।विदानम्यादेद्वाम्याद्वास्याद्वाम्याद्वास्याद्वास्याद्वास्याप्याद्वास्याद्वास्याद्वास्याद्वास्याद्वास्याद्वास्याद्वास्याद्वास वेशनाः क्षेत्र्ये । दे नवेदन् । वर् नुश्राक्षेत्रमान्ये । वेशक्षेत्रमाक्षेत्रमा ८८। श्राट्यायमायन्मारास्यापस्यापस्यमार्थरावे विभागसीरा यदार्चित्र्यायाधीवाते। देवे के यायदेवायराम्युद्यायदे के वाधीवार्वे। (वेशन सूत्र पासून केंगा मी में में केंश समें तारि खुमारा सून नर्गे दिने नर्गेर्न्सिन्सेर्न्सेर्न्स्रिन्यन्ध्रम्भेर्न्सेर्म्भाग्रम् अर्द्ध्रम्भेर्न्स्योर्न्स्याम् ने कु नार नु प्यर नह क्षेत्र प्रवे खुना अ न्दर के अ बुद प्रथा के के र हो न प ने भूता येग्रासुर ग्री सूर कियान्य स्वायाय भूर ग्री यार ग्री नम्रिंद्रम्प्रदासी अध्वर्षिय के वा वी सक्ष्य है दिने में दिन में दिन है

स्र-पर्चिरिने शेप्या क्षेत्र में । निर्मिरिने स्रेन्स्य स्रिन्स्य स्रिन्स्य

देरस्य बद्या सुराक्षुःर्रेयायवे हें हेवे यासुरायसाग्रदा दे द्याया इस्रान्त्रे माव्र ग्रीस्रास्यस्य स्थूरायाय्य क्षेता पुरव्यात स्थी निये रात्री गा नदे अर्देग् अहे श तुअपारु कुणावश द्वो नायश्वर ने नायगुरा कुया र्वेदे कर श्रेन नह्न अन्य कुय ग्रे कें य खुन्य न्य से सय उत् ग्रे नि भ्रीत्रायमेयावेयायाष्ट्रातुर्वे । (वियापासुत्यायार्सेपायाययाहेयासु न्यगः त्रुनः यदे । सः र्वायः वित्रः श्रीः वित्रः श्रीः वित्रः श्रीः वित्रः श्रीः वित्रः श्रीः हिन्कु म्यार स्वर होन्य । अळव म्यावि र्वेन स्वर मर्गेन्य रेग्य म्याहिका ल्रिन्स्र श्रूर श्रे द्वी अप्तरम् व क्रिया यी अक्षव हिन्य ए त्र निव का अ विवासित स्वासी मिला प्राप्ता वर्गी दासित दिसे मान के वा प्राप्त के वा प्राप्त के वा प्राप्त के वा प्राप्त के व नश्रव देव हैं वायाया है वायाया नहें या जेटा दे प्यट सेट द्याय द्याय है सबर् सहंसा मवसा दव्दा नह्या दरा दसेया हेसराक्ष्य ग्रुचा न्त्रिन्कें या में निर्देशित्र स्था या स्था में स्थाय में निय के ना सुर वशःभ्रवशःदेवःह्वाशःधरःद्वेवःयःविवादवेविशःधरःवद्ववःयवेःश्वाशःया

श्चर-दिनान्त्री

म्बद्धाल्या न्युन्यस्य वित्राविष्यित्व वित्राविष्यित्व वित्राविष्य वित्राविषय वित्राविष्य वित्राविष्य

न्हें न्यः केवा वी केवा ११ वे अ अवा अ न सूत्र या सूत्र वहें न्या वे अ या क्षेत्राची क्षेत्राया प्रदेशे देव प्राची स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्य नर्हेन्यान्दर्यामानेश्रिंद्रमानेमानुन्तेन्याने नहिन्यते स्टानिन दगानी सूदि र्कें ग्रमाम प्येत पाया नम्माम प्रेस प्राप्त प्र भ्रे दित भरायमा विरायदे हिं र विरायी भ्रा श्रे परा विराया धिनार्चिनानिहेशानिदेश्वेनानी कुति विनाया बेराना सुरा नहें दारा दरादना गहिरा मन्द्र से द्वार प्राप्त के स्वार के निष्ठ प्राप्त के स्वार के स्वर के स्वार के <u> ५५.२. में २.५.२ में ४.५.७ के श्रुयाओं । १.८८.८ मा ने या में श्रीया गुरी हो ।</u> म्याम् म्याम् स्वाप्त स्वापत स्वाप यदे श्वादने नरा दिन् रेवेदे श्वाद्या श्वे रेवेदे स्याद्यू मर्शे न्या या स्वाद्य स्थाद्यू मर्शेन यदःद्याः अः धेवः स्या द्याः वेः यदः व्याः विः विदः द्वः द्वः द्वः देशः विदः। व्यट्टानमा मुन्दरहेट्र होट्र हो सुनाहे या ये वहार हो नविया हा हमान्दर हु याराक्षा तर्राह्य

गशुस्रामा कैंगामी सक्त केंद्र निष्ट्रमा

ने या विने मार्चे मार्चे किया के सामानी से मार्च सामाया किया

क्र्याक्तिस्त्राच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्यात्रच्यात्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्या

ने प्यर नहें न पर्ने न की गुन क्षें न क्षेर मन या की नहें न ने व की न्वीयासिर्न्द्रभेग्याने सेटानु सावन्यायया गुनामा धेवाने। सूनया र्देव र्चेन थिया नक्षुन्य लेया ना हिन प्रमायदेन स्वा केन थिया निमा नक्षुन्य विश्वापित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राचित्राच्या धिना नसूनमा वेस मदि केना ने नान मान्य है स नाहिस समा नुसा हु र व्याक्षेत्राच्ययाः उत्त्वुतः सः धेवः वे । क्षित्राः वी व्युतः वी त्र से दायाः सर सबयःक्षन् सेन् ग्रम् हुम्सबम् सेम् पहिरादन् में सिक्षे वर्ष वायाने सेरावाने साय रायसा देव ग्राम्स स्ट्रिस ग्राम स्ट्रिस गश्रम्भःश्री । भ्रीमानुः स्वार्ध्वनानुः स्वार्धः स्वार्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर ध्याची में अभार्श्या याहि भार्य स्थायायाय सम्धु सार्वे भा अता कार्य स्था यो यार धिव धर धुव वर्षे र रेश उव विया व यहेव उर याव श यदे केंश हेन्स्म र्नेन्से क्षेत्रेत्रत्र्वेशवह्त्रस्म्मान्या वर्के नदे में सम ग्निया नम्र्सेर्क्यान्रायायान्त्रेन्स्रान्त्रेर्त्रेर्त्रेर् गहर् कग्रास् सु सुर पदे नह हुँ द सुग्रास द र सुर र ग्रास् ব্যৱস্থা ব্যৱস্থা

श्रीटानु सायनु साय स्वार्थिया सुवाय वे स्वार् हो स्यान् हो न्दा स्वार्थिः

मुन्यानकृत्रीं रापाम्यराक्षेत्राध्य व्यायन्त्रेत्रा भेटातुः सार्थाध्यः रग्रायर श्रुट्याय र्या श्रीया क्षेत्र स्वाया स्व नश्चेग्राग्राग्राम्य । यहे या है या श्व मान्य निया मुनाय । यहे या या स्व मान्य निया मुनाय । यहे या यह या यह या यह या यह यह यह । श्रेन्पा क्षेत्र क्षेत्रासन्धिः तुर्याप्यासेन्स् से तसूत्र सुत्र सुत्र से न हेवर्रायहेवरम् ळ न्यायाँ यया र्रम्या र्याया र्याया र्याया र्याया र्याया या विकास विकास विकास विकास विकास विकास र्देव'ग्रथय'नर'ग्रेट्'रा'य'यद'नश्चुनर्थार्थे। ।५'र्ट्'विन'यर'न्न यार र श्रु र द्विते क्षेर रे त्या खर यार विया या श्रर र श्रु र प्रश्न क्षेया प्र र रें व ग्री तुर्याय प्रिवासी किया मी द्वारक्ष स्वासी मानदा प्रमेव स्वीत किया । दिवा ग्री में नशक्षिम में द्वा में द्वा में विश्व महित्य में स्टूर भिव लिटा माय है मत्या क्रिन् मुर्भिन् गुर्द्र वर्षेया क्षेत्र क्षेत्र स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया ब्रन्ग्रेश्यक्षयशञ्चित्रन्त्रीयायाधिवार्ते। श्चित्रने भ्वत्रस्ति क्षेत्रा ब्र-सःश्वरःग्रन्भेन्द्रभःत्रभःभ्रम्भान्भःदेतःह्निष्भःसरःश्विरःभवम इन्नम्भ ग्रम्म में निवाय के मार्वे निवा के मार्थ में निवाय के मार्थ में निवाय के मार्थ में निवाय के मार्थ में मार्थ क्षेत्रानिहर्भते खेत्र प्रति वर्षेत्र केर केता खर श्रुर के र के र के ता के र के ता खर श्रुर के र के र के र के र श्रुःकैंगश्रानवर् मिंटार्गो म्वराधेवा वेशायाक्षात्र सकेंगा सरा सेरार्भा पि'सर'यस'नु'वर्त्ते निर्देश या हैया'सर्दि। विस्तानिर किया सन्दर्भ निर्देश की । यश् क्षेत्राय्यक्षर्यः वर्ष्यः वर्षः वर्ष्यः वर्ष्यः वर्षः वर्यः वर्षः वर्षः

हिन्दें अपिकेशमा प्राथय होन् से निर्मात स्था होन्सी होन्सी क्रियाश्वास्त्रास्त्राची हिन्यस्त्रहेन् हेन् होन् स्वाश्वास्त्रस्व याया केन् विवा য়ৣ৴৻ৢঀৗ৾য়৻য়ৢয়য়। য়য়৻ঢ়৾৽য়য়য়৻য়৾ৢঢ়৻য়ৢ৽য়ৢয়য়ঢ়৻য়৻য়য়ঢ়য়ৢয়য়য়য়য় नेशमंद्रियात्रद्राधिशक्षयात्यक्षयायुवाधिःह्याशस्त्रीयाधिद्रद्वीश ह्याशः ने ने भूनय ने में नाय पर कें माने ने ने ने ने निया है न स्वीत के स्वीत के स्वीत के स्वीत के स्वीत के स्वीत के स श्रेर-५८। वाद्रश्रायश-५८-५भे-५व-वाश्रय हो ५ छी- श्री वाश हैवाश क्षेत्रा न उर्था ग्री जार र द र श्रु र या या ग्रु श्रे दिये र वा हे में श्रु वर र र श्रे र । र्श्रेय प्रमुन्त स्ट्रिय प्रमुन्य से द्रा से स्ट्रिय से से स्या से से स्या से न्रास्त्रियायासुः भुः नेद्रयायाया ये में या विवादा विवादा विवादा विवादा वर्ष वर्ष अञ्चयःवर्षकः नर्षे । वार्षः रे. ५ उरः नहेत् हेषः यदे क्षेत्रः क्ष्यश्राण्चित्राच्या स्ट्रा चर्ट्य यहं या नवाया वास्या सेवाया वहा द्र्य वहं निर्माया स्ट्रा स्ट्रा चहं निर्माय स्ट्रा स

श्चाप्ताः श्रुवः त्वाः वीः वश्चवः वर्षे व्याप्ताः ह्याः ह्याः व्याप्ताः ह्याः व्याप्ताः ह्याः व्याप्ताः व्यापताः व्यापत्यः व्यापतः व्यापतः व्यापतः व्यापतः व्यापतः व्यापतः व्यापतः व केन्। ।वजुराहरशामाने दस्यशाचेन उत्रम् मानकन में रामित दस्य न्होते मान्। । नियम्बर्भनहो हुमारायहोत्यन नहा नहा नहा नहा स्थान रॅं 'रॅं 'र्सें त्र परे 'श्रु'ते 'सेर व्यस साय राय साम रे वा क्या र होते 'से त श्रुर' र् अर्ग्यमा व्यक्षप्रमा केर्प्यम् हेर्यान्यस्य हेर्प्यप्रमा विद्रम हिर्याष्ट्रिरें द्वाया गुरवया ग्वया ग्वया ग्वेर्यो भू विगाररा ग्रेया वर्चराष्ट्रेम् म्राम्बर्ग्यायात्रया स्त्राम्बर्ग्याया स्त्रम् ने न्या के या निर्मेश प्रेय प्रश्रा होन् उव लेश प्रक्रिया श्रुव होन् होन् प्र उवरनुः में प्यम् सुमार्थे । विश्वेया न सम्मार्थे में स्वाप्त स संभित्रपरि कुं सळ्त पर। विःसश्तर् श्री केटसंभिष्म रायसा श्री प्रमातः

देशःशुःतश्रृवःयवेःयावदःग्यदःयदेःस्टाःसेदःश्रृशःवें। ।देःतशा श्रेदःयाहेशः यायःहेःया्द्रशःग्यदःस्टा ।श्रदःद्दःस्यःद्वेःश्रुरःश्रेवःहेःश्रूरःयदः । यायःहेःया्द्रशःग्यदःस्वःयाश्रयःयदेःश्रुश्येदः । ।श्रेवःहःयग्रुरःयदेःयोःश्लेवशः दयःयद्येद् । ।देशःश्र्व्यादःश्लेवा ।

विट्रिकें भागशुरामा पानार्शिना भागी सेटा सम्बद्ध सेट्रामा सेटा नुस वर्षायदे अवर या वा श्रें वा शा श्री का निशा विष्टें प्राप्त से विष्टें वा शायदे । ह्यायाः निवाः धेवः प्रया वदेः प्यदः क्षेंचाः धेवः क्षेवः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः र्दान्तः विवाधिवः है। नः धेन् शुं अः दुः नवे व्योवः नः सन् विवाश्वा पः सः र्शेम्श्राचन्यार्थे क्रेंब्र होन् छे क्षुन्ता स्थान्यायाय स्थान् क्षुत्र क्षुत्र हो । ८८.क्रु.च.स८.क्ष्राचक्ष्रेय.चुष.तपु.सदी.सहया.सबर.चगू.ट.सपु.सुस.स.स.स.की. सक्त केत से प्रिन्ते। हिन मिले निन्त हिन के सा मन्य मार्थियाया नर्हेन् प्रते से दार्टे के पाया के राम प्रति प्राप्त प्रति का भू साम से प्रति से प्र द्वायायायायम् भ्राप्त द्वायाया का निया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वय यन्ता असीन्ववायित्रभुतिसीत्यात्यात्यात्यात्र्यात्रे भेवास्य ग्रान्यः श्रुत्रः खुव्यः श्रीः र्ने वर्षे देश्यः धेवः प्रवसः स्रोतः प्रतः श्रुवः परिः र्ने वर्षः र् यशमाव्यत्र । भेराद्राक्षमासृष्टी सक्स्यश्रेष्ट्र राजर होदारिकेमास्य श्चेति तुर्यापाने सेन्यया ने न्या कैया सन् मुन्य राज्य सेन्य सेन्य स्थान

रास्रियायाः श्री तह्या रहेषा ने यात्र स्रीतात्र स्रीता वी वितासराया देया नेशकेत्रभें नभ्रेत्रभुत्रम् भेरात्रभावत् भाषिरभाष्ट्रभाष्य र्शेन्यश्चि कः न्या श्चू रः पेर्न्त्र दिन् श्ची श्चिर्यर श्चूर्य शेर्श्व शेष्टर रूप न्हें न दें व है व राम्य स्थानुन मारा की न त्या का साम है। विन त्या पें व प्रमा लूर्या यर्र.मे.श्र.भर.क्र्यायाया श्रू.याश्रेत्रायीयाययायरेरेराया रेग्येर्था स्रुव वि ए १ वर्षे चा वे राया से वा राये के वा से वर है। दे प्यावि द राया से वर है ल्ट्रियाग्राव क्री अस्तिम् वर्दे र देश अस्टिक्ष म्याया । भ्रियाश्वय गुर्या मश्यादर्रायमान्त्रीत् त्रात्रश्यास्त्रवावितास्त्रवास्त्रीता वेशायदे स्वीता न्वायी क न्वराश्या व्यापित हो स्टिंग विष्या यी क न्वराश्या सुरिः कुत्र छे वर् सेर प्यर भेर मी केंग्र सम् वहें त प्रों श सूनश् भेर सम् यात्राश्चित्राश्चीः श्चार्यित् वासीतात्रात्रीः स्वीतात्री स्वार्ताः वित्वानी स्वार यश्याचेत्रिः श्रुषाराद्धरावेषाः श्रुरावा दायां वित्र क्षेत्राः तुः सुवादायाः धेवार्वे । र्षःत्र्रोयःसयः से के तु। यः नः से वासः ग्रीः से दः स्रवतः वित्राया तुसः यः से ह्वाः मा कें अम्बस्था उद्दे हें दाना गुरु व्यक्तिं व्यक्ति वद्या विद्या विद्या है अमा के ल्य निव निव मार्थ वार्श्व में वार्थ नगर लें के वर्धे निर्मा श्वर क्षु नेवर्ध के। कि नेवर क्षेत्र निर्मे वर्धे वर्षे वर्ष अळंद्र उद् शेंग्र अने माहेश अभागहें ग्र अंद दें।

विट्रिक्स निवे न नम्भन ग्रिन् ग्री विट्रिस में निकास में मुन्य ने श्रेरःदस्राभ्रेरःवी र्स्केवार्या प्रदर्शकेवार्यो । हिन् प्रस्याप्रभेवार्या प्रदे । हिन् क्रॅंश-विगा-धेवा भेट-क्रुट-वाभागित्री शादग्राह्म स्वर्गे हिन्यर इटा बदार्स सामार से सूर्वाया विवासी से दारा दिवा ही दि से सूर्वाया से दा ने भी हिन् सम् क्रेंब सं के गाड़े अ ने ब ही हिन् सम क्रेंब सं के गानी खुब केंद्र याधित प्रदेश हिन् के या भिना हु नुया वा भेर प्रत्या के वाया समय प्रदा के ना धेव दर्गे अ सबे में वा अ केव से विद्यू हों। विव में हें में दिन मित्र सर য়ৢ৴৻য়য়৽য়ৄ৾য়৻য়৻য়য়ৢয়৻য়য়য়ৼ৻ঢ়ৢ৻য়য়ৢৼয়৻ঢ়ৢ। য়ৢয়৻য়য়ৼ৻ঢ়ৢ৻ यायन्यासाङ्क्ष्यायान्त्रीयाग्यमा भेमान्यायन्यायमाङ्ग्यापान्त्रीयान्त्री नवर खेर् परि से है र न रे प्राचित है के हैं के प्राचित पर है र पर खेरा धीवा नियेन्त्वा से हिंगा सह साया क्षुत्रमा ह्यन्या विन्या विष्या विषया विष्या विष्या विषया सहें अर्धि हिन्द्र प्रम्यायया प्रम् क्रिंत्र प्रथा याद्यी सहें अर्था वे द्वा से र्नेगामीर्वे । भेर्नेगामी हिन्र केंश के लेखा सहसाय लेश सेन्मी में में यहिरादर्श्यत्रार्देवाधी। हिराधराविया यस्त्राधेराधराकेया सेताही सु ने अन्त्र मुंग्छिन् सम् बिना हैन असम् अस्त्र स्व स्व स्व स्व मुन्दे नावन वर्रे व मुना थेरि हो हो है ना सहे सामा है साम है साम मुनि का निसा

न्त्रा मुन्द्र निर्म् के मिन्द्र मिन्

याभ्यान्त्रः विचा चीट्ट नान्त्री क्ष्माने दे स्ट क्ष्मान्त्र स्वान्त्र स्वा

ळॅग्याणी सुर्धे हे नविव नहान उंधा भेव नम्म नहें न वर्षे न शेवा सुन ५८। डे लेग नहें ५ प्रेट में व की मार्थ के का निर्मा की किया निर्मा निर्म वर्गमानगुगासम्बन्धेर्भरामहेमा धेगार्झेमारुभनामवेरक्षेमार्गाः यार्ट्या चिर् श्रुवे क्रेव त्यया हैयाया निर्वा प्या श्रिवा यो त्य श्रुव देव डे प्येत मंद्रे मार्डे में सूदे मान्य या नहेत माप्येत है। के मामी ह्या मान्या है तर्रास्तरात्रार्थित्या के कार्यस्य में स्वीत्रात्रा स्वीति स्वा र्भेना वर्ने न होन हो किया न विस्तर होना किया ने न न ने न विस्तर होना ब्रॅट्रस थेव रवे रवस्य ना निर्माण निर् मुनर्ने । विन्यम् नुरक्षेयायी यान्य अर्थे विनय अर्थे विनय र्देव ग्री प्रचित्र स्रोति स्रेर स्रोति रेश्वेर राजा वेवा त्या वात्र राजा ग्री हित पर से त्र न-५-अ-र्थे५-भवर-अूट-र्थे५। अेट-मी-र्क्षम् अ-भ-व-मान्द्र अन्तिन याडेवा'यशन् अ'र्षेन्'से सेन्'स्या यान्न्या ग्री'स्नाविद्यास्यी वर्गुर-ग्री-ळावशाग्रद्दा और मी र्स्टिंग्य अपन्य दिन स्थित । मिन्य प्राप्त मिन्य प्राप् श्री । विद्युनः होन् ग्री सीटः वर्षः नविः स्वी वाचिनः वान्यः वान्यः सी हिन् स्वरः वा न्नास्युर्ध्यार्भित्रिक्षेत्रिक्षात्र्वा स्थित्राचा न्येरात्वा से हिंगासहेत्राक्षा विका मश्रान्हें न पानि से हिंगा सहे शराये रहा न निवान न स्थान र हो न स

यर्द्रेत् वित्यव्यक्ष्याविष्ण्याविष्याविष्ण्याविष्ण्याविष्ण्याविष्ण्याविष्ण्याविष्ण्याविष्ण्याविष्ण्य

क्षेत्र'न्द्रसंधिता विसःस्।

निन्न कैंगामी निने निम्न

कैयायानहेव वयार्देव क्षेत्र मदे के। नहें दारा से दे गात क्षेत्र मी हिंद नर-र्टा लेज.चेट.ज.ह.केर.पकर.सदु.रेगूश.श्रृत्केरी चेर्था सेपश ॻॖऀॱॸऻॾॕॖॸॱॻॖढ़ॆॱॸॕक़ॱॸ॓ॱॸॺॱॿॕॺऻॱॸॸॱऄॺॱॿॕॺऻॱॺऻॸॱॸॖॖॸॱक़ॺॱॸॸॕॺॱॸॸॱ नकुन्ने मालवर या क्रेंब्र यम होन्य । वनशरे दर्। नर्हे द्रायाशरे पर्यो नरे प्रायु र नरे वि शेशशागी वर् ग्रेन्पा अन्य करे श्रु इत्य सर्के व वर्षणी प्रेन्पा गैर्भात्रशर्चेत्रः श्रूरः श्रुरः राधेत्रः धरा भ्रूरः कः विगागेः केंगागेः इसः म्राम्यास्य स्थान म्राम्य स्थान स्था देशःश्रॅवः १८८५ विवा वसासे ५ रावे के संदे ५ १८ १ मा इसा वादसासर नवे क्रिया मध्य अरु दिन्ने प्रति यह अरहे अरु दिया हिन सु क्रिया क्रिया थी द तथा ने भूर नसूर्य स्राक्षिय देव हैं या या या ये वा तुः सूर्य पर वशुर हैं।

१क्षेत्रात्यन्त्रे न्यत्वे न्यत्ये न्यत्ये

न्वेशः मुद्रे मु म्वाप्यादः धेव ध्यदः द्रियाशः धुवः द्रदः स्वि से व्दरः न'य'नहेत्रत्रमा नृत्रे'गिवि'गिठेग'य'इय'ग्रम्य'स्रम्'स्रिय'स'न्ना इय' ग्रम्थान् सामित्रा हिना हुन्यसू या छे से प्राया है सिन्या विकार मिन्या विकार स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स गवि'नेदेरेरें न्दा इसम्मर्ग में मुद्दर्ग में श्चेन्रप्रे व्यवस्थित्वान्य प्याप्य स्थान्य स् विगाने निर्मेश में वे न्याने विवास मान्या विगाने से वे निर्मेश मान्या होना में अ'ग्रम्। त्यायार्देव'यार्डें 'र्वे 'र्वे द्यो 'यावद'य'यार्वे व्याय विवाधिव'द्यों या नस्यानिया हु त्र सुराहे व स्वारी मिल्या हु त्र हिंदा हिंदा हि । सिंदा स्वारा प्याप्य प्याप्य प्याप्य प्याप्य प र्देव ग्री अर्क्षेव वन यन्ता श्रु स्या ग्री ग्रिन के या या या स्या या या स्था या व्यान्त्रे नः नुः यान्यानः के याक्षेया त्यान्त्रे नः व्रेन् याने व्यास्य यान्य नवे केंगा इसमा है। सहत है। हिन केंग सर्देन पर नामण वेटा गाहन ळग्राशी:ळॅन्यावे:कुराठ्:वेगारु:नड्गाक्षे नेप्नामी:गुनःळ्यान्से देशः श्चः नः न्दा केवाः नदः केवाः वीः नरः वीः वर्वेषः नः नदः विनः धरः नदेः स्ववाः हिं मियाराये भेराधेर पेवा है। कैया मी श्वेर स्वाप ने भूर करे श्वेर स्वाप सकेंवर क्ष्मानाड्डम् पुंच्यान्य स्वतः स्वत

१क्षेपाभी प्रशेष्ट्र प्रम्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्य

क्षेत्रात्यान् हो न्यात्वेत्यायाः क्षेत्रात्मात्याः हो न्यात्याः हो न्यात्यायः हो न्यायः हो न्यायः हो न्यायः हो न्यायः हो न्यायः हो न्यायः हो न्यायः

श्चित्रः स्वाप्तः स्व स्वाप्तः स्व

वुःनःनर्हेन्द्रावेश्वेद्राची त्राया नेष्यदार्वेन्स्नुन्यःवुःनःनर्हेन् यदे के वा श्रु र रेवा थर, प्राया प्राया प्राया प्राया है प्राये के प्राया प्राया है प्राया के प्राया है विष् न्दायनेयान्यायम्यान्यान्याने वानाः भूतान्याने वानाः भूतान्याने वानाः वित्रान्याः र्रे ज्ञाब्द न्द्र न्द्रेश शुः वर्षेया सावर्षेया ग्री । ग्रुद्र चरा सर्देद । चरा ज्ञाया वा ख्र-तुःवःवर्हेन्यवेःक्षेषाः क्षेत्रः रेषायः से वर्तः वाष्ट्रयः वाष्ट्रयः वाष्ट्रयः विवःहे। वर्त्रेगार्से अर्दे सानर्देश क्षुन्त्र नर्देश वेश सानर्दे नर्ने वर्त्रेगार्से प्रा नर्ने नुदे में अपि के अप्यन रहें न प्यन में अप्य अनु मानि न विना प्येन मर्भा हो दार्भी पावत परहोत्या ही त्या र किया है ता हो ता हो ता हो ता हो ता हो ता है ता हो ता है क्रॅन्डेन्छे अन्या वर्षेषाक्रा वर्षेषाक्र वर्षेषाक्रा वर्षेष्ठ वरत्र वर्षेष्ठ वर्षेष्ठ वर्षेष्ठ वर्षेष्ठ वर्षेष्ठ वर्षेष्ठ वर्षेष्ठ वर्षेष्य वर्येष्ठ वर्षेष्ठ वर्षेष्ठ वर्षेष्ठ वर्षेष्ठ वर्षेष्ठ वर्षेष्ठ वर्ग्येयायाने वर्षेनासँ महाहेराहराने सावर्ग्यायायसाम्बदार्ग्या स्व नशनक्षेत्रान् न द्वापारिक्षेत्रप्रभा क्षेत्राक्षेत्राने त्वराया क्षेत्राक्षेत्राने त्वराया क्षेत्राक्षेत्राचेत अक्षे अक्षेत्राचारा दे सेरायमा हेराये जावता सेरा है। व्यय किया हु सुवाया वे ग्रुळेग रूर क्षेर गे त्यारा धेव वें।।

गुनःश्चेंद्राची। छद्रायम् श्चाने नार्हेद्रायदेद्राहेशायन् स्थाने श्वानहेद्रा

ब्रायदार्वित् स्थान्ति । विश्वास्त्रम् ह्रिन् चेत् स्थान्ति । स्थान्ति । स्थान्ति । स्थान्ति । स्थान्ति । स्थानि । स्था

क्रिंगा-सद्ग्री होत्-त्यमा वित्न भूत्र श्री क्रिंगा-सद्ग्री श्री त्यम् वित्र श्री वित्र वित्र श्री त्यम् वित्र श्री त्यम् वित्र श्री त्यम् वित्र वित्र वित्र श्री त्यम् वित्र वित्र श्री त्यम् वित्र वित्र वित्र श्री त्यम् वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र श्री त्यम् वित्र व

यहॅर्न्द्रिंत्याप्त्रियाश्चा यहॅर्न्छ्र श्चेर्या श्चेर्य

वश्यक्षेत्राची निश्चे न्यावित्य ने निर्देश्य निश्चे निश्च

२क्षेत्रायागुदार्श्वरात्री श्रीवयान् श्रीत्रा

क्रिंपात्यःश्चेषाःयाविदेःकःदशःक्तरःयाद्रशःश्चे। श्चितःयरःश्चे श्चेत्रःया क्रिंपात्यःश्चेषाःयाविदेःकःदशःक्तरःयाद्रशःश्चे। श्चितःयरःश्चेःश्चें दशः न्ही:व:नवि:व्यन्निः।

या श्रुवास्त्रि वेशस्त्रेश्चाश्चर्याय्य स्त्रिवास्त्रित् श्चेत्र स्त्रिवास्त्रित् वेशस्त्रेश्च स्त्र स्त्र

पि। नगगाः कें गगवितः यः नहें नः यें नः ग्रेसे अः नहें नः ग्रेसे ने नि श्रेव प्रवस्था से द्राप्त प्रमान हिंदा प्रविष्टिया मुस्य साहे। युवा रहें व्या यी : का वसा वाहे सा वा श्रुवःकैंवाःवःसेदःद्दः। सःधेवा सेवा सेःश्रेदःस्वासःद्वावाःवदेःश्रुः श्रुरवश्यावायाधेवाते। ने रेरामा वत्रिया सेवा मिर्मराप्यो म्वासारेता डेश'मर'श्रुच'होर'ग्री'श्रु'णेद'वेश'मदे'ळंच'हु'श्रेद'र्रा रेर्'डेश'मदे' र्थेव वा या शुःश्वर व या गुनाया धेव दें। | निये र वा धेन वर्धे गा येन प्रदे कुषानिकानन्वाषान्विकासके । (विस्तिन निकास के अर्थेन मन्यायावसुर्वेरावेरायायेत्। न्यवानायायावह्यार्वेरावेरायायेत्। (ब्रूट्र-शर्वेट्र-प्रतुष्ठ) हर्नेदे पर्वेश श्री न वटा टार्विष्ठा पर वर्वे न से विष्ठा राक्ष्य, तुः नृता धेवः नृतः धेनः रादेः नृतः वाद्या नृतः वृत्या छे या रादेः श्रुः श्रु नः रा इस्रथाग्रहान्यायाः क्षेत्रा हु त्युरहो। रहा मु ब्रुवायदे ह्या व्यव्या वेंनिविन्त्रेर्नेन्यायाययार्थेनान् द्वार्ये।

त्री त्रेन् ग्री क्षेत्राञ्चन अस्य न्या स्वर्ध न्या स

ग्राम्भेशस्याद्वीत् स्टानीयायाभेयाद्वीत् न्याद्वीत् व्याद्वीत् व्याद्वीत्वीत् व्याद्वीत् व्याद्वीत्याद्वीत् व्याद्वीत् व्याद्वीत् व्याद्वीत् व्याद्वीत् व्याद्वीत्याद्वीत् व्याद्वीत् व्याद्वीत्याद्वीत् व्याद्वीत् व्याद्वीत्याद्वीत्याद्वीत्याद्वीत्याद्वीत्याद्वीत्याद्वीत्याद्वीत्याद्वीत्याद्वीत्याद्याद्वीत्याद्वीत्याद्याद्वीत्याद्याद्वीत्याद्याद्वीत्याद्याद्वीत्याद्याद्याद्याद्याद्या

त्रोय) विष्यत्रे भेर्ने स्वास्त्र क्षेत्र क्ष

ग्निस'वेद'वे'न्य रद'गेस'नेस'वेद'पदे'र्देद'दे'न्यान्द'यद्व'हद'

वर्षा वेशमान्न वित्र महासे नशायात्र स्था हिता स्वर्धा । वर्षा वेशमान्न वित्र महासे नशायात्र स्था मान्य हिता स्वर्ध स्था

द्ये। इस्राचा व्याक्ष्य वित्राविक्ष स्था स्था विकास स्थित । वित्राविक्ष स्था विकास स्था

भुषः र्रेव ग्री के ग्राम्बद्ध या ग्राम्ब मा स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त प्राप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप र्राने रे वर्ति के ना वयुन पर क्षेत्र प्रवे के ना के नि वर्ते के ना वर्ते के न वर्त्रेयानवे देव किंत्र स्था वर्षे अश्योत् र्शेष्य शाया श्रु र द्रे से द भूषानदेर्नेत्यायह्वापदेरके। यदायानभूषान्देराध्याद्देशाशुःसा नर्हेन्'ग्रम्'भ्वार्थं स्वार्थः स्वार्थं । प्रिम्'न्व श्रम्भेषास्रम्'म् इसराग्रीराक्षियायर सहित। (नेन वेर सावरा नवाव) धेन वर्षेवा स्वा याननशासंदे हेतायश विया (देरान वर इसावर) गर्वेद तुर्नेग्राया न्द्राम्यापकेटानरायाचेट्राचेषा (पार्विद्रात्सुःसेट्र) डेप्नययाचुटाना हेर्र्र्युवासम्वेष (देर्वावासम्भाषम्) त्रुःसर्याप्राचित्रायः नियामार्स्या हेयामार्स्याच्यासर्केताते। हेयावियानियामास्यादमा निया मुलार्श्केलासहें न (ब्रार्सेनासान्देसार्शुः श्रुनार्धेनासार्धे न भन् साश्रुनाग्रहः

भ्रूवार्श्वेवानी देवार्श्वेवायवेर्श्ववेर्श्वे रावावस्थाउदावदेराविवायार्थे। इमार्सि हैं व हो द गी किया इसका है। दरे र वा के सार्सि सकर के। नगा निका न्ययः नुःन्ये (क्रुयः स्वर्यः याश्रयः से) र्ने र्ने स्टः से न्यः श्रवः दे रे स्व (नर्र्सूर्म्यार्थः होर्र्स्यार्सूर्य) शेरदरे हे तर्राष्ट्रम्य स्वार्थः नेवारेर्ध्या विगारेना डेसायाक्षात्रसासर्वेताते। नगार्चेगातुनम्सासर्वेत्रनेग्रस <u> न्ययःवनेनयःग्रीःद्धयःययःथेन्ग्रीःवशुरःननेःयर्केन्युनःग्रहः। धेनाः</u> र्वेगः हुः दगः वीः गर्शेवः दुस्र सः हैः वृः चः चिवः वैवः विवः विवः नगदः चर्या स्रेः सा ग्रेः सा लार्ट्री लायाया लाट्टी हे त्या है स्ट्रेस्सेय राग्नी श्रुपार रुट स्नेय राह्य ग्रीयाश्वराहे द्वाया हैना यह वारा होता है।

<क्षेत्रात्यःन<u>ह</u>्निन्त्रेश्चेत्र्यः न्त्रेत्रः

क्षणामिश्चर्त्वःश्च्रित्रमितःके। क्षणामि त्यानः कुःशःश्वेतः नरः शुः त्योत्यः नः नरः न्द्रितः निर्देशः नशुः दुरः दें।

चेत्रः संग्वाबन्द प्रचेत्रः च वेश्वराक्षः चुर्वे ।

यद्गिर्धाः स्वावन्द्र प्रचेत्रः च वेश्वराक्षः चित्रः स्वावन्द्र स्वा

होत् भें ज्ञान्य स्थान्य स्था

हेत्र गिले निर्दे प्रिये के गिनहेत् गुरे के शिष्ट हेत् गिले निर्मा के प्रियं के गिले निर्मा के प्रियं के शिष्ट मिले के प्रियं के शिष्ट मिले के प्रियं के के प्रियं

यविः के अः श्रु रः प्रदेः के याद्य र याविदेः दर्रे अः रें या र विया यो । द्य र के अः

चलाक्ष्मान्यमा कुः अर्के वन कुः नुर्दे । अ र्हेना न्यमार्थे प्यार्थे हिमान्द्रा क्ष्मा कुः अर्के न्या कुः न्या कुः न्या कुः अर्के न्या कुः न्या कुः अर्के न्या कुः न्या कुः अर्के न्या कुः अर्के न्या कुः न्या कुः अर्के न्या कुः न्या कुः अर्के न्या कुः न्या कुः अर्के न्या कुः न्या कुः अर्के न्या कुः न्या न्या कुः न्या न्या कुः न्या न्या कुः न्या न्या कुः न्या न्य

ने हिन ना कि निया के निया के

थ्या कैयायी श्रेया यही यन्त्र या

श्चार्यात्रात्वेयाची अत्रात्वदे वरातु । यह । यह प्रात्या वर्षे वरात्र हिंद

१ळेंगामी श्रेमामानि प्राप्त स्वीयाम् स्वीयाम् स्वीयाम् स्वीयामा

यहूँ न्या हेता त्र क्षेत्र क्

वशामित्रमार्था स्थाप्तरामहेव। स्नुत्रकासी प्रदानिते सी सी मार्था से प्राप्त हैंग'८८'नहःश्वेंद'वनयाधे'वर्च'नरे'ळगयाय'दे'णट'सूद'ळ'देश्वेंद्रिंगी' वित्याभी मुद्रासे गुद्राहें वा वी वित्या वित्या के ता वी वित्या भी वित्या वित्य श्चेया यावे से त्र पदे भूर क विया पर्र के। देर समुद्र श्चे गुद्र हें या यो ह्या रा विवा के अ गार पेर रे अ। कु अर्द्ध के अर कार पार पे के प्यर सर वी : नर्हेन् ग्रुर्ग्युर्ग्यदे रेग्यान्य रागुत्र ग्री हेर्य युत्र प्रदेश मिलेर ग्रुन यान्यःत्रथा अन्यः क्षेत्रः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः यान्यः याय्यः याय् वज्रवासेन्द्राचात्रसंभित्। डेन्ध्राज्वेतःत्रेषाःचात्रसंग्रीःवर्षःभेसःधेन्द्राने स् नुदे केंग श्रू र ने र खन र रे पेंद रें। शे रे ग्राय मार र पेंद श्रू र किर श्रू र न'य'र्सुग्रायम्बर्मी'क'र्षेन्'हें'ने'न्ग'य'रेग'ग्रम्य'न्यसे कुन्यहेन् सबर विया व किया यी श्रीया यावि सब्दा स हिराय क्षेत्री स्वार्या यी । न्नरमिश्रासेरानम्यास्यास्य स्वार्त् चुराष्य स्वारे स्वीता वावि त्यावसूर नः केवः से से विदुद्धान वे से देवा या नादा वी ग्रावः हैवा वी वर्ते देया वा वर्तु र नः केवः से से दानि नावदः श्री अधिवः है। विषः हैं से दातु। व्रेवः सूना श्रुः युः में दा <u> न्गु कुष्ण मुडे मुरामाबद प्रदेश अर्दे हिंदेदरा या धिमा मुदेश प्रदेश । विश्वा</u> यद्रा ह्या. हुरि दे दे म्याय में द्रा ने या द्रा में या दे में द्रा दे विकास दे वा द

स्याळे र नवा त्याक्ष्या संदे तर्नु क्षे भाग्ने भावती त्याक्षेत्र स्था के र नवा त्याक्ष्य संदे त्या क्षेत्र स्था के र नवा त्याक्ष्य संदे त्या क्षेत्र स्था के र नवा त्या के र नवा व्या के र नवा त्या क

 मन्दर्भात्रम् । याद्रम् । गिविशासा विसाराक्ष्मा यसामारा होत् ग्राटा खुला गर्डे में सार्दे ता प्रते न्नरः वीश व्यानः क्षेत्रः प्रदेशके वा वी क्षेत्रः न्यायदरः न्देशः भुवाशः वारः सुरः ळ्य.री.मु.च्याचे इ.चू.सू.चर.री.सू.चे के.येश.सकूच.वेरा तीया *यात्रद्रायाः सर्वाचेद्रायदे हे सार्शुः द्राया वेद्रायादा हेद्रायद्या शुक्रा होद्राया वसूद्रा* न्वीयायया वियान सर्वेन में प्यान सर्वेन में वियान प्यान क्षेत्र वियान प्रान्ति स्वापित नियान र्श्रमाधीयो प्रदेश सुर्माय । स्वर्म स्वरम स्वर्म स्वरम स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वर्म स्वरम स्वरम स्वरम स्वरम स्वरम स्वरम स्वरम स्वर्म स्वरम स नभूत-र्देत-वानार्रे मवानी-विद्यास्य विद्यास्य वित्यास्य विद्यास्य श्चेगानिवायात्व्यूरान्सेरायात्वे पर्के प्रदेश्वे स्वयं मिस्राम् विश्वास्त्र स्वयं श्चे रान याचेरा बुवा हु चुवारम् राधेव हैं। विक्रैं विदेश विषया विषय सु चुवार विवा धिवाव। श्रुवेश्चे रावायाधिन हेटा। श्रुवेश्चे राश्चियाया श्री समुदाया है। दे वर्ति वर्के निवे में असम्मिन से निवित्त में निवित्त नि र्नेनाः सेनासः न्देसः से न्नाः नीः हिनः केंसः स्नेतः सदेः कें। वेनाः समः न्देसः सः सन्दर्भागाः यार विवा सेवा हुन सून न्या हे स सु हिंद के स ता दुर्द र परे दे स या सून नानवरा वेशनहें नाया भ्रम्य शहें ना भी भारती स्थान स्थान स्थान

र्श्वराग्रहर्केनार्ने।

भूत्रकः व्रेवाः सर्व्याः वर्षः त्रान्यः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षेत्रः ग्रीस्रायम् क्षेत्रप्रमा वेद्रप्रम्य वद्रप्रवस्रायाम् प्येत्रप्यम् से विकाने विका रेगायात्र अर्थो स्र अया की अर्थो अरस्य न सुर्य या हेगा ग्राम्से रा प्रमेरा स्र र्वेन्द्रासर्वे वे त्रान्ये अपस्य धीव ययस्य यने व यान्त्र वसेन्द्र याध्या मश्रीव मत्या ह्व मति नद्य हो दाया हा न्या र दे ने त्या स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य विदा रदारे द्वस्य श्रेष्ट्र राम्य स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत क्रॅ्रेन'राधेन'र्सेन्। थें रुगन्नेर'र्न्न्यरुप्टेन'रादेग्नर्रप्टेन'राक्ष सर्वेदाने। यमामस्यम् होन्यतेन्स्यन्यम् यम् यम् स्राम्यस् गर्हराबेदा अदाळशानहार्रेदायायायशयार्वेदिन्हेवामविवदाअदाळाधेवा मर्या अन्तिकान्दरायमान्त्रमान् ग्रवसःग्री:वर्:नेसःस्रव्यद्भावे:सेन्सःग्रेग्नानी:वरःक्वःग्री:वर्ःवरसः भे तर्नान रंभ प्येत्राची नम्भ संभूति निर्देश न देवे क्रें व क्री अरे ना नव्य श्री में अअ न ने अरद्भ न वय अ क्रें प्रिस मुयाशासद्धरशास्त्रीता दे सम्बन्धरायान्याम्याम्याम् । पर्के प्रति का मुन ८८.तीताः सेट.की.विट.सर.सा.सक्टरमा.की.। सेट.कपु.इ.चपु.स्रीया.याचु. समुद्राचरार्धेर्धिम् भेरिवायार्धे विचायार्धे चात्रस्यया ग्रीयान्नसूर्वा त्रुव र्डं अ प्तरः भ्रम् गाम् प्रश्ने श्री श्री या गावि प्तरः। नश्र अर्हे वे श्री श्री विश्व के श्री श्री या गावि प्रश्ने विश्व के श्री श्री विश्व के श्री

१क्षेत्रा'ती श्चेत्रा'ताबिदे स्याग्रह्या र्या र्या र्या र्या र्या

नदेःश्चेमामिवेगिहेशःशुःदर्नार्मा देःष्यम्भेम्भो होः इमार्षेम्श्राणेशः क्र अद्या पुरा क्षेत्र प्राचित्र अद्या व्याया वित्र स्वा वित्र स्वा वित्र स्वा वित्र स्वा वित्र स्वा वित्र स्व वयायः विवाप्यवायां विद्यार् यावयाः याव स्था याव स्थान म्राम्यायर्वेराम्बियाळे विदा यदायमा तृ मुनायये रेम्यायाया मार्या स्थान उद्यानियायम् सेर्प्यास्य यदिराक्षियायी स्वीयायिदिरे देसायायायह्या नशेयानम् मुः हे। हिन्यवि नहेंन्यि सेरा (n1) न्या देशम बुर्योः भेर (n2) वास्त्रविः भुन्दा (n) । ज्ञान निर्मा प्रदेशिया (v1) न्या जिन केंशनहें न्राये केंद्र (v2) | ग्राया हो न्रायी केंद्र (v3) | हेंग्राया केंप्र (v4) नडर्भाषाम्बर्धान्ते नुभू (v) नृत्य म्यास्थामा निर्देश (A1) नृत्य

हत्ते श्वाया क्षेत्रा श्वर्त्तर हो त्या वार्या या या या श्वर्त्त श्वर्त श्वर्त्त श्वर्त श्वर्त्त श्वर्त श्वर्त्त श्वर्त श्वर्त्त श्वर्त्त श्वर्त श्वर्त श्वर्य श्वर्य श्वर्य श्वर्य श्वर्त श्वर्त्त श्वर्त्त श्व

तर्ने से न्या सर्वेद से जिस्रा की स्वा की स्वा की स्वा की स्व की

वै.श्रट्रेयातकीयो के.ये.लुय्यायो ट्र्यूयायायो क्रिय्यायायाय्य क्रिय्ये क्रिय्यायाय्य क्रिय्ये क्रिय्यायाय्य क्रिय्याय्य क्रिय्याय्य क्रिय्याय्य क्रिय्याय्य क्रिय्याय्य क्रिय्याय्य क्रिय्य क्रिये क्रिय्य क्रिये क्रिये

मि इन्तरे श्वायाय वेया श्वान्तरे या हैं नाया छेना श्वान्त । श्वान्य । श्वाव्य । श्वाय्य । श्वाय । श्वाय्य । श्वाय । श्वाय्य । श्वाय्य । श्वाय्य । श्वाय्य । श्वाय्य । श्वाय्य । श्वय्य । श्व

वर्देर-द्रशे-देश-विवा-वर्वा

म्हानि श्वाप्त में प्राप्त निया क्ष्य होते श्वाप्त क्ष्य होते स्वाप्त क्ष्य होते श्वाप्त होते श

रा इति श्वापाद श्वराष्ट्र स्वरूपाद श्वरादेश स्वर्धि स्वर्य स्वर्धि स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्

वर्देर-द्ये-देश-विगावर्ग

लर.रेट.इ.यह.श्रुचा.वाबु.ज.वश्रुच.य.श्रुट.ट्री

| | • • | , ,, |
|----------------|----------------|---------------|
| ≆.चदु.श्रेN | ळेंग'स्ट P | ন্মন্ট্র-শূর্ |
| শ্ভর'শ্বর | DA | AN |
| র্র.খা | 31 | छेना |
| ब्रेन्य | ব্য | মক্তিমা |
| क्रें कुन | ত্য | 275 |
| क्रेशःयाशुस्रा | वा | वेनग |
| ~ | | |
| विः देव | 21 | Z NI |
| ব্যসামা | ত্ত্বা অশ্ব | ral grai |
| • • | • | |
| অন্য'না | থি শা | নুদ্ৰা |

कुः अळ्दा पदे पद्दे प्रद्ये प

इन्देश्वायाम्बयाचे द्राची श्वास्त्र प्राप्त (s=n+v) दे।

दक्षेत्राचर्रेशस्त्रेत्रःग्रीष्ट्रदःकेश्यन्त्रःग

र्वे न अप कि ना ने श्री ना ना नि त्या ने त्या ने त्या ने त्या ने त्या नि त्या ने त्या

यायमानानियायार्डे में धेवायार्ममान्यायात्वामानियामाने यदेर्न्य स्वरं श्री किया यो श्रीया याविदे कः निया शुःशुर् स्वरं किया श्रद्राया इया न्वे अप्येव प्रते केवा सन् वावव से प्रमा विद्या विद ब्रन्षेत्रः षट के शामित्र शर्भे श्रीत्र म्यास्य प्रतिन होन् हो न् सामा स्वास र्वि'त'स' बर'र्देव'गवत क्षेत्र' पवर'वरेर क्षेग'गविवे क्रेत्र'र्र्स सुरा क्षेत्राची श्रू राजापायमा इसा न् होते खनाया न स्वा हे ता ने त्यमा ग्राम क्षेत्रा मी श्रुरित्र श्रु त्यात्र्यायादा के विदानुत्र वयसान्त्र है या ग्री सेदार्से म्याया न्वारास्यायाहेरावार्षे नया इयार् हेरे के वासरावारे वासा बेर्यने के नानी क्षेत्रा निवार धेर्य में निवार के रामें निवार के रामें में स्थार है निवार के रामें में स्थार है निवार के रामें के रामें के रामें से स्थार है निवार के रामे से स्थार है निवार के रामें से स्थार है निवार के रामें से स्थार है निवार के रामें स्थार है निवार के रामें स्थार है निवार के रामें से स्थार है निवार है निवार है निवार के रामें से स्थार है निवार दशपदेशपदि कुः सॅ विवाप्पॅर्पायावासे र क्षे : हिवा हे र न्धेन्'ग्रे'कुष'र्सेदे'सु'न्युर्यायय) हेयाया यग्राम्थेयास्वायाधेवा डेशन्ता मुर्से विवार्षेन्याया हीता डेशमित केवा विश्व नहीशमाधित या देवे:क्र-वशःश्री सूर-वशःवहेशःया वेशःयःदर्ग गर्शर-वेशःयःदेवः ग्री:भ्रम्यश्रम्भूम:श्रूम:श्रूम:प्रदे:प्यम्।प्रग्रम:प्रम्यः प्रम्यः स्थितः श्रूषे:श्रम्।ग्रीशः ग्रयान्य वार्वित्र वार्वित्य क्षेत्र मित्र वार्वित्य क्षेत्र विवास विवास

वित्यावाश्यावात् द्वरावी खर् प्रता खर् को वहोवा सुदे खर् है स्मान्य देव म्राया मित्र मित्र मुन्दिन । इस्य नि मुन्दिन मित्र होत्के हान परिवापी यात्र अदे में हिया हे अहसात् सेना स्थित सम श्चिनापटार्नु ह्वा हुर्श्वन श्चिटा वर्षे नश्चन्य वाहेर वर्षा वाहेर द्वा शु नु: नृदा वावि: वावेवा: वी: क्षेट: वी: चु: व: दु: क: क्षेत्र व: चु: व: दे: नृवा: वावेवा: हु: नसुः भ्रे. रु. द्या अयार नशायया हुः सुः रे वियाश हे वयाश या श्रेटा व्राथश ञ्च्या नश्रश्र न्या प्रश्रा नश्रुव नर्डे श न्या एश न हुश हे क्रिंच सर प्रकर् डेशन्स्राच्या अत्या अव्यान्य स्ट्रिंद्राचा क्ष्मा किया वी स्ट्रिंद्राचा केया वी स्ट्रिंद्राचा केया वी स्ट्रिंद्राची स्ट्रिंद्र्राची स्ट्रिंद्र्याची स्ट्रिंद्र्राची स्ट्रिंद्र्राच वट्टिश्चिमामानिट्ट्रासार्येट्ट्रायदेने वे किमामी नश्चेश स्वेत्र गुः ख्यापी वर्षे । यदा नद्याकेदाळे दारी देश क्रिटा देश विवाद शर्वेदा हिरा है स थ्व-५८-५ेवे-५नुअ-व-ग्रुट-कुन-भेसअ-५मव-भेसअ-५मव-केव-में-केंग-वसन्य अ.भ्रे. मृतुः क्ष्य अ.च मि. र्सूट. र्. अ.ज.जे च अ.सर. वर्ट्स अअ.स. अर्हेट. नर्गुर्हे ।(ह्नारुर्देश्हेंग्रायार्ट्रियाया) वेयायदरळ व्याप्टेंचे न्याः क्रुश्रास्य श्रुश्रास्य केया सेटार्से विया प्येत है। ने दी नन्या हेटा केता नन्गिकेन के तर्रो ने शकें शायसम्बर्ध में ने दि के माश्राय दिने स्थाय सर्वे दा

सद्ता ने त्याचर्ष्यात्र स्वास्त्र वाया केता मिराचाया स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त स्वास्त्र स्वा

कैंग्। शुर-त्र-त्र्नु-अर-तेंर-श्चेत्र-प्र-दि-। कैंग्-रेर-तें-त्र्नु-छुर-ह्र-र त्रशु-तते कुंत्य-द्रशे-रेश-शु-तर्गे द्रन्दि-शु-श्चे।

(4-1)

द्रोक्त्रेशःश्चीः अदः श्रद्रभा

(4-2)

वीवर्षास्त्रां स्ट्रां श्री वा या विदेष्ण स्त्राया स्त्री स्त्रां स्त्रा स्त्री स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स् यावर्षा स्त्रा स्त सबरःश्वरः त्यां स्रवे स्रो देवा ने कि नःश्वे तुः स्रो नः स्रा यह नः त्यां या व्या स्रवः स्रो त्या स्रवः स्रवः

(4-3)

(4-4)

गणुयः रुषः श्रें ग्राणः श्रितः प्रसः श्रें वः प्रदेश्च (n) धेः श्रें वः यः श्रुतः प्रदेश्च (n) धेः श्रें वः यः श्रुतः यः

नर्गेन्यः विवाहः सहे सामान्यः स्वाधितः श्रेसः स्वाधितः स

८८.सूर.क.मुट.तीयाता.भी.सूर्य २ श्री.सूर्य अस्टर्या.सूर्य (धूर.

বর্ব:বী:কুম:র্ব্র:থ্র্য)

त्र्वायाः तुः र्रेग्यराः संस्था अक्षराः ते विष्ठि विष्ठि । (वुः अम्बेतः र्रे्वः त्रुः विरेटें क्षियाः विरेटें विश्वाये विष्ठेतः विश्वाये विष्ठेतः विश्वयो विष्ठेतः विश्वयो विष्ठेतः विश्वयो विष्ठेतः विश्वयो विष्ठेतः विश्वयो विष्ठेतः विष्ठेते विष्रेते विष्ठेते विष् णुयाम् छायद्देवायाने । ज्याने स्थान सक्षेत्र स्थान स्

त्त्रायमाञ्चेरायम्यायीः देशस्यायायीयः स्वेरो । विद्रात्यमाञ्चेरायम्यायीः देशस्यायायीयः स्वेरो स्वायम्यायः स्वेर्

नर्वेद्यः त्रुग् गे 'र्दे श्चे 'यद ग्राश्वसः त्रुं प्रतः श्चेदः श्चेदः श्चेदः श्चेदः श्चेदः श्चेदः श्चेदः श्चेद

यद्या उ.लागा-र-पर्वे अ.श्वे र.पटु.सर.यर.श्या अ.ग्री अ.श्वे ल.ध्रा । व्यापा-याव्य) क्षे.य.श्रे वाराव्य प्राप्त अ.श्वे र.पटु.सर.यर.श्या अ.यं श्वे र.पटु.सर.यर्थ वाराव्य वाराव्

इमाया कैमासून्यभून्य।

क्रिनाची क्र-निश्च हैं द्रिन् नसू क्रुं व निरुष्णे व स्थान स्थान

१र्ने ५ अ५ के वा सूर् छै । वर्षु ६ । वर्ष ६ अ व्या न् सूर् ।

ने स् नेंद्र ग्रे नम् र्रेंद्र पदे नस्त्र नर्डे श शु कें ना स्ट्र ग्रे त्र यावना नःश्रेमश्राधेवःविदा नेष्पदःकुःगरःश्रेःश्रुःगवुदःनगःहःनगेन्धःहःश्रुःनः क्रेंत्र्र् येग्राश्चराग्चेर्यं क्रिंग्स्र्र्य्यायी त्राव्यायी स्त्राया स्र गर्नेगर्भागवित्रः इस्र अभितः भूतः यद्रः है निवेतः प्रित्। १८डेर्भाग्रह्मर नशःह्रेवाशःनिदा नश्चरशः उवःश्चासद्दा ने वशः क्षेत्राः श्वरः श्चेः कर्षः न-१८ नर्ग न्या है। दे प्यट इस द्वे से न्या स्व क्र न्या स्व नः इसमः कुरः ५ रः नर्भाः हे । नर्भेरः हे पः वे किया सूर् छे मः जुर्दे। विरः इसमः ग्री स्व रहें व न रूप न र्या प्र निव रवाय न स से व रवि से द से व रहे न र यानिक्रेश्राश्रयाश्रयात्राश्रयात्राश्रयात्राचित्र्यात्राहेराष्ट्राच्यात्र होर्स्यात्र होर्स्यात्र होर्स्यात्र नसूर्यायराळेगायव र्द्ध्व सायबेलान इस्रया ग्रेगा हु गा विदाळेगा श्चिर् न्या स्वार्ध न्या स्वार्थ न्या स्वार्य स्वार्थ न्या स्वार्थ न्

१र्भेरमी नमुः र्ख्यान १८ म

क्ष-भ्रान्ति नियः द्वा नियः क्षेत्र क

ळ्याची स्नान्य स्वान्य स्वान्य क्ष्या क्ष्याची स्वान्य स्वान्

कःन्यास्याम् निर्मानिष्याम् वर्षे विष्या वर्षे व्यवदार्मे मध्यम् मी कः नियास्य स्टिन् के ता सुना महिसारी क्रिंटा में दिया गणेराम विनःक वृत्तुर्दा कः निमः स्यामिर्डं निवे सेटावर्मामा देवा यावशा नेशरता वे यावशा भ्रमा अर्थेता निधित्र शा क्रियापना क्षेत्रिः नशुःर्द्धवानिहेर्धिर्दे। श्राम्ययाक्षेत्रार्मेन्यान्त्रान्त्राक्षेत्राक्षेत्रा मुन्यम्बर्ध्यास्य क्रियाः वा मुन्य श्रीता यहिम श्रीता यहिम श्रीता यहिम स्मिता क् क्वां नायो र ना श्रम विन प्रतिया क्षेत्र प्रता विष्य प्रमानी क निय हैट क्ष्र-दिराध्याळेगाचा क्वें-देवहिंगा-नेया वे ख्र्वाहेंव-दिंदा रट क्या हा तुरःनसूर्याप्यानसूरगुरे सेटा घट्टा पाट्टा से पद्यान से सेटा पर्वा साध्य । यार र विया पर् हो र पा वे से र यो शुर ख्या हो से या साम विया हु शुर री |भेव'व'भरा। देव'श्व'शे'शेर'श्र्यते'शे'लेग्रांशे क्रेव'दे'वे'नदग'रें। क्रॅन हो न हो भी भी न न न क्रु से रुट न म न न न नि है न हो हो न न म न

देशःवेशःमाश्रयः नरः वर्देरः नरः वृद्या

कःन्याधुःसाम्हिं नदे सेटामी नसुः ख्या दे यददः महिसाही आ बरा लासा लासा लासी के.ये.कं.मेचालाक्री मानामा विद्यानामा न्वीं शत्रा न्वें देव विनः पार्देश क्या श्रेन् पार्टिया हु से या देश विशान्ता स सर्भानुः सें सासहया पुत्रः देटा सेंदा वेशाद्दा धेटानर धिः विसार्ये द् छीः सन्नान्ता वेशामाक्षात्रभासकेंत्रिन्धासानस्याग्रमाधीःसानेन्गीया र्देवःकःकंदःनरःश्रृवःवेष्वा विषविष्वावेष द्रमणःवर्श्वेदा कराश्रेदा वर्षायः यान्याश वयाहे। में ख़ुर्या वियाहा क्षुःतुःन्यायीयम् र्नेत् श्रीःयावन् के साकः न्यान्नी स्रीत्र स्रोत्ता श्रीत्र प्रमा श्रीत्र प्रमाना स्रामाना स न्दासी समुद्रायान्या हार्वेदा हेला ने दाना नुमाना सके मा सुद्रा नु क्ष्यामें रामें वरिंदि है मेर पुषा दुषा वेरा पा क्षु मुं सेर पर्म राम पर्म में मारा ग्री:कःन्यास्यानस्यात्र्यात्रीःसार्याः न्याव्याः मी

य्राची क्र. प्रमानी क्र. प्रमानी चित्रा के पात क्षेत्र क्षेत्

चाल्वन प्यता क्षें त्रा क्षें त्राणा अता क्षें त्राणा क्षें त्राणा चाल्वन प्रता क्षें त्राणा क्राणा क्षें त्राणा क्षें त्राणा क्षें त्राणा क्षें त्राणा क्षें त्

 मिश्चित्राम्यावित्रायात्रम् । विकायात्रीत्। । व्याप्तियावित्रायात्रम् । विकायात्रम् । विकायत्रम् । विकायत्रम् । विकायत्रम् । विकायत्रम् । विकायत्रम् । विका

देशेट वी केंग्रायदे न सुक्षिय न १८ म

श्रेट्ट, श्रश्नायद्वी, श्रिश्चाय्वी, क्ष्यायी, क्ष्याश्ची, श्रीयायी क्ष्यायी, श्रीयायी क्ष्यायी, श्रीयायी क्ष्यायी क्षयायी क्ष्यायी क्षयी क्ष्यायी क्ष्यायी क्ष्यायी क्षयी क्ष्यायी क्ष्यायी क्ष्यायी क्ष्यायी क्

क्षेत्राः तुः त्रश्रू अः सरः तहेत् क्षित्राः त्रीः त्रश्रू व्याः त्रीः त्रश्रू व्याः त्रीः त्रश्रू व्याः त्रीः व्याः विष्ण विष्ण विष्ण विराद्याः विषणः विष्णः विषणः विष

हिर्यावि र्राहरि के अयावि अश्वास्य स्या हिर्यस्य ही यावि <u> ५८.५५७ वि. क्ष्रिं अ. क्ष्रें च. त्र के क्ष्रिं २. क्षेट्र के त्र के त्र के त्र के त्र के त्र के त्र के त्र</u> के त्र क्रिंत्र सं विश्व प्राप्त व्यक्ष क्रिंत्र यादश में प्राप्त स्विश्व प्राप्त प्राप्त विश्व प्र विश्व प्राप्त विश्व प्र विश्व प्राप्त विश्व प्र विश्व प्राप्त विश्व प्राप्त विश्व प्र विश्व प्राप्त विश्व प्र विश्व वनारिटानायावनारिटा न्वीतिमयाक्तेनायानीते के वियासमानसूत्रा यरसाबन्। विन्रकें राग्ने सेन्या विवेर कें त्राया श्रुर के प्रवेष श्रुरा श्रुरा ग्वर्पिरेरे व्यारे ग्वर्प वेशान्स्या के । विद्राके या विद्राविद्राविदे । मुक्षासुपद्रेव पार्व सळस्र सर्भे रायदे स्वर यस्य पदि यावर पार्व पार्व रा श्रुवे श्रु र न वर्ने रेगा य न स्या ने त रावे के से द मी के गया पवे निर्देश विगान्सासीरायन्सासराम्यानायान्याया । यदीःयायसायहिनामीः नसूःनः वेशमन्दर्धिन्द्री।

यावि प्रम्यान् स्थान् । याद्या स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य । याद्या स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य । याद्या स्थान्य स्था

त्रभुः तःश्रे स्तर्ते त्रदः ते स्थेर त्र्यं स्थानिक स्तर्ते । स्ति स्थानिक स्

श्रेरःशृष्ठेते नरःश्रे क्या न् श्रेष्ट्रा न् भूतःश्रेष्ट्रा स्त्रा स्त्र न्दःक्षेषाःषःक्षःन्त्रेःश्चेरःश्चेरःश्चेरःश्चेरःश्चेरःष्ठेन्यायःर्षेन्यन्दा क्षःन्त्रेःश्चरः मायवदान्हें निर्मे निर्मे अपन्य निर्मे अपन्य सुर्मे सुरासी सुरामि से भागा थिन यथा व्रट् में नह क्रिट क्रिया प्रदे क्रिय वर्षे वा वर्षे वर्षे वा वर्षे वर्षे वा वर्षे वर् यायार्नेवार्येन् सेन्निन्। यार्नेवारीः सुन्यसुर्केनाः से रकेना रेन् सून्रीः में अर्थानिकायान्त्रहुत्र नर्वे राधा विचायशा धिचा अधिव इसर्था ग्रीराचार ननेर ग्रेन केंगा य विगा भेता ११ वे भागशुर भाग के त्या देता कि तर आ जन ग्री:इस्रान्ते निसु:र्द्धवार्श्वे वाष्ट्रनायदे वेनास्य निन्, विन् धरर्रुः कें वार्देव वीद देवा वी वस्रवर्देव वा वार्ष्ट्र राष्ट्र या से प्राप्त से वा स्याद्ये नसूर्याप्यार्ने व रहे प्रशुर्र क से प्रकंपा नया भीव रहा वा वन पर हार्दे। इस्रान्त्रे पाहेश्यायस्य व्यास्य व्यास्य व्यास्य विष्टित्र विष्टित्य विष्टित्र विष्टित्य विष्टित्र विष्टित्र विष्टित्र विष्टित्र विष्टित्य विष्टित्र विष्टित्र विष्टित्य विष्टित्र विष्टित्र विष्टित्र विष्टित्र विष्टित

क्यान्त्रे न्यु स्वान्त्र स्वान्त्र

द्यान्तवी निवास्त्र निवास क्षेत्र क

स्थ्यान्त्रुं भ्रे न्त्रं । ।

इस्रान्तुं भ्रान्त्र् । ।

इस्रान्तुं भ्रान्त्र् । ।

दस्रान्तुं भ्रान्त्र् । वस्रान्यस्य । वस्य । वस्रान्यस्य । वस्य । वस्य

द्यान् निर्मान्य निरम्य निर्मान्य निरम्य न

 नव्यायाया क्षुन्दे से दायो से व्यायाय प्राप्त के वा प्रस्था विष्

कें भ्रम्यानश्चा १ अर्द्य भ्रम्य श्रेष्ठ प्रति श्रेष्ठ प्रति ।

देव श्रेष्ठ प्रति श्रेष्ठ प्रति श्रेष्ठ श्रेष

इस्रान्त्रे माठेगा हु इस्रान्त्रे स्था इस्र रान्स्र रामे वित्र अन्यानिष्यान्ति सन्दर्भात् सम्यान्य सम्बन्धाः सम्यान्त्र सम्यान्त्र सम्यान्त्र सम्यान्त्र सम्यान्त्र सम्यान्त्र यावि: नु: सर: हिन् कें संवद: नः वाडेवा: ध्व: पवस। होन् : पं से : से : वद: नः ववा सः ठु:न:वर्रानाविवाः श्रुनःमः श्रीवाश्रावाः इसान् होः रे:रे:नविवःसः श्रुरः ग्राटः। यर में निश्च न प्रेम मा यह या मुया मुया न मा स्था मुया न मा स्था मुया न स्था मुया मुया न स्था न स्था न स्था मुया न स्था न इसरान्ता भ्रान्ता क्षेत्रा भ्रान्ता भ्रायाधीताना दे वर्षायदे वहेता हेव'णे'र्रम्भाने। नर्डेस'यूव'य्रम्भ'ग्रीभ'ग्रासुर्भ'रा'य'सर्देव'यर'नर्द्धेर' र्ने । (नेर:श्रेट:प्यर्ग) श्रे:र्ने:म्व:दर:पार्वेव:प्यर:द्ये:क:र्ग्येगहे:ब्र:भूर: सदे सूर न रन हु न स्वा सर्व कुन सूर सूर सूर गुव ल हैं र शेर मिरसा क्ष.युद्।।

<क्षेत्राची नशुः कुंत्य नश्ना

য়ৢन्-ळिते मात्र अञ्चन्न स्व ने स्व न

र्श्नायद्वार्या में स्वार्थिया में स्वार्थिया स्वर्थिया स्वार्थिया स्वर्येया स्वार्थिया स्वार्थिया स्वार्थिया स्वार्थिया मदे क न्यान्या श्री अर निहें न प्रतिया श्री अर्थी स्थाय दिया श्री अर्था स्थाय दिया श्री अर्था स्थाय दिया स्थाय वश्रासर ग्रुमाने भ्री स्रोत भ्रूनमा स्रुप्त स्रुमाना स्रे दिने रात्र वि भ्रिट निर्देश वर्षेर-१८ नडरामा सर्के निया वर्षेत्र विदा वर्षेत्र में ने प्येत्र मुंगीर हैं नशुःनरः सेनशः हे 'वे 'हर्दे 'हुंदः दूदः सहय। (-) सगः परे 'हुंवः ग्रेशः वनशः र्नेगाः सहित्। (-) क्रुयः विनः क्रेवः सेवेः में शः नहः क्रुवः कः सुनाः श्रेयः र्शेवाश्राणवाः वेदाव बदावा अर्षेदाव शादे वुदा बदा कं वर कुरा (बदा भेवाः ग्रथरः हेट व्यथः गुर्नि वित्रेत्र केत्र स्वि श्रीत् ख्राया हे अर स्वि किंगा श्री स न्वायी अन्य शुः विः श्रॅम्य वर्ष्य व्याप्य वर्षः विश्व म्रास्य श्रास्य वर्षे न्या स्थाय श्यिते नहें न त्रोय की श्वा श्वा श्वा न न न हों न न न हैं व के का न श्वा व श्वा व श्वा व श्वा व श्वा व श्वा व श नर्। । नग्रम्थायम् नम् वाराम्यायम् । । भ्रेगाः स्थार्थे नः स्वायाः चतेःर्से । क्रुटः वीशः क्षं वार्ट्रः उदायः वश्या । (क्रुयः द्वटः स्थानश्र) वेशः यदे केंग्र न उर् वरेदे में मा सर सुर यदे सु द दें विश्व यदे मा सव हो र ग्रे.श्रे.श्रे.श.र्या.ज.रर्ट्श.श्रे.श.श्रेर.तर.यर्थश.ग्रेट.यीय.ज.त्य.य्रे.यं.ये

त्री.सर.पर्वीर.पर्वीर.व्योत्र.क्रीश्राचर्त्रेश्वा क्ष्मा.त्री.पर्वेश्वाचि स्तर्य.क्ष्मे स्तर्य.कष्मे स्तर्य

त्रीट्र्यू व्यक्ति । श्राप्त क्षेत्र श्रीट्र्य व्यक्ति श्रीट्र्यू व्यक्ति श्रीट्र्यू व्यक्ति श्रीट्र्यू व्यक्ति श्रीट्र्यू व्यक्ति श्रीट्र्यू व्यक्ति व्यक्ति

नत्त्रमा क्षेपायी नश्रूत देत् नश्रूत भा

श्री वित्यात्र वित्यात्र वित्या वित्य

डेशनसूत्रप्रस्य धेर्मेष्ट्रश्राचयश्चीत्। सेटप्र्रश्राचयश्चीम् वुरावर्षा क्षेत्राची वसून र्नेन ने से रातु सरार वाया सराय का संदे रेन ही ने भिव वस विवा ने वि सेव है। से द वे कि माय्युन हो न शे कु भिव भरा क्षेमानी शर्ने व नार क्षेव पादी प्रमुन कु वि वर नहेव पाय पीव पर पर प्र ळ-५-अ-वर्ग्यायायाय द्वीयाते। मिर्म्यय या वृत्य वेयाया सुन्त्र म्वरास्त्रेन्या वेयापदे में नावियाप्ता मिं यानस्मायायाया न्सूरसेन्या वृत्रा वियासदे में कु विवादना सेन्या कु दे दर्स्या में वि रद्येनशः गुद्रा वेशः श्रेरः नहरं नेशः में नः वेना नठशः नुः सः पेद्रा कैया या है या यी शर्यों या हो यह या नुस्त या निव्य है या विव्य वश्वन हो न ग्री और अँ दे न सूत में त रे अ ग्राम किया मे व में दे में न परे धेव देश थे श्वरायदर खेंद्र या वादेव अशा वेश यदे वादेव दे त्रुट वे ८८। भ्रे.वे.र्याया.संव.भ्रा अवे.यजव.यंत्र.ह्य.लेव.लटा क्र्या.रंवे.यंभ्रव. र्देव सेट दे ना शुस्र ही 'वर् सा ग्री में ना दे सेव संदे ही र दा केंगा में नक्ष्र र्देव के पीव मान्य नश्रव श्री श्रीम्य पुरस्य वय प्रध्य प्रवेश स्थित

१वज्ञन हो न् शो शेर मी हिन मर त्यन् हान मा

श्रेट्रायायर्श्यायश्राक्षेत्राः युवा हेशायाः क्षेत्रः क्षेत्राः सुवा होता स्रेताः धेव प्रमा भेट में दि से प्रदानमा के ना नी नमूव दिवाया भुनामा होवा वेनसम्मान्त्रसम्बद्धाः इस्त्रम् इस्त्रम् विस्त्रम् विस्त्रम् विस्त्रम् डेश'रा'वे' ग्रेन्'रा'र्से मावव'ग्रीश'ग्रुश'राये'ग्रु'न'र्थे' श्रु'न्न'। अ'वे' वेन्यार्थेन्य विश्वास्य क्षुत्र वेन्यी वेन्यु वेन्यु वेत्य विन्य विश्वास्य विन्य विन्य विन्य विन्य विन्य विन्य क्रियाः शृ. यो है रागविद्या हो द्वार्थां यो विद्या यो वि यदा रद्रामें बिशा होद्राम में श्रुवा होदा ही से से सक्दर साम में त ग्रीभा क्षेत्रास्यस्य ग्रीदारास्य द्वारा नित्रा ग्रीदारास्त्र विद्या क्षेत्रा भ्रीत स्थाने न्याने विष्ट्रे हुं हुं ने वावन विवानी या ग्रामाने ना हिना या हिना गिरेशागिये नमून देन त्या छ्रा स्मार केता से जुरान प्रा द्यो स्मार श्रीशा गश्र-१८। र्गे म्व ग्रेश वेश वेश प्रम् क्ष्म श्रेष्म श्रेश ग्रिश ग्रेश र् म्बर्षियायात्रे होत्यार्थात्ता होयावेयायाहोत्सु ध्वेतायागुराद्वया अर्द्ध्र अः ग्राम् व्यान क्षेत्र प्रति श्वाम श्वाम श्वाम विश्वाम विश्वाम श्वाम नश्रव देव मन्दर्भ दे द्वार में भा के मार्श से दे नश्रव देव प्या मन्दर्भ से देव प्या प्राप्त से प शुर्रो । शुः यहंदरेवे सेव शोया हिंगा गे श्वेग रेय परा हिंग श्वर शे

र्श्वेर-र्ख्या गद्रम्यःग्री-सर्वेर्म्यद-र्यग्यायःकःनुःसन्यःसर्द्धम्यःग्रहः। क्षेत्राःश्रॅ श्रेंदे त्यु न हो न हो से दार्चे से न हे साम है साम नमून दें त प्यार स्वय के र मान्द्र प्येत हैं। विदेश स्वय के र मेर दें त है। र्देव मार्रमा सेट मी 'इस मार्य श्वाद्य मार्थ द्वीय प्राप्त में प्राप्त में मार्थ हो से प्राप्त में मार्थ म ग्रेन्गी सूर न वर्षे या है सदे सूर न वर्षे या वेश सदे केंग न्या प्या सूर नन्न वर्षेत्रावेत्रामित्र मुन्तिमित्र मित्रामित्र मात्र वा मुन्त्र मित्र व। हेव चेन निर्देश्या ग्रीनिर देश्याहेश वर्षा मुर्थि यो स्वर हिर निर हु क्रिया श्वेष्य प्राप्त प्रमास के नामी महत में नामि ना हिना है ना हिना है। श्रूरःश्रे। वेत्रचेत्रत्रं अयावेश्यः द्वायाच्याः अत्या स्थायात्र्यः यात्र्यः या निवन्त्र वे निर्मा मिक्रिया मिक्रिय मिक्रिया मिक्रिय मिक्रि नेरामा अनियायमें ते स्मार्थिय समार्थिय स रायद्याळग्रुः द्रा अवराग्र्य अथे अथे अदे अद्ये चु न्या राविया हु चु द्रारा र्सेनास से द मारे ना त्य 'दें त मी 'में 'म' द स्था धें द 'म से मारें त 'म सूर ' वर्ते है। वैदिनी कैंग दे नाडेग सुर वद्य कन्य सुर अ सूर अ सूर अ सह्या वेशन्ता संत्री सेत्राक्षेत्रा अह्या वेशन्ता स्टा स्टा स्टा वर्त्राचिर्यंत्रे सेत्र स्मार्थ्य स्मार्थ्य स्मार्थित विश्वास्त्रे स्मार्थित विश्वास्त्र स्मार्थित विश्वास्त्र क्ष्रनुते भ्रम्भन्य न्दर्स्य हो। क्षेत्रा न्दर्भित्रा वी देव वि व न्या नि व न्या नि व न्या नि व नि व नि व नि व द्वास्तर्यान्तर्वास्त्रस्य विश्वस्तर्याः स्त्रस्य स्तर्य स्त्रस्य स्तर्य स्त्रस्य स

१ बीट सृष्टी दे भें दियाया न्युन मा

धेः सम्राह्म अदेः स्वाप्त्रां यह वाः हु। से द्रा वोः वोः हस्याः ग्राटः वीः देशः स्वाप्त्रां स्वाप्तः स्वापतः स्वाप्तः स्वापतः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वापतः स्व

श्रेट्स् सेते में दिया नश्चुर्स्य रहा निविद्या सेता से स्थान से स्थान से स्थान से स्थान से स्थान से स्थान से स शेष्ट्यन्यस्श्रुर्ध्याः केषाः वीष्ट्रवः देवः व्यन्तिः वश्रुर्याः हः कुः कुषाः न्ना कुः इन् मुना देशायमा इन् कुनि कम् कुः इन् कु कुः सुना हिनः रानाकुं भीरामी खु। विशासदे छुदे हो न्या हे या मी से रान्रा छु हा है। कुवे त्रुगा र्श्वेन शहरे शेट धेव प्रशा हमें भाषा वुट प्रवे कु कु गा ठेश प न्दा कुःश्वेन्द्रः अः शेःश्वेन्दान्द्रः कुषाः ठेशः प्रदेः नेवः शेः प्रदः नः प्रिशः श्वेनः नः यथा श्रायत्हेना हेत सूर र्षया ५८ समुत्राया भ्री साम्मी या सूर्या मः भेवःवा ने भः नुते न नि न् द्वार भेनः मार्थः हैं में मार्थः न नि मार्थः न न न हीरायात्र। सःस्रीया के कुरा कुया र्सेया र्वेराख्या हेशाया स्थ्या विवा ह्रवः ने अः रवः वश्चवः यः रेगाय। वः शें र्वे रः ग्री अः के वः त्वा विषः विषः हिन्यर त्वायाययाया । विगुर वदर घन् प्येत वेया गुरुरया । १३ वेश परि रेश प्राप्त स्वापायि से परि से प्राप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत रेसायगुरार्धेगारु श्रुराळे। यातु प्येतादरा तु याप्येता वेशायदे किया मिहेशम्बुनम्बर्धा सन्दर्भुः धेव लेशमन्द्र। तुःदे सः धेव लेशमि नश्रवः देवः शे. ५५ : ना है श : द तु द ना हे ना हे ने : से : या श्रुवे : श्रुव श रेप्तरा श्रुराख्यायारेप्याची रेयारेया थ्रवाबिया विपालित प्रया याया है। येरा

वी सृ द्विते वी देश भ्रेवा सूर राष्ट्र स्त्रवरा त्रवा की वस्त्र द्विते देत की पूर्व राष्ट्र यानिक्रात्नावान् नाराविनानिह्नात्रीत्रीत्रिन्ते क्षेत्र श्रुनायास्य विंगसूनराहेरात्रः र्सेंत्रः केत्राचे प्रमुद्दा हेत्रः के नर्या सेटा में में देसाया दतः हर्ना हुन्या द्वारा श्रेटाची में देश श्रेप्त प्राप्त मुन्दे स्वरंद्र ययर वित्र दे। दशद्य में नश्य द्रा द्र्य में द्रश्य श्रम् हे श्रम क्षु तुश सर्वेदाने। इसन्छेन्दरकेनास्न ग्रीन्स्य केनानी कः वस्य स्रि रेससीय प्राप्त देव विद्या ने प्राप्त के में ने प्राप्त के माने पारे राष्ट्रिय है। वेशमित्रुवार्वेन् सुदेशसुरायम् नित्रेन्यस्ति। न्यार्वेते ग्रभन् गुःधेव प्रमाण्य प्रमानेव प्रमानेव प्रमाने भेरा ग्री में में स्थान श्रुमाण में व श्रे त्युर्र्स् । दे स्रु तुदे के वा बद ग्रे हो द प्याविव वार प्यर भेद वा भेर र्था द्वीति में निर्मा के त्र के किया यी निर्म्न निर्मा के नायी । र्वे देयायानहेत्रत्याकेषाची नसूत्रदेत्र न्युन्यादि । यदावायावात्र के नःविगाः हुःवहेतः देशः श्री

३न्ट्रेन्देशचीः विन्यस्यान्धन्या

श्चीराधी में विरक्षेर प्रदर्शकेया मी कें अपनि विर शुर प्रदे अपनि शे

यान्त्रायळें व होन् हो यह ह्यायाने हिन् धोव वित्र श्रु से देव सर्वे व योदे या बुवार्य है 'धे यो 'रूट हिट्र ट्वा'हर है दिस्र एडी ह 'यदे हुं। यह रू ही । इस्रायाष्ट्रमावर्षेस्रायाधीत्रायसाधीयोदेन्स्तित्रे सुधीत्रायदे धीमात्रा धीः गेर्रा केर में क्षुर्रा क्षेता त्यास्टा बदा ग्री सूदे वाई दासे अप्रुव सेंदा अप्येव साविता ग्राट पेंदा ही स न्हें र रे अ ग्री । श्रुर पर ग्री अ ग्रुर के ना नी न श्रुव रें व ना प्रथा ना पें व र र नश्चरः ब्रुन। देवे वार्डे कें वा व्युन हो द्यी केंद्र सम्माण्य वार्डे द्यार गर्डेन यस हुन न धेर है। वि र्से से मासुस क्रेन परिया के समिर ने प्यश्याविव प्यत्। मिं कें। के याशुमा भूर या हे या पेवा वेश प्रते भु क्वर निवे प्रिन्य अवसान् श्रुम्य स्वर्भान स्वर्भात्र के अभिष्ठ अभिष्य स्वर्भ स्वर्य स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्भ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य सर्वर्पात्रा विंकें से वासुस वेश पर वर्ष प्रमें देश से वर्ष गहिरा हुर है। मिं कें शे गशुया रे क्रें राग है या धेवा वे या पर दरा मिं कें शे ञ्चनाराः विरायाना शुरारे भ्रीरानिना विवायिता विवाय दिया कॅर्से मार्यस्था स्थाने स्थाने क्षेत्र स्थाने क्षेत्र स्थाने स्थाने क्षेत्र स्थाने क्षेत्र स्थाने स्थाने स्थान

केत्रस्य वृत्य वित्रस्य द्वारा वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वर्गुर्स्तर सेवाया सेटार्स्ट विवायय सेवाया सेवायी विवायी व रेसामुर्यार्द्र्वासाय्याः विवाद्यास्त्रेष्ट्रा प्रमास्त्रेष्ट्रा प्रमास्त्रेष्ट्रा प्रमास्त्रेष्ट्रा प्रमास्त्रेष्ट्रा ग्रेन्यदे मुः कुर वदी व्याप्य यात्र श्रायदे स्याधिता वेश सम्मु कुर दे सः धेव धर क्रेंब धरे देव विवादमा र में अधेव धरे देव विवाय करा वें च गहिराजुरायावदादेयादास्रविष्यास्याधियादे । स्यापित्राचे दास्याचे दारी न्ह्र्यःस्थान्त्रः विद्याः विद क्रेन हिन तथा रिन सिन साम साम साम साम होता हिन त्या । विन स्वास सिन स्वास स्वा ग्रीशसँशन्त्रश्रा विशासरासर्वेदात्र । समदार्मेतापान्दानरा मश्रमःकरःनर्गे भःहे नम्मान्नर्गे भःमःनिवा अितःसेनः श्रे रःहसभःहे नर्हेन्द्रेन्द्रम्यक्रम् यद्या यद्या यद्या स्वर्षे यह सेन्द्रम्य नर्हेन्द्रिय श्रीय ग्राम् केया यी निष्ठ्र में त्राया विष्य मिर्ग्या निष्ठ्र में मुन्य में ।

< इस'न् हो 'न्न' क्षेप 'स्न' हो हो क' प'न्हान' पा

न्द्रिंशः भ्रेन्त्रेंशः प्राप्तः प्रम्यान्त्रे क्षेत्राः या क्षेत्रः प्राप्तः वित्रः वित्रः

क्षेत्राः श्रन्तः श्रभ्भ र त्रान्त्रेत्रः देत्रः श्रीः त्रायायाः विद्याः स्रमः त्रयः श्रभः स्रमः र्द्धव्यानश्रीयानशाग्रामाळीषाची नश्रवार्मेवायम् स्वान्ते इसान्ते । इसान्ते । इसान्ते । इसान्ते । इसान्ते । इसान्ते । क्षेत्रास्त्र ग्रीया ग्राम् सेम् प्रमान्य प्रमान्य विष्य विषय विषय स्थान्य विषय स्थान्य विषय स्थान्य विषय स्थान्य विषय स्थान्य विषय स्थान्य स् श्रीरामाल्य व्यासेन् स्वीत् स्वापा केत्र सेवरा मुक्केन सेना ने भू मुक्ते स्वापा स कैंगा सन् केंगा सुर गुर न्वें या या सेन हैं। । सु सक्त ने दे में त श्रीया वश्वा श्वेद्रा श्वेद्रा स्ट्रा इर्.मी.मेर्नायायहेव्यवशहेंग्यायरम् म्याचीयाहे। क्विंग्रिंग्यीयाधरः ८८। श्रुचर्येवरग्रीयरगश्रा वेयरम्यक्षेवत् म्ययवेश्वरणीर्स्यायः यन्ता विः अति किनान्त्रिं अधिवः है। अवि किना अपनि निनाववान विन् ग्रीः श्रेर्याष्ट्रिर्यरश्रेर्यारा इसर्वे स्थाने विष्यं स्थाने विषयं स्याने विषयं स्थाने विषयं स्थाने विषयं स्थाने विषयं स्थाने विषयं स्थाने विषयं स्थाने स्याने स्थाने स्थान श्च प्येत प्राप्ते व्याप्ते प्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते व्याप्ते व्यापते व्याप हुन्रञ्जनश्रासाधिवार्वे । देर्धिवाधाराद्वेशिकाते। इसाद्वेरदरळेषाञ्चर्छेः त्राध्यापारायाञ्चराज्ञवे सेरादे त्यादेता की सराम विवास र् जुराने। भेरानी रेनें भेरावराना वर्षा निर्माले सामित्र स्थाने विन्यावि यहूँ न्यवे अरन्ता श्रेष्यावे श्रुष्यावे श्रुष्यावे श्रिष्यावे श्रिष्

यर्केंदर्दे।

क्षेत्रात्यः पराने 'न्रात्र है। क्षेत्र सरान्ये हिन् गुरु न्या क्षेत्र सरा न्मे बिन् गुर्मा क्ष्यान क्ष्यान के विकास मिन्यान के निकास के निका वस्रभारुन्। द्वान्या क्षेत्रास्याते स्त्रीनासा विसामिते सवसाया निस्तुमा ममा क्षेत्रामाने मुनदे । सुन्य प्राप्त प्रमान मुनमान । सुन्य ध्यादे क्रिन साधेवायर में नदे हिरारी । मान्या ही सार्वे के दायर। यर ग्रमा यर या ग्रम विकास या निर्म विन्त्र विका यव पर्ने न राष्ट्री विदेश में अपने प्रमाने प्रमाने से प्रमाने से प्रमाने से प्रमाने से प्रमाने से प्रमाने से प होत् क्षु क्षु र प्रश्नाते 'दे 'द्रो 'हित् हा खुव्य 'धेद 'या के 'क्रूँद 'यर 'द्रो 'हित् होत्' यानव धिव रा क्रेंब हो हे हुया द्ये बिद हा शुया हुया क्रेंब या या वि वेशनाः क्षेत्रः क्षेत्राः स्वतः ग्रीः वुश्वान्य क्षेत्रः त्रीः तक्ष्वः द्वान्यः वुश्वान्यः तक्षेत्रः त वे नहते हुँ र दुवायया गुरानदे में नावेना धेवाया में र सूर् ग्री हिर हैं या ८८ अ बुद र प विवा ग्राट प्येद र यथा किवा स्वर ग्री क्कें र कुव र ८ र दे य र क्केंट र्यते नक्ष्र देव त्यामा वर्षा वर्षा वर्षे त्र प्र प्र प्र प्र प्र कराया स्रम्याद्रा करामुकास्रम्या ग्राच्यायायायस्पर्मा ग्राच्यायास्रापस्र र्विट त्यः श्रेश्वाद्या विट वीश्वाश्या क्षेत्राश्वाश्याय दे पीत्र प्रदा क्षेत्र या व्या

(याह्रव:क्षेत्राश्राःश्री:कात्रान्ध्रन्त्रा

नम्रेंद्रिन्देग्नाप्तान्द्रक्षिण्यास्त्राप्ति । इत्यापित्रम्या मदेः प्यतः या गिर्देश प्रेयः में निर्मेश या स्थान स्था ममा रूपर्या श्रुवार्सेटासाधिवासिराहितार्से सामितासी समा ल्रिन्सःश्चेत्रायान्त्रीत्रायदे।प्रमा वर्ते सः वर्त्तःश्चेत्रावकतः प्रवेश्चेत्रवर्षाः वर्ते सः वर्षः मश्यान्त्र क्षेत्र श्राद्य प्रत्येषाय से दाया क्ष्र-धिव सें न्याना यहव स्वाय वियान स्वाय क्षेत्राची श्रू र रेश एश जुर नदे सु अर्द्ध वन श्रेरे ने एश शे प्रद्य नश् क्षेत्राची नश्रूव देव नवत्य पर प्राया ने प्रस्तेत्य प्रस्ते वा प्रक्रिया था भित्रा श्रेत्त्रेट वर्षा श्रेट श्रेत्र श्रेत्र श्रेत्र स्वर्ष श्रुट प्रवर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्य स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्य स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्य स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्य स्वर्ष गाह्र स्वर्थ स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्य स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्य स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्र स्वर्ष गाह्य स्वर्थ स्वर्ष गाह्य स्वर्थ स्वर्ष गाह्य स्वर्ष गाह्य स्वर्थ स्वर्ष गाह्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स ग्री पर्रोय प्राया भेयात्र के वार्त्र दर्गेय द्वाया वार्य विद्यायी । गहरुक्षेग्रभःहेंग्रभःयायाके नर्स्यहें हो । दे प्यरःहे भ्रदः वहेंद रेसार्स्रियरायरान्देरार्से दी। वियार्से हिन्गुरायरायायायास्त्री। वियायस्त राष्ट्रम् बेरक्ष्यदेर्द्रम् श्रीयाश्चित्राम्ययानमः श्रीद्रित्रम् श्रीयदे स्रीतः यशस्य अदिर देश पर होत् प्रश्व अद देव स् हिते पर या हेव हुद प्रहेव

ग्री मात्रव किया थर निया चेर ख्या पुरायुव प्येत्। दश वें श कर द्रा द वें श क्रम डेशरावे क्रिया श्रेष्टा या प्रवाहित क्रिया था श्री देव दिर विवादा वर्ष में दि स्मित यान्द्रिन्श्रियासेन्द्री । वद्गायसेन्यसेन्यान्निक्षिण्यान्द्रीः गवर्गीराधेवाने। कैंगाने निह्ना रासे रामें विशास्त्रराध्याहे स्वरावहित्। त्यावियायाधित वेरात्। स्टाकेट स्टाची नवदः व्यतः सः व्यापः प्राप्तः । स्रापी अविश्वास्यः सः दे वयः ग्रारः से स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स्राप्तः स् र्नेन्भून्नुने त्रन् नहेंन्नु सेन्य मान्य केना साम्य केना स्थान बन्दार्चित्राचबदानुदेन्द्रियार्चे विषाः वैकाळ्याचान्यस्वादायायाया कु नेया विश्ववित्याधीरास्टार्ध्याची देवाद्या स्वराहेशायी स्वराह्य ग्रीश्वराष्ट्रीम् अटायम् द्ध्याग्री यमाया यमे या महेन म्यायमे मान्या मन्दा दर्भाया हेव वसादि ग्रुट नदे हेव दर्शय शिर्मे व विवा श्री न विवा श्री न विवा श्री न विवा श्री न विवा श्री मासून र्नेत्र क्रेंत्र मिते क्रिया या नामा त्या प्याना मित्र क्रिया या भी या से नामा स र्दे। । नाय हे नाहर के नाय थी प्रचेय म विना से दाता के ना हु सुन स से । श्रेन्यमा क्षेत्रान्ते व्यात्राह्म क्षेत्रामा निमाने स्वाप्त क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा गी दिन भेगाना या विमास मारा भेरा कृषि न मारा मी जा न न किया मारा महिना है। हैंग्रयास्य किंगा देया देवे में नाया देया लेया हे दादी केंगा में नसूद देवा

देशक्षित्राच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्याच्यात्रच्यात्

यरःश्चर्रात्रात्रम्भ्रतः द्वरमाद्वेशः वर्ष्वर्ग्यः स्वर्ग्यः स्वर्ग्यः स्वर्ग्यः स्वर्ग्यः स्वरंग्यः स्वरंग्यः वर् नदे के वा न्वा वी हिन् यर श्रे के वा वर्ष के वा नेवा नेवे वा नर्ष श्रे क यश्यक्षेत्र मुनर्ने । क्षेत्रामी मान्त्र सेन है किता ने त्युन होन् से सन्ता गे शुः कुर न उसा साधित सर न सूत्र हुदे र्देत दर न हें द पदेंद है। गुत रें हि मेशन क्रेने न्यते मन्दर्य भी करते मा भी करते मा स्वाप्त कर स्वाप्त हेंग्रायासी सुनामने देंन दें ते के गाने ने मान्य सामान हेता ता पर स्वाया उयार्ह्रेग्रायात्रे। विंर्कें से ग्रास्य स्ट्रास्य स्वाप्ति वियास सर्वेदात्र भेरमशुरावेशरमधुरनरत्रम्माळे। मिर्केश्वरमशुरारेर्भूर याडेया'धेव'वेश'यदे'र्देव'दे'याश्रय'वर'दशुर'व'द्रा' विंकैं'शे'याशुर्थ' वेशमन्युशम्बर्गारुवान्तुः श्रूष्ठ्रस्य स्य न्यात्र्यान्य न्या श्रूर्या देवा देशमा श्री नर्नित्र्व विक्रिंशेगाश्यामार्भेर्ग्याचेगाधेव वेश्यवेर्नेवरेगाश्या नरः क्रेंत्र यः न्रा क्रेंश कुं के वा वी अवरः वा अवः हो नः ही हो से से सुरार्धिन यः दे'नार्ययानरान्त्रेत्राध्याक्षेत्राप्ताक्षेत्रायाधेत्राधेत्। हिन्यराध्यायहेत् ब्रुन'स'न्रा केंग'र्ने द'ग्री'क'द्रश'नक्ष्रश'द्य केंग'रेथ'र्ने दे'ग्नर्रश्री' वरेग्रायहॅग्रारे न्या ग्राराग्रें के है। श्रुचेर ग्री केंग्रा इससार ग्रुस गडेग हिर्देशसाम स्रामा पर्टी होन हो स्रामा स वर्ते द्रिन् श्री किंवा वी अर्थों वार्यया न द्रिया क्ष्रीय क्षेत्र श्री किंवा वी अह्या

सर्वे विरामेरान् न्या वित्राची निया वित्राच

यशन्द्रिन् चिते द्वात्रस्य स्त्रिन स् यथा द्वापाराया और पारावर्गे दाया दे। पार्दे दावशायुवाया सुरासूर श्रेर-र्देव-वर्श्वशन्त्रहेवा वेश-वर्श्वरान्त्रम् क्षेत्रानी-वस्त्रहेव-वर्श न्धन्यदेखें। व्युवाग्रेन्थे, क्षेत्रम्बान्यान्या वर्हेन्देयाग्रेष्ठा यम्रश्रेष्यश्चिष्यभ्यम् अर्थायासर्वेषानुः स्रीयस्य केषानियार्वेदेः नभूत-र्नेत-ग्री-ळ-बस्रश-उन्-प्रदेश-धर-नश्र-तश्र-त्रश्रित-धर्मात्रभान्धन नर्गेश ने भूम न्धुम प्राधिन के। भ्रीम सक्ष्म सामाय सा सुमान में निर्मा से हिन्यरन्ता देवायर् यदे सेरा मन्तर्या स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स्वाप्य स क्षेत्राची नश्रू दें दर्देश या वर्षिय श्रू वर्षे । विद्रास्टर क्षेत्रादे द्वा वशादवीवारविक्तं भ्रामान्दशासर्वे विषयास्य स्थानवा वीनाया विष् यायाके नम् सूराधेमा सेरायी नमूया कुषायरी प्यराधेन यारे सार्वे सार्वे श्रेटाक्सशादर्वि मदि श्रुष्ट्रि विटाधुव सेटावरासा बदावगुगा दर्हिगा स्त्रीयाय्यक्ष्याय्येयाय्यक्ष्याय्यक्ष्याय्यक्ष्याय्यक्ष्याय्यक्ष्याय्यक्ष्याय्यक्ष्याय्यक्ष्याय्यक्ष्याय्यक्षयाय्यक्ष्याय्यक्षय्यक्ष्याय्यक्षयः

नकुर्या क्षेत्राची यात्रशादकुर छिर्केश नन्राया

क्षेया यो द्वारा ये वस्त्र देव द्वार या वा वा वा विष्ट विष्ट क्याकाने क्यायाक्यायाक्या उट्टान्य अर्द्धाया धीवायरान्हें वर्देर्गी दर्गे अद्यर्गे श अवश्वार यात्र विवासय वर्षा रे विवा वयादारे पार्वे के प्रवे पात्र शर्श पठर पाया वात्र भूप शर्मे प्रवे र वडोलाची निर्मेश्वामि निर्मेश न वी वात्र शर्द्ध वः दिवा क्षेत्रा वी व्या न क्रित से से दे वी वात्र शर्ध ही र वहे । नर्भूषः ५८। वनुः १६८ ५ र न्यू रहें वा पाने प्यवदे र के वा वी वाव रा वनु र वेश मुःवेदा केंगामी ग्राव्यान्युरायर महेवा केंगामी क्षुः हया मी जु मासर्वेरायनेवासान्दान्त्रे निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा निर्मा स्थान व्यवाया हिन्यम् नुक्षेत्रायाहेयाः भूत्रशन् सम्बद्धमः नुवेशका निवः नभुराणराक्षेत्राधारम्भूरावराष्ट्रा । नक्ष्याणीः भ्रीराष्ट्रा क्षेत्राची गाव्यावण्यात्रमुराक्ष्याद्वराद्वाद्वरादे । अपिताक्ष्याची । व्याप्ताक्ष्याची । व्याप्ताकष्याची । व्याप्ताकष्याची । व्याप्ताकष्याची । व्याप्ताकष्याची । व्याप्ताकष्याची । व्याप्ताकष्याची । व्यापत्राची । व्यापत

१र्देव'सर्द्धंदर्भ'गवस्थ'दशुर्र'नन्द्र'म

अन्तः स्वतः विद्या ।

स्वतः स

स्तुः न्या अत्रक्षे स्वाद्रस्य ग्री विश्वाद्य क्षित्र क्ष्य क्षे व्याद्र क्ष्य क्षे व्याद्र क्ष

यद्भार्या क्षेत्र स्थान्य विद्या स्था विद्या स्थान स्

वें देंगभून क वार धेव थर से नेवाश रर सक्व परे वह हैंन में अअरग्ने अर्भू र के ना नी क्वें र ख़न्य अर्ड र ना हव क ना अर्ज ना खें र सर या अन्यायन्त्रीयान्यरानीयाक्षेत्राची श्री राख्यायानी हिंगा ग्राराहेत याष्ट्रिन्यम्केत्रार्थे यहूरक्षे ग्राम्यमे प्रमान्यक्षे विद्रित्ये नया वुरा क्षःत्रेरे केंगान्यायी त्याय में वर्ष ही यो क्षेत्र हा प्रदास है। वर्ष रे परी वेशन्या येनशः वृता वित्तिन् वेशन हिन्य व किंगा स् सिते नभूतर्नेत्रस्य केर पर्याप्य अर्केत्र ने न्यार्भेय प्रमा के स्यार्भेय रिया रेया था श्रादिन भ्रानुते नहें न् खुवा अर विर कुना शके न अर्वे र दें। विदेश के न मुन् कग्रायाः विगामि देवान्य पर्हिन् कें। केंगामी मर्हिन् सक्स्र राह्र श्चिते खें प्यराया स्रमान्य से प्राचित्र प्रमाय स्रीता स्राचित्र स्रमाय स्रीता स् यायदी भू है। दे भू मान्य या न शुम् माने वा में या म र्श्वाकार्या हित्वेषाया धिवार्ये । वित्राक्ष्य स्था हित्य क्ष्या हित्य हित्

नशुरान। नर्हेरायर्देराग्रीयर्तुनायाः शुनायाः विरास्त्रनयाः देनः वर्तर-र्रवर्ष्त्र-प्रवेश्वर्र्य क्षेत्राची क्ष्माची कः न्याने ना न क्ष्रुर्र्य व्याने विष् रैग्रार्श्या नुःयेग्रार्श्यम्यार्श्या । (ह्या हुः द्वे हेंग्रायार्ह्) ये साये न्त्रा के स्वास्त्र विद्याल्य स्वास्त्र स्वास् ग्री:र्ह्मेश्याम्) ग्री:ग्री:र्नेव:ळेव:स्व:तुत्वाच:सवे:त्या । रह्म:र्लेवा:र्ह्व:र्लेवा:र्ह्वी: वरःगर्द्धनाःवनाःवया । नदेःवेनायः भ्रुवः पदेः नदेवः क्षेनाः येः र्नेनाः नीया । हिन्यार्थे व ने किन्यार्थिय व हिन्य । (त्येषेव से क्षिण विव त्येषेव से क्षिण विव त्येषेव से क्षिण विव त्येषेव गुन) डेशमाक्षुनुश्रासर्वेदाने। ग्राम्बिग्नम्भूमारिकाने श्रुम्थार्याप्ता न्यान् क्षेत्राने न्युकाम्हिमान्त्र क्षेत्रयान्य सम्यान्य स्राच्यान्य स्राच्यान्य स्राच्यान्य स्राच्यान्य स्राच्यान्य गुरेर्देन्देन्यायाळे विदानहेंद्राया होया निवेद्या है। निवेद्या केंद्राया धेव दें।।

ग्नित्रावशुरा वरे हे केंग श्रें र रेल हेंदे ग्नित्रावशुर र राल हु है। कैंगा इसरा प्याप्तरा नहें दाये के। याद विया नह्रद यर ग्रुप्त में देंद ग्री:रदःनविव:ददःअश्वर्यदेःगद्दशःभेगःदेशःभरःभेदःभःभा गद्दशः यानहेवावशार्देवाहें नाशानेता देवायानहेवावशान्द्रशानश्चराद्र्या मदे-द्रवरमीया क्षेत्रामिडेग्राम्प्रमिद्रयाक्षे स्ट्रम्य मुक्रम्य महाया वेशः शुः श्रें अशः धरः न स्वायाशः धरा देवः देः वाववः यः शुः चरः हो दः धः दरः। मुलापनाग्री पात्र शास्त्र वा ना विश्व स्वापन स्व निनेवासात्रास्टानीसासाटेसामाव्यायादी निनेदिन वास्याचरा हेर्या ८८। मित्रावियाम्भावेशाक्ष्याचन्या वेशाक्ष्याः समदाश्चरादेशा र्विट कट हिट पीट हुँ नवे इस या सर्के दारा के ना नी क निर्मानी कर ग्रान्यात्र्यात्र्युत्रःग्रान्यात्र्यातिः व्यव्ये व्यवे व्यव्यवे व्यवे व यःग्राद्यः नश्चुरः वेशः मुर्दे ।

श्चार्या यदे ते किया यद्वार हो निया के स्वार्थ । स्वार्

यरः त्रञ्ज्ञश्रात्व वात्रश्राते : द्वात्रात्र : द्वात्र : द्वात्र

१र्देन'वशुर'गान्यायश्चर'नन्द्रा

ब्रेश शुःबिद्दा देर प्यारं वर या के कर देश राज्य है कर या है कर या के कर या क

स्वार्था वश्चराविष्ठ्र क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या व्याप्त क्षेत्राच्या कष्टाच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या कष्टाच्या कष्या कष्टाच्या कष्टाच

स्ति । विकायमा निकाय विकाय वि

ळ. पेश. चार्य श्राचिश अक्ष्य हो। त्याच्याची चार्च ता च्याची चार्च त्याची चार्च च

नर्गायान इत्राहेश्वात्रात्र्यान्य स्वात्र्या प्राप्तात्र्या नर्गायान स्वात्र्या विद्यान स्वात्र स्वात

वर्त्ते अर्वे व वस्यायायायया वर्ते प्ये अट वे दहुः गा वे य वर्ते । प्ये यो । क्रेनाः श्रूमः न्यूमः देवः द्याः यक्षेश । निर्देदः चुः वदेः देवः याववः वः सः सक्ष्याम्या हिन्दीन्यने प्यत्ने यहम् सिन् । १५३ यामः क्षर-र्श्व-व्याप्यायदेःपाश्रद्धनावियानकुः अवानकायनदेः क्षेत्रा ग्राम्ब्रम्स्या ने वर्षे ने के के सम्बर्ध स्थान सम्बर्ध स्थान सम्बर्ध सम्बर क्रिंग क्रयायश्रायहारश्रायदे प्येत प्रतास्त मुन् थ्व ग्री अन करे वर र रे ने प्यर निव ह सर्वे र र में व निर श्रें र र र से यहन यत्ते नम् ह्यून की नवीं या याचि नम् वर्षे प्रमान कर्षे वर्षे स्मान कर्षे वर्षे स्मान कर्षे यदे दर्गे अयं दे नम् दर्भे द्राया दे प्या नम् क्षेत्र या से से प्राया के ना से से प्राया के ना से से प्राया के अर्गुग्रानुवारम् स्थावित। देः व्यतः स्वादित्व स्वाद्युर्द्रान् हिं र्स्टितः ८८:अन्यानश्रुवाग्रीयाक्षेत्राश्चित्रात्रीत्रात्रीया धरायहेता रेटार्यात्रः कर्सायदे के राष्ट्रेरास्याया स्वायाया स्वायाया

मश्रक्षेत्रात्यःवार्द्वेद्रास्रस्यस्य निवादेशः सर्रः दुः व्येदः द्वे । विवार्वेवाः हुः निदः ग्रीश्वाचन्न सामन्त्र में त्रिमा प्यान्त में ना कि न त्र त्र न त्र सक्सरायार्थायर सूर भ्रेर भ्रेर किया देर मुर मी मिर सर हे प्यर हैं रा वर्हेगामी अर गुरुर भेटा केंगारेट में अर वसूत देंत संविद विवर पर देगा अर नम्नात्र्य न्यात्र मान्यात्र मान्य न्यात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्व र्शेयायार्थुं क्रुयाया छे त्या श्रुट्य हैं लेयायदे वित्र हो सूर के या श्रुट्य वेषाबिदावर्ष्वापवित्रस्यापायायायम् वेद्वाचित्राच्यायदातुः नश्रुवःयःयः न्वो अळव हिन्नु रयम्या यः यया र्वे गः न्नः श्रुः ईयः न्नः हिंदिल्लीयाःश्रीयाश्रीयात्राधाराहा । दित्यश्री क्षियाः देटार्चे श्रीयाः हे खिटा वशक्षिया यो यावश्य वश्च र य दे । यद वर्षे द देव श्री देव श्री श्रामि द र वश्च र ने नार नरे र श्रुर्प्य नाय के दे।

तुर'सळत्।

१वॅरि: अर्छ्र २४ (ग्रास: शे: हिते: शुस्राह्मा २४ विद्योव छेत्) P215 १ २ (वॅरि: अर्छ्र २४ (श्रु: श्रें अर्कें व क) P8 P38 P38 ३। १४। ४१में ८ अर्छ् ८ अ(में ५ ग्री ग्रह्में ५ प्रेम प्रति में विकास के प्रति वि

५। ४ अर्ळे : क्रेंब : क्रेंa : क्रेंब : क्रेंब : क्रेंब : क्रेंब : क्रेंa : क्रेंa

(म्प्रायक्ष्र्य) P91

१०सर्ळे र्श्व से रेग्या राष्ट्र के तर्रे तर्मुन ग्री राष्ट्र राष्ट्

११मे हेत्र भे मेग्र प्रम भ्रुत (या भे म र्हेग) अस ह्या १) 1995 P5

१२वॅरि:अर्ड्स्स (वहःश्चेंर्'हे:शु:वर्त्वःस:र्र्याः श्चेंर्'व्यास्यः वह्याःर्रेग्स) P98

१३ में ८ सकुंदश(रें या सेंदे नशूद नर्डेश) P5

१ (नम् अव प्रति ने कें साइ ना वि कें प्रति म्या ही) ही सा सा P5

१५ (বান্ধার্শ্বিন্ধার্মান্মান্নান্ন ইমার্শ্রির্ন্ত্রা) ইমার্থিনা বাম্মান্ত্রী প্রমান্ত্রা মান্ত্রী প্রমান্ত্রা মান্ত্রী প্রমান্ত্রী প্রমা

१६। १२ में ८:अर्ड् ८४ (अ८:क:८८:२ेग:ग्रुस) P182 P73

१८गाव शुरु से 'रेगार्थ 'र्ने 'स्नुव 'पिर' पीर्थ 'रास्तुव 'रिव 'र्स्ट्रें र हिं ' गुरुष 'र्गाव 'स्नुव) 1985 P66

१०भुः पत्रुमः निरः नम् (न्जुरमः उतः श्वः सर्ः नरः नेवे प्रशेषः न गर्माः स्व) निगः स्वेष्ण

भूतरा रुपाया केंगा श्रूपारा साम्रूदाया

दे 'यद्द्या'चे 'श्चेंद्र 'या'चे 'श्चेद्र 'या'

न्दःस्री क्रियाः श्रूयायाः यदिः यक्ष्वः हेन् न्यन्दः या

त्र विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम् विश्वास

सक्त व्र-१८ में र किया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्राया क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया क्रिय क्रिय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिय क्रिया साधीव सासी न स्था ने निया क्रिया मुन्य साधीव सिर्धियावन स्था यदे सून न् विन् रक्षेण क्व विश र्से स्य से न्य में स्र में से प्र मा से प्र यत्यमानु सुरु हैन। देव सी दिने सामि स्टूर सिमा सुरि दे नर सस्यस्य इन् ग्रेश ब्रेय दश नर्हेन् नर्गे अ पर नहेत्। क्षेत्र से से देन्य स्था प्रम कुंव गडिया या विया यहेव छी यहेव या ना मुन सदि छी र हैं। । अक्व सुर यिष्ठेर्यास्य यिष्ठेर्या प्यत्र स्ट्राया या या या या विष्या स्थ्रीय स् देशासरात्रुक्षिमाः क्षत्रामाहेशायत् कत्त्रुत्रामाः हेस्यानेता देयात्र हिंदा र्देन ग्री :क न स स्वर र्इन र्देश ग्रीन ग्री : वर्त्रेय : न र्ये द : स विवा : य र्वे स : न स सळवः तुरःगशुसः पदेःन्हें दःदेवः देवा स्वाचः ठवः वे सः पः श्रेसः पः पोवः हे। ने^ॱॠॱतुवेॱवर्रेषःनःसेन्द्रकेषानुःसःवनुसःमःरसःग्रीसःकेषाञ्चवासःसःसेः वर्चीयःसरःक्ष्रयाःक्ष्यां श्रःश्रं श्रंदःयदुःहीरःर्र्। क्षियाःश्रंयाश्रःशःददःक्षयाः र्केंग्रायाहेराग्री हिन्यम्ही ह्यापाविदेक्त्या केंग्राकेंग्राद्युन त्रेन्किनाः मुन्निन्न् केनाः श्रूनाश्रायायायाः त्रेन् केनाः क्रिन् विविधितः विषितः विविधितः विविधितः विविधितः विविधितः विविधितः विविधितः विविषितः विविधितः विविधितः विविधितः विविधितः विविधितः विविधितः विविधितः विविधितः विषितः विषतः विषितः विषितः विषितः विषतः विष यर द्वेर वर्डे द्रे के के व्याप्त यर प्रमुद्रा दे व्या के के के किया है द्वा के किया है प्रमुद्रा के किया है क नुम्र कुन्र शेस्र अन्य देव के देश के अप्यया अरगे श्री के देव श्रेम्य से में निया गीर

पिट्यु नहें वार्य संविवा हु सुरू हैं। विशेष्ट्र द्राय सुरो हैं वा स्थार द्राय में अर्देवर्धि के दे द्वा ग्राटर्देवर्धि के खूर्कें वा अर्ग्ने श्रेवर्गी द्वीत्य विदर वर्यन्तर्विताची (स्वा.ध.र्षे.र्षेत्राक्ष्यम्ह्री) वेश्वराक्ष्याक्षेत्राक्ष्याक्ष धेव धर कें ना श्वन्य राज्य के वरित कें ना ने निया सव कुंव कें राज्य ना ग्री प्रचेत्य नः सेन् परि रम् मु तसे र निरे किंगानु सर सूर निरे श्री र से । किंगा सूर्या स यालेशामानी विशामायमायालेगाम्मानेशामानशामी यादि सम्मान्या नर्अर्देवर्गमहेर्नदेश्चेत्र सूनानस्यर्जस्यस्यस्यान्तर्भागित्र राष्पराद्रगदान् हुँदाराधिवार्दे। (ह्या.हार्द्धेरिक्ष्रायार्ट्हेर) वेशायश सर्वेद राष्ट्र नु प्येद राया वेदा मी वेदियाय रादे क न्या ग्री के वा इसयाय सव र्द्धव रेह्ने अ ग्रुच ग्री रवेदो या च स्थेद राम र किया दु स्था सहस्र दु रवेदिया अ वस्य नर्हेन देव नार्रे ने नार्रे ने नार्रे नार्ये नार्रे नार्रे नार्रे नार्रे नार्रे नार्रे नार्ये नार्रे नार्ये नाय्ये नार्ये नार्ये नार्ये नार्ये नार्ये नार्ये नार्ये नार्ये नाय्ये नार्ये नार्ये नार्ये नार्ये नार्ये नाय्ये नार्ये नाय्ये र्था द्वेते नराया ह्वेया केंगा ह्वरावेटा ने ह्वरायशकेंगा कंदर र्था द्वेते नराया र्देव ग्री प्रत्रेय न प्रत्य प्रयास्य प्रत्य स्र्व प्राप्त क्षेत्र प्रत्य क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र स् मुदे नर ल म्रेल के न म्रे र कुल में निर्मा निर्मा मान मान मान न्वीयःस्तिःस्त्रःश्चन्यःविवाःसेवःवे । निःनस। स्टःक्वायःग्रीयःनहिनः

गहेशम क्षेत्राश्चारायदे इसम्मान्य निर्मा

क्रिया-क्रिय-स्थान्त्र-स्यान्त्र-स्थान्त्र-स्थान्त्र-स्यान्त्र-स्यान्त्र-स्यान्त्र-स्यान्त्र-स्यान्त्र-स्यान्त्र-स्

यश्वरित्याम् विष्याम् विषयाम् विषयाः विषयाः विषयाः विषयाः विष्याः विषयाः विषयः विषयाः विषयः विषयः

१सहसः श्रेया क्षेत्रा श्रूत्रा रा ग्री न हो ना

यदः अष्ठ अरक्षेत्रा श्रुवा श्रुवा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा व्यव्यक्ष्य स्था क्षेत्र स्था विष्यक्ष्य स्था क्षेत्र स्था विष्यक्ष्य स्था क्षेत्र स्था विष्यक्ष्य स्था क्षेत्र स्था विषयक्ष्य स्था क्षेत्र स्था क्षेत्य स्था क्षेत्र स्था क्या क्षेत्र स्था क्षेत्र स्था क्षेत्र स्था क्षेत्र स्था क्षेत्र स्

यश्चिम्रश्नाक्ष्म् । (गुर्वाचन्त्रः स्विष्णः स्विष्णः स्विष्णः स्विष्णः स्विष्णः स्विष्णः स्विष्णः स्विष्णः स्व

म्यान्त्र्य) स्यान्त्र्य स्यान्त्र्य स्यान्त्र्य (क्ष्र्यान्त्र्यः क्ष्यान्त्र्यः स्यान्त्र्यः स्यान्त्रः स्यान्त्र्यः स्यान्त्र्यः स्यान्त्र्यः स्यान्त्र्यः स्यान्त्रः स्यान्त्यः स्यान्त्यः स्यान्त्रः स्यान्त्रः स्यान्तः स्यान्त्रः स्

क्रम्भ)

श्रेट श्रें व्याया विवासी व्याप्त विवासी विव

हिनदुन्ती अन्य प्राया प्रयानित्त वित्य क्षित्र वित्य क्षेत्र प्रयानित्र वित्य वित्य

विश्वास्त्रस्त्रस्त्रस्त्रस्ति चेत्रस्ति चेत्

यद्भारत्रम्भत्राक्ष्याञ्चन्य स्वाद्धेत् । वित्रम्भत् स्वाद्धेत् स

त्रेश्चर्याद्धतात्वर्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्

र्श्विनःश्वेदःयमार्थेः ग्रुमादमा हेदारेदायर विदायेदान ग्रुप्तिमा

त्याने रावर्त्ते अश्वी अश्वेन स्थ्रे त्र स्थ्र स्थ्र श्री वित्र स्थ्रे त्र श्री त्र

श्चेत्र शेव के शान द्वा विता त्या विता के शान द्वा विता के शान विता के शान

अ.प्रेप्तःश्चाताःश्ची अ.प्रेशःटाट्टः प्रेशःवशा श्चेटःशः ट्यायः यशः व्याः सरः व्रिः इस्रशः स्ट्रः व्रुटः। (श्वःयः रशः ययः द्वः इसः वरः यशः)

कुयार्य अर्ज्ञ्ज्ञ स्थान स्था

नर्हेन् द्रमान्त्रम्थान्य स्वत्रस्य स्वत्य स्

र्श्रेन्यायमेयाक्षेत्रम्यावेयाय्येयाय्ये क्षेत्रम्यायाय्ये व्याप्याये क्षेत्रम्याय्ये व्याप्याये क्षेत्रम्याये क्षेत्रम्याये क्षेत्रम्य कष्टि क्षेत्रम्य कष्टे क्षेत्रम्य क्षेत्रम्य कष्टे व्यवस्य विष्य व्यवस्य विष्य व

वित्रस्य भुः सकेत् न्यस्तु से व्यावहुन होत् प्रस्ति होत् । वित्रस्य भुः सकेत् । वित्रस्य हिन् । होत् । वित्रस्य होत् । वित्रस

के.लट.भ.चीश्रेटश.सर.चर्चियाश्री (स्रेट.श.पूरे.पर्येश)

र्विट द्र्य र्वे अ अवस्य प्रस्य प्रविष्य व्याप्त क्ष्य प्र विष्य वे व्याप्त क्ष्य प्र विष्य वे व्याप्त क्ष्य प्र विषय क्ष्य प्र विषय क्ष्य क्ष्

श्चितः त्रित् नार छेटा से ना नाव कर श्ची त्या ना ने व्या नित्र न्या ने ना नित्र न्या ने ना नित्र ने नित्र ना नित्र ने नित्र नित्य नित्र न

भ्रेत्र हुर न्या केंग श्रूपाय सम्दे सेपाय श्रु द्वापिष्ठ या के या श्रूपे । श्रु र प्रापालक प्राप्त केंद्रे।

न्द्रभार्याक्षेत्रमञ्जूष्ट्र विद्यास्त्रम् विद्यास्त्रम् विद्यास्त्रम् विद्यास्त्रम् विद्यास्त्रम् विद्यास्त्रम्

 र्नेत्र-तुःगहेर-तःविःशुन्तः पृत्रन्यः येग्यायः स्री । (ह्याः हुः दिः हिंग्यायः यहेतः

धियो अप्ती या विश्वास क्कें वर्गान्त्रे तास्त्राची प्राप्ते विश्वास्त्र विश्वास स्थान सर्द्धेव है। शुस्र दुः नवे नाल् म् वस्य नसूव मंदे हे से नास सूना न दस ग्री सू र्ट्य श्रुवे श्रद्ध स्थ्या वट विवा वी श्रदे श्रू अ वा विश्व वर हो देश न्यानरदान्। वियानदेनमूनर्नेन न्यास्त्रस्य स्वानास्त्रम् । वी-श्रःवेवार्याः क्री-देव-दे व्यवराष्ठि देवार्याः क्रीरावार्याः वरः क्रीदः पदे देवायः য়ৢ৴য়तेष्दीरवस्त्राचीःक्र्यान्त्रान्त्रान्त्रात्रान्त्रान्त्रा ग्रथयान्त्रन्त्र देशक्षंग्राद्रा द्वे नदे इसम्बद्धान्य कुरान्त्र र्द्भेद्रायार्श्रेवायार्त्र्यार्थेद्रायायायदेराद्युयाविवार्त्रः क्रुयाय्वेदा श्चर्यायालेयार्श्वेयायाधीत्रालेटा देवादे स्वेतायार्थिया स्वदाश्चराद्वीया देश ग्रीश साध्याया में दायें देश है। इं अःअर्देरःनक्षुत्रः नदः श्चिः अःनेवेः श्चुकः नविः नुः न्याः । स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स क्रियायायदे रया वी क्रियायायाय स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप गन्यान्यत्यत्यः क्षेत्राः भूग्याया केताः क्ष्यः दुः स्थाः स्टः स्थरः देवः दग्रवः नश्रुव रादे व द व रा चिवा चार्च चार चार्च चार्च

दक्षा (नेन.ब्रेस.क्र्याश्वा, ज्या, ज्या, निस्.क्ष्य, ज्या, ज्या,

महिन्द्रित्त्र्वित्र्वे स्वाक्षेत्रः विद्याः विद्याः

पि'निन्ग्रामार्थिम्रामार्भे भी'यार्ग्येत्र'त्र्यार्भे विगार्भे सिंग् होरामार्थः

या ब्रिया था या अप । (क्रिया या अप विष्युत्र स्था विष्युत्र । या ब्रिया या विषय । विष

१वार्डे म्था केवा श्रूवाया ग्री न् हो ना

 श्रुदे र्स्टिंग्य राज्येवा त्याया रेत्र स्वा श्रुवाया वेया श्रुहे। द्ये राज्य

मु'अर्ळे' केव्र'सेंदे'कु'वेग्रय'रे'रे'द्रश्यम्यार'नर'वुश्यःशे धि'गो' दुग्र'रा'यद'ग्रेव्'राह्मश्रय'र्यश्रय'रे'र्वश्रथ'ग्रेःक्ट्र'देश्रुश्यःग्रट'नग्रट' नर'शे'वुश्यःशें ।(मुप्य'र्वश्याश्रय'शे'प्यश्र)

रवः बुदः इस्रश्राष्ट्रियायः यिवेदः यः श्रूरः श्रेः श्रेदः ग्रदः देदः तुः श्रेद्रा (याशेरः हेवाः शुस्राह्मवाश्यायश)

दशःक्रुवःदुःदेःश्वरःधिदःयःवश्वशःश्वद् दिवःग्रदःदिशःशुःश्चुवःपवेः विःभ्ववशःविवादःवरःदुःशःश्वदः।

इ.पद्धः श्राचारम्यात् स्वान्य स्वान्य । स्ट.ची स्वः स्ट.ची स्वान्य स्वान्य स्वान्य । स्ट.ची स्वः स्ट.ची स्वान्य स्वान्य । स्ट.ची स्वः

नश्रक्षे वहर्ते ।

दे निर्वाद हे र निर्वाद हे र निर्वाद है र न

ने प्यतः वस्य अर्थः वित्र क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः कष्टे क्षेत्रः क्षेत्रः कष्टे कष्टे कष्टे क्षेत्रः कष्टे कष्टे क्षेत्रः कष्टे कष्टे कष्टे क्षेत्रः कष्टे कष्टे कष्टे क्षेत्रः कष्टे कष्टे

क्रें वियापान्दार्गे अर्दे ना इयमा अते स्टामी अर्दे अर्भिदार्गे वा

त्वःम्बान्तः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थान्तः । प्राचित्रः स्थानः । प्राचित्रः स्थानः । स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः । स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः । स्थानः स्यानः स्थानः स्य

न्वोःश्वेनःयने ने निर्मानने निर्मान्य स्थान्य स्थान्य

नुस्रान्धे ह्या से दिस्रान्धे प्रतिस्थित प्रदेश हो । (तस्र सः व्यवेश हो दिन रेव केव र्श्वेव से प्यम्। वेश पा क्षु तुम सर्वेव रहे। द्येर प्रहें द १ व द्रमश्रभ्याम् मुत्रेन्द्रप्रियायन्यश्रात्येष्रप्रात्रभ्रम्य। भ्रुते र्श्वेर् वर्रे देवाशाया कु अळव क्रेंव हो र शे खर छवा ळव स्थाये अवर क्रें र व न्ना नियम्बर्धिन्द्राप्ते श्वायायव्ययातुःन्नाधे याक्तुः यळवा श्वेता छेनः नुःश्रीन्यानीया कैयाःकवःश्रायवेःसन्नन्धेःनेवःवदेवःयवेःकेनःनुःहेःहेःने याश्रुयाची यार सुर श्रुर हिरा कु यळव यायय हो र छी : श्रुर दिर्म के किया ळ्य. मु. अप्त. अह्या. अवर. श्रु. र. हे. मु. ५८ त्या अ. यु. दे. त्यो य. या ग्रेन्याया वर्ह्ना गर्हेन् ग्रियायायये व रहे वासी वर्ष स्था मुलास्व क्रूॅब्रप्रदेखें वा वी शाद्यशासु हे शासु प्रदेव विटा द्वी सा सु अळव प्रहें द नशायव्यान् क्रिंतायायमेन प्रभा क्रिंत्र क्षिया क्षेत्र प्रमायो यो ने प्रभावेश धरः गुर्दे।

कः वर्हेना केना श्रुना श्रा नहना सं अववः ना बुदः नी श्रें त्रा केना कंतर

श्चिष्यश्वास्त्र वित्र में स्वर्ध क्षेत्र में स्वर्य क्षेत्र में स्वर्ध क्षेत्र में स्वर्ध क्षेत्र में स्वर्ध क्षेत्र में स्वर्य क्षेत्र में स्वर

नाय हे र्हेन्स ग्रीस से र्वेन्स के रहा के प्राप्त के प्र के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप

हःसर्केनायम् अप्तराध्या । भिवः हः नक्किः स्वरः स्वरः स्वरः । । (अः क्रुवेः येग्रायः नभिवः प्रयो । भिवः हः नक्किः । ।

गुर-विव-हर-सेन्न। गुर-में ग्राय-नासेना

यायाने से हिंगामङ्गाययायाने यायाने से स्वाप्त स्वाप्त

करकुर्भाश्चाननभाव विष्णानित्वार नामित्वा विष्णानित्वार नामित्वार नामित्वार

ब्रम्यायायव्यात्त्र्यात्र्ये द्वास्य स्था क्ष्याः स्था स्थाः स्था

न्ध्रेगश्याहर् क्षेत्राश्च्याश न्व्रिश्च स्वर्धित स्वर्ध्य स्वर्धित स्वर्ध्य स्वर्धित स्वर्ध्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्व

सुर्भ उत्र इस्थ प्रस्थ एउत् प्राप्त ने प्राप्त के स्वाप्त के स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स

कुयारिते त्रुवाराप्ते प्रश्ने वार्या हो मार्था हो मार्य

हैं निगाः इस्रागिहेश्यान्त्र प्रदेव स्पान्त क्षेत्र मिन्तः क्षेत्र केष्ट्र विद्यान्त्र स्थान्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र केष्ट्र क्षेत्र क्षेत्

भे द्वाराष्ट्रित्यक्तं वित्यस्य प्राप्त प्राप्त वित्य वित्यस्य वि

শ্বমার্ক্তবির্দ্র বিশ্বমার্বা দুরের্ক্ত বার্মান্ত ক্রার্মান্ত ক্রার্মান্ত বার্মান্ত বা मालियायानर्यारमान्त्रमा हेरामाक्षान्यायार्केत्रहे। यार्नेदानी स्रम क्षेत्राः भूत्राः भूत्राः भीत्रः प्रथा द्वीं याः भूतः भूतः भूतेः भूतेः भूतः प्रया ठट्रत्रेर्र्यक्ष्र्व्यीः क्षेत्राञ्च्यायाश्चर्यायाः स्वायायाः स्वायायाः स्वायायाः स्वायायाः स्वायायाः स्वायायाः धर-५-१ क्रिया क्रिय-५ अश-ग्राय-धर्मिया धिर-५ में श-भ्री रा धर्मित भ्री-भ्री-भ्री-र्धिन् प्रदेश्वेद्राची स्वाया प्रदान के वाके वा स्वाया यह या ग्री हिन् पर विवा हुविन्दिर्भर्ति । विन्भूर्गे किंग् भ्रूष्याश्चार्याया विनः हुने वादि रहे ग्रीशकेंग्। यदेर:व्रंतःश्रूतःव्यःष्यरःक्षेत्राः भूतःश्रूत्वाशःग्रीः द्वीःवः वहीत्। खुन्य अः व्यान्य वित्र माधिवामका भ्रम् कार्नेका ग्री श्री मान्याम्य स्वाप्त स्वाप्त मान्या स्वाप्त मान्या स्वाप्त मान्या स्वाप्त मान्य

श्रीत्र श्रीत्र विद्या विद्या

न्दःस्री क्षेत्रास्त्रन्ग्रीः शुद्रायसेयान्यन्दास्रा

भून करवेण नवे कें कु अपा नविष्य विषय विषय विषय के नियम के निया विषय के नियम क

नरः सक्तराशुः नृत्वाराशुः र्वेन् सक्सरारे गुराद्या द्याराक्यः दर्शे । न्ना नन्यः सुर्वे निये निवास्त्र निवास्त्य निवास्त निवास्त्र निवास्त्र निवास्त्र निवास्त्र निवास्त्र निवास स्रवर्भ। स्रवरादे:रुगःशुःखुर्याग्रीःद्रययःदरः। यवाःपवेःवहःसेवायःयः कैंगा बर्ग ग्री ग्री होरा पा लेगा ग्राम श्वर हैं। । दे त्य (यार्दे रा अपे हें या पा) लेखा पा यशायदी सुरानसूत है। कुतार पदी सुरा द्वी सुरा खुषा धिरा है। नवा वी र्से रा नःयःयम्।नद्दम्मभीवःर्षेद्धःदेन्नाःवेःयेदःवगुरःग्रीःरद्युदःसर्वेदः त्रेन्रज्यासेव्यान्याः क्रेंन्याः हेन्याः क्रेंन्याः क्रिन्तेवाः भेव्याः क्रिन्तेवाः भेव्याः न्येर्न्य न्वेत्रःहर्ग्निय्यायिः गुःवेर्न्यः प्रतेः न्रः विर्वे त्ये स्वरः ইন্ম(HalkomeLem) গ্রী:প্রন্মান্যমা শ্রুনমানটের র্মান र्कें त्र न उ द र कें गा न दे। के द र द द कें गा मी न सूत दें त य र य स स स स र य द र य र य ळदे गडिगा दे गर्ने न सदे अन्य कदे रस्य यहे गया शे वर्ष यहे रागा रहा यग्।नहर्दरःभ्रद्गन्वद्रश्रयं अर्थे द्रयन् श्रीष्ठितः यराया नहेन न्या सर्वे न्या धेवर्दे। । मानेदे निर्दे पूर्वेदे (coroados) भे प्राप्ती मानु प्राप्ति स क्षेप्यान्ता नन्त्रासर्ग्यायाया ययायान्तरसङ्क्रियायस्वादान्तर वनशायनायः विनानाश्रायनाः भवे सुना कुःयः नहेतः हे नहें नहें नहें तरकाळ हः नरः क्रेंत्र याधीता गायाते। न्हीताते । अत् ही से सारमा हेन्या सार्वाया वर्ते विश्वास्त्रे देव दे नहें द भ्रम्य विश्व क्षाय क्षाय क्षाय क्षाय क्षाय क्षाय हिंदा स्त्रे द्वार

यद्धर्माश्चारायाय्व्यात्वे त्रियायाः स्वाविष्याय स्वाविष्याय स्वाविष्याय स्वाविष्याय स्वाविष्याय स्वाविष्याय स्वाविष्याय स्वाविष्याय स्वाविष्याय स्वाविष्या स्वाविष्

धीव'व'धरा रगामी'र्श्वेर'न'वे संभेषाग्री'सन्व'ग्र'रा सुष्र'ग्री' क्षरादे सेना नेरा ग्रेन बुद ग्रुर ग्रुर पदे भ्रेर ग्रेस केना ब्रुर ग्रेनें ५५ शुन्दिर शुरुष्य ग्री कुसर्य ने पाय श्रीन से पायी यास निवास पावस भी नया ग्री निह्न दिन हिंग्या प्रमार्थे वार्था स्वाप्त निह्ना द्या पी से दार सुधिया ब्रैंद्र निवे भूद्र किये अयाप्या प्रमुख किंद्र निवा कि मुंद्र के भूद्र करे हैं दि भी र्विद्रश्राभी मुद्रासेंद्राची देश प्रवाद है श ग्राद्र व सुव द्वी श रा विवा पीद पा धि'वो'वर्चे'र्स्स्वा'वो'र्स्स्य'स्य सुर्'नदे'र्वेर्र्स्य रु'सूर्'क लेस प्रदर्रा र्श्वेरित्ररहेशः स्रवर्ग क्षेत्राः स्रदः ग्रेट्टित्रः स्रदः ग्रेटित्रः स्रवाद्याः विवाययः यायन्यार्थे। निःश्वायाष्ट्रययार्थेन्यायाःश्रीयायार्थेयायर्थेन्यायेःश्रीतःश्रीतःस्ति श्रेटास्य स्रोते हे सायह्या यो स्थानेट प्राची स्थाने स्थित स्योग । यववःश्रीशः दुरः वदः वश्रुरः पवय। हेशः वह्याः वीः श्रुः दरः वहेदः वदेः वश्रेवः यद्भागादालेगान् स्थान् स्यान् स्थान् स्यान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्था

क्षेत्राख्य प्रस्तान्त्र विष्ण स्वर्त्त स्वर्ण स्व

वर्त्तर्वयार्थ्यव्यार्थ्यव्यात्र्यं व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त् विवास्त्रेव्याः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्तः व्यापतः व्याप्तः व्यापतः व्यापतः

धियो तुर्वि हे अ शु के वा स्व इस्स अ रूर द्वार प्र व कुर से के वा धरःगब्रिःख्रग्रथःश्चेःक्षेत्रयःगह्रवःधरः सह्दः वेदःदवः। श्चेःकेषायः वसेवावशुराग्रीवर्गेशन्दानसूत्र त्राभूताकावशुरानाकेशित्र वित मश्रक्षेत्रास्त्र ग्रम्प्र मित्र ग्रीकें अदिन्द्रन्त्र म्ह्रम् के सहत्र प्रदेश्या दुः नदे स्तर् अप्राप्ते स्विभान्या गहेशमाञ्चरा विमाक्त्रमाहेशन्य सून्यरायक्ष्या विश्वास्त्र यशन्तरम् न्यान्यान् स्त्राम्यान्याः स्त्राम्यान्याः स्त्राम्यान्याः स्त्राम्यान्याः स्त्राम्यान्याः स्त्राम्या नर्यान्त्रीयायायान्त्रीयाया ग्रम्भूतरम् व्यस्ति सुर्त्तु सुर् र्व वरावराग्रासे सुर्भा सुरमा सुरमावरानायमा वर्वमार्गा नमसायमा र्हे देट द्वा हेन ग्रेश्च द्वा श्रें प्रक्षेन्द्रात्व वस्र स्टिन ग्रेंट प्रमा त्। गर्रेषक्षे। ३वेरावनुरामंत्रेमानवर्त्रामीः भूतायाने सूराधेतामवे

र्देरःया अः अवरः दक्षेत्रायः त्रयः विषः यात्रात्राया । विरः विताः विरेः वेः वर्षेन्। विश्वासन्दरगुवन्वश्यक्षद्यार्शे । यदादेन्द्रेन्त्। नविन्नन्तुः न'य'नडु'न। श्चिम्'प'यगुम्'तिम्भ'र्भ'षीत्र'हे। न्याम्'न्म्सून्पयम्'ने नविवारी विशासूराना मनदार्वित भूराया यश्चिम्या यश्चिम्या यश्चर्याया वेशयश्चर्युत्र्रायायह्यायाद्रा वेवार्ट्रिट्र् ग्रीमा नगाय ग्रेंद्र ग्री दनमा कद्र ग्री कुद्र प्रमेयद्र ग्री ग्रम महोत्रम ग्री ব্যক্ত'বেইঅস্'ক্রীমা ক্রুই'শ্রীস্'র্ব্রা বসাব'শ্বঅস্'র্ব্রীমা র্ব্রম'র্ক্রী বসাব' र्वेशः वी वेदः वीश वेशः पः क्षः तुः श्रेनिशः हेशः वहुना दः नः शः ददः दनः सवतः रु. की प्रमास्त्र मार्थितः संभित्रा स्थानि स्थ र्वेदे अन् करे गन्रस्य य न्रेस्य शु र्वेद रादे के गा खन त्याय विगाग वुन स्यायाः सुःयाह्रवः व्यायवः ग्राटः देया ग्रीयाः वृतः यरः ग्रुटः यः प्रायः विवाः धै त्रा शुन् ५ से स्टायम प्रायय प्रायय प्राय स्थान स्टाय स्थान स्य र्षेत्रचर्या अर्वेत्रकत्येत्रचरिक्षेत्राख्त्रक्रित्या द्वित्राधित्रव्या देवा वसेयाची देव विवा हु विद्यासमा केवा इट हेवा चूट वसावाहत कवासा शुः शुरु र परे वे 'से अ'ते 'लें ह्व या यो से 'वे या यो 'तर र र में या शुर र र र ने ते या विवाधिव प्रमा रुषा धुव से दार्च विश्व स्वाधिव प्रमाणिव स्विवाधिव स्वाधिव स्वा

अर्देराव अः इस्याधिशः ईवासरार हेन्द्राधि । क्षित्रं क्षेत्रं क्षेत् क्षेत्रं क्षेत्

गहेशमा कैंगास्त्रणी ग्रेन्ज्यमन्त्रमा

शुक्ष दुवे जाबुद र दिंश शु नश्रृत र दिर सानश्रृत र वि के जा स्ट

इस्रश्राणी होत् तुर्श्वा त्रास्त्रा स्त्री स्त्रा क्षेत्रा होत् । स्त्रा स्त्री त्रा होत् । स्त्रा स्त्री त्र स्त्र स्त

१ भेर ५५ के वा वी अळ अ अ र्श्वे र ना

क्ष्माखन् हे भारति ध्यानि स्थानि देवा भी क्षेत्र न्त्र न्त्

न्र्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रीन्त्रीः तुरुप्या देश्यम् न्रुक्ताः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः शेट-दे-दट-अन्नर-श्रु-र-देवा-अवे-शेट-देव-इस्रश-युव-ठेवा-हु-श्रेय-पर-नहेवा नहें न्यान्ता हु त्येव नने वित्त नहे वित्त नहे वित्त नहा क्या या प्रति न्या या श्रुवः भ्रेम अटः दटः अटः वी अळ अशः श्रुवः वा दे के वा खट् ग्री विवा अदे होटः व्यासुर्वस्ययाने। क्षेत्रास्य देशे वित्रास्य क्षेत्रास्य सी इसास्य सुर विटा शट्या भ्री अळस्य अर्थे राया ने या परि हे या स्वा देया मे या से य यार्ने सूर गुरायाधेत प्रया र्वेत ग्री स्ट्रिय सामित स्वाया श्रुदे श्रु र द्वया ने या दर्शे या यदर पदि वे शे र रे द दि। । दरे र दा विदायया गर्डें ने दर्या हैगामिली हेंगशमा में रायसेया है वसा वेशमंदे रेंव थ्वाची भेटात् सामदास्य नविषा प्रसामदार्देश ची देवा मुदाया दे सा गर्नेग्रार्थः क्रेंत्यपरा देःद्याःचीः नरः सळस्य सः सुः ळेयाः स्ट्रेन्सू रः सु विट प्यश्र ग्री श्रेमा मिवी मिर्ड में र हिंग्या प्युय हे से द्या में दिस्य य र्भित्रमा क्षेत्रसूते र्स्ट्रेन्यवर्गकण्यामे नर्से सुनार्से ।

क्षेत्राःश्वीः अक्ष्य्याःश्वीः त्रा श्वीः श्वीः श्वीः श्वीः श्वीः अक्ष्य्यः श्वीः श

द्येरत्। देशसळ्वं क्षेत्रक्षेत्रस्य विषय स्याप्त्र व्याप्त्र विषय बर्-र्-र्शेट-क्षे देन्य-वर्गान्देन-हेब-धवे-धेर-वक्षवन्य नेश-ग्रह-ष्यर यदिःध्ययः व्येतः ते । अदः यदिः क्या वे स्यूरः हैं। । (विदः यरः वयवा यः वर्षेदः ग्रीयोयानायम्। वेमामासूनुःकैनास्धिरेतान्यस्यस्याग्रीसेन्दायाने रर रर में सृ दी ते किया से से सून र से या दी र पीन रसस से या किया है। गुनामाने प्राप्ता में भारता में भी भी है कि मान्या या महन में न ही प्रहोयान र्थेन्याम्रयान्यस्थित्रं । विनेविष्यं विष्यान्यस्थित्या वर्षासाधियाम। वि.धे.कर.मी.तवयात्तासायाच्याच्या रावयाद्वरात्रा वर्षास्तरहेते वर्षायात्त्रुद्या (देर्त्रत वर क्षा वर वर्षा वर्षेया र्नेन्धियाः वियाः अस्य अस्य प्रियाः । वित् सुयाः अस्य अः यत् व्याः यविः नरःग्राम्या ।(स्राम्यःसंदेःन्यादःक्ष्र्र) न्तुःभ्रामाणुःवेदेःखूरःसःवर्ःनःनेः न्ना विश्वानम्म ने ने ने क्या में यो क्या में या स्वास्त्र स्वास्त यहं यानराम्या (यूरायार्दिनावत्यायय) हेयामायुर्तानिता कु गवर नग ग्रम्के गम् भी दे भेषा अक्षय य शुः श्रुमः हे भेषा के गा हो ना य ल्रिन्यूम्। क्षेत्रास्त्र्यीशक्ष्याः सृत्ये अक्षयशः श्रुम्यायमे विष्यास्य

१शुर्देव ग्री तुर्यायायायाय पर दर्शेव या

है: भूतः त्र क्षेत्राची त्राक्ष्य त्र त्र क्षेत्राचा व्याक्षत्र व्याक्य व्याक्षत्र व्याक्षत्र व्याक्षत्र व्याक्षत्र व्याक्षत्र व्याक्षत्र व्याक्षत्र व्याक्षत्र व्याक्षत्र व्याक्षत्य व्याक्षत्र व्याक्षत्र व्याक्षत्य व्याक्षत्य व्याक्षत्य व्याक्षत्य व्याक्षत्य व्या

श्रीट्रमिष्ठमान्त्रेट्रम्या मह्रम्भद्रम् । विश्वास्त्रम्भद्रम् चुर्न्याह्रम्भद्रम् डेशः खुंग्रश्चितः तुः निर्देतः याद्यः तेः त्यः तेः विद्या हेशः यदिः याद्यः रे.प्रेर्-र्र्मग्राध्याप्टा गर्यारेयारेन् क्रिया वेयाययाप्यार्यार्यार्ये प्रेर् होत्। यारमः रे व्यमः देत् हुरा वेमः यम्भः यारमः रे देत् वहुरः खुव्या यारमः रे य दिन थ्वा वे अ प्रश्नाप्त अ रे दिन ग्री हेव पविर में न दे के पा खन ग्री वेद्रायाद्रायम् श्रुरादेवायदे सेटार्द्रेवायार्ययायस्याद्रा इस्राद्वेया धीवरमित्रे के गास्तर गाववर इससाय सेट देवरगाववर र क्रूट हो र छी वुसाय बेन्ग्यरर्नेव्याययाचेन्ग्ये वुयायर्थन्ते। भूगायर्थायर्नेव्यू भुः सक्समार्श्वेराम न्यामरदाम मान्यादेव माने नुसामार्थे न्यामने विष् र् ग्राम्यायम् वर्षायाः स्वानित्रम् स्वान्यायाः वर्षायायाः वर्षेत्रम् न्दा मन्यादा है ना यायायन्यायानामान्दा श्रीयायार्वेद्यायान्द न्त्रिनन्त्रामान्य शुःवामान्त्रमान्त्रा नुःवाम्यामा वयावानुया है।वा द्वेना हे याद्रमे म्वयान प्रमा दे याद्रमा व्यवस्था हे या हे या हे या हे या है या है या है या है या है या है या ख्र-त्रदेव। डेगा'वेग'नेग'य'भ्रुय'य। डे'द'वे'द'ने'द'य'दे'र्दर् ग्रम्यान्ते नुर्यायाष्ट्रम्याया सर्वे मान्त्रम्या स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स् सळस्रशःश्चें रःनः न्दा देवःश्चेः छः दशः न्हें नः नेवः न्यायाः नवेः नुसः । गिरेशमे भेरिया विन हिन्द्री वहुगा द्वापाय सम्बाधार विद्या

क्षेत्रान्त्रिः ग्रीः द्रम्भाय महार्द्धेतः देत्राः प्रभः क्षेत्राः त्रीः त्राः कः ५८-१५ व.ची. वावर हे. क्षेत्र वचीव संगार्ड में त्र क्षेत्र बिटा के वा क्चित देवा पशक्षेत्राची रे १३ अश सुद शुअ कें वाश पाय पा नहेद दश नहें द रा पे रहा मी'भीन'ग्री'र्कें र'वर्'र्वा'र्से'ने'ग्रार बग्रा'स'र्से व्यापिते क्रुन्'वा क्षेत्र नर होन यदे के वार्ने व की क्रम से स्ट्रिस पर्ने व साम की वार्म की वार्म के वार्म की वार्म क रेगा'मदे'प्यत्र'यम्। तुः शुर्रामदे स्नुत्र'म्या ते से से मार्या ही हर्या ग्री पर्रु 'मेर्या वहेत् सूर्याद्रास्त्र सुत्रापर सुरायदे सेटा तुस्य पाया तुस्य द्वी द्वा किया बर्गी केत्र के रामे रामार पर रहर नह के रामा रामा कर के रामा रामा स्वार पर रामा स्वार राम नरःश्वरःभवे के नानी श्वरः स्वायार्थः विया विया वा न्या श्वरः द्वारो स्वरः स्वर र्। गयाहे शुर्ने श्रूराय दी विक्रिया विक्रिया विश्वा हेव गर्अ अर्थे अवय द्या पदी । श्चिया रु अर अव स हे द रि प्रमुद्रा । विश्व स ख्न-अट-प्र-क्षेत्रानी क्रें न-न-खायानहेत्र-प्रते स्नुत-प्रता केता प्रतुद्ध अदि। रान्दा सून्द्रवासहे सार्यर होत्र प्रवे के सम्स्रासु र स्रवे के वा वी सेट नने क्रम्भ क्रम न हो न्दरकेषा स्वन्य न हेव सं विष्य के न मा क्रम न हो न्दर कैया सर ग्री अ किया देव ग्री अअअ प्रतिवास या व्यापाय केव पर्देव श्रिवः व्याप्तः देश

श्रूट्र शुर्वित्रश्चे क्षिया वे श्चित्र त्राचित्र श्चूट्र विद्या के वा वी श्चूट्र त्र त्र श्चूट्र विद्या के वा वी श्

वुश्रामाने प्यमासमा होता होता हो हा हो है सा शुर वर्षे ना निमा वेर्णे श्रुषेव व नर्हिर्देव न्यायय नर वेर्पा राष्ट्र देव सहस्यापर शुर मदे के अपि के अपि के प्राप्त के प न्र्रेन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रः स्ट्रिन्द्र याश्रयान्तरे कास्त्र प्या वर्षे राक्षेया स्त्र राक्षेया स्त्र राक्षेया स्त्र राक्षेया स्त्र राज्ये द्ध्यारम्बर्भार्यस्य स्ट्रिं स्ट्रास्त्र स्ट्री स्ट्रिं स्ट्रिं स्ट्रिं स्ट्रिं स्ट्रिं स्ट्रिं स्ट्रिं स्ट्रिं नश्रवामा । ने वे हिन्यम् नहेंन्यम् वरेन्। । वे श्राह्मन्यम् नहेंन्यवे मुन्शेवि'सळव'हेन्'ग्रे बुर्ग्गे अरळं र नवे देव दे नार मे अर न क्ष्रव पादी न्यायाः श्रुवे होन् मः धेव है। यर्कव याविवे न्ये मः यहेन् न्या विवानि मः न्या वि यानसूर्यानिया । श्रेरिया वार्षिया ग्राम्यान सुनिया । स्रिया ग्राम्यम स्रिमः यागुराया वियापगुरायया अर्कें दारादराय श्वरायरा मुते मुत्राया मु वे ग्रेन से ने या ग्रेन ने विया क्षेत्र ग्रेन ग्रेन ग्रेन मान प्रिया के या भ्रेन प्रेन ग्रेन ग्र वीशर्न्स्थः भुवाशःवारः सुरः दुः र्रेष्ट्रवः या स्वाशः क्रुवः क्रीः भूवशः ग्राञ्चन्र उद्देश । ग्राञ्चन्र अत्र श्री क्रुव प्रसम् उद्देश प्रदेश प्रदेश प्रमेश गःर्केवायायावाश्यार्यावारास्टावयायायायायायाया

। ५ वे अ न अव न प्रति । वर्गे न कु व प्रति । अप प्राप्त व र में न अप कि व र मे व्याः अटः र्रे वियाः यः क्षेत्राः अप्राचेत्रः यः प्रे अप्राचेत्रः प्राचेत्रः यः प्राचेत्रः यः प्राचेत्रः यः प्र न्याः अयोर्ने या अर्थः क्रुवः याववः इस्र अः ययदः क्षेत्राः खन् र से क्रुवः यावियाः ग्रम् सेन्यम् कैना स्नि सुर से निर्मे स्वि केना सुर निरम् गुर्। कैंग्र नडर्गिडेग्गाया रे व्यय भूगा परे नहें र दें या सुन उद ग्री:कैंगामी सेट न इसराय केंगा सर से क्रिंट न से पिर या ग्री पिर या ग्री पिर बेन्द्रायम् । भूगानस्यामे केदार्यायनर विद्या । सेगागी समयया श्चेत्रसेट्रग्रम् । सक्रेसेरळम् कुत्रप्तनम् मर्गुम् । हेस्रमेरेक्षिम्स नडन्गडिमान्त्रेन्त्यः क्षेत्राञ्चन्द्रम् स्वान्द्रस्यः स्वान्यः स्वान्यः नश्र्यापदे न्नर मे अर्र न्नर से न्यर से के सार्कर कुत सूर प्रवा यदे नसूत देव विवा वासवा नर ग्रुसारा नविव दे।

३क्षेता'वी'र्स्ट्र-अळसम्।से ना

भे द्वा भे भे दें त्यक्ष्य भाषा विद्या ने स्था प्राप्त के वित्र स्था के प्राप्त के प्रा

स्यायाची । स्यायाची । स्यायाची अप्तेष्ठी । स्यायाची । स्या

र्ययात्राम्भूर्यात्रक्षत्रत्रास्त्रीत्र स्राप्त्राम्भावर्यः स्राप्त्राम्भावर् यदे श्रें रावाया रेटा श्रदा है प्रेवाया थेंदा श्रदा रहेंदा सक्सम्यास्त्रेम् स्वास्त्रम् क्षेत्राचित्रम् स्वास्त्रम् सक्सम्भासास्त्रिमारार्त्तत्वामानेरमानेनामीर्यात्रेहित्त्रमारावेद्या वाया हे दे खूर वर्हे द वहुव पंदे द्वर द्व अग्राट वर्हे द य रेदि द्व वा अप्य निव हिंगा वेर धेरा १वर्ग निव हो । ध्या पहिराण विव हो र द्वा वर्ष सक्समानवर्दे निन्द्रिम् र्या र्याम् सक्समान्द्र गरिद्र परि यावर्गाने के या स्वत् की मार्स् व हो। के या स्वतः स्वतः या स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्व ८८.क्षेत्र.रे.क्षेत्राच्यात्रयात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या रगेराम् असाराय/स्रापार्टा/कृष्य्रामान्दा/विकाराय/ दॅर-सूस्रायदे के /द्व्यार्श्वेण्या ग्री/इवायर्शे राव/ववारी वर्से राव्य/ र्येग'दर्गे'न'विग/ध्रेंस'नु'नेन'नुन्। क्षु'नुर'गर्भग'भेग'भेग'मर्भसंद यदे अन्य र्शे र्शे र पाय हे द्वाप्य पार्शे द्वी य द यळ्यय पाउद र्छे पा ग्रम्। कैनास्रम्पेन्साध्यस्य उत्त्रियासम्यक्षस्य नाउन्नियासः

यथिव प्रमा न्त्रम्था न्त्रम्था न्त्रम्था न्त्रम्था न्त्रम्था न्याया व्याये व्या

क्षेत्राह्मार्था हेट स्वराव हेता हैन स्वार्थ ना स्वार्थ <u>हे अ'खुअ'रेट्'डे अ'नन'र्डे य'ट्'ड्रू'न'र्दे'र्नेट्'धेग'मी'ह्निट्'र्के अ'अ'ले अ'</u> रादे र्श्चेत्र र त्वाराय है। वेद प्येया या श्चेर केया सर श्चर सक्सारा शु र्ययात्रायार्थ्यक्र्यात्रा श्रूत्राक्ष्याः सर्रित्रे त्राक्ष्याः स्थान्त्रे त्राक्ष्याः र्श्वेर नर अवि दिन विन भूर के ना नी न सून देन हिना अ अ हिना अ र्शेवाश्रा ग्री म्हवाश हो दारा दे । वेदा धेवा वी खुद सेंदा साधेद । हाद रहे श निव हि से सका है। स्रवका वन के निहें हिंदी का सक्स का की में कि निका र्हेग्रायक्षिमान्ता सुरार्ने वार्याया स्वाप्ता स्वापता स्वाप्ता स्वापता स्व श्रेटाशृ द्वी द्वरा वादर्श शु नर्गे द पत्र अक्षेत्र देव देव स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स रायादराञ्चादरावासार्सेवासादरा देग्वदेग्देत्यावासार्सेवासाञ्चे रावादे। नावर्याना तुना केरा केना सक्सराय होराया केना सरार्या कुनारा ब्रुनःग्रीःसहेशःकःविवेदायदेःस्वन्तुः। न्त्रःग्रीः स्यान्वनाः ग्रुशः श्रीम्। निनः धेना वर्दे के कैना हना या ग्री अद्राप्त अववः निरामित्र या है या से या

वहें त्री देत वर अर्वे नवे धे में लिया धेत मं लिया हु में त्र मुर्ने प्र

गशुस्राम् क्षेत्रास्त्र ग्रीन्ते न्यान्त्र

र्वेन अन्य के किया अन्य के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के किया के प्राप्त के प्राप्त

१र्श्वे र.क्ष्यास्रिते स्राप्त्रास्राप्त्रा

स्तः न्दः न्दः शुः न्दः वायाः विष्यः विषयः विषयः

व.ज.चाहेश.रटा वश.जश.उर्वैट.धिरश्र.कु.मी वे.मी रट.मी टे. म्रा दरे म्रा गर र्शे ग्रार में म्रा या से दग्राग परे मु न र र में र र न मु र र्रे.ट्रे.ट्या.रट.यट.ज.क्रेर्जले. क्येट.क्रं.क्यंत्र.ह्या.ये.विट.तर.ज. श्चे निर्देश क्रिया व्यवस्य स्याश्चिम यो स्वर्धित स्वर्य स्वर नशर्राद्रवर्ष्ठताबेशागुःषर। रराद्रवरादेःषराञ्चेतेःश्चेराद्धवाग्चेःररः ननरार्वसायसार्ने वाची स्टान्नरासे नाते। वाया विशेषायह्या खुया श्वर र्रेट्र निर्दे न्वट नु नु अ व त्य अ र्शे वा अ र्दे व त्य त्य श्रे वे वा व अ त्य हु वा ग्यट । यत्वर्डेगावरधेरगेरवी इत्रवहर्वेरख्गादेत डेयव्यूययरशुनुन ८८। वनायर्भे कः प्रि नायर्भ में नायर्भे स्थान वावर्यायाञ्चरके श्रुरियो निर्वे निर्वे भूवर्या विष्युत्रे या धेवा गुरु भे ने दर्भ भाषा व्यक्ति गण्डा सार्वे दर्भ भाषा प्राप्त स्था विद्या मन्दा भे भेगा हो दानिवादा भारता हा स्याप्त सार्वेद सामा स्वाप्त मा सामा वर्षारायाक्षेवह्वाराद्या क्षेक्षायम् वाराववावीर्देवायास्पर्

यहरागायात् त्राळेंदायात्रया देश्याके हितायात्र हित्राक्षेत्र मिर्गाववयात्र यादे क्षेत्र हित्राक्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त

१५६मा ग्रःर्ने न ग्रेः श्रें न राष्ट्रे न

ही रक्षिनासन् प्येत्र तर्ने त्राम्ययान्य से न्या स्वाप्त स्थाने से न्या स्वाप्त स्थाने से न्या स्वाप्त स्थाने से न्या स्वाप्त स्थाने से न्या स्वाप्त से से स्थाने से न्या से

द्वास्त्रः क्रियास्त्रः यावित् क्रियास्त्रः स्वास्त्रः स्वस्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वास्त्रः स्वस्त्रः स्वस्त्रः स्वस्त्रः स्वस्त्रः स्वस्त्रः स्वस्त्रः स्वस्तः स्वस्त्रः स्वस्त्रः स्वस्तः स

वीकार्र्व, राज्यस्त्वीस्वानिका अञ्चित्रहे हिर्मे स्वान्त स्वान स्वान्त स्वान्त स्वान स्वान स्वान्त स्वान स्वान

३मु८.५५४। चीय.६५८। ची.सू.५४। मी

स्ट्रिंट् में द्रिंश स्ट्रिं । स्ट्रिंट स्ट्रिंश स्ट्रिं

क्षेत्रा व्याप्त क्षेत्र विष्ट विषट विष्ट विष्ट

वया याथी हिराहेश हेर्स हेर्स

इर्यन्त्रास्य श्रुप्तरे श्रुप्तरे स्रित्र का स्राप्ता वाया है। इर्पाहेश वर्षानवमा । पारावा सरामें वर्षानावा । स्राधी सव खुव विवानिव ८८। । ४८:वी :कः व्यव :८वा : हुः श्रु रा । ये वे वा राष्ट्ररा व्यव : वा हे वा व्यव : व् <u>ॷज़ॱॸॖॱॷॖॖॖॖॖॖॸॱॸऄॎॱॷॸॖॱढ़ॸॖॖॖॣॖॺॱॹॱॾॖॺॴॱॴऄॸॱॸॗॸॱऄॸॱॻॊॱऄॕॴॴॸऄॱॻॖ॓ॸॱ</u> राष्ट्रवाही देर्पार्टा वर्देर्पायावेश्वास्त्रहातेत्रभ्रम् गुर्वा <u>२८। विर.क्रूश्या हिराया वाश्या वेर.क्री.क्षरा ह्वाश्राक्षवा श्रूरायश</u> क्रिया हु त्युर्य यह द्या व्यवस्था ने द्या व्यवस्थित । के व्यवस्थित के बिया नवर। यर यर नक्षा भिन्न र वर कर ने वर सक्षा के र ग्री त्रामा से दाया विता प्राप्ता से दाया विता प्राप्ता से विता से वित विवानमून पर्भे तुर्भाम प्राप्त प्राप्त प्राप्त से प्राप श्चन चेन चेन चेन चेन चेन चन प्रमाय विया निमाय प्रमाय प्रम प्रमाय प्रमाय

श्राण्यायात् श्राप्ता वात्र श्राप्ता वात्र श्राप्ता वात्र श्री वात्र श्राप्ता वा

वर्तः प्रत्याया वर्तः प्रतः वेष्यः व्याप्तः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषयः

इन्नित्व वर्षा यान निष्य ने प्रेश की ने प्रेश शुन्त यान

याधरा वारवीश्वार्ययाराद्दरही क्षुतुः र्वेद्दर्या म्याद्दर्य वार्ष्य वार्ष वार्ष्य वार्ष वार्ष्य वार्ष वार्ष्य वार्ष वार्ष्य वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष्य वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्ष वार्य वार्ष वा

निन्न कैनास्त्रिः श्रीम्द्रियान्त्रिया

र्वोट्ट क्रियाः अत्राह्म क्रियाः वित्राह्म स्थान् क्रियाः स्थान् क्रियः स्थान् स्थान् क्रियः स्थान् क्रियः स्थान् क्रियः स्थान् क्रियः स्थान् क्रियः स्थान् क्रियः स्थान् स्थान् क्रियः स्थान् क्रियः स्थान् क्रियः स्थान् क्रियः स्थान् क्रियः स्थान् स्यान् स्थान् स्थान्य

१इसर्ग्रिवे केंगा स्रन्ग्ये क्वें मरक्षा मन्न

यर्नेवर्ग्यः इस्यन्त्रे वर्षेयर्नेवर्न्य वर्ष्यायान्त्र

हेन्यान्या हे अय्यह्नाधाना निर्देन के स्नियाय स्वाप्त । विश्वा स्वाप्त निर्देश स्वाप्त स्वाप्त । विश्वा स्वाप्त स्वाप्त । विश्वा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त । विश्वा स्वाप्त स्वा

निवाशान्त्र न्या क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्व क्षेत्र स्व

श्रुते श्रु र खुवा

श्रुम्पान्तिम् । प्रिनेर्स् क्षिण्यान्ति । प्रिनेर्स् कष्ण्यान्ति । प्रिनेर्स् कष्ण्यानि । प्रिनेर्स् कष्ण्यानि । प्रिनेर्स कष्ण्यानि । प्रिनेर्य वि । प्रिनेर्स कष्ण्यानि । प्रिनेर्या

र्नेन श्री श्री र ख्या

ग यश्राश्चान देःयादेशासरादुःक्टाद्वेशासदेःका मुद्रानाश्वा ह्रे। गराया हेरायदे पुषा परा हे त्या हु सायदे हु ना हे यहि साह्य स्था सर वर्चेन् चेन् चे त्याने स्वत्य क्षा व्या स्वा च विष्य स्व विष्य स्व विष्य स्व तुःनः क्रेंत्रः भदेः क्षेटः विवाः देशः भरः दर्वे शः हे। देः क्षेट्रः तः तुः नदेः देतः वाशवः नर्से तुरुप्रस्थ विषायर्त्व नदेशेर थेर थेर सेर प्रानह्या ने तुरुप्र दिन ग्री:श्र-वेर्वाया ग्री: क्षेट्र वी 'देव त्या न स्ट्रान दे से दे दे दे दे ते त्या पर के या विया स्थार् : वासाय वियाय सामयः र वास्यायः स्थार्थः स्वार्थः वास्यायः स्थार्थः स्वार्थः वास्यायः स्थार्थः स्थार्थः वास्यायः स्थार्यः स्थार्थः स्थार्यः स्थार्थः स्थार्यः स्थायः स्थार्यः स्थायः स्थार्यः स्थाः स्थायः स्य नेअन्देशःग्रेःभेदःसबरःषःदेवःश्वरःपःग्रःनदेःदेवःउवःवेष्यशःभुःग्रःनरः देशकिटा विश्वासहायान भूति र्वेट विस्थान भूति ये के निवायान र नक्ता क्ष.यं.भ्रे.८६४१क्री.श्रीट.शबर.ज.ट्रेय.श्रीट.ता.लेज.ट्रे.ज.बर.वी.च. हुरामार्डसाङ्गेदामदी यसासु हु नान्दा वे के नियाय सु पर्देव वदासर अन्भेरा हत्याङ्गश्चेना क्षत्रानेदे के न न्याने क्षश्चर नित्रासन्ति असन्दर्भन्याने नित्रि असे नित्र स्त्री स्वर्भन्त स्वर्भासु स्वर <u> ५८:५वीं ४:ळे५:ग्र</u>ी:वींवाय:वे:क्री:६२ंग्री:येट:वय:ग्रुट:दें।

पि नर्गेशकेना वर्नेसन्में अकिन हे अप्यादी न वर्ष माहिशायश मन् नर्गेश्वामित्याक्तुं यळ्दानेशाउदाविषात्याकेन्न् न्योषाशाद्यानु न'नार'विगानुरुप्त'रें हैंव'प'हें। ने'यदर'नु'न'नहें न'पदे' सेर'दे सेर'पदे से ग्रे शुरुष्ट्र राजविर ग्रुष ग्रे श्रेरा श्रेष्ट्र वार्ष ग्रे श्रेर देव वार्ष श्रेष्ट्र वार्य वार्ष श्रेष्ट्र वार्य वार्य श्रेष्ट्र वार्य वार वार्य वार र्थेग्।मास्रीवर्गनदे नुम् सुदेवन्य सक्ष्यस् सुम्यादेव सुरके नुम् याने हिन्स् यदे ने वानु निर्मा से वान्य प्राप्त के ना से वार्से ना से ना श्रूशन्यासेन्। वित्रसर्हेर् स्रिस् वित्रवह्यायान्धन्यविवर्द्धवा ह्री नशरर्नु खुद्र देर नश्नु कृतुर ग्रु नाय सद्रिम्य स्र विश्व ग्रु नाय दि सर्रिक्सर्गेवामा क्रवर्रित्यानमवामा स्वाप्यरामकामासहित् ॡॱतुॱय़ढ़ॱय़ॱवे*য়ॱॸ्*र्रेशॱॻॖऀॱॺॗ॓ॸॱख़ॱॺॗ॓ॸॖॱय़ढ़ॺॱॸ॓ॱढ़ऀॸॖॱढ़ॾॕॸॱय़ढ़॓ॱॺॖऀॸॱॸॖॱ <u> चे</u>र्प्या के प्रकेर प्रेक्ष प्राप्त के प् विश्वायायातुः विष्युत्र विः विषायायात्य निष्यि विश्वाये व गिवि देवे के द द्वार देव द चुरा मार्श्व प्राया में वा के द पीव दें।

या हेत्रयात्रमा यावियात्रतः क्रिंभः यात्रः वियाः प्रत्मः यात्रमः यात्

र्रेन क्षेन क्षेन् चार क्षेत्र चार क्षेत्र के क्षेत्र चार क्षेत्र चार कर क्षेत्र चार कर क्षेत्र चार कर कर कर कर सक्षेत्रायन्त्राञ्चराम्बरासर्गायर्यास्याधेन् सेन्स्यायान्यान्या होत्राची क्षान्तरम्बरमा देशावर्या विष्येदाया क्षाने प्राप्ता क्षाने प्राप्ता विष्येदाया नियाग्द्रायान्य्या स्थानियान्त्र्वाया वियादाययाग्वेदा सुन्तः क्षेत्रा मुद्द निर्देश द्रशायश्य शु नु निर्धित । या या न्या निर्धित । या या निर्धित । या निर्धित । यो प्राप्त विष् श्चाश्चरत्रात्रार्वेद्रायाव्याविराद्युरात्रा नग्राक्ष्याप्रवाद्यात्रभूद वर्गिष्ठिमानामानव्यामावर्गिन्नामान्यस्य स्थित्रमान्नाम् वर्गिन्द्रमा म्रोटासेट्रायराल्या विवायना मुस्यक्षेत्रात्रेरात्रास्य वसास्रायतार् वहदक्षित्रसहेश। याध्ययायादगुरार्ध्याके। स्रातुःसबरास्रुरार्देवासदेः श्रेरः र्ने त् वित्रः के शान हे त् भवे स्थेरः वी शाचे त्रायते । धरायात्र शायात्र शायात्र । धरायात्र शायात्र शायात्र । ममा लूर्यत्यक्षित्रात्राम्बर्याचेर्यक्षित्राचायक्षाचेर्यक्षि श्रेर-५८। विद्र-क्रेश-न्र्रेद-धरे श्रेर-सामित्र मार्थ-र्रे ।

या कुं अळव छे हे। द्वेरवा हेव वृत्त हुँ वा मार्थिया कु से द्वा स्था के स्था वित्र स्था कि स्थ

वेत्। शुःनेदशःयळम्। पश्चात्रः पाष्ट्रम् पाष्ट्रम् व स्वात्रः स्वात्रः प्रात्यः स्वात्रः प्रात्यः स्वात्रः प्रात्यः स्वात्रः स्वात्यः स्वत

उ ने हिना व ने मुर्ग अने वे में में मानुन मवस ने हिन न में अपर क्रॅ्व'म'र्नेव'ग्री'ळ'वयाध्याप्टाग्राम'र्ये संस्थित प्रेम'यो नामे पर्ये प नमून ग्री ने 'हेन ग्री नें निहा हैं निवार ने स्वार ने स्व नवर नवे रें में भेर रें रें से बिरा नवर न जर से स्टाय अया वन्यायया नवरानावदी न्दार्सेरानाने विषासे से राष्ट्रेनान् से रा र्ग्रे.म्.म्यविषाःमदेः ह्युः सळवः परः देः धेवः वे । विष्यायः सरः दरः। देयः सम् भ्रमासम् हिन्सम् सँग्राम् ते ज्यामार्ये व स्ति से मार् हिन्स स्ति से मार स्ति से स् नगाने केन ग्री में बाला हु मामा भेता है केन में बाला है केन में बाला है केन में बाला है केन में बाला है के नाम न्धन् प्रदेश्वान्याते। ने न्या मी हे या शुष्पद न शुरुष में नुष्या ये या या धरःद्या देशःधरःद्या भ्रुवाःधरःद्या छ्रदःधरःदुःभ्रःतुःदेःस्थायदेःरःधेवाःदेः र्टा हे अप्टह्ना पुर्देश वयाया में न्या स्यान् हे ते के ना स्टान्य स्वान् श्रुरःश्रेयासेन्यमा नुःश्रुश्रुरःयाह्मस्यादे ने हिन्धितायमा साश्रुरःयादे ने हिन् सेव है। नेव हु न बन्। वेश सं नेव की में में म्युन हेश न नि से नहुन:मशने हेट्र नव्याम में राग्दर सक्दर शर्भे ।

स्त्रियाः स्वान्त्रियाः स्वान्त्रियः स्वान्त्रियाः स्वान्त्रियाः स्वान्त्रियः स्वान्त्रियः स्वान्त्रियः स्वान्त्रियः स्वान्त्रियः स्वान्तिः स्वान्त्रियः स्वान्तिः स्वानिः स्वान्तिः स्वान्तिः स्वान्तिः स्वान्तिः स्वान्तिः स्वान्तिः स्

व श्रुवे वह्या कुषायाववा

- (ग) क्रुंगळंत्रः र्ह्रेत्रं पायायह्याया देत्रः श्रम्भाश्चेत्रः स्त्रेत्रः स्त्रः स्त्रेत्रः स्त्रे
- - (८) क्षेत्रार्देव शृष्टी त्यायाया श्रृंवाया कुष्या से त्वर स्विट त्ये सा

- वनम् ध्रुवःसेरः नश्चनशः स्थाः वेश्वा प्रदेश्या नश्चनः ग्रुटः वेश्वा श्रेः ध्रिवः विद्या ध्रुवः स्थाः स्थाः वेश्वा प्रदेशः विद्या ।

याञ्चेदे तह्या कुषायावना

- (ग) अळ्अअःश्चित्रायात्वित्ताः वित्रायात्वित्ताः वित्रायाः विश्वायाः विश्वायः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः व
- क्रिव्या स्ट्रीय स्ट्रिया स्ट्रीय स्ट

क्षुन्दर्भाशुः धेन्दन्नायन्या । क्षुन्त्रे ।

- श्वीयात्राचावत र्यात्वशक्तियात्रा र्यायात्राक्ष्यात्राच्यात्यात्राच्यात्रच्यात्राच्यात्रच्यात्
- युःयःविद्य क्षिं क्षें क्षः क्षं स्वाधितः व्याधितः विष्यः विष्यः विषयः विषयः

ने द्वा अ श्वर त्वे य नवे आ | दि हे द य वे नव्य नव्य य वे नव्य वे नव्य य वे नव्य वे न्वय वे न्वय वे न्वय वे नव्य वे नव्य वे न्वय वे

श्रुते श्रुं र कुर्ण

यद्यः स्वतः श्रीः श्रीः स्वाद्यः स्वतः स्

र्नेन श्री श्री र ख्या

कें। गर गैर भेर भेर मिर केर केर इसस्य प्राया मिर भी सम्बर्भ गर प्राया मिर प्राय मिर प्राया मिर प्राया मिर प्राया मिर प्राया मिर प्राया मिर प्रा वी दि में श्रुर्य प्राप्त अर वी श्रुर्य प्राय वहे श्रिर हो त्य प्रवस्था ही तुराय व्यन है। नट से दी है से या ही अपनिटा निस् हैं न से में न से मारी है न से मारी है न से मारी हैं न से मारी हैं न ध्यार्थेट्या न्ययाथ्वाची वियापविया न्यमान्यर मी स्विया भुगया न्र्याग्री में राना क्षुन्ता महिषामानी क्षुनियान न्या नुक्रामी रेगाया केंग्रा केंग्रा केंद्राया केंद्राया केंद्राया त्या विश्वाया ॡॱतुरुष्यळेंत्रपटे नुप्तान्हेंद्रपटे केट वाट सुरुषे के वाट हैया वाट होया क्षु कुरुष् मन् इनिरेश्यक्षून्नेन्नानी में में नावन्त्र क्षून्न नर होन् मन्दि । वर्रेषः श्रुवे हिन केंग्रं भेगा ए गार्ड में । गार्ड या प्री श्रुन व हिन केंग्र न्हें न्यते से न्ह्रस्य राष्ट्रन्य वि नहें न्यते से न्यो ही खें या सा सु हु र प्य हिर्यावि देवे हिर्के अवाश्यानर हैं व प्या वर्षेय सुवे रसा वरेवाश्य नहेन हे हिन्नवि नहेंन पदेश्येन में क्रिन्य क्रुन्त हिन्कें अने ख्रा हिन् हिन्यविवे नर्स्य में यायय पर क्षेत्र है। नरे र त्या यह य परे से में याय हैं न्तः स्वान्त्रा । श्वः न्त्रां । । श्वः न्त्रां । । श्वः न्त्रां । श्वः न्त्रां । श्वः न्त्रां

त्व ने ने श्रा विश्व वि

(ग) ग्रेन्यर्थः क्रॅन्या श्रेयश्नित्यः प्रत्येत्त्रेत्रः या विष्यः प्रत्येत्रः क्रिन्यः विष्यः प्रत्येत्रः क्रिन्यः विष्यः प्रत्येत्रः क्रिन्यः विष्यः प्रत्येत् क्रिन्यः विष्यः प्रत्येत् क्रिन्यः विष्यः प्रत्येत् क्रिन्यः विष्यः प्रत्येत् क्रिन्यः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विषय

ন্মত্র'নহ'রুব্'ম'ব্ব'

- क्षेत्रचेत्रपर्धे क्षेत्रप्र क्षेत्र क्षेत्रप्र क्षेत्र क्षेत्रप्र क्षेत्रप्र क्षेत्रप्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्रप्र क्षेत्र क्षेत्रप्र क्षेत्र क्षेत्र
- (म) ग्रेन्यः क्रॅन्या ग्रेन्यः विवार्यम्य क्रिं व्यान्य विवार्यम्य क्रिं व्यान्य विवार्यम्य विवार्
- (८) कुः अळवः क्रॅवः या श्रः क्रेवः श्रेशः यश्चरः यो द्वाः प्रयः या क्रिः या श्रेषः श्रेषः या श्रेषः श्रेषः या श्रेषः श्रेषः या श्रेषः य
 - (४) गुःनदे विद्यान् र्स्ट्रेन्या ग्रेन्य मिन्य मिन्य प्रायने या

त्यीय। क्षे.येत्। । यथरी दुश.ग्रीश.लक्ष। शिक्षश.ग्रीश.श्रीरा, श्रीरा, श्रीश.वहेषी दुश.ग्रीश. यर.लर.प्रेर.यद्ग.ग्री.यद्ग.ग्रिश.यद्गरा, श्रीश.वहेषी दुश.ग्रीश.

क्र-ज्ञन्यन्यः सेन् ज्ञेत्रः सेन् व्यान्त्रः सेन् क्रान्यन्य सेन् क्रियं व्यान्त्रः सेन् व्यान्त्रः सेन् क्रियं व्यान्त्रः सेन् व्यान्त्रः सेन्त्रः सेन् व्यान्त्रः स्वत्रः सेन् व्यान्त्रः सेन् व्यान्त्रः स्वत्रः स्वत्रः सेन् व्यान्त्रः सेन् व्यान्त्रः स्वत्रः स्वत्यः स्वत्रः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स्वत्यः स

वाब्राया। श्राय्वेयानुःसम् ग्रेसाञ्चात्रात्रेयान्यात्र्वात्रम् ग्रेसाञ्चात्रात्र्यः भ्रेत्राचीः विश्वेत्राचीः विश्वाचीः विश्वेत्राचीः विश्वेत्राचित्राचेत्राचित्राचेत्राचित्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचित्राचेत्राचेत्राचित्राचेत्राचित्राचेत्राचित्राचेत्राचित्राचेत्राचित्राचेत्राचेत्राचित्राचेत्राचित्राचेत्राचेत्राचित्राचेत्राचित्राचेत्राचित्राचेत्राचित्राचेत्राचेत्राचित्राचेत्राचित्राचेत्राचेत्राचित्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचित्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत

वज्ञुराम्द्रभाग्रीः इस्रान्त्रीः वर्षे सार्ते वात्रान्य व्यक्षित्रां हे सायह्या धीयो विद्यान्य विद्या विद्

 अन् कारमेयात्युर्ग्यो न्वरावी यायया श्रुष्ट्राया से यह्वा वी वर्ग्यम् । यावे यादाया व्याप्त व्यापत व् नः क्रेंब्रायां वे विद्यानित्यान्देया है। निये स्वा वार्या से व्यया सुनित्य है। सर्वेदे वट वस वेद र तु वेदा न एस से दें सा न विसा दें सा समा सर न दें दा पिव्याक्षेत्रा सुन्तु हो से म्यून्य व्याप्य प्रिया हे या वह पाया नर्हेश्यः भ्रे द्वीयायदे स्ट्रिं कःवर्गविःर्देवःवःश्वेरःभ्रवशाह्यन्यरःभेन्यःभेवःह। वर्श्वेन्रेवाःभवेः र्देव त्रोय र्से ग्राय मुग्राय श्राय द्वार तिर्या में र्देश से देश से देश से रामी से रामा क्षेटर्दिगर्द्विनार्यासळस्या द्विः दटा पदायाळ न्यार्सेनार्यायया निर् भेटानी कः नुषाद्रें राशुः पेंदास्या देवे देवा उत्राद्यां नवे के नाया द्रषा श्वरायाधीत (विकान्ता वर्ष्याम्यार्थान्यार्थान्यार्थान्यार्थान्यार्थान्यार्थान्यार्थान्यार्थान्यार्थान्यार्थान्य <u> न्रॅस्सर्स्यान्रिन्द्रिन्यस्य ज्ञान्यस्य स्रेन्यिः स्वासीस्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य</u> त्तरमारिदेन देव से विक्रा मिलाय स्था श्रुष्ट्र मार्य १० विकाम सुरस वयाञ्चरातवृहात्वर्याचे वयापाराह्या ययाञ्चरातवृहात्वर्याञ्चे रह्याया नश्रुवःमःधेव। ११वेशःमयदःगवदःयदेःन्दः सञ्जवःवे।।

वर्चराधरश्रक्षःवर्चःयायादर्गाया क्रिंशःयारःवियायाविःयारायशः

वुर-व-न्देशक्षे क्रिंब-धर-ने-न्द-वि-ग्रीश-धवश भ्रे-व-क्रेंब-ध-वे-क-व्य-वि-र्देव.हे। रेग्रेन.वी श्रेश.जश्र.ययश यया.जश.क्रेंट्रा चर.ब्रेंग्रश.वश. येनमा नर्सेन मिट नमार्भेना ही नमार्ये गायु नुः से। वेन से ते वाय खट नु। वर्जुर-तिरम्भ-र्ट्स-र्ट्स-र्ट्स्य-स्त्रियोग्न-त्यद्वि-तिर्प्स-त्री यवतःश्वेर-त्यम्-श्वेर-ढ़ॕॻॱॿॖॸॺॱय़ॱॺॖॱतॖॱढ़ॏॗॸॱॿॖॸॺॱॸॿढ़ॱऄऀॸॱॸॕॸॱऄऀॸॱॸॕज़ॱॸ॓ॱॺॺॱ ब्यायाश्वात्राच्येत् कुः व्याद्भार्येत् व्याद्भारेत् व्याद्भार्येत् व्याद्भार्येत कुः सेन्यने वर्षे ११वेशमाशुरसायां सार्वास्त्री से पुर्वे सु विवासे रास से सार्था वर्तुर हिर्या ग्री देव ता है किर पहिंचा रा वे रे होर वी अर्था के या या या के या क्रिंश प्रशादम्याय प्रति क्रिंग्या क्रिंग्य प्रशास्त्र भीता प्रेम प्रतिस्था में न सबरा वेशन्दा गरोरापाद्यामोरी कु सर्हे प्रशादिरात्र नायशहर मा मियानात्वयानेवाना क्षेत्रान्ता वर्षेत्राधित्यानेत्यामाल्येयाता भूनर्थानेराने तथा वृद्यात्र त्वृद्य विद्यान्त्र त्वा हायया भूत्र दे त्रश्चिर्। भैश्वश्चराययश निर्द्धियश्चरादूर्वः बैरःकै.ये.इसराशे. नेशासर होरी ।१३ वेशामशुर्शास सुर मा हुर है। । न्वार्यात्रायात्र्वाया वाविःवारायश्रक्षेत्रः विवाः वेवाश्रायश्रायश्रयः

422

दश्याः कुषः न्यतः श्रुतः श्रुतः श्रूतः स्थाः धितः प्रदेशः वह्याः कुषः। वशः श्रुतिः वह्याः कुषः। वशः श्रुतिः

त्रवात्र स्थात्र स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्था

य वनश्रक्षाः क्षेत्रस्य प्रति । ह्याश्रा हेत् श्री हेत् वर्षा वित्र प्रति । ह्याश्री ह्याश्री ह्याश्री हेत् वर्षा वर्षा

लश्रमुदे तह्या र्खुला

ग कुः अळव र क्रेंव या ५ न न असे से में मिया क्रें ५ या दव या या स

पि. तुर्यावयः क्रूंयः त्रा स्वास्त्राचितः श्रुः क्र्याक्षः येत्। ।

स्वास्त्राचन्त्रे प्राण्णे स्वास्त्राचित्रः श्रुः स्वास्त्रः स्

१क्षान्त्रे साधिव परि केंगा सन् ग्री क्वें मार्क्ष या निव परि

क्यान् चेतिः क्षेताः खन्न न्यान्य न्यान्य स्थान्य क्षेत्रः व्यान्य स्थान्य क्षेत्रः व्यान्य स्थान्य स्थान्य क्षेत्रः व्यान्य स्थान्य स्थान्य

र्वे।श्रेम्थःग्रे।स्र न्निर्म

श्ची स्त्राचे स्वास्त्र स

क्रिन्द्रिक्षः श्रुवाः वी विषयः विष

 अक्रयंत्र्। ।

अक्रयंत्र्व्। ।

अक्रयंत्र्। ।

सर्ने अर्ग्य श्रुर्ग्य श्रुर्य श्रुर्ग्य श्रुर्य श्रूय श्रुर्य श्रूय श्रूय श्रूय श्रुय श्रूय श्रूय श्रूय

श्राक्त्रीं श्र्वाकाक्ष्में स्वाह्मकार्या व्यक्षे स्वाह्में स्वाह्में स्वाह्में स्वाह्म स्वाह्में स्वाह्म स्वाह्म स्वाह्में स्वाह्म स्व

कुन सुन थे । सन् न भन । या

इत्तर् अत्थि श्रेश्वर्षा विश्वर्षा विश्वर्या विश्वर्य विश्वर्या विश्वर्या विश्वय्य विश्वर्या विश्वर्या विश्वर्या विश्वर्या विश्वर्या वि

श्वराविःगाः भेरायश्वराविः यारायः यार्यः याय्यः यार्यः यार्यः याय्यः ययः याय्यः याय्यः

श्रुदेश्चित्रः कुवा

यान्त्रास्त्रास्त्रम् । त्रान्त्रास्त्रम् । त्रान्त्रस्य स्थान्त्रस्य । त्रान्त्रस्य । त्रान्त्रस्य स्थान्त्रस्य । त्रान्त्रस्य स्थान्त्रस्य । त्रान्त्रस्य स्थान्त्रस्य । त्रान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य । त्रान्त्रस्य स्थान्त्रस्य । त्रान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य । त्रान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य । त्रान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्यान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्

र्नेन श्रेश्वेर खुवा

ग सश्वः प्रदेश्वेनाः क्रुवः त्यः त्रह्माः यावे विष्यिवे वार्षाः से दः रुः सश्वरः

क्षश्रामक्षेश्वस्त्रम् स्थान्त्रम् । सहस्यान्यस्य । विद्यस्य । स्थान्त्रम् । स्थान्त्रस्य । स्य

सहं अ.क्यट.जया.जुध्नट्वा यट्टे.श्चेट.बुट्या.यो ह्याय्यक्वा.कु। क्षे.बुट्या । योर्ष्य त्याय्यक्वा.जुध्याय्यक्वा.जुध्याय्यक्वा.कुष्याय्यक्वा.जुध्यायक्वा.जुध्याय्यक्वा.जुध्यायक्वा.

स्यान्त्राच्यान्त्राच्याः स्वान्त्राच्याः वित्राच्याः स्वान्याः स्वान्यः स्वान्य

मूं।

द्रेच्यालटाजशायाक्ष्याश्च्री । क्षेत्रीयभ्रीयाचक्ष्याचर्न्यात्वर्ध्यात्वर्ध्याः विश्वरात्वर्ध्याः विश्वरायक्ष्याः विश्वरायक्ष्याः विश्वरायक्ष्याः विश्वरायक्ष्याः विश्वरायक्ष्याः विश्वरायक्ष्याः विश्वरायक्ष्याः विश्वरायक्ष्याः विश्वरायक्षयः विश्वरयः विश्वरयः विश्वरयः विश्वरयक्षयः विश्वरयः विश्वयः विश्वरयः विश्वयः विश्वययः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वरयः विश्वयः विश्व

इत्तर्या वर्त्त्रश्चाल्या श्चित्र व्या विश्व विश्व

श्रुते श्रुं र खुवा

न्देग्चां विश्वास्त्राहि । वाद्यास्त्रस्य स्त्राहित्य । विश्वास्त्री । वाद्यास्त्री । वाद्यास्त

2. देव श्री श्री म खुवा

ग अळअअर्भ्वेर्न्स्वेत्वान्यरुषायात्त्वाना ग्रेन्द्रान्यः यरक्षे व्यानिक्ष्यान्य । क्षियामिक्ष्यास्य स्थानिक्षा हा श्चिर्निर्निर्मायळ्ययाश्चिर्णिता वियापाष्ट्रम् ग्रानाम्हिर्मिर बेदन्ध्राष्ट्रिदेन्तर्सळस्यश्राश्चरतेन्ध्रायात्तेद्रायात्रात्र्वादेन्द्र उदानुः हेंदारानु याने या उदारा हो। धी यो प्रसूत्र या हे भी या यह रायसहया हे स्वाबर या वर्षेत्र ने निष्ठी वर्गाय है विवस्त व्राव्य है अहे व्यारी है ये प्राप्त ठुःचःवाहेशः रुशः डेवाः उरः रु: ठुशः धरः श्चें रः वः श्वे। शेवाः श्वेः श्वेः रेवावार्नेवाः रानमुस्याने त्युम् उतासुन्दान्यस्याने सुरा द्याने सके सानुमा सु नुरविन हुन ह्या व र्या शृष्टि हिन्य र सेन्य सेव प्यना वने र र्यु ग्री'नर'विद्र'द्र'रुट' बुद'नवस्र'हे'न'व्य'ठेग्।'ठर'नदे'सेट'र्'नद्रग्रार्थासेह्री सक्समार्श्वेर्नानवसायि । यद्यायात्रमार्थे स्वर्णाय्यार नःसेन्ने।

पि न्यानरदानदे भूगानरयाय ह्याया वार विया मे या से स्था या विश्वयानम् हेर्यान्यानस्य विश्वयास्य स्थानस्य यदेर्देवर्दे केंवर्देवर्धे अश्वाश्वयावरः होत्रहेटर्भ्या वहश्यीर्देवर्द्द व्यवाराक्षे नियम् व तुरायाक्षे ह्याक्षे निर्देशारी पिवायते हिम् यार्देश ग्री-दे-व-भ्रे-प्रेन्ते। नु-न-व्युक्त-विव-प्रेन्-प्रश्राश्चा । भ्रु-नु-मु-भळ्वः वहेव'रा'न्रा अवश्रारांदे'चु'रा'वाशुअ'श्रे। वळन्'रा'न्रा हैंन्'रा'न्रा हैंआ मर्दे। क्रिंस देवा वी नर्हे द ग्रुपि हे से स्व ग्रुट वा हुस ख्या ग्रुट प्रायस ग्रुट प्रायस ग्रुट प्रायस ग्रुट प्रायस ग्रुट प्रिय प्रायस ग्रुट प्रूट प्रायस ग्रुट प्रूट प्रायस ग्रुट प्रायस डेगा-विश्वायेग्रयायायानहेत्राचर्षि ।क्षु-तु-तृत्ते। नवे द्वयायात्रयायहेत्राया ५८। दमो म्बरित श्रु ५८४ वेग्रयायायाया ने प्रतानित विवास मान्या ८८.यो.ज.याहेश.श.होत्री ।क्ष.ये.क्षेश.य-५८.वर्ड्य.त.८८। श्रेंद्रःश्चे.सक्टर ने। इ.नेश.ग्री.सहव.शने.लंब.चें। इस.क्र्य.ग्री.सक्व.हेन.लून.ने। ह्रेग. प्रशानन्त्रायार्थयायायीत्राप्रमासुवारम्भित्रयात्र्यात्रायार्थः देत्रान्याप्रमा र्देव हो ५ त्या प्रते ५ देश हो । १ द्वा ते या के वा प्रदेव पा व व या व र गर्भे अप्तृ ही न तुः अप्पेर् देशि

ग्रम् वित्रायदेव प्रति । विष्या प्रति । विषय । विष्य । विष्य । विष्य । विषय । विष्य । विषय ।

कुल्यः भिरःहर्या अः वर्षे दिन् वित्या व्याप्त व्याप्त व्याप्त वित्या वि

नश्चर्त्रव्यस्त्रित्वेद्द्यायायह्याया वित्वभीयायश्चरश्चेत्याया । (शुः व्यायर्त्रद्द्यायाया । शुं त्यायं क्षेत्र्यायाः शुं श्चेत्र्यायाः शुं श्चेत्र्यायाः श्वेत्रः श्चेत्रः श्चेत्यः श्चेत्रः श्चेत्रः

নামার্ম্যনামান্তী:শ্রদ্বন্দ্র

इत्या इस्य ह्वाधियो वहार्ये वा । इत्या श्रु राव हेत् स्तु राय हिता स्तु राय हेत् राय हिता स्तु राय स्तु राय हिता स्तु राय हिता स्तु राय स्तु राय

श्रुतेश्रु र खुवा

2.र्नेन्गीः श्रेन्स्वा

या पर्श्वेद्द्रप्तराख्याया प्रश्चित्वायां द्रिः स्वर्थ्वायायां द्रिः स्वर्थ्वायायाः स्वर्ध्वायायाः स्वर्ध्वायाः स्वर्ध्वायः स्वर्धिः स्वर्ध्वायः स्वर्ध्वायः स्वर्ध्वायः स्वर्ध्वायः स्वर्धिः स्वर्ध्वायः स्वर्धिः स्वर्ध्वायः स्वर्धिः स्वर्ध्वायः स्वर्धिः स्वर्ध्वायः स्वर्वतः स्वर्धिः स्वर्ध्वायः स्वर्धिः स्वर्धिः स्वर्वतः स्वर्वयः स्वर्वतः स्वर्वयः स्वर्धिः स्वर्धिः स्वर्वयः स्वर्धिः स्वर्वयः स्वर्धिः स्वर्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वर्व

वर्गेर्यायर्की

प्रियास्त्रियाः स्ट्रियाः या यात्रियः स्त्रियः यात्रियः स्त्रियः यात्रियः स्त्रियः यात्रियः यात्यः यात्रियः यात्र्यः यात्र्यः यात्र्यः यात्र्यः यात्र्यः यात्र्यः यात्र्यः या

य है.य.ज.पहंचाता ह्यायात्रका के यहा ।

यहात्र स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स

वे श्वाप्त भारा

इत्यासम् विद्वा । विश्वास्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्य

न्यमः नः त्यातह्याः न्यामः निवानः नि

क्षेत्रभःक्षेत्रः विद्वान्त्रः स्वान्त्रः है स्वान्त्रः ह

न्यानरदानायादह्याया देवाश्रायात्यानरयायर्थायर्थाय्या

श्चीरानित्र क्षित्र क्षित् क्षित्र क्

भ्रम्भवस्थानम् क्रिन्द्रित्तं विष्णः क्षित्तं विष्णः क्षित्तं विष्णः विषणः विष्णः विषणः विष्णः विषणः विष्णः विषणः विष्णः विष्णः

55-31-95-51

र्यूट-प्रायायहुषा-प्रमाय-प्रत्यायाः स्वायाः प्रत्यायः प्रत्यायः स्वायाः प्रत्यायः स्वायाः प्रत्यायः स्वायाः स्व

म्याम्यास्यास्यास्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान

यद्यासायहर्षे विस्तर्भेत्त्र स्वास्त्र विद्यास्त ह्यास्य हित्य स्वास्त्र स्

म्बुन्यःस् । ।

स्वाय्यःस्वायः विवायः विवायः विवायः विवायः स्वायः विवायः स्वायः विवायः स्वायः स्वयः स्वय

स्वरःश्वरःग्राय्यायायाः वेतःयावाः विद्याः स्वरःम्यः विद्याः स्वरःश्वरः स्वरः स्वरः

यान्यश्रास्त्राचाश्रयाचेन्यत्रह्त्वासा यन्त्राया वेत्रस्त्रे विद्यास्त्र विद्यास्त विद्यास्त्र विद्यास्त विद्य विद्यास्त विद्यास्त विद्यास्त विद्यास्त विद्यास्त विद्य विद्यास्त विद्यास्त विद्

शुः अवाश्यान्य विद्या । श्रित्त । श्रित्त विद्या व

अर्द्ध्यान्याम्याः मेन्द्रित्याः वित्रायः वित्र

श्चे श्च न न न न

गडिनासुः अः गर्हेन् अः अः नश्रुवः भवेः क्रुः अळवः प्यरः नेः सेनः हैं।

र्नेतः श्रुं । हिनायायहिनाया र्नेत क्री हो हो हो हो हो स्वार्थ स्थान स्थान स्थान हो । विकार स्थान स्य

र्नेत्रा वाराश्यायह्वाया श्वेराय्यायाय्यायह्वाया वार्वेषाय्या क्षेवार्रेत्वार्य्याय्यावत्रभाभ्यायार्थेत्याय्याय्याय्याः विश्वायायाः क्षेवार्येत्वार्येत्वाय्याय्याय्याय्याय्याय्याय्याय्याः विश्वावाय्यायाः श्वेष्यायाः श्वेष्यायाः स्वित्यायाय्याय्याय्याय्याः स्वित्याः स्वेष्यायः स्वित्याः स्वित्याः स्व यार त्य प्रिंव प्रवासके वा सरदानदी । दर्गीव सके वा दे त्या स्वाप दक्षा वि यर.ग्रेश.स्य.र्चरश.गीय.यशिरश.सद्ये विस्थ.सद्य.रचेरश.ज.स्या. वक्षाक्ष । पार मे अ से र पावि र्स्ट्रें र पास्र र सदी । ह्या वि र य स्या वक्षतात्र्। ।(श्रेश. वे.चतु. इ.च.जरा) वेश. ततु. चीर. श्रे. कं. ही. चीश्रंश. ही श रेस्रानवित्रन्गेत्रसर्केगान्दा यहस्रान्च्रस्या ह्याविःनायासुस्रसर्केतः धरानेत्यादी क्षेत्रार्देवाने अदेश्वावया भूत्रात्या हें या प्राप्त हिंदा ही या हे सूर नमूर मरे नविवर् र्व नशेर में विकाधिर त्याननका मंदे के वा भ्राधर बिनार्ने । (मर्विन नुः म्रायेन) सुः तुरुष सर्वेद ने। शुः न्दः ने। है सुरः न्दः ने स्निम् हे तर्द्र न्दर्ने तद्य महत्य न्दर्ने त्या महत्मे अन्दर्ने धिया वेयायः र्शेम्राश्वरद्धं व निर्देश वहें मानी क्षु व्यें न व मान श्रेम्र श ग्री श ग्रान ने व हो। च्याः सः वियाः द्वेतः देशि

स्वान्यायात्व्याः अन्याः अन्याः अन्याः विद्याः विद्या

याद्याद्यात्र विश्वास्य विश्वासय विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विष

न्यायाः भुःदर्भे अः नेव न्दर्य वक्षः यः चल्दः या

इन्त्रस्था निर्धानस्थित्याई न्यदेष्णस्थयत्व । क्ष्रिक्षे क्ष्यं स्थानस्थित्य क्ष्यं निर्धानस्थित्य क्ष्यं निर्धानस्थर्य निर्धानस्थरम् निर्धानस्य निर्धानस्थरम् निर्धानस्य निर्धानस्थरम् निर्धानस्थरम् निर्धानस्थरम् निर्धानस्थरम् निर्धानस्य निर्धानस्य निर्धानस्थरम् निर्धानस्थरम् निर्धानस्थरम् निर्धानस्थरम् निर्धानस्थरम् निर्धानस्थरम् निर्धानस्थरम् निर्धानस्य निर्धान

श्चें रःकुंषान्देशम्बन्धा

ग गुन्नन्त्र्रेन्द्रिक्षिट्या श्रुन्त्र्या अन्त्र्रिमान्नुक्षानुन्नन्त्र्रे

रादे सेट वी विवासर हुँ र के। सपीवा गुरा वेद पद्यारा साविवार विवास र है न-१८ अर्दिर अर्धिः र्श्वित वर्षे अर्द्ध मास्त्री प्रमेश्व अर्ध्व अर्थित। यानवर् यानञ्चनया यानग्वायाकर् यानुया यान् याञ्चर थ्रानु ८८। श्रे.ल्या.ट्रे.लश.र्क्स्य.क्षे.लट्श.स.स.स.श्र.पट्या.स.स.च्रेट.यखेय.ट.क्षे.य. ८८ मार्थित के स्वास्त्र के स्वा भेरम्बर्भ भेरम्भुत्र भेरत्री भेरत्र भेरत्मम्भेरम्ह्री भेरत्मुभ भेरत्म शेयहंग्या शेयवी शेयव्या शेख्या शेख्याशे हरा शे क्वी शेर्य्या भे न होना क्ष्मान निष्मान के कि निष्मान के न याशुर्याची प्रचे प ग्राञ्चनार्याक्षे त्र्युर्राचि त्याया क्षेत्रा प्येत्र प्या । याप्येत्रा स्रुराया वे त्राया <u> ५८.५वे.क्र.चट.२८.मु.भेचश.श.२ववा.श्र.ज.चक्वाश.५.२श.मु.वि२.</u> धराष्ट्री र्यापायाविष्यायात्रे प्राची सुर्श्वे राद्धवासी विषयात्र ब्रम्य निग्ने के कें मार्थ निया वर्षेत्र क्याया नयय के निया क्ष नुदे-नगगः शुःशुरः खुवाने शुः या ग्राना में नायो से स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स वर्दे नियाना श्रुदे श्रु र रहेवा प्यताना र निया हु हो दारा वा शुः सह द रहे प्यता

बेर-र्ने।

या यायय होत् हो होत्य श्चित्र या द्येत्र वा यायवा या यायवा सेता थे स्वा यायक्षेत्रा थे तुत्रा थे यक्ष्य थे यद्या थे यद्या थे यद्या श्चित्र प्रति हो हो त्याय से श्चित्र प्रति श्चित्र श्चित्र प्रति श्चित्र प्रति श्चित्र प्रति श्चित्र प्रति श्चित्र श्चित्र प्रति श्चित्र प्रति श्चित्र श

की सन्दर्भ अन्तर्भ सर्थे। अन्तर्भ अन्

गिनेम् भेरमनेम् ग्राभेरमग्रासर्मग्रास्यम् ।

दर्शेश-र्नेव-गावव-ग-१५-१।

श्रेटर्नानी र्वेनास्य सुट्रन्निया स्ट्रान्से स्ट्रिन्से एक न्याना श्रुर्धित नर्भित्रभूत होत्र हो कः न्या शुः श्रु र नवर वित्ते। या से सित् के रेगमा समावी से केंगा सकुता क्षःतुत्र दिः संदर्भेगरः संस्थान्तर या होता सुः या सेता यद्वा यद्वा दे या वद्वा की या व्या विष्या विष्या विष्या विष्या यक्त मुः अर्ने न वृः तुः वृंगाः यः से वदः नदे से दः सुदे नरः सळस्य यः सुः श्चरके पादिकार मादि कार मादि कार मादि से साम मादि से साम से स न्याययान्यान् असे वाराया सेटानी का न्यान्यान् स्वीति । स्व र् सेर डेट र नाना मंदे रें व र र से ख़्व मंदी सेर नी क न्यार र यार.यी.ब्र्या.अर.र्थर.श्रेर.त.त.याथर.र्.श्रुर.तश.रर.यार.त.श्रुर.तीय. दे वर्गेना धर हो दाय है द्वाना श्रुटी ।

नन्गाञ्चायर्थे अर्देन नन्गन्य अर्थान अन्य

इत्या विराधित्वी स्थान्य विष्ण म्यान्य विष्ण म्यान्य विराधित्व स्थान विराधित स्थान विराधित स्थान विराधित स्थान विराधित स्थान स्थान विराधित स्थान स्था

श्चें रःकुंषान्देशम्बन्धा

मः हो नः स्थापनः सँगार्थः सूनः भाने । यदे नः मह्मनः हो। निष्यः स्थापनः सँगिरः सूनः हो। निष्यः स्थापनः स्थापनः सँगार्थः सूनः स्थापनः स्थापनः सँगार्थः सूनः स्थापनः स्यापनः स्थापनः स्थापनः स्थापनः स्थापनः स्थापनः स्थापनः स्थापनः स्य

म् विन्ना क्षेत्र स्वास्त्र स्वास्त

प्राप्त क्षेत्र प्रमुद्द प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षे

महत्त्री गिर्भारी वित्यम्या श्रभुता हैग्राश्यर्वेद्या क्षेत्राश्रहेद

म ग्रुप्तावर्द्द्द्रिप्तिः श्रीद्रात्मा श्रुप्ता श्रुप्तावर्द्ध्याः व्याप्तावर्ष्ट्याः व्याप्तावर्षः व्यापत्तावर्षः व्यापत्तावर्यः व्यापत्तावर्यात्तावर्यत्तावर्यः व्यापत्तावर्यः व्यापत्त्यः व्यापत्यः व्यापत्त्यः व्यापत्त्यः व्यापत्त्यः व्यापत्यः व्यापत्यः व्या

दर्शेशः रेवःगवदः नन्दः या

यर्दुर्याथ्वा ह्यायाउवा क्षेत्राइययादी पर्याञ्चा येत्याञ्चा न्दःनन्गः श्रुः संप्येन प्रदे । हिन् प्रमः दे। स्मान्य से दे दे के का श्रुः गुनः पश्याश्वर,रे.श्वर,रा.श.लुध्य,रा.रे.रे. क.लश.रे.रेया.श्वर,रा.रेर.श.श्वर. मित्रे सेट द्वा वी वस्त्र देव सक्द स्था मान्य सुवा के वा न्य हो वा नु से न'न्रा क्षेन'सून'ग्रे:भूनशःशुःनसूशःग्रहःकेन'रा'न्रा न्राःबन'ने'नेन यानियागुरार्थे सेदे नुग्नाम्ययान यह यागु निर्देश संदिर सेदारा वे निर्माञ्चाराधेव मदे अरमी क निर्मा उं अर्ज मा बुर विरा रे त्य अर्थे मा है। य र्से स्वायाया हुराग्रद्धार स्टार्स्य त्यार्द्व देया उत् विवा हेवाया ८८। य.म्.स्यामाञ्चरायमाञ्चायाम् व्याप्ति स्त्राप्ति स्त्रापति स्त्राप्ति स्त् नेवे नन्ना सेवे में त्रायानियान ना भूया केना यह्ना हु स्टान ना उसार्द्धेवायावे नित्राञ्चा धेवायम्। निहार्द्धेतार्द्धेवायम् वितार्द्धेवात् वे हेंगाया गराया सुया सेगाया नदगाया गदयाया १८५५ तुःस्रायादराया नन्गारेवि रेन्यायह्यायराम् शुर्यायात्री वेन सेवे व्यास्टर् स धिनाधित रहन निना श्रुष्टा धिना कित्र या कित्र या कुन्या क्षुनुने से से मिहेया कुरा ही निते से त्या वहुना या निता १५ दिया न्या क्रें भेगाभेन क्रम्यन्या श्रुष्या भेन प्राप्ती हैं क्री नहुन क्री नुः क्रें स् नु ने से से मिन्र स्थान् ने निये से स्थायह्या या निया १८ वे साम्य स्थाय ८८.भीय.वयात्रव्यात्रव्यात्र्यात्र्यात्र्यात्रेत्रत्यात्रेत्र्यात्रेत्रत्यात्रेत्रत्यात्रेत्रत्यात्रेत्र ग्वितः परा न्रें न्र द्वारा ग्री ग्वित्र भूनश्र शे रेन् न्रे न्नर ग्री श श्रु याडियायी अर्दे वर्शी र्थेया यस्त्री यद्दर या याहि अर्थे वर्ष यददर पेंदर दे। केंवर या नर्ने न सम्रन हुने भूक्या हुयाने कृत्रम द्वित्यस केंस्र स्वा नर्वे नर्यातस्य त्यां स्वार नर्या स्वार नर्या स्वार न्या स्वार स्वर स्वार स्व देशक्षेत्राची त्तु र्दे शुरु हेशसायर। अत्राध्य अत्राधित प्रश्नित प्रश्नित वि भ्रवःमा ह्यार्चे ग्रामा में असी ह्यार्चे हिंदा निवास के या विवास के ग्रामा स्वास सी श्रेटास्याम्बर्धान्त्राच्यास्यान्या श्रीत्यान्यान्त्राच्यास्यास्या र्शेवार्थायन्वाः श्रुरःश्रुरः क्षें कः न्वरःश्रुर्थः यार्टवाः हुः श्रुर्थः यरः र्भेया.त.रेटा श्रट्या.क.चंत्रात्वराचर.वीर.व.क.चंत्राक्र.वर.वीया. र्गे।

इट-श्रुवाश-च-१८-१। श्रुट-श्रुवाश-च-१८-१।

यान्यन्त्रम् अवस्य । वित्रकेश वेदे वे अप्यानिया । वित्र अप्याने विष्य । वित्र अप्याने विषय । वित्र अपयाने विषय । विष

र्नेन श्री श्री र खुंवा

तम् र्श्वेन् १६ न्या स्वाधियात्ता विषयात्र विषयात्य विषयात्र विषय

ग्रम्भ मुंद्र चुःनः न्दः चिन् कें मार्मे निया से स्वार्थः मुद्रिः नरः सळस्य राशुः श्रुरः है। नश्रुवः र्देवः र्दे सहस्राधारा ना सहस्रः रु श्रुवः नर हो दरो दरोर वा कैंग सूत विद्या से नरा सहें रा निद्या सुन यदे में दिन् देन कि स्वार्थित स्वीत्र स्वत्र स्वते स्वत्र स्वत्र स्वति स्वत्र सक्देने नसर विरम् वाराप्ता विर्वेषा संसूर विर सहेन संप्ता यग्रीत्रपातिर्देग्राश्वयाश्वेराच्या विर्डे पदि प्राक्ष्यापद्याथ्या ।(श्रुत्र रवासे वेंद्र वस्त्र भ्राम्य विद्र केंद्र स्वाम्य स्वाम स्वाम स्वाम स्वाम्य स्वाम स्वाम स्वाम स्वाम स्वाम्य स्वाम स्वाम न्दा देन्द्रग्रस्ट्राहिन्द्रीर्यावन्यायरम्भेग्रस्ता । हिंग्रस्ते वसेया हो द्राया । द्रमुखावसुर इसा हे द्रमाया विदेशया । वर्षानिरः स्वायाने। द्वानेरान्धरः वेरायरायरान्येयार्था । यदवः वसरमानिरासेंगासेंगायावर्गेयाहेराह्यादमानस्त । सिर्नुनुन्यस्थे सक्रसः नुः श्रु रः नः नृहा हेग्र स्था धेवः नृतः क्रस्य स्यू रः विहा । यहेनः नशर्रेक्षित्रस्य स्टिन्।।(स्रास्त्रिके त्ये वास्य निष्य स्त्रिक्ष विद्या स्त्रिक्ष स्त्रिक्ष स्त्रिक्ष स्त्रिक न्यायी न्यायी न्या सुरवहिया हेव साह्यस्य विदाया से विसाही न्या से स्था हु ना विदा नर्सेन्द्रस्थानी सञ्च त्यस्य दृष्य वर्षा सुन्य राष्ट्रस्य स्थान

(देन चेर प्रमर्से नासर सम्बर्ध) कृत्य क्षेत्र क्षेत्र सहस्र पृष्ट्य स्थाप्य । वहनार्यो।

पि यहेत्र ह्या नश्रव नर्डे अयाव्य ही खर केंगा है नवेय यहेत्र प्रवस् र्देव रंग प्रदेव पर्दा वेदि दु च निद्या वर्षा प्रदेशेट द्र रहेवा दे वा श्वा वराबेदायावरुषाग्रीदिवायार्श्वेदावार्शे द्येरावा वहार्श्वेदावेदावा यश अन्दर्भे दे भेरावार वी र्वेवा अर श्रुर्भ राज्यवा पर श्रे । अदे वर्षान्दासार्देद्यामा । भ्रान्ते नास्य नास्य मार्थे । विष्णाम्य स्था । विष्णाम्य । खरळेगायदेवयाद्रा वहार्रेन्सूनविषायीया सेवसेट्यिक्सेवसे लेब्रायराद्यायाः सदे देवाया दह्या समाद्यायाः भ्राद्र स्टाम्स हेवा प्रकर्मः धेव भी। ने नग वे नगग अदे अन से वे का म ने व का भी भी से म स्रदःर्देव पद्रेव पश्चे। जावव सी क्षेता हे प्रविव प्रत्नु अप अप्येव प्रदःर्देव द्यानग्रीन् पर्दे । विरामारायया स्टर्यायदे विरयान्य पर्दे विर्याप्य महिरासमा यार्ने वा मारामी यात्र सुनाम हो दासु यार्ने या मारामी यारा से दा दरक्षेत्राः स्थान्य स्वराचेत्राया हे साले सार्वे त्र सुरायशकेता से। रिंदिः क्षेरायाञ्जयान वराले या व्या हिंदा हो दा है । क्षेत्राया है । क्षेत्राय है । क्षेत्राया है । क्षेत्राय है । क्षेत्राया यर्दे । श्रेयः म्वरम्ययः ग्रेयः शेरा न्युरः दया । यह्नाः यः सेरः हेयः नवरः यर ग्रेरी ।(अ.भ्रुदे खेवारा नन्द खरा) धुया ग्री सबद विवाद ग्रिसेंदि

मॅरिलेशन्तर्भे कें संस्टर्टिन स्थित्रें। सिन्दें।

य पड्डे स्थुन् इत् हैं स्थित छैं या मान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

त्र्वार्था श्रीत्र विद्याले व

यम में म्यान के स्वाप के स्वा

उ श्रुवःश्चेत् ठेगःवेगःवेगःविगःगश्चरःगव्दःयःयशःविगःग्चेनः श्रुवःयःन्तः वर्नेनःनेतःवश्चरःयःश्चेतःयःन्तः श्चरशःक्ष्नःगश्चरःग्चेनः उद्यानेत्रःवश्चरःयःवह्गाःश्चे

चर्त्रात्रात्रात्रेत्रात्रेत्रात्रेत्रात्रात्रात्रे श्रेष्ट्रेत्रात्रात्रे श्रेष्ट्रेत्रात्र्यत्र श्रेष्ट्रेत्र चेत्रमात्रात्रेत्र विवाधितर्ते ।

- त्र्वाक्षेत्रीयः चीर्यायाः चीर्यायः चीर्यः चीर्यायः चीर्यः चीर्यायः चीर्यः चीर्यायः चिर्यायः चीर्यायः चिर्यायः चीर्यायः चीर्यः चीर्यायः चीर्यायः चीर्यायः चिर्यायः चिर्यः चीर्यः चीर्यायः

बीनाबेटमाईनाक्ष्यान्य होत्री वित्र ग्राटी हेना बेना निना नाश्याक्ष्य होत्री वित्र ग्राटी हेना बेना निना निमानाश्याक्ष्य होत्री वित्र ग्राटी हेना बेना निमानाश्याक्ष्य होत्री वित्र ग्राटी हेना क्ष्या होत्री वित्र ग्राटी होत्री वित्र ग्राटी हेना क्ष्या होत्री वित्र ग्राटी होत्री होत्री होत्री होत्री होत्री होत्री होत्री होत्र ग्राटी होत्री होत्री होत्री होत्र ग्राटी होत्री होत्री होत्र होत्र होत्री होत्र हो

(11) ने ञ्चानन्त्रा

देट निर्देश का श्री माना निर्देश के निर्देश निर्देश निर्देश के नि

मश्चर्यान्त्राची विश्वरामित्रा विश्वरामित्रा विश्वरामित्रा विश्वरामित्रा विश्वरामित्रा विश्वरामित्रा विश्वरामित्रा विश्वरामित्रा विश्वरामित्राम

य्यान्त्रित्ते स्थान्य विष्ट्रात्ते वर्षे त्यान्त्र विष्ट्र विष

न्द्रभार्यादेशन्त्रभावत्त्रम्या श्रेभात् व्यवस्य व्यवस्य व्यवस्य व्यवस्य विद्रभार्य देश हिन् व्यवस्य विद्रभारत्य हिन् विद्रभारत्य विद्य विद्

है। शुःर्श्वेष्यया न्द्र्यास्ति न्याने शेष्ट्रिय है। शुःर्श्वेष्यया न्यान है।

(12)वर्ने श्चानन्त्रा

देश हैं देर महिश्राध्या स्टर्ग प्राप्त का के प्राप्त का के प्राप्त का के प्राप्त के प्र

श्रम् इसन्ते न्द्रक्षण्यन्य । अवतः इदः वदः न्द्रन्य। १इसन्देवेदेदे ने न्द्रक्षण्यन्य व्यवस्थन्य।

इस्रान् होते सक्त होनाया धिया नश्निय स्वाप्या संदेश महिता ह्या । ग्वन्द्रस्य न् हे न् कुन् से ग्वन् स्ट्रमी ग्वन्य क्षेत्र हेन् नु द्रस्य स्ट्रन् हे नरः ग्रुःनदेः श्रुःने : इस्य स्वयः द्वेदे : सक्य हेन : धेव। १०वे सः नरः। वेदः श्रेदे वया सुर र्यु केंश्र या र प्यर सुर य विया यी स्थेर कें या रे या व्यर र र स वर्रेश्यास्य इस्रास्य हे से से राष्ट्री विदाय होता व्यास्य सुदे स्वास्य स्वास्य शुर्रायदे के वा स्वर् के वा त्या इस र हो ले या हा ११ ले या से वा या सुर या स नवनान-५-५-५-५ रामी असी केना मन हैं ५ हैं नामय ५ नाम हैं न त्। इसन्वे:वेसप्ते:र्रे:र्रेन्ता धुयन्त्वा वेन्पर्रेन्त्वेन्पा विन्यावि न्द्रविन् के अर्थे वा अया द्रा द्रा अयहे अयम् अर्थे न्सू अयम् न्द्येन्यराद्येन्यराद्यान्द्यान्द्ये विरामहेन्ने । १११विरामहेन्यने साद्या न्वे नकुन् ग्रे में में भ्रे ज्याष्ठ्र प्रश्ने प्रमाण्य प्रमाण प्र धेव व कें रामित्र मी हे रामित्र स्त्रे रामित्र स्त्र से रामित्र से श्रुराध्ययाची सेटारे या नहार्श्वे राची भेरा न मार्था स्था गलक् श्वरिंग्धेर्यक् छ्वर्ग्वहेश्य श्वर्ष्ठ विष्य श्वर्ष्ठ विष्ठ श्वर्ष विष्ठ श्वर्ष्ठ विष्ठ श्वर्ष विष्ठ श्वर्ष्ठ विष्ठ श्वर्ष विष्ठ श्वर्य श्वर्ष विष्ठ श्वर्य श्वर्य श्वर्ष विष्ठ श्वर्य विष्य विष्ठ श्वर्य विष्ठ श्वर्य विष्ठ श्वर्य विष्ठ श्वर्य विष्ठ श्वर्

ने त्या इसान् हो निर्मित पारिया किया वी सार्ने दा ही में सिर्म क्या विया निर्देन्यते। तुस्राम ह्याम निष्ठ्वन्या गुरुषा निष्ठ्वन्या निष्ठ्वन्या निष्ठ्वन्या क्षात्राक्षे र्वेनःभ्रनायाह्मान्त्रितःहेराःवेषायायायायेनाययायेनार्ययाने हिनः र्ट्या केट केट केट के किट सम् से देते । १३ वेश मुर्ट्य ग्राटा स् वर्षेयाययाळे नराष्ट्रियां वितर्देरायं सेरावित्र स्त्रेराया स्त्र स्त्रेराया स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र ग्रिग्राय्या विव्ययेत्यायः निव्यायः विव्यायः विव नर्गेर्निये अवस् रेशक् सेरक्त्रिं क्षेत्रक्ष्म् क्ष्मित्र क्ष्मित् क्षेत्रान्द्रात्रक्षारायदेवे विद्यासुन्य विद्यात्रासुद्या विद्यात्रासुद्या विद्यात्रासुद्या इयान्त्रेन्द्रास्त्रीत्रेन्स्रेन्यायान्यान्यान्यान्यान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्रायान्त्र विगान्र्ग्रियः श्रुनः सेन् प्रमा सेनः धेनः विन्न स्मान्त्रे । न्याने स्मान्त्रे । न्याने स्मान्त्रे । न्याने स ধশান্ত্র নর্

ह्यारायह्याः हा देः द्याः वदः यार्थे रायादः यह्याः या । अवदः श्रुदः द्याः अदः श्रेटः द्रेवः यथा वियः यथः वश्रुवः यः स्रूर् इयः प्रेचेः द्राः स्र्र दे द्या वी अवदः या शे अ ग्री दें द याद विया क्रेंद्र या त्य अवसः श्रु र दें या अवे । श्रेरर्देवायान्यः दर्गेशाने। देर्ने विशासदेशीरायाञ्चराम्बद्धान्यः स्था न्वेन्द्रास्त्रा अरादेवेस्यवरायाञ्चाञ्चरायार्भाञ्चरायार्भान्या र्देव ने इस न् हो मार धेव या केर देव देवा सामा सुर यर या देव धेव या हैंग्राया ग्री ह्राया निवास के सामे हिंदी हे या शुर्वे र खुना पर्के वियास यश्यीर्देवर्षिद्वय्यश्राद्यायद्वा श्रुदःश्चित्रद्वेद्वरहेशद्वेविश्वदे केन्न् होन्यवेन्द्रवर्षन्वन्वर्ष्यात्रवाकार्वेन्न् होन्यन्य हेन्त्रह्याय्य वेशमानहेन्यिः र्वे श्रु रावाहेन्याव्यास्य स्याद्यु रावाहेन्यार्वे स्यार्वे स्यार्वे स्यार्वे स्यार्वे स्यार्वे <u>र्राट्रेशव्याच्यायाचेवायर्थ्यार्थ्य</u> स्थान्य न्द्ये नावन सम्भग्य स्तर ने निर्मा क्षा नि गडेगागो वर रुवर र्श्वे र रुवाया छ्र पर से र रासे व रहे। यस सु सु नि वर्ष क्रिं.चवरायाद्ये का क्षेत्र क्षेत वर्चे.के.वे.र.रे.में.भूर्रेर.यर्था लेज.कु.विर.तर.ज.वेग.त.में। कं.पार्य. यार.ज.रेश्रयाश्वासपुरालीजाररायाराजायी.याराव्हिया.सपुरालीजायपुरुशायाचु. यदियाः हुः व्यद्भारायाः सुरस्या योदियायाः न्याद्भारायाः विद्यायाः विद्यायः विद्याय विश्वास्य शुःश्चाःश्चाः स्वास्य श्चाः स्वास्य श्चाः स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्व स्वास्य स्वास्य

यर वर्तेय सुदे सूनमा स्यान्दिम से प्रान्ति हे साम सुद से वास ही श्रीरावी हे शाशु श्रु ना कु ते अवन श्रु ना दिवा अते श्री ना ने निन के शान ना हिन्यवि नहेंन्यवे सेन्सेंग्राया धेन्त्र हिन्य निन्तु से स्थान अवयःगठिगाः हुः अः देशः है। अरः दे। गर्शरः तुर्शा क्रेंगः क्रेंद्रा वर्शेरः यथा र्वेगामा क्षुम्तुते सेट स्या इसमायतेषामिति नट से साम्या वर्षेषा र्वे मा धिव'यद'क्षेत्र'शूद्र'ग्री'द्रवद'नीश'वर्जेय'श्चु'स'श्चुर्द्रव'यद'र्देव'क'र्क्टर विगाः भूतः श्रुन। देवः ग्राटः वर्रोषः भुः पेंदः कंदः नभुः भेः रुदः भ्रे। द्येरः व। सः यदे खें त हु । कु यर्के दे न्यु ग्वी है द रे दि खत्य ग्वा है द रे दि ग्वा न र्नेता क्षुन्तुवे वर्त्रेषाञ्च नक्षुकात्राधीरार्नेताक्ष्य धे प्रत्रेषा से दार्थी प्रत्रेषा से दार्थी प्रत्रेषा गिर्देशःशुःदशुरःतशा इसःदश्चेः दुगाः यात्रभुः ताया कुः दरः दश्यशः द्या द्येः न्द्रन्धे उत्र दें नियाविषा पाउत्यापार्तिषा सार्वेषा सुदि त्रापासे सार्थेद ळद्रन्यू से सुररें।

१र्देन'सर्इट्र राक्षेत्र'स्ट्र पादे'स्रवदः न्ध्रन्त्र

शुया दुः नवे मातृरः तु दिव माठे मा किमा अप । अप । अप । अप । अप । अप ।

यायवायाने विद्यासिन स्थान स्था सक्सरार्श्वेत् र्यार्श्वरारार्श्वायायायह्वायाधिवाते। स्याह्वायाद्र सळव्'सदस'कु'सळव'र्सूव'पश'धे'र्नेव'रे'सूर'दशुर'रेश'प'र्सूव'पदे'कु' केर श्रुर कुष पद श्री नियेर वा निय प्रिय भिष्ठ विष्य है । मदेर्नेत्रया नुन्यर्षेन्ययश्चार्थेन्यः हेवाश्वेशन्ता नुन्यर्षेन्यः न्दा से प्यानित्र में में माना के साम्दा नुप्ता प्यानित्र से प्यानित्र से प्यानित्र से प्यानित्र से प्रानित्र से प्रानित से प्रानित्र से प्रानित्र से प्रानित्र से प्रानित से प्रानित से प्रानित्र से प् अद्यात्र वार्ष्ठ वा 'तृ 'विद्र' प्रमः सेद' प्रांसेद' ते । ग्री सः सेवारा कु 'सक्द ग्री ' र्नेत्रायाञ्चे राञ्चन्यायेटास्यायवे हेयायह्यायी विताबटायायसूर्वीयाया न्दा व श्रुभागहणायायवयाव तुरावी श्री वया कु यळव देव ग्री भार्श्व वे । कुः अळवः ग्रीः र्नेवः वः वेदः नश्रवः क्षेत्राः स्वरः देः र्नाः विदः क्षेत्रः नशः ग्रदः सः विनः है। धेरः न्दा क्ष्रन्य न्दा क्ष्रन्दा ने क्ष्रं वर्षे वाया ग्रह्म अळवः ग्रम्या होत्र हो स्थित स्पेत्र स्थित् । ते से से त्र स्थित । स्थित स्थित । स्थित स्थित । स्थित स्थित । स्थित स ख़ॖॻऻॴज़ढ़ॆॴॱॻऻॸॱॴॿॖढ़ॱॸऻढ़ॱॸॾढ़ॱऄॗॗॕॸॱख़ॖ॔ज़ॱज़ॸॱॸऻॱग़ॱॿॎ॓ॻऻॱऄढ़ॱॸॖ॓ऻ श्चेरः अप्तः क्ष्यः चितः स्रामित्रे सेराधि गो प्राम् श्चित्र पति गात्रः खुग्रारा चुराराधित त्या नह ह्यें रायदे मातुर खुग्रारा नेगा चुरा हेता प्राराह्य माल्ट स्याम्य देवे में माय्य स्व द्वा माल्ट स्याम्य स्था माल्ट स्था माय्य स्था माल्ट स्था माय्य स्था माय स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय्य स्था माय स्था माय्य स्था माय्य स्था माय स्थ

यान्त्राध्यम् अर्द्वाचित्रः अत्याव्यक्ष्यम् । निः अत्याव्यक्ष्यम् । विः अत्याव्यक्षयम् । विः अत्यावक्षयम् । विः अत्यवक्षयम् । विः अत्यावक्षयम् । विः अत्यावक्यवक्षयम् । विः अत्यवक्षयम् । विः अत्यवक्यवक्षयम् । विः अत्यवक्षयम् । विः अत्यवक्षयम् । विः अत्यवक्षयम् ।

र्श्वेर् रायदे ख्रमा यह या ग्री स्नाय या से हो हो ने मार्थ या द्रा वया स्ना हिट विट निरम्बर्भस्ट्रिं राद्धयाययाळेरावडाचा निर्मराष्ट्रा मानुरार्ने राजनिरार्ने नेया ग्रांसार्श्या हे संता क्यानगर है वित्या वेयानम् ग्रव्ति नन्द्रमानेया वैयापार्श्वयात्रमा कुर्यानगद्रमानेद्या वेया मत्या तकन्देर नेया श्रेया निर्यं नगर विरावेरय वेया श्रुर ग्रार इन्द्रम्यम् सर्द्रम्य प्राचित्र प्रम्य स्त्राह्म हे हे हे ने प्रमुख न्दर स् र्थायम् मार्ग्या स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स म्राह्म विक्रियात्र विक्रियात् यक्दर्भार्द्रवार्धित्वायात्रार्थित्वे के ना सुवार्धिताना येवा मित्रा मित्रा मित्रा मित्रा मित्रा मित्रा मित्र ने न्या धेव सन्दा याय हे अन् नु स्थाने व या है या विवा सि व क्रेंब सम् हे न व इन्याडेगामेशकेंगामर वयानमा इन्द्रमभागी रेन्से सावहेशसर न्धन्नर्गेश ने भुःभूमा निष्ठा त्याय हुमा यायान नुमा सुः व्यान निष् श्चे र स्र गाविव नियः उव निर स्ट नियः उव गाविव स्थानिक र् त्यायायायाक्ष्याः श्रें दार् त्या द्या व्याप्य स्थापित्र स्थापित्र विष्या विषय इस्रमायः स्टान्यरः त्रमायह्याः यः न्याः व्याः यहमानि स्टान्य क्ष्र-श्रु र पः श्रुवि न र्रोत् श्री प्रविष्य प्राया धिव स्रीव प्रश्नि प्रविष्य है। इप्यय प्रे म्। । मुन्यान्यरुभायाद्वान्य्रीभायम्भूयशायादः नुतदः सन्यमूत्रादिः स्रीतः

शुअ दु नदे न बिर र सूर पर र अ विन न सूर पर इस र से र र स स गर्नेगर्भर्नेद्राचर्त्राय्येद्राया कुद्रस्त्रायी सुनात्वारायेद याद्वीर्स्रेन्या चुर्ह्मस्रसा गुर्ह्या । भ्राचुर्द्या वसायसा गुर्स्र सुद्या स् वै। यसःसँग्रायः १८ यर्षुग्राय। वृत्तुरःग्रावदः रुषः ग्रेः भ्रूरः यार्षेदः ग्रहा भूत्रकःवर्षेयःवशुर्ग्योःत्वराषीयःत्रकृतेःभूत्रायःवयःभ्रुःयःगर्हेग्यायःययः श्चि के त्र वा त्र वा वितायर सक्षिता निर्देश श्वा श्वन त्र वा श्वन विताय विताय विताय विताय विताय विताय विताय व डेश्रायाध्ययातुश्राद्वशाम्यास्यार्श्ययायायात्रीयात्रात्र्यात्रात्र्या सवतः यादः ताः व्याः प्रदे । यदः सक्स्याः ग्रीः देवः सूदः प्रसा शुसः ह्यासः नश्दः श्चर्येग्रायन्त्रप्रविधानस्यास्य द्वा देशसर्गेरमी स्वानुवानिक्षणी अन्या ग्री सूर् किंवा वे सा वर् रहे या पर दर देव वा हेवा परे सूर् किंवा दर। वर्चेन्सून्ग्रेःभूनश्राग्रेःसून्क्ष्मान्द्रात्वाः हुवकन्वग्रुन्द्रम्वशः ग्री:सूर् किंगा गहिरा है । इस ग्राम्य सूर् परि केंगा प्रा प्र विद्या सुर साम्य ग्री:सूर् किंगाने अक्सरायहें न प्रते सूर् किंगार्ता सूर्रा स्रित्र विःसूर् किंगा (वे.भ्र) वे.र्मान बर्रात्म विष्ठित्र निर्मेन स्त्र में रे.स्र क्षेत्र त्रा लेव समार्थे र र्देगामी हिन् पर सापदेश पानियासे सार्ते सान् हो पर हो । १८ ने सा यश्रित्राःश्री | द्वारः वःद्वः विदेशः विदेश

ने अ'तः हे अ'यह गायानक्षान् में अ'सदे ख्रन् गाव्यान्य र उत्तर नक्षः भ्रे न्वे शर्पि स्टर्न्नर उत् ग्री वित्यस्य से नर देव ग्री क्रें राह्य <u> २.८८. च.य.चेत्र.त.त. वर्षाया ग्रम्याचीत्र.व्याल्याक्र.वर्षा</u> शुन्ता वर्ष्यातिरमाग्रीनेत्याश्चित्राचा वर्मायमाग्रेमा वर्मास्या यायह्याया शुररादुःदुःवायानुवा के भ्रवशाशीर्देव हेंदाया शु र्शेनाश्चारम्। दराश्चा वहीरायदे देवाया नाश्चान्यारम्। दराश्चा सक्सरार्श्वेर्रायदेश्वापठराया दर्श्वा हे हे हे ने पश्या है से नि यशिषा में अक्षेत्र क्षेत्र राजा में अर्थियाया जया में वरमा दिर में किया र्थः द्वेदे निश्व नुः से सबुव पदे देव त्या ग्राम्य प्याम्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्वास्य स्व र्शेवार्या वनवार्धे निर्धारको कः निर्धार्थया धर्धे वर्षे स्थि स्थि स्थि । समित्र सेवास पहुंचा ची। ने सूर नसूस न में सामित्र सेवास के सामित्र सेवास पहुंचा ची। में सूर में सूर में सामित्र सेवास के सेवास के सामित्र सेवा

वःन्नःवह्याः द्वाः श्वाः श्वाः श्वाः व्याः विवः यदेः यविनः विवः यः यवः भ्वाः यवः भवः विवायः

শ্লনম:নক্ত্র্রনা ঠিনা:हবাম:গ্রী:রম:বাবিনা:নম্বর:বা

देरः अरः वि रहे विक्षेत्राः ह्वा अ वि अ य रहे खेवा र्वे व वी अ द खेर युवः क'नाय'केव'विना'से। धेना'र्वेन'नी'सून'क'य'सेन'न्'से'नुन'नदे'रस' वरेग्रारा होरा शुरु हिंगा पीत विशासित निर्मेश सामा निर्मा धेवा यदर द्वेत कु धेवा दर कुंवा समुद्र की केंवा हवा सा नेवा चु द्वें सा धरःश्चानः वे ः भ्रूनः कवे ः के या हेन् या हेन्या या यवे श्ची ः वहेता श्चाना वि वरः वनः ने नेन्भून्थीः केना स्वाया वे भून्य करे श्रे राजान्रेया प्राया विष् बर्गी व्यापा वियापा मुलिया विराधिया प्याप्त प्राप्त वियापा विया गःश्वरायायम् श्वराते। यदारीयाक्षानीःश्वर्त्रयादिद्विद्याद्वा क्षेत्राः ह्याया ग्रीयार्देव ग्री र्थेट यह समा स्वारंदिय या है या या सामा स्वारंदिय समा ग्री:विट्रःकेंशःसर्द्रनःसरःग्रयःस्।।

र्टास् क्ष्मास्य भी अक्ष्मा ह्या अने ने प्रामाद स्थान सूत्र पान वि

71

श्चेर इस न्वेर न्य न्वेर स्थान् वेर संय कि मा सन् सेर से दे प्य नि युग्राश्वरत्। शुंशरुःनदेःग्वरःर्जेग्।सरःह्यर्घेःदरःरेव्यःकैगः यन्यावन्त्रस्य अपो देयान विन न सून न वे अप्यान ने सून सा सहन प्रम र्वेगायरःश्चरःत्रसृदयःह्रेग्याक्षेयाःत्रसृदःयः नः ने द्रयःयः ने द्रान्यः भी थ्व नश्रव रावे सह्या ने सम्बाहा क्व सून निमा स्या निमा निमा र्शेवाश्वानक्ष्रवारा वे क्षेवा स्वनाने निवानी विद्यान कु निशा विद्यान वि वर्ष्याभेवरहे। भेरम्बस्यरायर्देवर्षेचरक्ष्ररक्षेचर्ष्यर्श्वरहेन ह्रेंग्रथं सम्ब्रेंद्र सदे केंग् 'हु गुन सन्न अर प्यम केंग् में दे हे अ शु मेंद्र ग्वित्रव्ह्यायः सेन्यम् भूनसः मेन्यः ह्यासः बुनः तुन्ते ह्निः यथः वीर्स्यासः श्चरमाद्रमा केवावाववाद्रमायवाक्ष्याक्ष्यास्य स्थान्य स श्रुति नश्रुव र्नेव या ग्राया श्रुपा ८८। न्हेरिट्रेन्ट्रें अव्यानवयाद्वी नार्क्षेत्र राजानायार्थे न्याना नक्ष्र ठुः शृःश्चेः श्चेः सञ्जुद्रः पायाः ग्राटः श्वेषायाः श्चुरः द्वेषियः परः तस्रुदः प्रथा क्षेषाः स्वतः ने न्या धेरा र के या विष्य त्या श्री र प्रश्ना साम्राम्य साम्या के या यी समर श्री र मश्कियाची नश्रूम देन हिया या सहिया या दिन हो प्राची या विष्य हो । यही या नहिः भूर गुनः यायायाय नर हो दः यथा इस दहे । इस या नसून पदे या से नः

र्द्धवार्थाःशुःर्वोदःनश्रुवःक्षेवाः स्रदःदेःदवाः वश्रुवः यः वः कुः यक्षवः केदि। क्यान् वे निर्मेश के शुक्ष के वा क्वाया थे वे निर्मा ने निया वी या वे निरम र्रिने स्थिते से राह्मस्य स्थान्य स्था न्दायनुदार्क्ष अः श्रीमा शासुः से हो देवा ची । चित्रायन यने वा विदा । चीदा स्था शास्य शास शास्य शास शास शास्य शास शास शास शास्य शास शास शास शास क्षेत्रा हु श्रुवायायायव श्रुदाया क्षेत्रा श्रुधे दे द्वे अक्ष्यया शुः श्रुदायहर र् से क्वें र में । देश व के वा हवा श क्वें व हो र हो तुश य ख्व य दे खर हो। र्ह्मिशक्षिमान्द्रा भ्रमानवया क्रिव्स्ट्री मायस्यम्य वेदःस्मायान्तरः के.यदु.हेट.रे.ट्र्य.अक्ट्र्य.यह्याया वयाम्य.ट्रा रटमी ही.मा क्य. न् होते के गा सन् क्राय क्राय हो साधित संदे में त ग्वित त्या दह्या स र्शेवाश्वर्शे । ने वास्वाश्वरद्वा हा वावन वास केवा में तर्वेवा सामश्रा । नशुकुर्वेद्रान्यसेद्रान्दा विद्यायमाण्याद्रान्दे निविद्राने विद्यायद्रमा न्वाः ग्रम् नर्गोन् प्राध्या । नश्चमः नः व्यन्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्त श्च-५१ । श्री-१मी सम्बद्ध न व्योप्त स्थित न स्थान में स्थान र्देव त्यान स्रेग्राया स्पेदासे दारा । न स्रवास्य स्था सामिदासे दारा । किया र्देव:क्र्यायान्द्रायाःक्रियायाः ग्रीया । दे प्रवायद्रायायायायायाः प्रवी । विया वी'न्नर'नु'चुअ'व'र्नेव'ग्री'न्य'वार्शेवे'र्सेन्'अळंअअ'त्य'ळेवा'स्न्'वार'वेवा'

श्चर्त्रविष्याचरान्रह्म् यान्ते क्षेत्राह्माया श्ची दिन स्टाययाया वर्षा र्या

महिरामा अन्दर्द केमाहमारा ग्री हिन्स राम्य

नित्रहेश्रामाद्वे क्वियायी श्रुप्तेश्रामहोत्रामात्त्र श्रूप्ताया त्रुयाश्राणे सहें शक्त निर्देशस्त्र मुद्द निर्देश स्त्र स्त याम्यान्य नवर्षान्य अपवर्षाय वर्षा वर्षा स्था स्थान र् मान्यायि। विद्रास्य भी मार्चिमा रि. १५८ की या विद्रास्थ । विद्र न्यरः ग्रीः नर्वे स्वाद्यः र्वेषाः गुः से : ग्रें वः यदे : न्वे यः स्विः ययः इसः ग्रम्यः रुः या ग्रुयाया विदायी वा तदी से देवा पुरव मुह्या परि स्थाय दि । त्रुव पे <u>न्युअ:रेट:नर:ग्रुअ:सअ:अन्:ग्रे:मात्रुमअ:रट:श्रेट:त:अहे अ:हत्य:ग्री:घ्रन्:</u> क्रिंश्यार्के प्यता दे प्यता धेवा विवादि स्वेत क्रेत विवा पुः व्यव स्वरास विवा मो त्रे स्याम्य प्रत्य दे स्यामी न्याय स्थित स्यामि स्याप्त स्याप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्थापत स्था निन्गी इसम्मान्य द्राया विवासिय मी अपने स्थान विवासिय किया ह्वाराष्ट्ररः सूर् किरे श्रें रावाया दर्वे रादेशा शुः सा बुवाया दवा वी श्रें रावाया श्चेत्र्युद्दः नश्चान्ययः नर्म्युनः नि ।

बिट निह्न पर्देन भी गुत र्रेडिट निट में भी रेंडिन सक्स अर्थे के ना सन ग्रे ने द्राप्त विया या मुह्री के या या गुन हों द्राप्त यो हों त्र या द्रो प्राप्त वि यो द्राप्त या यथा हिना विना भेना सेना श हुर परि सुव हूँ त ही हिना व हिना थ हिना श्रेश्चिर्यात्रा ह्या श्रेष्ठिया श्रुर्या श्रेष्ठिया था दे । यदे हे त्र से दाया दा वर्दे होत् ग्री किया वा श्रुवा श्रिवा श्रीवा श्रीवा श्रीवा श्रीवा श्रीवा किया है। न्वायी गुन र्सेन्से प्रतायदिवानन या स्वासी स्वास गुन र्सेन्य नसून विरा गुन र्सें र कें न हमा या ग्री या सर्वें न श्री मा गुन र्सें र हे पर र न वियात्यः क्षेत्राः ह्वार्यायादः वदः विवाः श्रेतः वः वः वेराः वेराः वेराः विवाः श्रेतः विवाः श्रेतः विवाः श्रेतः यात्र द्वा द्वा स्ट्रिं स्ट्रिं सक्यया से ना किया यी क्षु स्वार्यो द द विषय नवरक्ष्यास्यायाची विदाक्ष्यानीया पुराविस्यानी अदाक्षायनिराया न्त्रम्यायार्थे न्वीया न्त्रम्यायार्थे नायार्थे मायार्थे नायार्थे नायार्थे नाया न्वीयान्य अन्ता केवावी श्रीवाविदे क्वर्य ग्राम्बेन सक्ययान्ते नर्वे अन्यः व्येन् न्यः क्षेत्राः ह्या अन्त्रे अन्त्रे विना क्षेत्राः ह्या अन्तर्वे क्षेत्राः इत्ते द्वा भूत्रश्रात्रयश्रात्र हित्र स्वा स्वा कुरा हित्र हित्र हित्र स्वा स्वा कुरा हित्र हित् वर्नेन्यन्ता इयम्ब्रिसे क्रियावतुर्यात्रेत्रा क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्ष्याः बर्ना वर्षाः वर ने नाशुस्र न स्य द्वीत प्राचीत प्राचीत

श्चेरक्षेत्राह्मशायाद्याः धेनाः विनाः नहिशानाराष्ट्रीरानदेः श्चः रेशःग्रे:म्रेव्राड्यावड्यारेग्यार्,यार्षेट्रायाय्या वेट्रायेगायायेगार्वेगाः हु: अप : प्राप्त वा : विवा वा है अ : गा स : क्षेत्रा : ख्रु स : क्षेत्रा : ह्वा अ : ग्री : र्रे प वेत्याना केवार्षित्कंत्याकेवाह्वायाञ्चरत्वे यातेयाचेयाया १५ क्री किया भ्रुया मिं वर किया सक्सर ५१५ वित्र पिर वर वर्ष में सिया रा क्रियाशक्ष्याश्चराया १५७८८। हिया विया विया या श्वराश्चराय १ ३ हे। र्शेग्रराञ्च्या नरुराञ्च र पा ८८ देट रेट रेट प्रीट ग्राश्याञ्च र प्रश्रीट र्ञु श्चराम११९ व श्चाउव१५मान्दानदे समदाउव८५८८। ५.५८ छ गास्र गवरश्चरप्रदर्धिर्पर्देर्जुयन्। बेर्निगर्रप्राप्यश्वरिका मुंग्रायान्या मुंग्राक्ष्यायानम् सूर्यायानम् सूर्यायानम् सूर्यायानम् सूर्यायानम् सूर्यायान्या यार्चिम। अरकेव्र-सॅ-१८दे-१८८-इस्य-१५मा-१५मार्थेस। वेश-१५ स्थान्य स्था

गशुस्रामा ११ ग्री इसम्बाद्याद्याद्याद्या कुरा कुरा विवाद

च्या क्रिंग्जी प्रेप्त होता प्रक्रिया क्रिंग क्रिं

बुक्षः सः स्वाक्षः द्यः हैं वाक्षः क्ष्या ।

बुक्षः सः स्वाक्षः द्यः हैं वाक्षः क्ष्याः वाक्षः व्यव्याः वाक्षः व्यव्याः व्यव्यः व्यव्याः व्यव्याः व्यव्यः व्यः

प्राचित्रभाक्षात्रम् स्वाचित्रभाक्षात्रभाक्ष्यभाव्यभाक्ष्यभाव्यभाविद्यभ

च्या क्षेत्र क्षेत्र

क्ष्मश्राच्छ्यात्म् (।) हेश्यत्म (।।) चल्चित्त् (।।।) देवः छेत्रस्य स्मित्रः स्मितः स्मित्रः स्मितः स्मित्रः स्मित्रः स्मित्रः स्मित्रः स्मित्रः स्मित्रः स्मित्रः स्मित्रः स्मितः स्मित्रः स्मित्रः स्मित्रः स्मित्रः स्मित्रः स् यश्चर्यं श्वात्त्र क्षेत्र स्त्र क्षेत्र स्त्र क्षेत्र स्त्र स्त्

नवे'न कैंग'हगरांगे'ह्रम्याम्याम्यान्यान्यान्यान्या

र्वोद्दर्शन्त्रम्भद्दर्श्वर्भन्त्रम्भद्दश्चर्णः क्षेत्रम्भद्दश्चर्णः व्यक्ष्यस्थित् ।

व्यक्ष्यस्थित्रम्भद्दश्चर्मः क्षेत्रम्भद्दश्चर्णः क्षेत्रम्भद्दश्चरः व्यक्ष्यस्थित् ।

व्यक्ष्यः व्यक्ष्यः व्यक्षः क्षेत्रम्भद्दश्चरः व्यक्ष्यस्य व्यक्ष्यस्य व्यक्ष्यः व्यक्ष्यस्य व्यक्षः व्यवक्षः व्यक्षः व्यवक्षः व्यवक्यः व्यवक्षः व्य

र्वि अत्राव के निर्मा के

स्वायत्र स्वायत्र स्वायत् स्यायत् स्वायत् स्वायत् स्वायत् स्वायत् स्वायत् स्वयत् स्वयत् स्वयत

१क्षेत्राची अह्वा ति श्री राज्य किया विवास हिया अप्ता स्वास प्रति अह्वा ति श्री राज्य हिया स्वास प्रति अह्वा श्री श्री स्वास हिया अप्ता स्वास प्रति अह्वा श्री श्री स्वास हिया स्वास प्रति अह्वा श्री श्री स्वास स्वास प्रति । स्वास श्री श्री स्वास प्रति । स्वास स्

ह्निश्चारम्य ह्माया ह्माया हिन्नु व्याप्त हिन्नु व्याप्त हिन्नु व्याप्त हिन्नु व्याप्त हिन्नु व्याप्त हिन्नु विद्या विद्

है हिनाका यह ना हे हे प्यति है ने पेति है ने पेति है ने प्यति प्राप्ति है ने प्र

यक्षत्रक्ष्या । स्वाक्ष्य विष्ण्य विष

१ क्रिंग'मी'नर-र्रेष्ट्रिंर'न्ना क्रिंग'मिंडम'मी नरःश्लेनराधीः र्थेट्र सक्ष्यराशुःश्चराहे महेंदिर्देष'मार्थायर होट्र'राया यहोट्र'ह्मार्थ'ट्रा यहेष्ठ'ह्मार्था ख्टाहमार्था क्षेत्राहमार्थ'नडरूप्येट्र'र्योर्थेर'महेंद्र'त्रा

यग्नेन्ह्नाया श्वान्त्रं केन्द्रा भिन्ह्न्ता हृत् न्युन्युक्तः मन्द्रा व्यान्त्रं केन्द्रा श्वान्त्रं केन्द्रा श्वान्त्रं केन्द्रा विद्रान्त्रं केन्द्रा विद्रान्त्रं केन्द्रा विद्रान्त्रं केन्द्रान्त्रं केन्द्रं केन्द्र्या केन्द्रं क

संवे:र्नेत्र-तु-स्वःश्वःश्वः स्वाद्यः स्वः त्रः यायः श्वः यायः श्व

त्रारह्मण्या क्रम्यह्म । विश्व प्राप्त । विश्

क्र्याम्मा क्रियायासूत्रकक्षे के प्यापा वित्या विताया विता

चड्-नित्य ।(मह्रम्भिन्न्यः अति । म्यान्यः अत्यः अति । म्यान्यः अति । म्यान्यः । म्यान्यः अति । म्यान्यः अति । म्यान्यः अति । म्यान्यः । म्यायः ।

३०ळ८ ह्याया श्चित्र विता वित्र स्वाय अस्ति । विश्व स्वाय स्

थ्या ग्रायर प्रमुद प्रमेष भारते मे द्वा यो । प्रमाद मे विकास स्था विकास स्था

अन् किये अर्टें व्यवसार्वे दार्च व्यवसार्वे द्वा स्यापे स

१त्राप्ति ((५वाप्पेवा अस्ति वि प्रम्य (क्ष्रिक्त क्ष्रिक्त क्ष्रिक क्ष्रिक्त क्ष्रिक्त क्ष्रिक क्ष्रिक क्ष्रिक्त क्ष्रिक्त क्ष्रिक्त क्

३नसूर्यास्यार्थः क्षेत्रयात्रेयाः श्रीयाः केयाः नियात्रयाः वियाः नियात्रयाः वियाः नियात्रयाः वियाः नियात्रयाः वियाः नियाः वियाः विय

न्द्र्य। दे.स्ट.ची.चें.चेंट्र......(र्थ.स्यश्र.की.प्रक्री.प्रियो.त्यश्र) है.

द्वर्मा स्वाम्य " " क्रिया में स्वाम्य स्

(ववःहग्रम् . गर्डंग्वस्थः केः नदेः क्षेतः द्वाः मेः देवाः हुः वर्षेतः । सः ह्रे। वेंदः क्षदः प्राचीः इस्राचन्त्रदः स्थानः गुवः हुः ख्रुवः द्वाः मोः प्रेः माः दः स्थाः द्वाः वर्षे वर्षः प्राचीः क्षेत्रः द्वाः मोः प्रेः मोः प्राचः दः स्थाः वर्षे वर्षः प्राचे । (हः हे क्षेत्रः प्राचे क्षेत्रः ह्याः मोः प्राचः वर्षे प्रदः । यः प्रेः प्रवः । यः प्रवः । यः प्रेः प्रवः । यः प्रेः प्रवः । यः प्रेः प्रवः । यः प्रेः प्रवः । यः प्रवः । यः प्रेः प्रवः । यः प्रेः प्रवः । यः प्रवः । यः प्रेः प्रवः । यः प्रवः । यः प्रेः प्रवः । यः प्र

६ श्रेट म्ह्याश ____ श्रे श्रेट प्रत्याश्रेश प्राचाश प्राचाश श्रेत प्राच श्रेत प्राच श्रेत प्राचाश श्रेत प्राच श्रेत प्राच श्रेत प्राच प्राच श्रेत प्रा

यार्त्र अप्तर्भन्ति । (क्रि.येचा.क्ष्र्या.या.येच्ने अप्तर्भन्ति । अप्तर्नि । अप्तर्भन्ति । अप्तर्भन

तुर'सळत्।

9| P156-157

न अर्कें श्वें त्री भें त्री भारती श्रुव । यह ते । अर्कें ते या श्वें त्री भारती श्रुव । यह ते । अर्कें ते या श्वें ते या श्वें ते या श्वें ते । यह ।

ধ্। র্বি-র্টুন্ম-য়-র্ব-মন্ম-র্ব-মিন্র্র-মেন্র-র্ম্ব-মেন্র-র্ম্ব-মেন্র-ম

य। १९। १९। में र अर्ड्ड र अर्ड्ड अर्ट्ड व के P13 P11

ধে १०॥ १०॥ বিদ্যালি নাম প্রত্যালি প্রত্যালি

११। में र अर्ड् र अ (यह र्श्वेर या अयः हो र र या र्श्वेर » P81-82

14| 14| 16| 41में ८ অক্ত কে (ইব্ মীই ব্যায় ১৯৯৯ P180 P105

१२। ११। गॅ्रिसर्ड्र अ(यह र्श्वेट् र्स्ट्रिट् राज्यस्थान्य स्थानित स्था

१२। मॅर अर्ड्स्थ (नम् र्श्वेर हैं र है . शु न तु व र प र र न स र न हिंग से व र व हु न र न स के प्र के प्र

२०। वे रासक्र मा (धी वो दे न वि पा सावरा मा ते । वि क्र वि) P25

१८। র্মুন্স্প্রেম্প্রম্বর্মি

१८। १८में ८ अर्ड्ड ४०० वर्षे व्याप्त स्वाप्त स्वाप्त

१२। में दासकुंदस(द्यो १५५५ केंस १५से या शु दाय सुदार १५ व

বাধ্যম'না P270

यश्रित्वत्रम्॥ यश्रित्वत्रम्॥ यश्रित्वत्रम्॥

सह्याः जुरा

ने प्यट में न भी नह क्षेत्र क् वै। दे रू गुरु स्व निष्णिया विष तुन ग्रुट से देवाया र्से न के व र नु न ग्रट ग्रुट गशुसाग्री विच पहुण श्लें नासासम् विच हो। श्लु म्साप्य साम् स्वारा नवे न्यायाननया नामाय देवाय द्वाय सेन्य सेन्य सेन्य सेन्य स्थान सेन्य स्थान सेन्य स्थान सेन्य सेन विवे सळ्त उत् ग्री विवादया ८ यत् हें सन्गा भ्री र ग्री र ग्री र ग्री र ग्री र वहें अर्भरत्यमायमाये दाया ने विटाष्टी केंगा भाषा यद दें के न विमायदी नरः ग्रीशाबेशानगावागाश्वराशे हिंगा वितासे ही विते मुतार् वितारा सूरा श्रीटार्ट्रियाची क्याचावया इटाक्किंशास विवायत्री हिया त्रुशास देखाये ळ्य.त्यात.व्या.याश्चर.री.यश्चय.दुर.यही.श्च्य.दुर.वर्.वीश्चर गिविदे सेटा नेंद्रिंग नहार्सेंद्र हुट प्रसेषा ही तें हु याद्रा नेंद्र ही स्नूद्र कर नश्रुवःमा धेःमोः नदः कैमाः श्रुनः नदः कैमाः हमाशः ग्रीः इसः मावमाः श्रीमाशः थेः

क्रव-दि-अ-वाक्षय-दि-वाक्षय-क्रिय-वाक्षय-वाक्यय-वाक्षय-वाक्यय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक् वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय-वाक्षय

चक्रस्थाने नायने स्वर्णान्य स्वर

इरः कृदे न इन गवि।

- १। ४१:भुःगुरु:८नाय:कुत्य:सळंद्र:ग्री:नाशुर:तनुसा
- श शुःर्श्वे सर्वेद रक स्टाय्योया
- ३। नगरायेवसासुसाहग्रारानगदावीया
- स्ते द्रात्त्रीय श्रिम् रात्रीय श्रिम् रात्रे स्त्रात्रे स्त्रे स्त्रात्रे स्त्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रे स्त्रात्रे स्त्रात्रे स्त्रे स्त्रे स्त्रात्रे स्त्रे स्त्रे
 - प ग्रम्भाममुन्रकेन्स्र स्वर्मेया
- प्राच्यायात्व्याक्ष्याश्च्याद्वायाः व्याप्यायात्वायः व्याप्यायाः व्याप्यायायः व्याप्यायाः व्याप्यायाः व्याप्यायाः व्याप्यायाः व्याप्यायाः व्याप्यायाः व्याप्यायाः व्याप्यायाः व्याप्यायाः व्याप्यायायः व्याप्यायः वयः व्याप्यायः व्याप्यायः व्याप्यायः व्याप्यायः वयः व्याप
- ्र भूतः भुः रेवः नवेः हें देव अयः दुः नः न्दः ह्वा यः वहुवाः वीः रेवः छुदः इरः नविदः सुः स्वः नवादः भुेत्
 - (। न्यन्तिः केन् अदि (किंग्या ग्राया ग्राया
 - १०। वारोर हेवा शुराह्वारा
 - ११। व्यानस्त्रान्नो येग्रास्त्रास्त्री अर्द्धि (तस्याम्यावे स्री दिन देव

ळेतः श्रुवः से »

- १२। ग्रीं म्यूंया प्रिंत मृत्य क्रिंय (लेश ग्रागुत । ग्रीं म्यूंय
- १३। द्यवःदेशःसदशःकुशःग्रे (वहःश्वेदःवासवःग्रेदःदगःश्वेद्र)
- १८। गास से रिते सुय ह्याय प्रांचिय केता
- १५। सम्यागुनःहेदे(क्ट्रायाः शेरन्त्राग्रीः मुन्यो ग्रीः सुन्यो ।
- १६। क्ट.स.स्स.पर्मेया
- १२। द्याःधेयाःद्याः र्ह्हेत्।
- १४। नहः श्रेंद्रः र्र्ते न्याययः द्यायः श्रेंद्रा
- १८। नम् शुर्रे यान् ग्रम्भारवन्त्री सर्रे निराने वे त्वीयान ग्रमाथ्या थ्वा
- २०। र्रो:र्ने सम्बर्केन नर्भेन वस्य भुन गुन ग्री
- २१ शुर्श्वेरः नसः सं निहेशः य
- ११ सिटार्से रूजारायु रूड्डियु (र्या ल्या स्वायस्य स्वीट यायस्य)
- १३। द्याःधेयाःवेः शुदेः गुरः।वरः।
- १८। पर्सिश्चारम् ॥ स्वाप्त्रास्त्रे स्वाप्ताय स्वाप्ति हिं
- २५ वहुःसे ससामी (वहः निवादने दाने के केंसा दाना केंद्र सदे र या मी)
- १६। नेंद्र भेषा हेर अविवे अळ अश ह्यें र केंग इद द्या यी दियर

नम्र्रेन्र्भूम्र्ये हें अधिन

नर्हेन्यावन्यर्भेषान्धेन्येः शुःगु

२०। नमःश्चित्रित्रः नत्त्वर्यः प्रत्यः प्रत्यः प्रत्यः विष्णः विषणः विष्णः विषणः विष्णः विष्